महाभारत भाषा

कर्णपर्व

जिसमें

व्यूहनिर्माण, क्षेमधूर्ति, विन्द, अनुविन्द आदि वीरों का पाण्डवों के हाथसे बध और अत्यन्त बलवान् कर्णजीका सेनापति होकर दो दिन संग्रामकर गाण्डीवधनुषधारी अर्जुन के हाथ से बध होना आदि मनोहर कथा वर्णित है

जिसको

श्रीमान् भार्गववंशीय मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई.,
ने अपने व्यय से आगरापुर पीपलमण्डी निवासी
पण्डित कालीचरणजी से संस्कृत महाभारत
का भाषानुवाद कराया

तीसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छापागया

सन् १९१३ ई० ॥

भाषा कर्णपर्व का सूचीपत्र॥

भाषा कर्णपर्व का सूचीपत्र।

इति कर्णपर्वसूचीपत्रंसमाप्तम॥

अथ भाषा महाभारते कर्णपर्वणि ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतं प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्त्राराणमस्त कमालयलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ या भाति वीणामिव वादयन्ती महाक वीनां वदनारविन्दे ॥ सा शारदा शारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभा नःप्रतिभां व्यनक्तु २ पाण्डवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपि निर्मलम् ॥ व्यधायि भारतं येन तं वन्दे बादराय णम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यते भूतलमद्य येन ॥ तं शारदालब्धवरप्र सादं वन्दे गुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणा भिधानः॥ कथानुगं मञ्जुलकर्णपर्व भाषानुवादं विदधाति सम्यक् ॥ ५ ॥

अथ कर्णपर्वणिभाषावार्तिकमारम्भः ॥

वैशम्पायन बोले कि, हे राजन्! इसके अनन्तर द्रोणाचार्यके मरनेसे अत्यन्त व्याकुलचित्त दुर्योधनादिक राजालोग अश्वत्थामाजी के पास गये १। २ फिर द्रोणाचार्य के शोचकरनेवाले मूर्च्छावान् महाघायल पराक्रमों से थकेहुए शोक से पीड़ित होकर वह सब राजालोग अश्वत्थामाजीके चारोंओर बैठगये ३ फिर एकमुहूर्ततक शास्त्र के अनुसार अनेक हेतुओंसे अश्वत्थामाजी को समाश्वासन करके सब राजालोग सायङ्काल के समय अपने २ डेरों को गये ४ हे कौरव्य! फिर दुःख शोक में भरे कठिन नाश को शोचते हुए उन राजाओं ने डेरों में भी

जाकर सुख नहीं पाया ५ विशेष करके कर्ण वा राजादुर्योधन वा दुश्शासन और सौबल के पुत्र महाबली शकुनी ने महाखेद किया ६ यह सब राजालोग महात्मा पाण्डवों के कष्टों की चिन्ता करते हुए रात्रि को दुर्योधन केही डेरे में निवासकरनेवाले हुए ७ जो द्रौपदीको द्यूतमें कष्ट दियागया और सभामें भी लाई गई उसको स्मरणकरते और शोचतेहुए अत्यन्त व्याकुलचित्त हुए ८ हे राजन्! इस प्रकार द्यूतमें प्रत्यक्ष होनेवाले उन दुःखों को चिन्ता करनेवाले उनलोगोंकी रात्रि सैकड़ों वर्षके समान व्यतीत हुई ९ उसके पीछे निर्मल प्रभात के होतेही वेदोक्तरीतिके अनुसार आवश्यक नित्यकर्मों को करके दैव की आज्ञामें नियत हुए १० अर्थात् आवश्यक कर्मों से निवृत्त होकर बड़ी सावधानी से सेना को तैयार होजाने की आज्ञा दी और युद्ध करनेके निमित्त बाहर निकले ११ मङ्गल कौतुक करनेवाले कर्ण को अपना सेनापति करके दधिपात्र घृतआदि पदार्थों से १२ और सुवर्णमालायुक्त उत्तम वस्त्रादिकों से उत्तम २ ब्राह्मणों को पूजन करतेहुए सूत, मागध, बन्दीजन आदि से भी स्तूयमान हुए १३ और हे राजन्! इसी प्रकार से प्रातःकाल के कर्म करनेवाले युद्ध में निश्चय करनेवाले पाण्डव लोगभी शीघ्र अपने डेरों से तैयारहोकर बाहर निकले १४ इसके पीछे परस्पर में विजयाभिलाषी कौरव और पाण्डवों का महारोमहर्षण युद्ध प्रारम्भ हुआ १५ हेराजन्! कर्ण के सेनापति होने से उन कौरवीय और पाण्डवीय सेनाओं का देखने के योग्य दो दिन तक अपूर्व युद्ध हुआ १६ इसके पीछे हज़ारों शत्रुओं को मारकर कर्ण वा धृतराष्ट्रके पुत्रोंके देखतेही देखते अर्जुनके हाथसे मारागया १७ फिर शीघ्रही हस्तिनापुर जाकर यह सब वृत्तान्त लोगों ने धृतराष्ट्र से कहा वह वृत्तान्त कौरव जाङ्गल देशों में प्रसिद्ध हुआ १८ जनमेजय बोले कि श्रीगङ्गाजी के पुत्र भीष्मपितामहको और महारथी द्रोणाचार्यजीको भी मृतक हुआ सुनकर अम्बिकाके पुत्र वृद्ध राजधृतराष्ट्र ने बड़ा खेद किया १९ हे ब्राह्मण! फिर उस दुःखी धृतराष्ट्रने दुर्योधन के हितकारी कर्ण को भी मराहुआ सुनकर कैसे अपने प्राणों को धारणकिया २० जिसने कि अपने पुत्रों के विजय की इसी कर्ण में आशा निश्चय करके कररक्खी थी ऐसे कर्णके मरने पर इस कौरव ने कैसे अपने जीवन को रक्खा २१ ऐसे स्थान में कर्ण को मृतक सुनकर जो राजा ने अपने प्राणों का त्याग नहीं किया इससे मैं निश्चय जानताहूं कि दुःख

में वर्तमान मनुष्य बड़ी कठिनतासे मरता है २२ हे राजन्! इसी प्रकार वृद्ध भीष्म, बाह्लीक, द्रोणाचार्य, सोमदत्त और भूरिश्रवा को २३ और अन्य मित्रों समेत गिरायेहुए पुत्र और पौत्रोंको भी सुनकर जो प्राणोंका त्याग नहीं किया इसीसे हे ब्राह्मण! मैं उसको महाकठिन मानता हूं २४ हे महामुने! इस सब वृत्तान्त को आप मूलसमेत वर्णन कीजिये मैं अपने प्राचीन वृद्धलोगोंके च- रित्रोंके सुनने से तृप्त नहीं होताहूं॥ २५॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

दूसरा अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि, हे महाराज! कर्ण के मृतक होनेसे महादुःखी सञ्ज सायङ्कालके समय वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारी से हस्तिनापुरक गया १ और बड़ीव्याकुलता से हस्तिनापुर में पहुंचकर उस धृतराष्ट्रके स्थानक गया जो बान्धवोंका नाशकारीथा २ वहां मूर्च्छासे शोभाहीन राजाको देखक बड़ी नम्रतापूर्वक हाथ जोड़ मस्तकसे चरणोंमें दण्डवत् करके ३ न्याय के द्वा राजा धृतराष्ट्रको पूजके हाय बड़ा खेद है ऐसा बचन कहकर वार्तालाप करन प्रारम्भ किया ४ और कहनेलगा कि हे राजन्! मैं सञ्जय हूं क्या आप प्रसन्न से हैं और आपत्ति पाकर अपने अपराधों से आप विस्मरण तो नहीं होते हो विदुर, द्रोणाचार्य, भीष्मपितामह और केशवजी के महाउपकारी वा हितका वचनों को जो तुमने अङ्गीकार नहीं किया उनको स्मरण कर २ तो आप पी ड़ित नहीं होते हो ६ सभाके मध्यमें परशुराम, नारद और कण्वादिक मुनि के हितकारी वचनों को भी स्वीकार नहीं किया उसको स्मरण करके तो दु दुःखी नहींहोते हो ७ आपके हित करने में प्रवृत्त भीष्म, द्रोणाचार्य आदि मि को युद्धमें शत्रुओंके हाथसे मरेहुए स्मरण करके तो खेद नहीं करते हो ८ त तो दुःखसे महापीड़ित राजा धृतराष्ट्र बहुत लम्बी श्वास लेलेकर इस प्रकारसे हनेवाले सञ्जयसे बोले ९ कि हे सञ्जय! दिव्यअस्त्रोंके ज्ञाता भीष्मपितामह अ बड़े बाणप्रहारी द्रोणाचार्यके मरनेपर मेरा चित्त अत्यन्त पीड़ितहै १० और व देवताओंके अंशसे उत्पन्न होनेवाले महातेजस्वी पितामहने प्रतिदिन दशहज शस्त्रधारी रथियों को मारा ११ पाण्डव अर्जुनसे रक्षित द्रुपदके पुत्र शिखण के हाथसे मरेहुए उस भीष्मपितामहको सुनकर मेरा चित्त पीड्यमान हुआ

जिसके लिये भार्गव परशुरामजी ने महायुद्ध में परम अस्त्र दिया और बाल्यावस्था में उन्हीं साक्षात् परशुरामजीने अपने शिष्य करने के लिये अङ्गीकार किया १३ और जिसकी कृपा से महारथी राजपुत्र पाण्डवों ने और अन्य राजाओंने महारथीपने को पाया १४ उस सत्यसङ्कल्प महाधनुर्बाणधारी द्रोणाचार्यको धृष्टद्युम्न के हाथ से मराहुआ सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त पीड़ित होरहाहै १५ इस लोक में चारों प्रकार की विद्या और अस्त्रविद्या भीष्म और द्रोणाचार्य के सिवाय और किसी में नहीं है उन दोनों महात्माओंके मरनेसे मैं महाखेदित हूं १६ तीनोंलोकों में अस्त्रविद्या का ज्ञाता जिसके समान कोई नहीं ऐसे महात्मा द्रोणाचार्य को मृतक सुनकर मेरे पुत्रों ने क्या २ किया १७ महात्मा अर्जुन ने पराक्रम करके संसप्तकों की सेनाको मारकर यमलोक में पहुँचाया १८ बुद्धिमान् अश्वत्थामा के नारायणास्त्रके निष्फल होने और सेनाके भागनेपर मेरे पुत्रोंने क्या २ काम किया १९ मैं द्रोणाचार्य के मरनेपर सबको भगाहुआ वा शोकसमुद्रमें डूबाहुआ जीवनकी आशा से ऐसा चेष्टा करनेवाला देखता हूं जैसे कि समुद्र में नौकाके टूटजानेपर उसपर चढ़ेहुए मनुष्यों की चेष्टा होती है २० हे सञ्जय ! सेना के भागजाने पर दुर्योधन, कर्ण, भोजवंशीय कृतवर्मा, मद्रदेश का राजा शल्य, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और मेरे शेष बचेहुए पुत्रादि और समेत अन्यलोगोंके मुख का वर्ण कैसा होगया २१।२२ हे सञ्जय ! इस वृत्तान्त को और पाण्डव वा मेरे पुत्रोंके पराक्रम को यथार्थ जैसा हुआ वैसा मुझसे वर्णन करो २३ सञ्जय बोले हे श्रेष्ठ ! कौरवलोगों में आपके अपराधसे जो देखने में आया उसको सुनकर तुम खेद मत करो क्योंकि बुद्धिमान् मनुष्य होनहार विषय में दुःखी नहीं होते हैं २४ जैसा कि मनुष्य में सुखदुःखसम्बन्धी प्रयोजन होता है उसकी प्राप्ति वा अप्राप्ति में कोई बुद्धिमान् दुःखी नहीं होताहै २५ धृतराष्ट्रने कहा कि हे सञ्जय! इससे अधिक मुझको कोई पीड़ा नहीं है मैं उसको प्राचीन होनहार मानता हूं इससे तुम अपनी इच्छा के अनुसार वर्णन करो ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, बड़े बाणप्रहारी महातेजस्वी द्रोणाचार्य के मरनेपर आपके महारथी पुत्रों के मुख शोभा से रहित हुए और चित्त से व्याकुल होकर वह

सब अचेत भी होगये १ हे राजन् ! उस समय सब नीचा मुख करनेवाले शोच-ग्रस्त महापीड़ित उन शस्त्रधारियों ने परस्पर में वार्तालाप भी नहीं करी २ अनेक प्रकार से दुःख से पीड़ित आपकी सेनाओं को और उनलोगों को व्याकुलचित्त देखकर सबने स्वर्ग जानेकाही विचार किया ३ हे राजेन्द्र ! फिर युद्ध में द्रोणाचार्य को माराहुआ देखकर इन सबलोगों के रुधिर से भरेहुए शस्त्र हाथों से गिरपड़े ४ उस समय वह बँधे लटके और गिरेहुए शस्त्र ऐसे देखने में आये जैसे कि आकाश में नक्षत्र दिखाई देते हैं ५ इसके पीछे उस आपकी सेना को हटाहुआ पराक्रमहीन देखकर राजा दुर्योधन बोला ६ कि मैंने आपलोगों के पराक्रम में रक्षित होकर पाण्डवों से युद्धकरना प्रारम्भ किया ७ अब द्रोणाचार्य के मरने से वह सब सेना व्याकुलहुई सी दिखाई देती है और युद्ध में युद्धकर्ता लोग सबप्रकारसे मरते हैं ८ युद्धमें युद्ध करनेवाले की विजय और पराजय दोनों होती हैं इसमें क्या आश्चर्य है आपलोग सब ओर को मुख करके युद्ध करो ९ बाणविद्या में अद्वितीय दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता महाबली सूर्य के पुत्र महात्मा कर्ण को देखो १० कि युद्ध में जिसके पराक्रम को देखकर कुन्ती का पुत्र अल्पबुद्धि अर्जुन ऐसे भाग जाता है जैसे कि सिंह को देख छोटा मृग भग जाता है ११ जिसने दशहज़ार हाथी के समान बली भीमसेन को मानुषी युद्ध करके परास्त किया १२ और उसी कर्ण ने दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले शूर मायावी भयानक गर्जना करनेवाले घटोत्कच को अपनी अमोघ शक्ति से युद्ध में मारा १३ अब युद्ध में उस दुर्जय पराक्रमी सत्यसङ्कल्पी महा बुद्धिमान् के भुजाओं के बल को देखोगे १४ विष्णु के वा इन्द्र के समान अश्वत्थामा और कर्ण इन दोनों के पराक्रम को पाण्डवलोग देखेंगे १५ तुम सबलोग युद्ध में सब सेना समेत पाण्डवों के मारने को समर्थ हो फिर सब के साथ मिलकर कैसे समर्थ न होगे अब पराक्रमी और अस्त्रज्ञ तुमलोग परस्पर में देखोगे १६ सञ्जय बोले कि, हे निष्पाप ! आपके महाबली पुत्र ने अपने भाइयों को इस प्रकार से समझाकर कर्ण को सेनापति बनाया १७ हे राजन् ! युद्धदुर्मद महाबली कर्ण ने सेनापति होकर बड़ेशब्द से सिंहनादों को कर करके युद्ध करना प्रारम्भ किया १८ और सब सृञ्जय, पाञ्चाल, विदेह और केकयलोगों को विध्वंस करके युद्ध में अपने धनुष से ऐसी बाणों की वर्षा करी कि सबको व्याकुल कर

दिया १६ । २० फिर वह वेगवान् पाण्डव और पाञ्चाललोगों को पीड़ित करता युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारागया ॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसञ्जयवाक्यवर्णनेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि, हे महाराज ! अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र यह सुनकर दुर्योधन को मृतक केही समान मानताहुआ १ महाव्याकुलता से अचेत होकर हाथी के समान पृथ्वीपर गिरपड़ा उस राजा को अचेत होकर पृथ्वीपर गिरने से २ रनिवास में से स्त्रियों का बड़ा शोककारी शब्द हुआ उस शब्द से सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त होगई ३ दुःख शोक से पीड़ित अत्यन्त व्याकुलचित्त भरतवंशियों की स्त्रियां महाघोर शोकसागर में डूबकर रुदन करने लगीं ४ । ५ इसके पीछे सञ्जय ने उन शोक से मूर्च्छित नेत्रों से अश्रुपात डालनेवाली स्त्रियों को विश्वास देकर समझाया ६ जैसे कि केले के वृक्ष चारोंओर की वायु से कम्पायमान होते हैं इसी प्रकार वारंवार कँपतीहुई वह सब स्त्रियां विश्वासयुक्त हुईं ७ तब जल से कौरवों के सींचनेवाले विदुरजी ने भी उस बुद्धिरूपी नेत्र रखनेवाले राजा धृतराष्ट्र को विश्वास कराया ८ हे राजेन्द्र ! उनके वचनों से वह राजा धृतराष्ट्र बड़े धीरेपने से सचेत होकर उन स्त्रियों को देखके उन्मत्त के समान फिर मौन होगया ९ फिर वारंवार श्वास लेतेहुए धृतराष्ट्र ने बहुत समयतक ध्यान करके अपने पुत्रों की निन्दा करी और पाण्डवों की प्रशंसा करी १० फिर अपने और सौबल के पुत्र शकुनी की बुद्धि की निन्दा करताहुआ वारंवार काँपकर ध्यान को करके ११ मन को थांभकर धैर्यता से धृतराष्ट्र ने सञ्जय से पूछा कि १२ हे सञ्जय ! तुमने जो वचन कहा वह तो मैंने सुना परन्तु यह तो बताओ कि दुर्योधन तो यमपुर नहीं गया १३ सदैव विजयाभिलाषी मेरा पुत्र विजय से निराश होगया है हे सञ्जय ! इस कहीहुई कथा को फिर भी मुख्यता से वर्णन करो १४ हे जनमेजय ! धृतराष्ट्र के इस वचन को सुनकर सञ्जय बोले कि हे राजन् ! सूर्य का पुत्र महारथी कर्ण बड़े बाणप्रहारी शरीर के त्यागने वाले सूत का पुत्र अपने सब भाइयोंसमेत मारागया और यशस्वी पाण्डव के हाथ से आपका पुत्र दुश्शासन भी मारागया और उसी युद्ध में भीमसेन ने उसके रुधिर को भी पान किया ॥ १५ । १६ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिधृतराष्ट्रशोकवर्णनेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि, हे जनमेजय! शोक से महाव्याकुल अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र इस बात को सुनकर सञ्जय से बोला १ हे तात! थोड़े जीवनवाले मेरे पुत्र की दुर्बुद्धि से कर्ण के मरण को सुनकर मेरा प्रबल शोक मेरे अङ्गों को काटेडालता है सो हे सूत! मुझ दुःख से पार होने के इच्छावान् के सन्देहों को निवृत्त करो २ अब कौरव और सृञ्जयों में कौन २ जीवते बाकी हैं और कौन २ मरगये ३ सञ्जय बोले कि हे राजन्! महाप्रतापी अजेय भीष्मजी दश दिन में पाण्डवों के एक अरब शूरवीरों को मारकर मारेगये ४ इसी प्रकार बड़े धनुर्धारी दुराधर्ष सुवर्ण के रथ पर चढ़नेवाले द्रोणाचार्य युद्ध में पाञ्चालों के असंख्य रथ समूहों को मारकर आप भी मारेगये ५ महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य के मरने से शेष बचीहुई सेना के अर्धभाग को मारकर सूर्य का पुत्र कर्ण भी मारागया ६ और महाबली राजपुत्र विविंशति भी आनर्तदेशीय सैकड़ों शूरवीरों को मारकर युद्ध में मारागया ७ इसी प्रकार आपका पुत्र महाबली विकर्ण भी घोड़े और शस्त्रों के नाश होजाने से क्षत्रियवर्ण को स्मरणकरता शत्रुओं के सम्मुख नियत हुआ ८ दुर्योधन के कियेहुए घोररूप अनेक क्लेशों को और अपनी प्रतिज्ञा के स्मरण करनेवाले भीमसेन को स्मरण करताहुआ उसी भीमसेन के हाथ से युद्ध में मारागया ९ और अवन्तिदेश के राजा राजकुमार विन्द, अनुविन्द बड़े २ कठिनकर्मों को करके यमलोक को गये १० सिन्धु के देशों में बड़े उत्तम जो दशदेश वीर जयद्रथ के स्वाधीन हैं और वह जयद्रथ आपके आधीन होकर आपका आज्ञावर्ती था ११ वह महापराक्रमी जयद्रथ अर्जुन के हाथ से विजयहुआ तीक्ष्णबाणों से ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओं को विजय करके और इसीप्रकार दुर्योधन का पुत्र महावेगवान् युद्धमें वीरों का मर्दन करनेवाला और पिनाकीशास्त्र का ज्ञाता राजकुमार लक्ष्मण अभिमन्यु के हाथ से मारा गया १२।१३ इसी प्रकार दुश्शासन का पुत्र बाहुशाली रण में उसी उत्कृष्ट अभिमन्यु के साथ लड़कर मृत्यु के वश हुआ १४ सागर और अनूपदेशवासी किरातों का राजा धर्मात्मा देवराज इन्द्र का प्यारा और अङ्गीकार किया हुआ मित्र १५ सदैव क्षत्रियधर्म में प्रीति रखनेवाला राजा भगदत्त अर्जुन के पराक्रम

से यमलोक में पहुँचायागया १६ हे राजन्! इसीप्रकार कौरववंशीय बड़ायशी शूरवीर भूरिश्रवा युद्धमें सात्यकीके हाथसे मारागया १७ और क्षत्रियोंके भारके धारण करनेवाले श्रुतायु और अम्बष्ठ भी युद्धमें निर्भयतासे घूमतेहुए अर्जुनके हाथसे मारेगये १८ हे महाराज! सदैव क्रोधरूप असह्य युद्धमें दुर्मद आपका पुत्र दुश्शासन भीमसेनके हाथसे मारागया १९ और जिसकी हाथियों की सेना अपूर्व और असंख्य थी वह सुदक्षिण खड्गके युद्धमें अर्जुनके हाथ से मारागया २० कोशलदेशियों का राजा बड़े२ अङ्गीकृत शत्रुओं को मारकर अभिमन्युसे महापराक्रम करने के द्वारा यमलोकवासी हुआ २१ शत्रुओं के भय को बढ़ानेवाला महाशूर जयद्रथ का पुत्र पृथ्वीपर ढाल तरवार का रखनेवाला श्रीमान् अर्जुनके हाथ से मारागया २२ और आपका पुत्र चित्रसेन महारथी भीमसेन से अच्छी रीति से युद्ध को करके उसी के हाथ से मारागया २३ युद्ध में कर्ण की समान बड़ा तेजस्वी अस्त्रों को शीघ्रता से चलानेवाला दृढ़ पराक्रमी वृषसेन २४ बड़ा पराक्रम करके अर्जुन के हाथ से कालवश हुआ अभिमन्यु के वध को सुनकर अपनी प्रतिज्ञाको करके जो राजा सदैव पाण्डवोंसे शत्रुता करता था वह श्रुतायु शत्रुता को सुनाकर अर्जुन के हाथ से मारागया २५ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! सहदेव ने अपने मामा शल्य के पुत्र पराक्रमी भाई रुक्मरथ नाम को युद्ध में मारा २६।२७ वृद्ध राजा भगीरथ और बृहच्छत्र केकय यह दोनों बड़े बली महाप्रतापी भी मारेगये २८ हे राजन्! बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान् भगदत्त का पुत्र युद्ध में बाज़ की समान घूमनेवाले नकुल के हाथ से मारागया २९ इसीप्रकार महाबली शस्त्रधारी आपके पितामह बाह्लीक अपने बाह्लीकलोगों समेत भीमसेन के हाथ से मृत्युवश हुए ३० और जरासन्ध का पुत्र महाबली जयत्सेन मगध का राजा युद्ध में महात्मा अभिमन्यु के हाथ से मारागया ३१ हे राजन्! आपके पुत्र महारथी दुर्मुख और दुस्सह शूरों में प्रशंसनीय भीमसेन की गदा से मारेगये ३२ और महारथी दुर्मर्षण, दुर्विष और महारथी दुर्जय यह तीनों कठिनकर्मोंको करके यमके स्थानको गये ३३ और युद्धमें दुर्मद कलिङ्ग और वृषक दोनों भाई कठिन कर्मी होकर यमलोकको सिधारे ३४ आपका शूरवीर पराक्रमी मन्त्री वृषवर्मा भीमसेन के हाथसे काल के वशीभूत हुआ ३५ इसीप्रकार दशहज़ार हाथी के समान पराक्रमी महाराज पौरव युद्धमें बड़ेपराक्रमी अर्जुनके हाथसे मारागया ३६

और प्रहार करनेवाले दो हज़ार बशातय और पराक्रमी शूरसेन यह सब युद्ध में मारेगये ३७ कवचधारी प्रहारकरनेवाले युद्ध में उद्भट महारथी अभीषाह, शिवय यह दोनों कलिङ्गदेशियों समेत मारेगये ३८ जोकि गोकुल में सदैव बढ़ेहुए युद्ध में महाक्रुद्धरूप युद्ध से मुख न मोड़नेवाले वीर थे वह भी अर्जुन के हाथ से मारेगये ३९ हज़ारों संसप्तकों समेत घूमनेवाले जो गोपाल थे वह सब भी अर्जुन के हाथ से यमलोक को गये ४० हे महाराज ! आपके निमित्त बड़ा पराक्रम करनेवाले आपके साले वृषक और अचल भी अर्जुन के हाथ से मारे गये ४१ इसी रीतिसे नाम और कर्म से उग्रकर्मी बड़ा धनुर्धारी महाबाहु राजा शाल्व भीमसेन के हाथ से मारागया ४२ हे राजन् ! मित्र के निमित्त युद्ध में पराक्रम करनेवाले ओघवान् और बृहन्त दोनों एकसाथही यमलोकको गये ४३ इसीरीति से महाधनुर्धर रथियों में श्रेष्ठ क्षेमधूर्ति भी युद्ध में भीमसेन के हाथकी गदा से मारेगये ४४ ऐसेही बड़ाधनुषधारी महाबली जलसिन्धु युद्ध में कठिन कर्मों को करके बड़े शब्दों को करताहुआ सात्यकी के हाथ से मारागया ४५ गधों का रथ रखनेवाला राक्षसों का राजा अलम्बुष पराक्रम करके घटोत्कच के हाथसे यमलोकको पहुँचा ४६ कर्ण के पुत्र और भाई महारथी और सब केकय लोग भी अर्जुन के हाथ से मारेगये ४७ बड़े कठिन कर्मी मालव, मद्रक और द्रविड़, यौधेय, ललित्थ, क्षुद्रक, उशीनर ४८ मावेल्लक, तुण्डिकेर, सावित्रीके पुत्र और पश्चिमोत्तरीय वा पूर्वीय, दक्षिणीय राजा लोग ४९ पत्तियों के और घोड़ों के लाखों समूह रथ हाथियों के झुण्डों समेत मारडाले ५० ध्वजा, शस्त्र, कवच और वस्त्रों से अलंकृत शूरवीर जो बहुतकाल से बुद्धिमान् लोगों के द्वारा सब बातों में कुशल और पोषणकियेगये ५१ वह सुगमकर्मी युद्ध में अर्जुनके हाथ से मारेगये इसी प्रकार अन्य सेना के लोग जो परस्पर मारने की इच्छा रखते थे मारेगये ५२ हे राजन् ! इनके विशेष बहुतसे अन्य हज़ारों राजालोग अपनी सेनाओं समेत युद्ध में मारेगये ५३ इसरीति से कर्ण और अर्जुनकी सम्मुखता में यह ऐसा घोर नाश हुआ जैसे कि इन्द्र के हाथ वृत्रासुर और श्रीरामचन्द्रजी के हाथ से रावण मारागया ५४ और जैसे श्रीकृष्णजी के हाथ से नरक और मुरनाम दैत्य युद्ध में मारेगये और जैसे श्रीभार्गव परशुरामजी के हाथ से राजा कार्त्तवीर्य अर्थात् सहस्राबाहु मारागया ५५ इसी प्रकार वह युद्ध में दुर्मद शूर

वीर कर्ण अपनी जाति और बान्धवोंसमेत युद्ध में तीनोंलोकों के मोहन करने वाले महाघोर संग्राम को करके मारागया ५६ जैसे स्वामिकार्त्तिकजी ने महिष को रुद्रजी ने अन्धक को मारा था उसी प्रकार युद्ध में दुर्मद प्रहारकरनेवालों में श्रेष्ठ द्वैरथकर्ण अर्जुन के साथ युद्ध करके मन्त्री और बान्धवों समेत मारागया जिससे धृतराष्ट्रके पुत्रों की विजय की आशा और शत्रुता का मुख उत्पन्न हुआ था ५७। ५८ हे राजन्! पाण्डवलोग उसदोष से निवृत्तहुए जो पूर्व समय में भलाई चाहनेवाले बान्धवोंके समझानेसे तुम नहीं समझे ५९ इसी कारण राज्य के चाहनेवाले पुत्रों की वृद्धि के चाहनेवाले तुमने बड़ानाशकारी यह महाघोर दुःखपाया और जो दुष्कर्म किये उनका यह योग्य फल पाया ॥ ६० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे तात, सञ्जय! युद्ध में पाण्डवों के हाथ से मारेहुए मेरे शूरवीर लोग और हमारे वर्णन कियेहुए शूरवीरों के हाथ से मरेहुए पाण्डवों के शूरवीरों का वर्णनकरो १ सञ्जय बोले युद्धमें बड़ेपराक्रमी बलवान् कुन्तदेशीय मन्त्री और बान्धवों समेत श्रीगाङ्गेय भीष्मजी के हाथसे मारे गये २ और नारायण वा बालभद्रनाम अन्य शूरवीरलोग जो बड़े भगवद्भक्त थे युद्ध में वह सबभी वीर भीष्मके हाथसे मारेगये ३ और वह सत्यजित् जोकि बड़ाबली युद्ध में सत्यसङ्कल्प अर्जुन के समान था लड़ाई में द्रोणाचार्य के हाथसे मारागया ४ और युद्ध में कुशल बड़े धनुषधारी सब पाञ्चालदेशीयलोग युद्ध में सम्मुख हो कर द्रोणाचार्य के हाथ से यमलोकको गये ५ इसीप्रकार मित्र के लिये पराक्रम करनेवाले राजा विराट और द्रुपद दोनों वृद्धभी युद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे मारे गये ६ हे समर्थ, धृतराष्ट्र! जो अर्जुन केशवजी और बलदेवजी से भी अजेय महारथियों में श्रेष्ठ मन्दमुसकान करनेवाला बालक अभिमन्यु शत्रुओं के बड़े भारी नाशको करके मुख्य उत्तमरथी जो अर्जुन के पराजय करने में असमर्थ थे उन छः महारथियोंने घेरकर मारडाला हे महाराज! क्षत्रियधर्म में वर्तमान रथसे हीन शत्रुहन्ता वीर अभिमन्यु को युद्धमें दुश्शासनके पुत्र ने मारा शत्रु हननें वाली सेनासंयुक्त राजाअम्बष्ट का पुत्र श्रीमान् मित्र के निमित्त पराक्रम करता हुआ युद्ध में दुर्योधनके पुत्र वीर लक्ष्मणको पाकर ७।११ और बड़ेभारी नाश

को करके यमलोकको गया बड़ाधनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद बृहन्त दुश्शासन के साथ पराक्रम करके यमलोक को सिधारा और युद्ध में दुर्मद राजा मणिमान् और दण्डधार १२ यह दोनों मित्र के निमित्त पराक्रम करनेवाले युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथ से मारेगये और महारथी अंशुमान् और भोजराज सेनासमेत १३। १४ पराक्रम करके द्रोणाचार्य के हाथ से कालवश हुए और पुत्र समेत १५ सामुद्र और चित्रसेन समुद्रसेन के पराक्रम से यमलोक को पहुँचाया गया अनूपवासी राजा नील और पराक्रमी व्याघ्रदत्त १६ यह दोनों अश्वत्थामा और विकर्ण के हाथ से यमपुर को गये चित्रायुध चित्रयोधी यह दोनों भी बड़े नाश को करके १७ और चित्रमार्ग से पराक्रम करतेहुए युद्ध में कर्ण के हाथ से मारेगये युद्ध में भीमसेन के समान और केकयदेशीय शूरवीरों से संयुक्त १८ महापराक्रम करके अपने भाई कैकेयके हाथसे मारागया हे महाराज! गदा से युद्ध करनेवाला पर्वतनिवासी महाप्रतापवान् तेजस्वी १९ आपके पुत्र दुर्मुख के हाथ से मारागया ग्रहों के समान प्रकाशित नरोत्तम रोचमान नाम दोनों भाई २० एकबार में द्रोणाचार्य के बाणों से स्वर्ग को पठायेगये हे राजन्! सम्मुख युद्धकरनेवाले पराक्रमी राजालोग २१ कठिनकर्म को करके यमके लोकों को सिधारे हे राजन्! सम्मुख युद्ध करनेवाले सव्यसाची अर्जुन के मामा पुरजित और कुन्तभोज युद्ध में पराजय होकर द्रोणाचार्य के बाणों से यम के लोकों को प्राप्तहुए २२ अभिभूनाम काशी का राजा काशी के अनेक शूरवीरों समेत युद्ध में वसुदान के पुत्र के हाथ से मारागया और बड़ा तेजस्वी युधामन्यु और महापराक्रमी उत्तमौजा २३। २४ युद्ध में सैकड़ों शूरवीरों को मारकर हमारे वीरों के हाथ से मारेगये और पाञ्चालदेशीय मित्रवर्मा और क्षत्रवर्मा यह दोनों महाधनुषधारी द्रोणाचार्य के हाथ से यमलोक को भेजे गये २५। २६ शूरवीरों में प्रधान शिखण्डी का पुत्र क्षत्रदेव आपके पौत्र लक्ष्मण के हाथ से मारागया चित्रवर्मा और सुचित्र महारथी महाबली दोनों पिता पुत्र युद्ध में घूमतेहुए महावीर द्रोणाचार्य के हाथ से मारेगये २७ हे महाराज! जैसे कि पर्व में समुद्र शान्ति को पाता है उसी प्रकार वार्धक्षेमी ने शस्त्रों के नाश होनेपर परमशान्ति को पाया २८ हे राजन्! शस्त्रधारी युद्ध में श्रेष्ठ सेनाबिन्दु का पुत्र कौरव्येन्द्र बाह्लीक के हाथ से मारागया और चन्देरीदेशियों

में अत्यन्त उत्तम रथी धृष्टकेतु २९। ३० कठिन कर्म को करके यमलोक को गया इसी प्रकार बड़ा वीर सत्यधृती युद्ध में बहुतों को नष्ट करके ३१ पाण्डवों के निमित्त पराक्रम करनेवाला यम के लोक को गया वह कौरवों में श्रेष्ठ सेनाबिन्दु भी युद्ध में अनेकों को मारकर कालवश हुआ ३२ फिर शिशुपाल का पुत्र राजा सुकेतु युद्ध में कठिनकर्मी होकर द्रोणाचार्य के हाथ से मारागया ३३ इसरीति से पराक्रमी सत्यधृती वीर मदिराश्व और महाबली सूर्यदत्त द्रोणाचार्य के शायकों से मारेगये ३४ और युद्धकर्ता पराक्रमी श्रेणीमान् कठिनकर्म करके मारागया ३५ इसी प्रकार युद्ध में पराक्रमी परमअस्त्रज्ञ राजा मगध भी भीष्म जी के हाथ से मारागया और वह शत्रुहन्ता अब पड़ाहुआ सोता है ३६ और विराट के पुत्र महारथी शङ्ख और उत्तर दोनों बड़े कर्म को करके यमलोक को सिधारे ३७ और वसुवान् युद्ध में कठिन कर्म को करताहुआ पराक्रम करके द्रोणाचार्य के हाथ से मारागया ३८ हे राजन्! जिसको तुम पूछते हो उस द्रोणाचार्य ने पराक्रम करके पाण्डवों के अनेक महारथी मारे॥ ३९॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

सातवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! प्रधानपुरुषों का नाश होजाने से उस मरने से शेष बचीहुई अपनी सेना को नहीं देखता हूं १ मेरे प्रयोजन से मरनेवाले उन दोनों महाधनुषधारी अतुलपराक्रमी कौरवों में श्रेष्ठ भीष्म और द्रोणाचार्य को सुनकर जीवन को मैं नहीं चाहता हूं २ मैं युद्ध को शोभित करनेवाले मरेहुए कर्ण को नहीं शोचता हूं जिसकी भुजाओं का पराक्रम दशहज़ार हाथी का था ३ हे सञ्जय! इस हेतु से जैसे कि मेरी सेना के मरेहुओं का तुमने वर्णन किया वैसेही यह भी कहो कि मेरी सेना में कौन २ जीवता है ४ अब आपके वर्णन किये हुए इन बड़े २ शूरवीरों के मरजाने से शेष बचे हुए भी मरों के सदृश मुझको जानपड़ते हैं ५ सञ्जय बोले कि हे राजन्! ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने जिसको अपने उत्तम दिव्य अस्त्र समर्पण कर दिये ६ वह महारथी कर्मकर्ता हस्तलाघव करनेवाला दृढ़ धनुष बाणों से युक्त पराक्रमी वेगवान् तेरे निमित्त युद्धाभिलाषी अश्वत्थामा अचल होकर विद्यमान है ७ यह आनर्तदेशवासी हार्दिक्य का पुत्र यादवों में श्रेष्ठ महारथी

भोजवंशीय कृतवर्मा आपकेही निमित्त युद्ध की इच्छा करनेवाला अभी विद्यमान है ८ युद्ध में दुराधर्ष आपके पुत्रों का पूर्व सेनापति शल्य जो अपना वचन सत्य करने को अपने भानजे पाण्डवों को त्यागकर ६ जिसने युधिष्ठिर के आगे युद्ध में कर्ण के पराक्रमके नाश करने की प्रतिज्ञा को पूर्ण किया वह अजेय इन्द्र के समान पराक्रमी आपके निमित्त लड़ने की इच्छा करनेवाला नियत है १० और अपने कुलसमेत राजा गान्धार, आजानेय, सिन्धुदेशीय, पर्वतीय, काम्बोजदेशीय, सिंधी, वनायुज, नदीज इत्यादि ११ अनेक प्रकार के घोड़ों समेत तेरे लिये युद्धाकांक्षी वर्तमान हैं १२ हे कौरवेन्द्र! राजा कैकेय का पुत्र महारथी उत्तम घोड़ों समेत पताकायुक्त रथपर चढ़कर आपके निमित्त युद्ध का अभिलाषी अभी वर्तमानहै १३ इसीप्रकार कौरवोंमें बड़ावीर पुरमित्र नाम आपका पुत्र अग्नि और सूर्य के वर्ण रथपर सवार होकर ऐसा वर्तमानहै जैसे कि बादलोंसे रहितस्वच्छ आकाशमें सूर्य प्रकाशमान होताहै १४ भाइयों में नियत दुर्योधन सिंहके समान स्वभाववाला युद्धाभिलाषी सुवर्णजटित रथ की सवारीमें नियतहै १५ वह पुरुषोंमें बड़ावीर सुवर्ण जटित कवचधारी कमल के समान प्रकाशित निर्धूम अग्निके समान तुल्य राजाओंमें ऐसा शोभायमान हुआ १६ जैसे कि बादलों में सूर्यका प्रकाश होताहै इसीप्रकार प्रसन्नचित्त युद्धाभिलाषी ढाल, तलवार धारणकिये आपके पुत्र सुषेण, चित्रसेन और सत्यसेन यह तीनों नियतहैं १७ हे भरतर्षभ! शीलवान् उग्रशस्त्रधारी शीघ्रभोजी राजकुमार जरासन्धका प्रथम पुत्र अदृढ़ चित्रायुध, श्रुतवर्मा, जय, शल्य, सत्यव्रत, दुःशल यह सब नरोत्तम सेनासमेत नियत हैं १८ और प्रत्येक युद्धमें शत्रुओं का हन्ता शूरों में प्रतिष्ठित कैतवों का राजा राजकुमार रथ घुड़चढ़े हाथी और पत्तियों समेत चढ़ाई करनेवाले १९ और आपके निमित्त युद्धाभिलाषी वीर श्रुतायु, धृतायु, चित्राङ्गद और चित्रसेनभी अभी युद्धमें नियत हैं २० यह सब युद्धाभिलाषी प्रहारकर्ता प्रतिष्ठावान् सत्यप्रतिज्ञ नरोत्तम नियतहैं और कर्णका पुत्र सत्यप्रतिज्ञ युद्धकरनेका उत्सुक भी अभी नियतहै २१ और कर्णके दूसरे दो पुत्र उत्तम शस्त्रधारी हस्त लाघवीय महाबली हैं वह आपके निमित्त युद्धाभिलाषी वीरों के बँधेहुए व्यूहमें वर्तमानहैं वहभी साधारण अल्प पराक्रमियों से कठिनतापूर्वक विजयहोनेवाले हैं २२ हे राजन्! इन अनेक असंख्य प्रभाववाले

मुख्य२ वीरोंसे संयुक्त कौरवोंका राजा दुर्योधन हाथियोंके समूहों के बीच महेन्द्र के समान विजय करनेके निमित्त उपस्थितहै २३ धृतराष्ट्र बोले कि, हमारे और पाण्डवोंके जो शूरवीर शेष बचेहुए जीवतेहैं उनका तुमने वर्णनकिया इसको सुनकर मुझको बड़ाशोक होताहै परन्तु जो होनहारहै वह मिट नहीं सक्ती २४ वैशम्पायनजी बोले कि इसरीति से वचनों को कहताहुआ अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र अपनी उस सेनाको जिसके बड़े २ वीर मारेगये और नाशको प्राप्तहुए उसमेंसे कुछ शेष बचेहुए सुनकर २५ दुःख से व्याकुल होकर महामोहके वशीभूतहुआ और मोहित होकर बोला कि हे सञ्जय ! एक मुहूर्त ठहरो २६ हे तात ! इस बड़ी अप्रिय वार्ता को सुनकर मेरा चित्त व्याकुल है और मैं अङ्गों से भी शिथिल होगयाहूं २७ वह अम्बिकासुत धृतराष्ट्र ऐसे वचन को कहकर भ्रान्ति से युक्त होगया ॥ २८ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ, वैशम्पायनजी ! युद्धमें कर्णको मृतक और पुत्रोंको नियत वर्तमान सुनकर उस महाव्याकुल राजा धृतराष्ट्रने क्या कहा १ पुत्रकी आपत्तियों से उत्पन्न होनेवाले महाकष्टको प्राप्त होकर जो २ वर्णन किया उस को मुझसे व्यौरेवार कहिये २ वैशम्पायन बोले हे महाराज ! उस कर्णके मरनेको सुनकर जोकि श्रद्धाके अयोग्य और जीवों के अपूर्व मोहका करनेवाला महाभयानक था जिसप्रकार कि मेरुपर्वतका चलायमान होना ३ और जैसे भार्गव परशुराम जीका अनुचितमोह और जैसे कि शत्रुओंके भयकारी इन्द्रदेवताकी पराजय ४ और जैसे महातेजस्वी सूर्य का स्वर्ग से पृथ्वीपर गिरना और जैसे अविनाशी समुद्रकाजल सूखजाना बुद्धिसे बाहर अर्थात् असम्भवहै ५ और जैसे पृथ्वी और आकाशकी नाशकारक अपूर्ववायु और जैसे शुभाशुभ दोनोंकर्मोंकी निष्फलता होय ६ उसीप्रकार राजाधृतराष्ट्र युद्ध में कर्ण के मरजाने को बुद्धिसे विचारकर और सेना नहीं है यह निश्चयकरके ७ दूसरे जीवोंका भी नाश होगा यह शोच कर शोकाग्निसे जलताहुआ ८ चित्तसे कम्पायमान ढीलेअङ्ग महादुःखी लम्बी दुःखकी श्वासें लेनेवाला होकर हाय२ शब्द को कहता विलाप करनेलगा ९ धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय ! सिंह और हाथी के समान पराक्रमी वृषभ के से स्कन्ध

वाला शीघ्रगामी महातेजस्वी शूरवीर कर्ण घूमने लगा १० जो उत्तम वज्रके समान दृढ़देह महातरुण अपने शत्रु महेन्द्र के भी युद्ध में बली बर्द के समान नहीं लौटता ११ और युद्धमें जिसके धनुषकी टंकोरको सुनकर और बाणोंकी वर्षा को देखकर युद्धमें रथ घोड़े हाथी और मनुष्य नहीं ठहरसक्ते थे १२ और दुर्योधनने शत्रुओंके विजयकी इच्छासे जिस महाबाहुकी शरण लेकर पाण्डवों से शत्रुताकरी १३ वह असह्य पराक्रमी रथियों में श्रेष्ठ पुरुषोत्तम कर्ण युद्ध में अर्जुनके हाथसे कैसे मारागया १४ जिस अहङ्कारीने अपनेही भुजबलसे श्रीकृष्ण अर्जुन वा यादव और अन्य किसी क्षत्रियको ध्यान नहीं किया अर्थात् किसी को कुछ माल नहीं जाना १५ अर्थात् यही कहताथा कि मैं अकेलाही युद्ध में उनअजेय शार्ङ्गधन्वा और गाण्डीवधनुषधारीको एकसाथही उनको दिव्यरथसे गिराऊंगा यह अपनी प्रतिज्ञा उस लोभसे विस्मरण चिन्तासे अधोमुख राज्यके लोभी रोगग्रस्त दुर्योधनसे वारंवार वर्णनकरी १६।१७ और उसकर्णने पूर्वसमय में काम्बोजदेशीय, अवन्तदेशीय, कैकयदेशीय, गान्धार, मद्रक, मत्स्य, त्रिगर्त तगण १८ शक, पाञ्चाल, विदेह, काशी, कोशल, सुम्हल, अङ्ग, वङ्ग, निषाद, पुण्ड्रचारक १९ वत्स, कलिङ्ग, तरलअश्मक और ऋषिक देशियों को भी युद्ध में जीतकर बलिभृत् अर्थात् कर देनेवाला करदिया २० वह रथियोंमें श्रेष्ठ दिव्य अस्त्रोंका ज्ञाता महातेजस्वी धर्मरूप परम अस्त्रज्ञ अत्यन्त तीक्ष्णधार कङ्कपक्ष से युक्त सैकड़ों बाणोंकी वर्षासे दुर्योधनकी वृद्धि के लिये सेना का रक्षक सूर्य का पुत्र कर्ण कैसे २ युद्धोंको करके पाण्डव अर्जुनके हाथसे मारागया २१।२२ और जैसे कि देवताओं में इन्द्र वर्षा करनेवाला है उसीप्रकार कर्ण भी धनकी वृष्टिसे मनुष्योंपर वर्षा करनेवाला है इन दोनों के सिवाय लोकमें किसी तीसरे वर्षाकरनेवालेको नहींसुनते हैं जैसेघोड़ोंमें उच्चैश्श्रवा राजाओंमें कुबेर २३।२४ देवताओं में महेन्द्र उत्तमहैं इसीप्रकार शस्त्रप्रहार करने में पृथ्वीपर कर्ण सब से उत्तम है ऐसे समर्थ पराक्रम से शोभित शूरवीर राजाओं से अजेय कर्ण ने २५ दुर्योधनकी वृद्धिकेलिये सम्पूर्ण पृथ्वीको विजयकिया २६ और जिसको प्राप्तहो कर मगधके राजा जरासन्धने यादव और कौरवोंके सिवाय अन्य सब राजाओं को आधीनकरलिया उसकर्णको द्वैरथ युद्धमें अर्जुनके हाथसे मराहुआ सुनकर मैं शोकसमुद्रमें ऐसे डूबरहाहूं जैसे कि समुद्रमें टूटी नौका डूबती है २७ उसधन

की वृष्टि करनेवाले और रथियोंमें श्रेष्ठ कर्णको द्वैरथयुद्ध में मराहुआ सुनकर २८ में शोकसमुद्र में ऐसे डूबनेको होरहा हूं जैसे कि समुद्र में विना नौका के मनुष्य होताहै हे सञ्जय ! जो मैं ऐसे२ दुःखों से भी नहीं मरूंगा २९ तो निश्चयकरके मेरा हृदय वज्रसे भी कठोर शोक चिन्ता से फटजाने के योग्य है और हे सूत, सञ्जय ! ज्ञातिवाले और मित्रोंकी इस पराजय को सुनकर ३० मेरे सिवाय कौनसा पुरुष है जो प्राणों को नहीं त्यागकरे मैं विषखाना अग्नि में प्रवेशहोना वा पर्वत के ऊपर से गिरना चाहता हूं परन्तु मैं इन कठिन दुःखों के सहनेको समर्थ नहीं होसक्ता ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिधृतराष्ट्रवाक्येऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, अब सन्तलोग तुमको लक्ष्मीसे, कुलसे, यशसे, तपसे और शास्त्रज्ञतासे नहुषके पुत्र ययातिके समान मानते हैं १ हे राजन् ! शास्त्रमें तुम महर्षि के समान कृतकृत्य हो आप अपने को सावधान करो और व्याकुलता को त्यागो २ धृतराष्ट्र बोले मैं दैवको श्रेष्ठ मानताहूं निरर्थक उपायकरनेको धिक्कार है जहां कि शालवृक्ष के समान उन्नत महाबली कर्ण युद्ध में मारागया ३ वह महारथी युधिष्ठिर की सेना और पाञ्चालों के रथसमूहों को मारकर और बाणों की वर्षा से सब दिशाओं को सन्तप्त करताहुआ ४ जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों को मोहित करता है उसी प्रकार युद्ध में पाण्डवों को मोहित करके इस प्रकार से मृतक होकर सोता है जैसे कि वायु से टूटा हुआ वृक्ष पृथ्वीपर पड़ा होताहै ५ मैं शोकसमुद्र के अन्त को नहीं देखता हूं मेरी चिन्ता की वृद्धि और मरने की इच्छा भी उत्पन्न होती है ६ हे सञ्जय ! मैं कर्ण के मरनेको और अर्जुन की विजयको सुनकर कर्ण के मारेजाने को श्रद्धा विश्वाससे अयोग्य जानता हूं ७ निश्चय करके मेरा हृदय वज्र के समान दुःख से फटनेवाला है जो पुरुषोत्तम कर्ण को मृतक सुनकर भी नहीं फटताहै ८ पूर्वसमय में देवताओं ने मेरी आयु बहुतबड़ी विचारकरीहै इसहेतुसे कि कर्णकोभी मृतक सुनकर अभी पृथ्वी पर महादुःखी जीवताहुआ वर्तमान हूं ९ हे सञ्जय ! मुझ सुहृदजनों से रहित के इस जीवनको धिक्कारहै जिससे कि मैंने इस दुर्दशाको पाया १० ...बुद्धि सबके शोच के योग्य होकर दुःखी रहूंगा और पूर्वकाल में सबलोक में मान्य

होकर ११ शत्रुओं से तुच्छ कियाहुआ मैं कैसे जीवनको समर्थ हूंगा हे सूत, सञ्जय ! मैंने भीष्म द्रोणाचार्य के मरणसे उत्पन्न होनेवाले शोकसे महादुःखदायी आपत्ति को पाया है १२ युद्ध में कर्ण के मरनेपर भीष्म द्रोणाचार्य और महात्मा कर्ण के मरने से मैं शेष बचीहुई सेना को नहीं देखता हूं १३ क्योंकि वह शूरवीर कर्ण मेरे पुत्रों को युद्धरूपी नदी में नौकारूप होकर वीरों की लड़ाई में अनेक शायकों को बरसाता हुआ मारागया १४ उस पुरुषोत्तम के विना मेरा जीवन वृथा है निश्चय करके शायकों से पीड़ित होकर अतिरथी कर्ण रथ से ऐसे गिरपड़ा १५ जैसे कि वज्र के पात से पर्वत का टूटाहुआ शिखर पृथ्वीपर गिरता है निश्चय करके वह रुधिर में भराहुआ पृथ्वी को शोभित करके ऐसा सोता है जैसे कि मतवाले हाथी से गिरायाहुआ हाथी होता है यही धृतराष्ट्र के पुत्र का बल था जिससे कि पाण्डवों को बड़ा भय था १६ । १७ वह धनुषधारियों का ध्वजारूप कर्ण अर्जुन के हाथ से मारागया हाय वह धनुषधारी मित्रों का निर्भय करनेवाला वीर कर्ण मराहुआ ऐसा सोता है १८ जैसे कि देवताओं के इन्द्र का घात कियाहुआ पर्वत होता है जैसे कि पंगु मनुष्य का मार्ग चलना और कङ्गाल निर्धन को धन की इच्छा करना वृथा है १९ इसी प्रकार दुर्योधन के मन की इच्छा कठिनता से प्राप्तहोने के योग्य है जैसे कि जल के अम्बुकण श्वास के दुःख से उल्लंघन के योग्य है अहङ्कारी नीच दुःखी मन और पराक्रमहीन २० । २१ क्या मेरा पुत्र दुश्शासन भी मारागया हे तात ! क्या उसने युद्ध में भयकारी कर्मों को नहीं किया २२ जैसे कि अन्य क्षत्रिय मारेगये उसी प्रकार कहीं शूरवीर दुर्योधन तो नहीं मारागया युधिष्ठिर सदैव कहतारहा कि युद्ध मत करो २३ परन्तु दुर्योधन ने उसको ऐसे नहीं स्वीकार किया जैसे कि अज्ञान मनुष्य नीरोग करनेवाली ओषधी को नहीं अङ्गीकार करता है बाणशय्या पर सोनेवाले महात्मा भीष्मजीने जल की इच्छा करी २४ तब उस अर्जुन ने पृथ्वी के तल को तोड़ा उस अर्जुन के हाथ से उत्पन्नहुई जलधाराको देखकर २५ उस महाबाहु ने कहा कि हे तात ! पाण्डवों के साथ सन्धिकर निश्चयकरके सन्धिसे सुख होगा और तुम्हारा युद्ध मेरेही अन्ततक होय २६ तुम सजातियों समेत प्रीतिपूर्वक पृथ्वी को भोगो परन्तु उसने न माना और उसके वचन को शोचता है २७ हे सञ्जय ! वह दूरंदेशीय वचन अब आगे

दिखाई देते हैं और मैं मन्त्री वा पुत्रों से रहित हुआ २८ और द्यूतखेलने से ऐसे बन्धन में पड़ा जैसे कि परकैंच पक्षी होताहै हे सञ्जय ! जैसे कि अत्यन्त प्रसन्न बालक पक्षीको पकड़कर पक्ष काटकर २९ मारतेहुए छोड़देते हैं और वह अपने पक्ष टूटजाने से चल नहीं सक्ता है ३० इसी प्रकार सब मनोरथों से रहित और बान्धवआदि से पृथक् मैं भी टूटेपक्षवाले पक्षी के समान वर्तमान हूं ३१ महादुःखी शत्रु के आधीन होकर मैं किस दशा को पहुँचूंगा ॥ ३२ ॥

इति श्रीमन्महाभारतेकर्णपर्वणिधृतराष्ट्रशोकेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि, इस रीति से महादुःखी व्याकुलचित्त धृतराष्ट्र विलाप करके फिर सञ्जय से कहनेलगे १ कि जिसने सब काम्बोज, अम्बष्ठ, गान्धार और विदेहों को केकेयलोगों समेत विजय किया और युद्ध में प्रयोजन के निमित्त विजयकराके २ जिसने दुर्योधन के लिये पृथ्वी को विजयकिया वह बाहुशाली शूरवीर शल्य युद्ध में पाण्डवों के हाथ से विजय कियागया ३ हे सञ्जय ! उस बड़े धनुष सन्तोषही के अर्थ होते हैं उसी प्रकार दूसरे प्रकार से विचार कियाहुआ कर्म और ही प्रकार से होता है दैव बड़ा बलवान् है और कालधारी कर्ण के मरने के पीछे युद्ध में कौन २ से वीर सम्मुखहुए वह मुझसे कहो ४ कहीं अकेलाही युद्ध करता हुआ पाण्डवों के हाथ से तो नहीं मारागया हे तात ! जैसे वह वीर मारागया उसका वृत्तान्त तुमने प्रथमही कहा सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शिखण्डी ने अपने सम्मुख न होनेवाले भीष्मपितामह को युद्धमें उत्तम २ बाणों से मारा ५ । ६ इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने युद्ध में शस्त्रत्यागनेवाले महाधनुषधारी योगाभ्यास में नियत द्रोणाचार्य को बहुत बाणों से घायलकिया ७ हे सञ्जय ! वह द्रोणाचार्य खड्ग के द्वारा धृष्टद्युम्न के हाथ से मारेगये यह दोनों वीर समय पाकर छलसेही मारेगये ८ मैंने इन गिरायेहुए भीष्म को सुना मैं निश्चय जानता हूं कि आप वज्रधारी इन्द्र भी युद्ध में भीष्म और द्रोणाचार्य को नहीं मारसक्ता था जबकि यह दोनों न्याय के अनुसार युद्ध करें मैं इसबात को सत्य २ कहता हूं कि युद्ध में बड़े दिव्य अस्त्रों के छोड़नेवाले इन्द्र के समान वीर कर्ण को कैसे बहुतों ने पकड़ा इन्द्र ने बिजली के समान प्रकाशित दिव्य सुवर्ण से अलंकृत ९ । ११ शत्रुओं के मारनेवाली शक्ति जिसको कुण्डलों

के बदले में दी और जिसका बाण सर्पमुख दिव्य और सुवर्ण से जटित १२ शत्रुओं का मारनेवाला था वह चन्दनसे चर्चित होकर पृथ्वीपर सोता है जिसने भीष्म द्रोणाचार्य आदि बड़े २ वीर महारथियों का भी अपमान किया और श्रीपरशुरामजी से महाघोर ब्रह्मास्त्र को सीखा और जिस महाबाहु ने द्रोणाचार्य आदि को मुख मुड़ाहुआ बाणों से पीड़ित देखकर १३। १४ अभिमन्यु के धनुष को अपने तीक्ष्णबाणों से काटा और जिस प्रकार दशहज़ार हाथी के १५ समानबली वज्र के समान वेगवान् दुराधर्ष भीमसेन को अकस्मात् रथसे विरथ करके हँसता हुआ गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से सहदेव को विजय करके १६ धर्म और कृपालुता के ध्यान से विरथ करके नहीं मारा जिसने विजयाभिलाषी महामायावी १७ राक्षसों के राजा घटोत्कच को इन्द्र की शक्ति से मारा इतने दिनतक उससे भयभीत अर्जुन ने १८ युद्ध में जिसके द्वैरथ संग्राम को प्राप्त नहीं किया वह वीरपुरुष कैसे युद्ध में मारागया जिसका न रथ टूटा न धनुष टूटा और अस्त्रों का भी नाश न हुआ वह कर्ण शत्रुओं के हाथ से कैसे मारा गया उस बड़े धनुष के चढ़ानेवाले घोरबाण और दिव्यअस्त्रों को युद्ध में छोड़नेवाले सिंह के समान वेगवान् पुरुषोत्तम कर्ण के विजय करने को कौन समर्थ है १९।२१ उसका धनुष अवश्य टूटा वा रथ पृथ्वीपर गिरा अथवा शस्त्रों का नाश होगया था जिससे कि उसको मराहुआ मुझ से वर्णन करताहै २२ उसके नाश होने से मैं अन्य सबको भी नाशवान् देखता हूं उसका प्रण था कि जबतक अर्जुन को नहीं मारलूंगा तबतक न तो अपने चरणों को धोऊंगा न युद्ध में पैदल होकर चलूंगा जिस महात्मा का यह महाघोर प्रण था कि जिसके भय से भयभीत धर्मराज पुरुषोत्तम युधिष्ठिरने २३। २४ तेरह वर्षतक सदैव आनन्द से जीवन को नहीं पाया जिस पराक्रमी महात्मा के पराक्रम में मेरे पुत्र ने आश्रय लेकर पाण्डवों की स्त्री द्रौपदी को बड़ेबल से सभा में बुलाया वहां भी सभा के मध्य में पाण्डवों के देखतेहुए २५। २६ कौरवों के सम्मुख द्रौपदी से बोला हे दास की भार्या, कृष्णे! तेरे पति नहीं हैं किन्तु सबके सब षण्डतिल अर्थात् थोथे तिल के समान हैं २७ हे सुन्दरि! तू दूसरे पति के पास वर्तमान हो जिस कर्ण ने सभा के मध्य में ऐसे २ असभ्य और रूखे दुर्वचन द्रौपदी से कहे वह शत्रुओं के हाथ से कैसे मारागया २८ उसने यह भी कहा

था कि हे दुर्योधन ! जो युद्धमें प्रशंसनीय भीष्म और युद्धदुर्मद द्रोणाचार्य पक्षपात करके कुन्ती के पुत्रों को नहीं मारेंगे तो मैं सबको मारडालूंगा तू अपने मनकी चिन्ताको दूरकरदे २६।३० गाण्डीव धनुष और अविनाशी दोनों तूणीर इस उत्तमचन्दन से लिप्त सम्मुख दौड़नेवाले मेरे बाण का क्या करसक्ते हैं ३१ वह महादोषयुक्त कर्ण निश्चय करके अर्जुन के हाथ से कैसे मारागया गाण्डीव धनुष से छूटेहुए बाणों के उदग्रस्पर्श की चिन्तारहित द्रौपदी से यह कहतेहुए कि हे कृष्णे ! तू विना पति की है जिस कर्ण ने पाण्डवों को देखा और अपने भुजों का आश्रय लेकर जिसको श्रीसमेत सपुत्र पाण्डवों से जरा भी भय नहीं हुआ हे सञ्जय ! उसका मारना देवताओं समेत इन्द्र से भी कठिन था ३२।३४ हे तात ! उसको सम्मुख दौड़नेवाले पाण्डवलोग कैसे मारसक्ते हैं धनुषज्या के स्पर्श करनेवाले अथवा हस्तत्राण के द्वारा पकड़नेवाले कोई धनुषधारी मनुष्य कर्ण के सम्मुख होने को समर्थ नहीं हैं पृथ्वी चन्द्र और सूर्य चाहो अपनी किरणों से रहित होजायँ ३५।३६ परन्तु युद्ध में मुख न मोड़नेवाले पुरुषोत्तम का मरण नहीं है जिसके कारण प्रारब्धहीन दुर्बुद्धि दुर्योधन ने सदैव भाई दुश्शासन समेत ३७ वासुदेवजी के उत्तरही को अङ्गीकार किया मैं यह जानता हूं कि वह मेरा पुत्र दुर्योधन बड़े दोषयुक्त कर्ण को पराजय और दुश्शासनको मराहुआ ३८ देखकर शोच को करता है हे सञ्जय ! द्वैरथ युद्ध में अर्जुनके हाथ से कर्ण को मराहुआ सुनकर ३९ और विजय करनेवाले पाण्डवों को देखकर दुर्योधन ने क्या कहा वा दुर्मर्षण और वृषसेन को युद्ध में मृतक देखकर ४० और अपनी सेना को महारथियों से घायल होकर भागती हुई देखकर और भागने की इच्छावान् मुख मोड़नेवाले राजाओं और रथियों को घायल देखकर शोचकरता है ४१ अथवा दुर्योधन ने उस शासना के अयोग्य पलायमान इन्द्रियों के वशीभूत ४२ सेना को उत्साह से रहित देखकर क्या कहा और जिनके बहुत मनुष्य मारे गये उन राजाओं से घिरे हुए आप शत्रुता करने वाले दुर्योधन ने क्या कहा और युद्ध में रुधिर पीनेवाले भीमसेन के हाथ से मरेहुए भाई दुश्शासन को देखकर क्या कहा और सभा में जो राजा गान्धार के सम्मुख कहा था कि कर्ण युद्ध में अर्जुन को अवश्य मारेगा उस कर्ण के मरने पर क्या कहा ४३।४५ पूर्वसमय में सौबल के पुत्र शकुनी ने द्यूत

रचकर पाण्डवों को ठगकर ४६ कर्ण के मरनेपर क्या कहा यादवों में महारथी हार्दिक्य के पुत्र बड़े धनुषधारी कृतवर्मा ने ४७ कर्णको मृतक देखकर क्या कहा क्षत्रिय वैश्य धनुर्वेद के जानने के आकाङ्क्षी जिस बुद्धिमान् अश्वत्थामा की शिक्षा को प्राप्तकरते हैं उस बड़े प्रतापी यशस्वी तरुण वयवाले धनुर्धारी अश्वत्थामा ने कर्ण के मरने पर क्या कहा ४८। ४९ जो गौतम के पुत्र महाधनुर्धारी धनुर्वेद के आचार्य कृपाचार्य हैं हे तात! उन्होंने कर्ण के मरनेपर क्या कहा और रथियों में श्रेष्ठ मद्रदेशाधिपति पराक्रमी युद्ध में शोभायमान राजा शल्यने अपने सारथीपने में कर्ण को मृतक देखकर क्या कहा ५०। ५२ इनके सिवाय और सब दुराधर्ष धनुषधारी राजाओं ने युद्ध में कर्ण को मरा देखकर क्या कहा और जो २ इस पृथ्वी के राजा यहां युद्धकरने को आये उन सबों ने ५३ कर्ण को माराहुआ देखकर कौन २ से वचन कहे हे सञ्जय! उस रथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम वीर कर्ण के मरनेपर ५४ कौन २ सेना के सेनाध्यक्ष हुए और रथियों में श्रेष्ठ मद्रदेश का राजा शल्य कर्ण के सारथ्यकर्म में कैसे नियत कियागया यह सब वृत्तान्त मुझसे ब्योरे समेत वर्णनकरो ५५ युद्धकरनेवाले कर्ण के दाहिने रथ के चक्र की किसने रक्षाकरी और बायें चक्र की और पृष्ठभाग की किस २ ने रक्षाकरी ५६ किसने कर्ण का सङ्ग न छोड़ा और कौन से नीच भागगये और तुम्हारे भाग जाने से महारथी कर्ण कैसे मारागया ५७ और जिस प्रकार बादलों से जल की धारा गिरती हैं उसी प्रकार बाणों की वर्षा करते हुए महारथी शूरवीर पाण्डव कैसे सम्मुख हुए ५८ हे सञ्जय! उसयुद्ध में बाणों में श्रेष्ठ कर्ण का वहदिव्यबाण कैसे निष्फलहुआ उसको मुझसे कहो ५९ प्रधानपुरुष के न होने से मैं अपनी शेष बचीहुई सेना को नहीं देखता हूं ६० उन वीर धनुर्धारी मेरेलिये जीवन के त्यागनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य को मृतक देखकर अब मेरा जीवना निरर्थक है ६१ मैं पाण्डवों के हाथ से मरेहुए कर्ण को वारंवार स्मरण करके शान्ति को नहीं पाता हूं जिसकी कि भुजाओं का बल दश हजार हाथियों के समान था ६२ हे सञ्जय! द्रोणाचार्य के मरनेपर युद्ध में शत्रुओं के हाथ से नरोत्तम कौरवों का जो वृत्तान्त हुआ वह मुझसे कहो ६३ और जैसे कर्ण कुन्ती के पुत्रों से युद्ध करने को प्रवृत्त हुआ और युद्ध में जैसे मारा गया उसको भी ठीक २ कहो॥ ६४॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिधृतराष्ट्रप्रश्नेदशमोऽध्यायः॥ १०॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे भरतवंशिन्, महाराज ! उस दिन बड़े धनुर्धारी द्रोणाचार्य के मरने और महारथी अश्वत्थामा के निष्फल सङ्कल्प करने १ और कौरवों की समुद्ररूपी सेना के भागनेपर अर्जुन अपनी सेना को व्यूहित करके भाइयों समेत युद्ध में नियत हुआ २ उस समय आपके पुत्र ने उस सम्मुख नियत होनेवाले अर्जुन को जानकर अपनी भागतीहुई सेना को भागने से रोंका ३ और अपने भुजबल से सेना को रोंककर दुर्योधन पाण्डवों के साथ विलम्बतक युद्ध करके ४ सन्ध्यासमय जानकर विजयी और विलम्बतक विचारनेवाले शत्रुओंसमेत अपनी सेना को विश्राम कराया ५ सेना के विश्राम को कर अपने डेरे में पहुँचकर कौरवों ने परस्पर की निर्विघ्नता का विचार किया ६ बहुमूल्य आस्तरण वा शय्या और आसनों पर बैठेहुए उन लोगों ने ऐसे सलाहकरी जैसे कि देवता लोग सुखशय्याओं पर ७ बैठेहुए सलाहों को करते हैं इसके पीछे राजा दुर्योधन प्यार और मृदुभाषण से उन धनुषधारियों के सम्मुख होकर समय के अनुसार इन वचनों को बोला कि, हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ ! तुम सब अपनी २ राय को शीघ्रता से कहो विलम्ब मत करो हे राजालोगो ! ऐसी दशा में क्या करना उचित है और कौनसी बात अवश्य करने के योग्य है ८। ९ सञ्जय ने कहा कि इस प्रकार महाराज दुर्योधन के कहने पर सिंहासनों पर वर्तमान युद्धाभिलाषी नरोत्तमों ने अनेक प्रकार की चेष्टाओं को किया १० युद्ध में प्राणों के होम करने के अभिलाषी उन लोगों की चेष्टाओं को देखकर और बालसूर्य के समान तेजस्वी राजा के स्वरूप को देखकर ११ शास्त्रों के ज्ञाता बुद्धि के स्वामी वार्तालाप के जाननेवाले अश्वत्थामाजी ने वर्णन करना प्रारम्भ किया कि स्वामी की भक्ति और देश काल का पहिंचानना और बल वा नीति से प्रयोजन की सिद्ध करनेवाले १२ उपाय पण्डितों ने कहे हैं वह उपाय दैव के आधीन हैं हमारे जो महारथी वीर देवताओं के समान १३ नीतिमान् भक्तिमान् और सावधानता में योग्य थे वह तो मारेगये परन्तु हम लोगों को विजय से निराश होना भी न चाहिये १४ इस लोक में अच्छी रीति से कियेहुए नीति आदि सब अर्थों से दैव भी अनुकूल किया जाता है

हे राजन्! वह लोग हम सबों में अत्यन्त श्रेष्ठ गुणों से भरेहुए १५ कर्ण कोही सेनापति के अधिकार पर अभिषेक करावेंगे और कर्ण को सेनापति करके शत्रुओं को मारेंगे १६ निश्चय करके यह बड़ा पराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद यमराज के समान असह्य लड़ाई में शत्रुओं के विजय करने को इन्द्रके ही समान है १७ हे राजन्! अश्वत्थामा के इस वचन को सुनकर आपके पुत्र ने कर्ण में यह बड़ा भरोसा किया १८ कि भीष्म और द्रोणाचार्य के मरनेपर यही पाण्डवों को मारेगा इस आशा को हृदय में धारण करके बड़ा विश्वासयुक्त होकर १९ प्रसन्नचित्त दुर्योधन उस प्रीति सत्कार से युक्त प्रियतम अपनी वृद्धि करनेवाले वचन को सुनकर २० अपने मन को अच्छीरीति से दृढ़ करके अपनी भुजाओं के बल में रक्षित होकर कर्ण से यह वचन बोला २१ कि हे कर्ण! मैं तेरे पराक्रम को और अपने ऊपर जो तेरी प्रीति है उसको अच्छी रीतिसे जानता हूं हे महाबाहो! मैं भी तुमसे सुन्दर फलयुक्त वचन कहूंगा २२ मेरे सेनापति अतिरथी भीष्म और द्रोणाचार्य मारेगये उनसे भी अधिक आप पराक्रमी होकर सेनापति हूजिये २३।२४ वह दोनों वृद्ध महाधनुषधारी अर्जुन से मेलरखते थे हे कर्ण! मैंने तेरे कहनेसे दोनों की बड़ी प्रतिष्ठा करी थी २५ हे तात! भीष्मजीने अपनेको बाबा समझकर बड़े युद्धमें दशों दिनतक पाण्डवोंकी रक्षाकरी २६ आपके शस्त्ररहित होने पर शिखण्डी को आगे करके अर्जुन के हाथ से भीष्मपितामह मारेगये २७ हे पुरुषोत्तम! उस पुरुषसिंह के मरने और शरशय्या पर विराजमान होनेपर तेरे कहने से द्रोणाचार्य संग्राम में सम्मुख हुए २८ उन्होंने भी अपना शिष्य जानकर पाण्डवों की रक्षा करी वह वृद्ध भी शीघ्रता सेही धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेगये २९ इन दोनों प्रधान पुरुषों के मरने से चिन्तायुक्त होकर मैं तुझ बड़े पराक्रमीके समान किसी शूरवीरको नहीं देखता हूं हमलोगोंके बीचमें आपही आदि मध्य और अन्तमें विजय करनेको समर्थ हो और जिसरीतिसे आपने सदैव मेरा हित कियाहै ३०।३१ उसी प्रकार आप बैलकेसमान धुरके उठाने के योग्य हो मैं आपको सेनापतिके अधिकारपर अभिषेक करूंगा ३२ जैसे कि देवताओं के सेनापति प्रभु अविनाशी स्वामिकार्त्तिकजी हैं उसीप्रकार आप मेरी सेनाकी रक्षाकरो ३३ जैसे कि महेन्द्र युद्धमें दानवोंको मारताहै उसी प्रकार आपभी हमारे शत्रुओंको मारिये तुमको सम्मुख देखकर महारथी पाण्डव

और पाञ्चाललोग ऐसे युद्ध मेंसे भागेंगे जैसे कि विष्णुजी को देखकर दानव भागते हैं इसहेतुसे हे पुरुषोत्तम ! तुम इस बड़ीसेनाको अपनी रक्षामें करो ३४।३५ आपको युद्ध में उपाय करताहुआ देखकर मन्त्रियों समेत पाण्डव सृञ्जय और पाञ्चालदेशीय यह सब भागेंगे ३६ जैसे उदयहुआ सूर्य अपने तेजसे तपाताहुआ महाघोर अन्धकार को विध्वंस करताहै उसीप्रकार तुमभी शत्रुओंको तपाओ३७ सञ्जय बोले हे राजन् ! आपके पुत्र की यही आशा प्रबल हुई कि भीष्म और द्रोण के मरनेपर यह कर्ण पाण्डवों को अवश्य मारेगा ३८ इस आशा को हृदय में धरकर इस प्रकार कर्णसे बोला कि हे कर्ण ! वह अर्जुन तेरे सम्मुख युद्ध करने की इच्छा नहीं करता है ३९ कर्ण बोला कि हे गान्धारी के पुत्र ! मैंने प्रथम ही यह तुझसे कहा है कि मैं पुत्र पौत्र और श्रीकृष्णजी समेत सबपाण्डवों को विजय करूंगा ४० मैं निस्सन्देह तेरा सेनापति बनूंगा हे महाराज ! आप तैयार हूजिये और पाण्डवों को विजय किया जानो ४१ सञ्जय बोले कि हे महाराज ! इस बात के सुनतेही राजा दुर्योधन अपने राजाओं समेत ऐसा उठा जिस प्रकार देवताओं समेत इन्द्र उठताहै ४२ अर्थात् सेनापति बनाने के लिये कर्ण के सत्कार करने को ऐसा उठा जैसे कि स्वामिकार्त्तिक के अभिषेक कराने को देवताओं समेत इन्द्र उठा था इसके पीछे विजयाभिलाषी उन सब राजाओं ने जिनका अग्रगामी दुर्योधन था सुवर्ण के कलश और अभिमन्त्रित मृन्मयपात्र हाथी के दाँत के पात्र गैंड़े के सींग के पात्र वा अन्य यज्ञपशुओं के दाँतों के पात्र मणि मोतियों से आच्छादित वा बहुतसी सुगन्धित द्रव्यों से युक्त जलपूरित पात्र और गन्धाक्षत आदि अभिषेक की वस्तुओं से वेदोक्त मन्त्रों के द्वारा कर्ण का अभिषेक कराया ४३।४५ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और अङ्गीकार कियेहुए शूद्रों ने भी उस महात्मा कर्ण को प्रसन्न किया जो कि शास्त्रोक्त बुद्धिकी श्रेष्ठरीति से इकट्ठे किये हुए सामानों समेत स्नान कियेहुए रेशमी वस्त्रोंके बिछौनोंसे युक्त तांबेके उत्तम आसनपर विराजमान था ४६।४७ हे राजेन्द्र ! फिर अभिषेक होजानेपर शत्रुहन्ता कर्ण ने निष्क और गोधन देकर ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराया ४८ उस समय वन्दीजन और ब्राह्मणों ने उस पुरुषोत्तम से यह कहा कि तुम गोविन्दजी आदि सब साथियों समेत पाण्डवों को विजयकरो ४९ हे कर्ण ! तुम हमारी विजय के निमित्त पाञ्चालों समेत सब

पाण्डवोंको ऐसेमारो जैसे कि सदैव होनेवाला सूर्य बड़े अन्धकारको दूर करता है ५० आपके बाणोंको केशवजी समेत पाण्डवलोग देखने को भी ऐसे समर्थ न होंगे जैसे कि सूर्य की प्रकाशित किरणों के देखने को उलूक पक्षी नहीं समर्थ होसक्ता है ५१ युद्धमें तुझ शस्त्रधारीके सम्मुख पाण्डव नियत होनेको ऐसे समर्थ नहीं हैं जैसे कि महेन्द्र के सम्मुख दैत्य दानव नियत नहीं होसक्ते ५२ अभिषेक कियाहुआ वह कर्ण बड़े तेज से दूसरे सूर्य के समान प्रकाशमान हुआ ५३ तब काल से प्रेरित आपके पुत्र ने कर्ण को सेनापति के अधिकार पर अभिषेक कराके अपने को सिद्धमनोरथ समझा ५४ हे राजन्! विजयी कर्ण ने भी सेनापति होकर सूर्योदय के समय सेना के तैयार होने की आज्ञादी ५५ फिर वहां आपके पुत्रों समेत वह कर्ण ऐसा शोभितहुआ जैसे कि तारकासुर के युद्ध में देवताओं समेत स्वामिकार्त्तिकजी सुशोभित हुए थे॥ ५६॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णाभिषेकयेकादशोऽध्यायः॥ ११॥

बारहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, जब सूर्य के पुत्र कर्णने सेनापति पदवी को पाकर राजा दुर्योधन से भाई के समान मृदुभाषण को सुनके १ सूर्योदय के समय असंख्य सेना की तैयारी के लिये आज्ञादेकर क्या काम किया? हे सञ्जय! उसको मुझे समझाके कहो २ सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ! आपके पुत्रों ने कर्ण के अभिप्राय को जानकर सेना की तैयारी के लिये आज्ञा करी जिसमें आनन्दमङ्गल सूचक बाजे आगे चले ३ और पिछलीरात्रि में अकस्मात् आपकी सेना में तैयारी करनेका शब्द आधिक्यतासे हुआ ४ इसके पीछे अलंकृत उत्तम हाथी, रथ, मनुष्य, पदाती, घोड़े ५ और शीघ्रता करनेवाले और परस्पर में बोलनेवाले शूरवीरों के महाकठिन शब्द आकाशतक व्याप्तहुए ६ इसके पीछे श्वेत पताका और हंस के वर्ण घोड़े सुवर्णपृष्ठी धनुष नागकक्षी ध्वजा ७ सैकड़ों तूणीरों से युक्त बाजूबन्द और कवचों को धारण करनेवाले शतघ्नी, किङ्किणी, शक्ति, शूल और तोमरों से भरेहुए धनुषों से युक्त निर्मल सूर्यके समान प्रकाशमान वायु के विपरीत होने से सम्मुख पताकावाले रथ की सवारियों से ८। ९ और स्वर्णमयी जालों से अलंकृत शङ्खको बजाता स्वर्णमयी धनुषको हिलाता हुआ कर्ण चला हे श्रेष्ठ, नरोत्तम! वहां कौरवों ने उस बड़े धनुषधारी रथारूढ़

सूर्य के समान प्रकाशित असह्य तेज से अन्धकार को दूरकरतेहुए १०। ११ कर्ण को देखकर किसी ने भी भीष्म द्रोणाचार्य और अन्य२ वीरों के दुःखोंको नहीं माना १२ इसके पीछे शङ्खध्वनि के द्वारा शूरवीरों को चैतन्य करतेहुए कर्ण ने कौरवों की बड़ीसेना को आकर्षण किया १३ इसरीति से महाधनुषधारी शत्रुसन्तापी कर्ण मकरव्यूह को रचकर पाण्डवों के विजय की इच्छा से सम्मुख चला १४ हे राजन्! उस मकरव्यूहके मुखपर तो कर्ण नियतहुआ नेत्रों के समीप महारथी शकुनी और शूरवीर उलूक नियतहुए शिरपर अश्वत्थामा और ग्रीवापर सब सगेभाई और कटिभागपर बड़ी सेनासमेत आप राजा दुर्योधन नियतहुआ १५। १६ और वामपादपर नारायण और गोपालनाम सेना से युक्त दुर्मद कृतवर्मा नियतहुआ और बड़े धनुषधारी त्रिगर्तदेशीय सत्यपराक्रमी कृपाचार्यजी दक्षिण चरण के समीप नियतहुए १७। १८ और मद्रदेशीय बड़ी सेनासमेत राजा शल्य बांयें चरण के पीछे और हज़ाररथ और तीनसौ हाथियों समेत सत्यसंकल्प सुषेण दक्षिण चरणके पीछेहुआ १९। २० बड़ी सेना समेत बड़े पराक्रमी दोनों भाई राजाचित्र और चित्रसेन पुच्छपर नियतहुए २१ हे राजेन्द्र! इसरीति से नरोत्तम कर्ण के चलनेपर धर्मराज युधिष्ठिर अर्जुन की ओर देखकर यह बोले २२ कि हे वीर, अर्जुन! देखो जैसे २ इस युद्ध में शूरवीर महारथियों से रक्षित दुर्योधन की सेना कर्णने अलंकृतकरी २३ वह दुर्योधन की बड़ी सेना वही है जिसके बड़े २ वीर मारेगये हे महाबाहो! यह शेष बचीहुई है आशय यह है कि यह सेना मेरी बुद्धि से तृणों की समान है २४ इस सेना भर में अकेला धनुषधारी कर्णही प्रकाशित है यह रथियों में श्रेष्ठ कर्ण देवता, असुर, किन्नर, गन्धर्व, नाग, पिशाच और २५ तीनों लोकों के स्थावर जङ्गमों से महादुर्जय है हे महाबाहो, अर्जुन! अब इसकेही मारने पर तेरी पूर्ण विजय है २६ इसके मरनेपर बारहवर्ष का मेरा कण्टक उखड़जायगा हे महाबाहो! ऐसा जान और समझकर व्यूह को जैसा चाहो वैसा तैयार करो २७ पाण्डव अर्जुन ने भाई के उस वचन को सुनकर अपनी सेना को अर्धचन्द्र व्यूह से अलंकृतकिया २८ उसके वामभागपर भीमसेन और दाहिने भागपर बड़ा धनुषधारी धृष्टद्युम्न वर्तमान हुआ २९ और व्यूह के मध्य में राजा युधिष्ठिर और अर्जुन नियत हुए और धर्मराज के पीछे नकुल सहदेव हुए ३० और

पाञ्चालदेशीय उत्तमौजा और युधामन्यु रथ के पहियों के रक्षकहुए अर्जुन से रक्षित उन दोनों ने भी युद्ध में अर्जुन को नहीं त्यागा २१ हे राजन्! शेष शूरवीर राजालोग शस्त्रादि से अलंकृत अपनी २ युक्तिके अनुसार व्यूहमें नियतहुए २२ पाण्डव और अन्य शूरवीरों ने इसरीति से अपने व्यूह को रचकर तैयार किया हे राजन्! इसरीतिसे पाण्डव और आपके पुत्रोंने अपने२ व्यूहको रचकर युद्धकरनेको उत्साह किया २३ दुर्योधनने कर्णकी रचित कीहुई अपनी सेनाको युद्ध में देखकर भाई बन्धुओं समेत पाण्डवों को मृतकरूप जाना २४ उसी प्रकार राजा युधिष्ठिर ने भी अपनी पाण्डवीय सेना को अलंकृत देखकर कर्णसमेत धृतराष्ट्र के पुत्रों को मृतकरूप माना २५ इसके पीछे शङ्ख, भेरी, ढोल, दुन्दुभी, डिमडिम आदि बाजे भी चारों ओर से बजे २६ हे राजन्! उससमय दोनों सेनाओं में बड़े शब्दायमान बाजे गाजे बजे और युद्धाभिलाषी शत्रुहन्ता शूरवीरों केभी महासिंहनाद हुए २७ हे राजन्! घोड़ों के हींसने और हाथियों के चिग्घाड़ने के और रथ की नेमियों के महाकठोर शब्द उत्पन्न हुए २८ फिर व्यूह के मुखपर नियत बड़े धनुषधारी कर्ण को देखकर किसी ने भी द्रोणाचार्य के दुःख को नहीं जाना २९ उस समय अत्यन्त उत्तम मनुष्यों से भरीहुई युद्धाभिलाषी दोनों सेना पराक्रम से परस्पर मारने को नियत हुईं ४० वहां पर सावधान और क्रोध से भरे हुए एक दूसरे को नियत देखकर कर्ण और पाण्डव अर्जुन सेना के मध्य में फिरने लगे फिर वह दोनों सेना नाचती हुई सी परस्पर में भिड़ गईं उनके भाग वा विभाग कोणों से युद्धाभिलाषी लोग सेना से बाहर निकले इसके अनन्तर परस्पर में युद्धकर्तालोग हाथी घोड़े और रथों के साथ युद्ध में प्रवृत्त हुए ॥ ४१ । ४२ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिव्यूहनिर्माणेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले, कि अत्यन्त प्रसन्नचित्त घोड़े हाथी और मनुष्योंवाली उनदोनों सेनाओंने जोकि देवता और असुरोंकी सेनाके समान प्रकाशमान थीं परस्पर में एकने एकको सम्मुख पाकर अत्यन्त प्रहार किये १ इसके पीछे बड़े पराक्रमी मनुष्य, रथ, घोड़े, हाथी और सेना के पतियों ने शरीर और प्राणों के नाश करनेवाले अनेक प्रहार किये २, और चन्द्रमा सूर्य और कमलों के समान

प्रकाशमान सुगन्धिसे भरे नृसिंहों के शिरों से पृथ्वीको आच्छादित करदिया ३ अर्धचन्द्र, भल्ल, क्षुरप्र, खड्ग, पट्टिश और परश्वधों से युद्धकरनेवालों के शिरों को काटा ४ तब लम्बी स्थूल बाजूआदि से अलंकृत शस्त्रधारी भुजाओं से बड़े २ दीर्घ भुजवाले शूरवीरों की भुजा पृथ्वीपर पड़ीहुई शोभायमान हुईं ५ रक्तअंगुष्ठ और हथेली समेत फड़कतीहुई उन भुजाओं से पृथ्वी ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि गरुड़जी के छोड़े हुए उग्र पञ्चमुखवाले सर्पों से शोभित होती है ६ शत्रुओं के हाथ से मारेहुए वीर हाथी घोड़े और रथों से ऐसे गिरे जैसे कि क्षीणपुण्य होने से स्वर्गवासी जीव अपने २ विमानों से गिरते हैं ७ युद्ध में बड़े २ वीरों की भारी गदा परिघ और मूसलों से भी मारेहुए अन्य हजारों वीर पृथ्वी पर गिरे ८ रथी रथियों से मतवाले हाथी मतवाले हाथियों से अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ोंसे उस कठिन युद्धमें मर्दित कियेगये ९ रथोंसे मनुष्य और हाथियों से रथ वा पतियों से रथी और हाथियों से रथपति घोड़े और सवार और हाथी दोनों रथों से मथेगये १०।११ मनुष्य घोड़े हाथी और रथियोंने हाथ पाँव शस्त्र और रथों से रथ, घोड़े, हाथी और मनुष्यों का बड़ा विनाशकिया १२ इसरीति से शूरवीरों के हाथ से सेना के घायल और मारे जाने से वह पाण्डव जिनमें अग्रगामी भीमसेन था हमारे सम्मुख आये १३ धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, द्रौपदी के पुत्र, प्रभद्रक नाम क्षत्रिय, सात्यकी, चेकितान, द्रविड़ देशीय सेना समेत १४ बड़े व्यूह से युक्त और बड़े वक्षस्स्थल लम्बीभुजा दीर्घनेत्री वेगवान् आभूषणों से अलंकृत १५ रक्तदन्त मतवाले हाथी के समान पराक्रमी नाना प्रकार के रङ्गों की पोशाकों से भूषित चन्दनादि से चर्चित देहवाले खड्ग, भिन्दिपालों को हाथ में लिये हाथियों के हटानेवाले एकसी मृत्युवाले पाण्ड्य चोल और केरल लोगों ने परस्पर में त्याग नहीं किया १६।१७ तूणीर, धनुष, भिन्दिपाल हाथ में लिये लम्बेकेश रखनेवाले प्रियभाषी घोर पराक्रमवाले अन्य पति और अश्वारूढ़ों ने भी परस्पर में त्याग नहीं किया इसके पीछे दूसरे शूर चन्देर, पाञ्चाल, केकय, कारूष, कौशल, काञ्चय और मगधशूरवीर, सम्मुखदौड़े १८।१९ उन्हों के रथ घोड़े हाथी और अत्यन्त भयानक पतिलोग नाना प्रकार के बाजे बजानेवालों के साथ में बड़े प्रसन्नचित्त हँसते नाचते और गाते थे २० अत्यन्त उत्तम रथों से युक्त हाथी के कन्धोंपर सवार भीमसेन बड़ी सेना के मध्य

में आप के शूरवीरों के सम्मुख गये २१ अत्यन्त उत्तम महाभयानक बुद्धि के अनुसार अलंकृत कियाहुआ वह हाथी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्योदयवाला उदयाचल का भवन शोभायमान होता है २२ उसका लोहमयी रत्नों से जटित कियाहुआ कवच इस प्रकार का प्रकाशमान था जैसे कि नक्षत्रों समेत शरदऋतु का आकाश शोभित होता है तोमरसंयुक्त चपलभुज और सुन्दर मुकुटधारण किये हुए महाअलंकृत सूर्य के समान प्रकाशमान वह भीमसेन अपने तेजसे शत्रुओंको भस्म करताहुआ युद्धमें नियतहुआ २३।२४ वहां हाथी पर चढ़ाहुआ क्षेमधूर्ति दूर से उस हाथी पर सवार बड़े साहसी भीमसेन को देखकर पुकारता और बुलाता हुआ सम्मुखगया २५ प्रथम तो इन दोनों के हाथियों मेंही परस्पर ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि दैवइच्छा से वृक्षों समेत दो पर्वतों का युद्ध होता है २६ उन हाथियों के बड़े युद्ध होने के पीछे वह दोनों वीर सूर्य की किरणरूप तोमरों से परस्पर एक २ को घायल करते हुए बड़े वेग से गर्जे २७ फिर वह दोनों हाथियों के द्वारा हट करके मण्डलों में घूमे और धनुषों को पकड़कर परस्पर में एक ने दूसरे को घायल किया २८ फिर उन दोनोंने भुजा और बाणों के शब्दों से मनुष्यों को प्रसन्न करके बड़े २ सिंहनादों को किया २९ और फिर वह दोनों महाबली ऊंची सूंड़वाले हाथियों और वायु से उड़तीहुई पताकाओं समेत युद्ध करनेलगे ३० उन दोनों ने परस्पर में एक ने दूसरे के धनुष को काटकर शक्ति और तोमरों की वर्षा से परस्पर में ऐसे घायलकिया ३१ जैसे कि वर्षाऋतु में बादल जलों से व्यथित करते हैं उस समय महागर्जना करतेहुए क्षेमधूर्ति ने अत्यन्त वेगवान् दूसरे छः तोमरों से भीमसेन को छातीपर घायल किया ३२ क्रोध से भराहुआ भीमसेन शरीर में लगेहुए तोमरों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बादलों से सूर्य शोभित होता है ३३ इसके अनन्तर उपाय करनेवाले भीमसेन ने सूर्य के समान प्रकाशित सीधा चलनेवाला लोहे का तोमर उस शत्रु के ऊपर फेंका ३४ फिर राजा कुलूत ने धनुष को नवाकर दशबाणों से तोमर को काटकर भीमसेन को घायलकिया ३५ इसके अनन्तर गर्जना करते भीमसेन ने बादल के समान शब्दायमान धनुष को लेकर बाणों से शत्रु के हाथी को घायल और पीड़ित किया ३६ युद्ध में भीमसेन के बाणों से वह हाथी पीड़ित होकर थँभाहुआ भी

ऐसे नहीं ठहरसका जैसे कि वायु से उड़ाहुआ बादल नहीं ठहरसक्ता है ३७ और भीमसेन का गजराज हाथी उस हाथीपर ऐसा दौड़ा जैसे कि वायु से उड़ाहुआ बादल बड़ीवायु से उड़ेहुए बादल के पीछे दौड़ता है ३८ फिर प्रतापी क्षेमधूर्ति ने अपने हाथी को अच्छी रीति से रोककर शीघ्रही अपने बाणों से भीमसेन के हाथी को घायलकिया इसके पीछे अच्छे प्रकार से छोड़ेहुए टेढ़े पक्षवाले क्षुरप्र से शत्रु के धनुष को काटकर प्रतिपक्षवाले शत्रु को पीड्यमान किया ३९। ४० इसके अनन्तर क्रोधयुक्त क्षेमधूर्ति ने भीमसेन को घायल करके उसके हाथी को सब मर्मों में अपने नाराचों से घायलकिया ४१ हे भरतवंशिन्! उस घायल करने से वह भीमसेन का हाथी पृथ्वीपर गिरपड़ा और भीमसेन हाथी के गिरने से पूर्वही हाथी से कूदकर पृथ्वी पर नियतहुआ ४२ फिर भीमसेन ने भी उसके हाथी को गदा से मारा तब उस गदा से मथेहुए हाथी से उतरेहुए ४३ और शस्त्र उठाकर आनेवाले क्षेमधूर्ति को भीमसेन ने गदा से मारा और गदा के लगतेही मृतक होकर खड्गसमेत पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा ४४ जैसे कि वज्र से टूटाहुआ पर्वत वा वज्र से माराहुआ सिंह पृथ्वीपर गिरता है हे भरतर्षभ! उस कुलूतों के यशस्वी राजा को मृतकहुआ देखकर आपकी सेना भयभीत और पीड़ित होकर भागी॥ ४५। ४६॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिक्षेमधूर्तिवधेत्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

चौदहवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे बड़े धनुषधारी शूरवीर कर्ण ने टेढ़ेपक्षवाले बाणों से युद्ध में पाण्डवों की सेना को मारा १ हे राजन्! उसीप्रकार क्रोधयुक्त उन पाण्डवों के महारथियों ने कर्ण के देखतेहुए आपके पुत्र की सेना को मारा २ हे राजन्! फिर कर्ण ने भी सूर्य की किरण के समान प्रकाशित चतुर कारीगरों के साफ़ कियेहुए नाराचों से उस युद्ध में पाण्डवीय सेना को मारा ३ तब तो कर्ण के नाराचों से घायलहुए हाथी चिग्घारें मारनेलगे और महापीड़ित होकर दशों दिशाओं में घूमनेलगे ४ हे श्रेष्ठ! कर्ण के हाथ से उस सेना के घायल होनेपर शीघ्रही नकुल उस युद्धमें कर्णके सम्मुखगया ५ उसी प्रकार भीमसेन ने कठिन कर्मकरनेवाले अश्वत्थामाको और सात्यकीने विन्द अनुविन्द नाम केकयों को रोका ६ और राजा चित्रसेन ने आतेहुए श्रुतकर्मा को और प्रति-

विन्द्य ने अपूर्वध्वजाधारी राजा चिक्र को रोका फिर राजा दुर्योधन ने धर्मपुत्र युधिष्ठिर को रोका और क्रोधयुक्त अर्जुन ने संसप्तक गणों को जा रोका ७। ८ उस उत्तम वीरों के नाश में धृष्टद्युम्न कृपाचार्य से लड़नेलगा और शिखण्डी के सम्मुख अजेय कृतवर्मा नियत हुआ ६ हे महाराज ! इसी प्रकार श्रुतकीर्ति ने शल्य को और माद्री के पुत्र सहदेव ने आप के पुत्र दुश्शासन को रोका १० दोनों कैकेयों ने युद्ध में प्रकाशित बाणों की वर्षा से सात्यकी को आघेरा सात्यकी ने बाणों से केकयों को ढक दिया ११ हे भरतवंशिन् ! उन दोनों वीर भाइयों ने उसको हृदय पर ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि वन में सम्मुख आनेवाले दो हाथी अकेले हाथी को अपने दाँतों से घायल करते हैं १२ हे राजन् ! बाणों से टूटेहुए कवचवाले सात्यकी को दोनों भाइयों ने बड़ा घायल किया १३ फिर सात्यकी ने हँसते हुए बाणों की वर्षा करके उन दोनों को सब ओर से रोका १४ इसके पीछे सात्यकी के बाणों से रुके हुए उनदोनों ने शीघ्रही बाणों से सात्यकी के रथ को ढक दिया १५ फिर इस बड़े यशस्वी सूरवंशीय सात्यकी ने उन दोनों के छत्र और धनुषों को काटकर उन दोनों को अपने तीक्ष्ण शायकों से रोका १६ तब तो उनदोनों ने दूसरे छत्र और बाणों को ले कर सात्यकी को ढकदिया और बहुत शीघ्रही शोभायुक्त होकर फिरनेलगे १७ और कङ्क और मोरपक्षों से शोभित दोनों के छोड़ेहुए प्रकाशित बाण सब ओर को गिरे १८ हे राजन् ! उस महाभारी युद्ध में उनदोनों के बाणों से अन्धकार सा छागया उस समय उन महारथियों ने परस्पर में एक ने दूसरे के धनुष को काटा १६ इसके पीछे क्रोधभरे युद्ध में दुर्मद सात्यकी ने दूसरे धनुष को लेकर और तैयारी करके युद्ध में बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्र से अनुबिन्द के शिर को काटा हे राजन् ! वह कुण्डलों से अलंकृत महाभारी शिर २०। २१ बड़े युद्ध में मरेहुए शम्बर के शिर के समान सब कैकेय लोगों को शोचताहुआ पृथ्वीपर गिरा २२ उस शूरवीर को मृतक देखकर उसके भाई महारथी ने दूसरे धनुष को तैयार करके सात्यकी को रोका २३ वह सुनहरी पुङ्ख और तीक्ष्णधारवाले साठ बाणों से सात्यकी को घायल करके तिष्ठ२ वचन के साथ बड़े वेग से गर्जा २४ इसके पीछे कैकेयों के महारथीने हज़ारों बाणों से बहुत शीघ्रतापूर्वक भुजा और छाती पर घायल किया २५ हे राजन् ! बाणों से विदीर्ण सर्वाङ्ग सात्यकी युद्ध में ऐसा

शोभितहुआ जैसे कि फूलाहुआ किंशुक का वृक्ष होता है २६ युद्ध में महात्मा कैकेय के हाथ से घायल और हँसते हुए सात्यकी ने कैकेयको पचीस बाणों से घायल किया २७ वह रथियोंमें श्रेष्ठ युद्धमें एक दूसरेके शुभधनुषको काटकर बड़ी शीघ्रता से घोड़े और सारथियों को मारकर २८ रथ से उतरकर युद्ध में खड्गों से प्रहार करने के लिये सम्मुख हुए वह सुन्दर भुजा और उत्तम खड्ग धारण करने वाले दोनों शूरवीर चन्द्र सूर्यके चित्रवाली ढालों को लेकर उस महायुद्धमें ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि देवासुर युद्ध में महाबली इन्द्र और जम्भ शोभितहुए थे २९ । ३० इसके पीछे युद्ध में मण्डलों को घूमते शीघ्रही परस्पर में सम्मुख हुए ३१ और एक २ ने दूसरे के मारने में बड़े २ उपाय किये इसके पीछे सात्यकी ने कैकेयकी ढालके दो खण्डकिये ३२ इसीप्रकार वह राजा भी सात्यकी की सैकड़ों नक्षत्रों से चिह्नित ढाल को काटकर ३३ दाहिने और बांयें मण्डलों से घूमा फिर सात्यकी ने उस बड़े युद्धमें शीघ्रतासे घूमनेवाले कैकेय को तिरछे हाथ से मारडाला हे राजन् ! वह कैकेय उस घोरयुद्ध में कवच समेत दो खण्ड होकर ऐसे पृथ्वी में गिरपड़ा ३४ । ३५ जैसे कि वज्रसे घायल पर्वत गिरता है इस रीतिसे रथियों में श्रेष्ठ शूरवीर सात्यकी ने उस युद्ध में उसको मारा ३६ फिर वह शत्रुहन्ता शीघ्रही युधामन्यु के रथपर सवार हुआ और थोड़े समय पीछे सात्यकीने बुद्धि के अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर बाणोंसे कैकेयों की बड़ी सेना को मारा युद्ध में वह कैकेयों की बड़ी सेना महाघायल होकर उस सात्यकी को छोड़कर दशों दिशाओं को भागी ॥ ३७ । ३८ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिविन्दअनुविन्दवधोनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! इसके पीछे युद्ध में क्रोधभरे श्रुतिकर्मा ने राजा चित्रसेन को पचास बाणों से घायल किया १ फिर चित्रसेनने टेढ़े पुङ्खवाले नौ बाणों से श्रुतिकर्मा को घायल करके पांच बाणों से उसके सारथी को घायल किया २ इसके अनन्तर सेनामुखपर क्रोधयुक्त श्रुतिकर्मा ने चित्रसेन को अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से मर्मस्थल में घायल किया ३ हे महाराज ! उस महात्मा के नाराच से अत्यन्त घायल होकर वह वीर मूर्च्छायुक्त होकर निश्चेष्ट होगया ४ इसी अन्तर में बड़े यशस्वी श्रुतिकीर्ति ने नब्बे ९० बाणों से इस राजा को भी ढक

दिया ५ इसके पीछे महारथी चित्रसेनने सावधान होकर भल्ल से उसके धनुषको काटकर सातबाणों से उसको घायल किया ६ फिर उसने वेगके नाशकरनेवाले स्वर्ण से भूषित सोम धनुषको लेकर बाणोंकी तरङ्गों से चित्रसेन को विचित्ररूपधारी किया ७ वह युवावस्थायुक्त बाणोंसे वेष्टित होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि गौशाला में अच्छा अलंकृत बड़ा बैल होताहै ८ फिर उस शूर ने वेग से श्रुतिकर्मा को नाराच से छातीपर विदीर्णकर तिष्ठ २ शब्द उच्चारण किया ९ वहां नाराच से घायल होकर श्रुतिकर्माने भी युद्धमें रुधिर को ऐसे गिराया जैसे कि पर्वतीय धातुओं से संयुक्त पर्वत रक्तवर्ण के जल को डालता है १० इसके पीछे वह रुधिर से भरे शोभाहीन शरीर से युद्धमें ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि फूलाहुआ किंशुक का वृक्ष होता है ११ इसके पीछे शत्रु से आघात पानेवाले क्रोधयुक्त श्रुतिकर्मा ने शत्रुके हटानेवाले धनुषके दश खण्डकिये १२ तदनन्तर हे राजन्! इस टूटे धनुषवालेको श्रुतिकर्माने सुन्दर पक्षवाले तीनसौ नाराचोंसे घायलकर बड़े तीक्ष्ण धारवाले भल्लसे उसके शिरसमेत धड़ को काटा १३।१४ तब चित्रसेन का वह प्रकाशमान शिर पृथ्वी पर ऐसे गिरा मानों दैवेच्छासे स्वर्ग से पतित होकर चन्द्रमा गिरता है १५ हे श्रेष्ठ! चित्रसेन की सेनाके सब लोग उस अभयसारदेश के राजा को मृतक देखकर बड़ी तीव्रतासे सम्मुख दौड़े १६ इसके पीछे वह क्रोधयुक्त महाधनुषधारी बाणों की वर्षा करताहुआ उस सेना पर ऐसे दौड़ा जैसे कि प्रलयकाल में सब जीवों पर क्रोधभरे यमराज दौड़ते हैं १७ अग्नि से भस्मीभूत वृक्षों के समान युद्ध में आपके पौत्र उस धनुषधारी से घायल होकर चारों ओर को भागे १८ शत्रु के जीतने में असाहसी और भागनेवाले उन लोगों को देखकर श्रुतिकर्मा तीक्ष्णबाणों से उनको भगाता हुआ अत्यन्त शोभायमान हुआ १९ इसके पीछे प्रतिविन्ध्य ने पांच बाणों से चित्रसेनको तीन बाणों से सारथी को घायल करके एक बाण से ध्वजा को भी खण्डित करदिया २० और चित्रसेनने सुनहरेपक्ष तीक्ष्ण नोक कङ्क और मोरके पक्षों से जटित नौ भल्लोंसे उसकी दोनों भुजा और छातीपर घायल किया २१ हे भरतवंशिन्! प्रतिविन्ध्य ने शायकों से उसके धनुषको काटकर उसको तीक्ष्ण पांचबाणों से घायल किया २२ इसके पीछे सुनहरी घण्टे रखनेवाली महाअसह्य अग्नि की शिखा के समान प्रकाशमान शक्ति को आपके पोते पर फेंका २३

तब हँसते हुए प्रतिविन्ध्य ने उस उल्कारूप अकस्मात् आतीहुई शक्ति को देखकर युद्ध में दो खण्ड किये २४ प्रतिविन्ध्यके तीक्ष्ण बाणों से टुकड़े २ हो कर वह शक्ति ऐसे गिरपड़ी जैसे प्रलय के समय सब जीवों को भय की करने-वाली अशिवनी होती है २५ चित्रसेनने उस शक्ति को कटीहुई देख बड़ी गदा लेकर प्रतिविन्ध्य के ऊपर फेंका २६ उस गदा के आघात से उसके सारथी स-मेत घोड़े मारेगये और बड़ी तीव्रतासे रथको मर्दन करके पृथ्वीपर गिरपड़े २७ हे भरतवंशिन्! उस समय उसने रथसे उतरकर सुनहरी दण्डवाली सुनहरी शक्ति को चित्रसेन के ऊपर फेंका २८ फिर उस महासाहसी चित्रसेन ने उस आती हुई शक्ति को पकड़लिया और उसी शक्ति को प्रतिविन्ध्य के ऊपर फेंका २६ वह बड़ी प्रकाशमान शक्ति युद्धमें शूर प्रतिविन्ध्य को पाके दक्षिणभुजाको घा-यल करके पृथ्वीपर गिरपड़ी ३० अशिवनीके समान गिरीहुई उस शक्तिने उस स्थान को प्रकाशितकिया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतिविन्ध्य ने ३१ सु-वर्ण से मण्डित तोमर को चित्रसेन के मारने को चलाया वह तोमर उसके कवच और हृदय को छेदकर ३२ पृथ्वी में ऐसे समागया जैसे बड़ाभारी सर्प बिलमें समाजाताहै उस तोमरसे घायल वह राजा ३३ परिघके समान बड़ी और मोटी भुजाओं को फैलाकर पृथ्वीमें गिरपड़ा तब चित्रसेनको मराहुआ देखकर आपकी शोभायमान सेना वेग से प्रतिविन्ध्य के चारोंओर सम्मुखता के लिये गई ३४ और वहां जाकर नाना प्रकार के बाण और शक्तियों की वर्षा से प्रतिविन्ध्यको ऐसा ढकदिया जैसे कि बादलों के समूह सूर्य को ढकलेते हैं ३५ फिर उस महा-बाहु ने बाणों से उन सबको पृथक् २ करके आपकी सेना को ऐसे भगाया जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों की सेना को भगाता है ३६ हे राजन्! युद्धमें पाण्डवों के हाथ से घायल शूरवीर अकस्मात् ऐसे छिन्न भिन्न होगये जैसे कि हवा से हटायेहुए बादल तिर्रबिर्र होजाते हैं ३७ उस सेना को चारोंओर से घायल हो कर भागजानेपर अकेले अश्वत्थामाजी शीघ्रही महाबली भीमसेन के सम्मुख गये ३८ इसके पीछे अकस्मात् उन दोनों का परस्पर में भिड़ना ऐसा महाभय-कारी हुआ जैसा कि देवासुरों के युद्ध में वृत्रासुर और इन्द्रका हुआ था ॥ ३९॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिचित्रसेनवधेपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

सोलहवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! इसके पीछे बड़ी शीघ्रतायुक्त अस्त्रोंकी तीव्रता दिखातेहुए अश्वत्थामाने बाणसे भीमसेनको घायलकिया १ फिर मर्मज्ञ हस्तलाघवीय अश्वत्थामाने सब मर्मों को जानकर तीक्ष्णधारवाले नब्बे बाणोंसे भीमसेन को घायलकिया २ हे राजन्! अश्वत्थामाके तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे छिदाहुआ भीमसेन युद्धमें अंशुमान् सूर्यके समान शोभायमान हुआ ३ इसके पीछे भीमसेन ने अच्छीरीति से फेंकेहुए हज़ारबाणों से अश्वत्थामाको ढककर बड़ाभारी सिंहनादकिया ४ इसके अनन्तर मन्दमुसकान करतेहुए अश्वत्थामाने बाणोंको रोककर भीमसेनको नाराचोंसे ललाटपर घायलकिया ५ तब भीमसेन ने ललाट पर वर्तमान बाणोंको ऐसे धारणकिया जैसे कि गण्डकनाम अहङ्कारी पशुसिंह को धारणकरता है ६ फिर मन्दमुसकान करते पराक्रमी भीमसेनने युद्धमें उपाय करनेवाले अश्वत्थामाको तीननाराचोंसे ललाटपरबेधा ७ तब यह ब्राह्मण ललाट पर नियतहुए बाणोंसे ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि जलसे सींचाहुआ तीन शिखर रखनेवाला उत्तम पर्वत होताहै ८ इसके पीछे अश्वत्थामाने सैकड़ों बाणों से भीमसेन को पीड़ित किया परन्तु उसको ऐसे कम्पायमान न करसका जैसे कि वायु पर्वतको नहीं कँपासक्ती ९ फिर अत्यन्त प्रसन्न पाण्डुनन्दन भीमसेन ने भी इसको ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि जल का समूह पर्वत को कम्पायमान नहीं करसक्ता १० परस्पर घोरबाणोंसे ढकतेहुए उत्तमरथोंपर सवार पराक्रम से मतवाले वह दोनों महारथी शूरवीर महाशोभायमान हुए ११ फिर वह दोनों सूर्यके समान प्रकाशित लोकके नाशक अपने तेजोंसमेत उत्तम २ बाणोंसे परस्पर सन्तप्त करनेवालेहुए १२ इसके पीछे वह दोनों युद्धमें अशङ्क के समान बदलालेने में उपाय करनेवाले हुए १३ वह दोनों नरोत्तम युद्ध में व्याघ्रों के समान भ्रमण करनेवाले हुए बाणरूप जिनकी डाढ़ें और भयानक धनुषही जिनका मुख था १४ वह दोनों बाणों के जालसे सबओर से ऐसे गुप्त होगये जैसे कि बादल के जालों से ढकेहुए आकाश में चन्द्रमा और सूर्य होते हैं १५ इसके पीछे वह शत्रुहन्ता दोनों एकमुहूर्त में ही ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि बादलों के जालसे निकलेहुए मङ्गल और बुध होतेहैं १६ इसके पीछे

अत्यन्त भयकारी युद्धजारी होनेपर वहां अश्वत्थामाने भीमसेनको सैकड़ों उग्र बाणों से ऐसे ढकदिया १७ जैसे कि धाराओंसे बादल पर्वतको ढकदेताहै फिर भीमसेनने भी शत्रुके उसविजयके लक्षणको नहीं सहा १८ इसके पीछे पाण्डव ने भी दाहिने और बायें मण्डलोंके भागोंमें जाना आनाकिया १९ और दोनों पुरुषसिंहोंमें बड़ा तुमुल युद्ध हुआ २० फिर हरएकने कानतक खैंचेहुए बाणों से परस्पर में एक ने दूसरेको घायल किया और एकने दूसरेके मारने में बड़े २ उत्तम उपाय किये २१ युद्धमें एक ने दूसरे को विरथ करना चाहा इसके पीछे महारथी अश्वत्थामा ने युद्ध में महाअस्त्रों को प्रकट किया २२ पाण्डव ने उन अस्त्रों को अपने अस्त्रों सेही दूरकिया इसके पीछे अस्त्रोंका ऐसा घोरयुद्ध जारी हुआ जैसे कि जीवोंकी प्रलयमें ग्रहोंका घोरयुद्ध हुआ था २३ हे भरतवंशिन्! उन दोनों के छोड़ेहुए वह बाण चारोंओर से सब दिशा और आपकी सेनाको अच्छे प्रकार से प्रकाशित करनेलगे और बाणसमूहों से व्याप्त आकाश महा भयानकरूप हुआ २४ । २५ हे राजन्! जैसे जीवों के प्रलय में उल्कापातों से संयुक्त युद्धहुआ था वैसेही वहां बाणोंके आघातसे ऐसी अग्नि उत्पन्न हुई जैसे कि फुलिङ्गरखनेवाली प्रकाशमान अग्निकी ज्वाला होती है २६ फिर अग्निने दोनों सेनाओं को भस्म किया तब वहां सिद्धलोग आकर कहनेलगे २७ कि सबयुद्धोंमें यह भी युद्ध बड़ाहै और सब युद्ध इसयुद्धके षोड़शांश कलाके भी समान नहीं हैं २८ ऐसा युद्ध फिर कभी न होगा बड़ा आश्चर्यहै कि यह ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों पूर्ण हैं २९ यह दोनों पराक्रमी अपनी २ उग्रशूरताओं से संयुक्त हैं और भीमसेन भयानक पराक्रमी है और इसकी अस्त्रज्ञता भी पूर्ण है ३० इन दोनों की प्रतिष्ठा और बड़े २ साहस अपूर्व हैं यह काल और मृत्यु के समान दोनों युद्धमें नियत हैं ३१ यह दोनों रुद्रके समान प्रकटहुए दोनों सूर्यके समानहैं अथवा दोनों पुरुषोत्तम घोररूप यमराजके रूपहैं ३२ यह सिद्धों के वचन बारंबार सुनेगये और भागनेवाले देवताओंके सिंहनादप्रारम्भहुए ३३ युद्धमें उन दोनोंके अपूर्व बुद्धिसे बाहर कर्म को देखकर सिद्ध और चारणलोगों के समूह को बड़ा आश्चर्य हुआ ३४ तब देवता सिद्ध और परम ऋषियों ने प्रशंसाकरी कि हे महाबाहो, अश्वत्थामन्! और हे महाबाहो, भीमसेन! तुम दोनोंको धन्य है ३५ हे राजन्! परस्पर अपराध करनेवाले उन दोनों शूरों ने

युद्ध में क्रोध से आँखों को फाड़कर परस्परमें देखा ३६ वह दोनों क्रोधसे रक्तनेत्र हो क्रोधसेही ओठों के चाबनेवाले होकर दाँतों के किटकिटानेवालेहुए ३७ बाणरूप जलधारा और शस्त्ररूप बिजलीसे प्रकाश करनेवाले दोनों महारथियों ने बाणों की वर्षासे परस्परमें ढकदिया ३८ फिर उन दोनोंने परस्परकी ध्वजा और सारथीको बेधकर प्रत्येकने दूसरेके घोड़ोंको घायल करके परस्परमें घायल किया ३९ हे महाराज ! इसके पीछे परस्पर मारनेके इच्छावान् क्रोध भरे हुए उन दोनों ने युद्ध में बाण को लेकर शीघ्रही एक ने दूसरे के ऊपर फेंका ४० उन वज्रके समान वेगवान् विजयी और सेनामुखपर प्रकाशमान दोनोंने सम्मुख पाकर परस्परमें शायकोंसे घायलकिया ४१ तब परस्परकी तीव्रता और बाणों से घायल बड़े पराक्रमी वह दोनों रथों के बैठनेके स्थानोंमें गिरपड़े ४२ इसके अनन्तर सारथी अश्वत्थामा को अचेत जानकर सब सेनाके देखते हुए युद्धसे दूर लेगया ४३ हे राजन् ! इसीप्रकार भीमसेनका सारथी भी उस वारंवार शत्रुओं के तपानेवाले पाण्डव भीमसेन को युद्ध में रथ के द्वारा दूर लेगया ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वण्यश्वत्थामभीमसेनयुद्धेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, जिस प्रकार अर्जुन का युद्ध संसप्तकलोगों के साथ और अन्य राजाओं का युद्ध पाण्डवोंके साथ हुआ उसको मुझ से कहो १ हे सञ्जय ! अश्वत्थामा और अर्जुन का जो युद्ध है और पाण्डवों के साथ जो अन्य २ राजाओं का युद्ध है वह सब मुझ से कहो २ सञ्जय बोले कि हे राजन् ! मैं कहता हूं आप सुनिये जिस प्रकार प्राणों का नाशकारक शत्रुओं से वीरों का युद्ध जारी हुआ ३ शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन ने समुद्र के समान संसप्तकों की सेनाओं में घुसकर ऐसे छिन्नभिन्न करदिया ४ जैसे कि तीव्र वायु समुद्र को उथल पुथल करदेता है अर्जुन ने अपने तीक्ष्ण भल्लों से पूर्ण चन्द्रमा से प्रकाशित ५ सुन्दर मुख, नेत्र, भृकुटी और दाँतरखनेवाले वीरों के शिरों को काट कर शीघ्रतापूर्वक ऐसे पृथ्वी को आच्छादित करदिया ६ जैसे कि कमलनाल से कमलों को काटकर हाथी सरोवर को आच्छादित करता है अर्जुन ने युद्ध में बड़े लम्बे मोटे चन्दन अगर से लिप्त शस्त्र और हस्तत्राणधारी पांच मुखधारी सर्पों के समान शत्रुओं की भुजाओंको क्षुरप्रों से काटा ७ और घोड़े घोड़े के

सवार और सारथी लोगों के ध्वजा, धनुष, शायक और अँगूठी धारण किये वीरों के हाथों को भी वारंवार भल्लों से काटा ८ हे राजन् ! इसी प्रकार से अर्जुन ने युद्ध में अपने हज़ारोंबाणों से रथ हाथी और घोड़ों को उनके सवारों समेत यमलोक में पहुँचाया ६ जैसे कि मद से मतवाले गर्जनेवाले बैल गौ के निमित्त सिंहों के सम्मुख जाकर प्रहार करें उसीप्रकार उन क्रोध से भरे बड़े २ शूरवीरों ने उस क्रोधयुक्त और प्रहार करनेवाले को बाणों से घायल किया उसका और सबलोगों का वह घोरयुद्ध ऐसा रोमहर्षण करनेवाला हुआ १० । ११ जैसे कि तीनोंलोकों के विजय के लिये दैत्यों का युद्ध इन्द्र के साथ हुआ था उस अर्जुन ने अपने अस्त्रों से शत्रुओं के अस्त्रों को रोककर बहुत शीघ्र बाणों से विदीर्ण करके १२ प्राणों का हरण किया जिनके तूणीर चक्र और रथ के अङ्ग टूट गये और सारथियों समेत घोड़े भी मारेगये १३ और धनुष वा ध्वजा टूटीं और रथ की बागडोरें टूटीं रथ से कूबर जुदेहुए १४ और स्यन्दनों के जुयें पहिये आदि भी गिरपड़े उन रथों को खण्ड २ करताहुआ ऐसे चला जैसे कि बड़े २ बादलों को खण्ड २ करता वायुचलता है १५ आश्चर्य उत्पन्न करानेवाले अर्जुन ने शत्रुओं को भय करनेवाले दर्शनीय हज़ारों महारथियों के समान बल किया १६ सिद्ध देवर्षि और चारणलोगों ने भी इसकी प्रशंसाकरी देवताओं ने दुन्दुभी बजाकर पुष्पों की वर्षाकरी १७ वह पुष्प श्रीकृष्ण और अर्जुन के मस्तकपर गिरे और आकाशवाणी ने सदैव चन्द्रमा, वायु, अग्नि और सूर्य की कान्ति और तेज को पुष्टकिया १८ वह ब्रह्मा और शिवजी के समान श्रीकृष्ण और अर्जुन एक रथपर नियत सबजीवों में श्रेष्ठ दोनों नरनारायणरूप वीर हैं १६ हे भरतवंशिन् ! इस बड़े आश्चर्य को देखकर बड़े सावधान अश्वत्थामाजी युद्ध में श्रीकृष्णजी के सम्मुख गये २० फिर जिनकी नोकें शत्रुओं के मारनेवाली थीं उन बाणों के चलानेवाले पाण्डव अर्जुन से बाण पकड़नेवाले हाथ के द्वारा बुलाकर २१ यह वचन बोले कि हे वीर ! जो यहां वर्तमान मुझ अतिथिरूप को पूजन के योग्य मानता है २२ तो तुम सब आत्मा से युद्धरूप अतिथि मुझको जानो इस प्रकार युद्धाभिलाषी आचार्य के पुत्र से बुलायेहुए अर्जुन ने अपने को बहुत कुछ माना २३ और श्रीकृष्णजी से कहा कि मैं संसप्तकों को मारसक्ता हूं और अश्वत्थामाजी मुझको बुलाते हैं २४ इस स्थानपर जो उचित होय वह

आप मुझसे कहिये जो आप मानते हैं तो उठकर अतिथिकर्म कीजिये २५ ऐसे कहेहुए श्रीकृष्णजी ने बुद्धि के अनुसार बुलाये हुए अर्जुन को विजयी रथ की सवारी के द्वारा अश्वत्थामा के समीप ऐसे पहुँचाया जैसे कि वायु इन्द्र को यज्ञ में पहुँचाता है २६ केशवजी उस एकचित्त अश्वत्थामा को सम्बोधन करके बोले कि, हे अश्वत्थामन्! शीघ्र नियत होकर घात करो और क्षमाकरो २७ स्वामी के अर्थ नमकहलाली करने का यह समय है ब्राह्मणों का संवाद बड़ा सूक्ष्म है और क्षत्रियसम्बन्धी विजय और पराजय योग्य है २८ तुम अज्ञानता से अर्जुन के जिस दिव्य और उत्तम कर्म को चाहते हो अब उसके अभिलाषी होकर तुम नियत होकर पाण्डवों से युद्धकरो २९ श्रीकृष्णजी के इस प्रकार के वचनों को सुनकर अश्वत्थामाजी ने बहुत अच्छा कहकर आठ नाराचों से केशवजी को और तीन बाणों से अर्जुन को घायल किया ३० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने उसके धनुष को तीनबाणों से काटा ३१ तब अश्वत्थामा ने बड़े घोर दूसरे धनुष को लिया और क्षणभर मेंही श्रीकृष्ण और अर्जुन को घायल किया तीन सौ बाणों से वासुदेवजी को और हज़ार बाणों से अर्जुन को घायलकिया ३२ इसके पीछे उपाय करनेवाले अश्वत्थामा ने युद्ध में अर्जुन को रोककर हज़ारों बाणों की वर्षाकरी ३३ हे श्रेष्ठ ! उस ब्रह्मवादी अश्वत्थामा के तूणीर, धनुष, कवच, ध्वजा, हाथ, छाती ३४ नाक, मुख, नेत्र, कान, शिर और अङ्ग, देह के रोम और रथ से बहुत से बाण निकले ३५ प्रसन्नचित्त वीर अश्वत्थामा बाणसमूहों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को घायलकरके बड़े बादलों के समान शब्दों से गर्जा ३६ उसके शब्द को सुनकर अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले कि, हे माधवजी ! गुरुपुत्र के आन्तरीयद्वेषको मेरे ऊपर देखो ३७ यह हम दोनों को बाणपञ्जर में प्रविष्ट करके मराहुआ जानता है मैं इसके बाणपञ्जर को अपने पराक्रम से नाश करूंगा ३८ फिर उस भरतर्षभ ने अश्वत्थामा के चलायेहुए बाणों को छः २ खण्ड करके इधर उधर करादिया ३९ इसके पीछे अर्जुनने उग्रबाणोंसे घोड़े, सारथी, रथ, हाथी, ध्वजा और पत्तियों समेत संसप्तकों को घायल किया ४० उस समय जिस २ रूप के जो २ मनुष्य वहां दिखाई दिये वहां उन्होंने अपनेको बाणों से घायल माना ४१ और युद्ध में गाण्डीव धनुष से छूटे हुए वह नानाप्रकार के बाण एककोस से अधिक दूरपर वर्तमान

हाथी और मनुष्यों को भी मारते थे ४२ मदोन्मत्त हाथियों की सूंड़ भल्लों से कटकर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि फरसों से कटेहुए वन के बड़े २ वृक्ष होते हैं ४३ इसके पीछे सवारों समेत वह हाथी ऐसे गिरपड़े जैसे कि इन्द्र के वज्र से कटे हुए पर्वतोंके समूह गिरपड़ते हैं ४४ युद्धमें दुर्मद अर्जुन गन्धर्व नगरके समान अच्छे अलंकृत शीघ्रगामी सुशिक्षित घोड़ों से युक्त रथपर नियत होकर ४५ बाणोंकी वर्षा करताहुआ शत्रुओंके सम्मुख गया वहां जाकर अर्जुनने अश्वारूढ़ों को और पत्तियोंको मारा ४६ अर्जुनरूपी प्रलयकालीन सूर्यने कठिनता से सूखनेवाले संसप्तक रूप समुद्र को अपने तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त शोषण किया फिर बड़ी शीघ्रता करनेवाले ने अश्वत्थामा को बड़े वज्र के समान वेगवान् बाणों से घायलकिया ४७ । ४८ क्रोधयुक्त युद्धाभिलाषी आचार्य के पुत्र अश्वत्थामाजी बाणों के द्वारा घोड़े और सारथी समेत अर्जुनसे लड़नेको आये अर्जुनने उनके बाणोंको काटा ४९ इसके पीछे बड़े क्रोध से भरे अश्वत्थामाने अर्जुन के ऊपर अस्त्रों को ऐसे छोड़ा जैसे कि अतिथि के लिये शिष्टाचारी करी जाय फिर अर्जुन संसप्तकों को छोड़कर अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसे गये जिस प्रकार दान करनेवाला मनुष्य पंक्ति के अयोग्य लोगों को छोड़कर पंक्ति के योग्य मनुष्यों के पास जाता है ॥ ५० । ५१ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वण्यश्वत्थामाऽर्जुनयुद्धेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे शुक्र और बृहस्पतिजी के समान तेजस्वी उन दोनों का युद्ध ऐसे अच्छेप्रकारसे हुआ जैसे कि नक्षत्रमण्डलके पास आकाशमें शुक्र और बृहस्पतिका युद्धहुआथा १ एकने दूसरेको प्रकाशित बाणोंकी किरणों से अच्छीरीति से सन्तप्त किया और अपने मार्ग से हटकर चलनेवाले ग्रहों के समान लोकों का भय उत्पन्न करनेवाले हुए २ उसके पीछे अर्जुनने नाराच से दोनों भृकुटियों के मध्य कठिन घायल किया वह अश्वत्थामा जी उस घाव से ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि ऊपर की ओर किरण रखनेवाला सूर्य होताहै ३ इसके अनन्तर अश्वत्थामा के सैकड़ों बाणों से अत्यन्त पीड्यमान श्रीकृष्ण और अर्जुन भी ऐसे प्रकाशमान हुए जिस प्रकार अपनी किरणों से प्रकाशित प्रलयकाल के दो सूर्य होतेहैं ४ तदनन्तर वासुदेवजी के व्याकुल होनेसे अर्जुनने

ने सब ओर से अस्त्रों की धाराओं को छोड़ा वज्र अग्नि और यमराज के दण्ड के समान बाणों से अश्वत्थामा को घायल किया ५ उस बड़े तेजस्वी और भयानककर्मी अश्वत्थामाजी ने अच्छेप्रकारसे चलाये महाकठोर और वेगवान् बाणों से अर्जुन और केशवजी को मर्मस्थलों पर घायलकिया वह ऐसे बाण थे जिनके मारे मृत्युभी व्याकुल होजाय ६ फिर अर्जुन उस उपाय करनेवाले अश्वत्थामा के उन बाणों को उससे द्विगुणित अपने बाणों से अच्छीरीति से रोककर उस बड़े मुख्य वीर को घोड़े सारथी और ध्वजासमेत अपने सुन्दर पुङ्खवाले दूने बाणों से ढककर संसप्तकों की सेना के सम्मुखगया ७ अर्जुन के अच्छीरीति से चलायेहुए बाणोंसे मुख न मोड़नेवाले सम्मुखतामें नियत शत्रुओं के धनुष, बाण, तूणीर और कवच, हाथ, भुजा वा हस्तगतशस्त्र और शस्त्र ध्वजा घोड़े और रथ और अनेक वस्त्रादिक वस्तु माला भूषणों समेत मर्मस्थल और चित्तरोचक प्यारे कवच और अनेक प्रिय वस्तुओं समेत शिरों को काटा और उपाय करनेवाले नरोत्तमों समेत अच्छीरीति से रथ घोड़े और हाथियों समेत नियत और अलंकृत सैकड़ों शूरवीरों को भी अर्जुन ने सैकड़ोंबाणोंसे गिराया तब उनके साथ बड़े २ उत्तम मनुष्य भी गिरपड़े ८। १० कमल सूर्य और पूर्णचन्द्रमा के समान विशाल मुख मुकुटमाला और आभूषणोंसे प्रकाशमान शिर और भल्ल अर्धचन्द्र और क्षुरप्र नाम बाणों से घायल मनुष्यों के भी शिर वारंवार पृथ्वीपर गिरे ११ फिर कलिङ्ग, अङ्ग,बङ्गदेशीय निषाद जाति के असुरों के गर्वप्रहारी वीरलोग जो बड़े उग्ररूप अर्जुन के मारने के अभिलाषी थे उनके गज और असुरों के समान हाथियों के कवच, सूंड़, सारथी, ध्वजा और पताकाओं को काटा इसके पीछे वह ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्र के प्रहार से पर्वतों के शिखर गिरते हैं १२ । १३ उनके पराजय और छिन्न भिन्न होने पर अर्जुन ने सूर्यवर्ण के बाणजालों से गुरु के पुत्र को ऐसा ढकदिया जैसे कि बड़े बादलों के जालों से वायु उदय हुए सूर्य को ढकता है १४ इसके पीछे अश्वत्थामाजी अपने बाणोंसे अर्जुन के बाणों को काटकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को ढककर ऐसे गर्जे जैसे कि वर्षाऋतु में चन्द्रमा और सूर्य को ढककर बादल गर्जता है १५ फिर अर्जुन ने भी अश्वत्थामाजी को और अन्यलोगों को ढककर शस्त्रोंसे घायलहुए ने समीप जाकर शीघ्रही बाणों के अन्धकारको

दूरकर सुन्दर पुङ्खवाले बाणों से सबको घायलकिया १६ फिर अर्जुन रथके ऊपर बाणों को लेता चढ़ाता और मारता हुआ भी युद्ध में दृष्टि न पड़ा फिर बाणों से छिदेहुए रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों को अर्जुन ने मृतक देखा १७ तब शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा ने शीघ्रही दश उत्तम नाराचों को चढ़ाकर एक ही के समान छोड़ा उनमें से पांच उत्तम बाणों ने श्रीकृष्णजी को और पांच ने अर्जुन को घायलकिया १८ अन्य मनुष्यों ने ऐसे धनुर्वेद के ज्ञाता अश्वत्थामा जी से पराजित और रुधिर डालनेवाले नरोत्तम इन्द्र के समान श्रीकृष्ण और अर्जुन को युद्ध में मृतकसमझा १६ इसके पीछे श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले कि क्या भूल में पड़ा है इस युद्धकर्ता को मार नहीं तो यह वीर अपूर्व दोष को उत्पन्न करेगा और इसका बदला न लेनेवाला शूरवीर कठिन रोगी के समान होगा २० फिर सावधान अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से बहुतअच्छा यह शब्द कहकर बड़े उपाय के साथ अश्वत्थामा को घायलकिया चन्दन के सार से पीठ भुजा छाती शिर और जङ्घावों को २१ क्रोधयुक्त अर्जुनने गाण्डीव धनुष से छोड़ेहुए विकर्णनाम बाणों से घायल किया और बागडोरों को काट कर उसके घोड़ों को भी घायलकिया फिर वह घोड़े व्याकुल होकर उसको युद्ध से दूरलेगये २२ उन वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों से हटायेहुए और अर्जुन के बाणों से पराजित बुद्धिमान् अश्वत्थामाजी ने विचार कर फिर लौटकर अर्जुन के साथ लड़ना नहीं चाहा २३ अर्जुन और श्रीकृष्णजी की निश्चय विजय को जानतेहुए वह बेगवान् उत्साह से भ्रष्ट नाशमान बाण और अस्त्र योगवाले अङ्गिरा वंशियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी कर्ण की सेना में गये २४ अर्थात् वह अश्वत्थामाजी घोड़ों को स्वाधीन करके बहुत विश्वासितकर रथ घोड़े और मनुष्यों से पूर्ण होकर कर्ण की सेनामें जापहुँचे २५ जैसे कि मन्त्र वा ओषधी वा कर्म के करने से रोग शरीर से जाता रहताहै उसी प्रकार घोड़ों के द्वारा उस विरोधी अश्वत्थामा के हटजानेपर २६ अर्जुन और श्रीकृष्णजी वायु से उड़ाई हुई पताका और बादल के समान गर्जते हुए रथ की सवारी से संसप्तकों के सम्मुख गये ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वण्यश्वत्थामापराजयोनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे पाण्डवों की सेना में उत्तर दिशाकी ओर दण्ड-धार के हाथ से घायल रथी, हाथी, घोड़े और पत्तियों के शब्द उठे १ तब गरुड़ और वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों को चलाते केशवजी रथ को लौटाकर अर्जुन से बोले २ कि बल और शिक्षा में भगदत्त के समान मगध देशीय दण्ड-धार भी नाश करनेवाले हाथीसमेत कठिन युद्ध करनेवालाहै ३ इसको मारकर तू फिर संसप्तकों को मारेगा श्रीकृष्ण जी ने यह कहकर अर्जुन को दण्डधार के समीप पहुँचाया ४ वह मगधदेशियों के मध्य में अंकुश धारण हाथियोंके युद्ध में ऐसा अत्यन्त उत्तम और असह्यथा जैसे कि ग्रहोंके मध्यमें धूम्रकेतु ग्रह होताहै उस भयानकरूप ने शत्रु की सेना को ऐसा मर्दनकिया जैसे कि धूम्रकेतु उपग्रह सम्पूर्ण पृथ्वी को मर्दन करता है ५ फिर वह राजा अच्छेप्रकार से अलंकृत गजा-सुर के समान बड़े बादल की समान शब्द करनेवाले शत्रुहन्ता हाथीपर सवार बाणों से हज़ारों हाथी घोड़े और रथों के समूहों को मारता है ६ वह श्रेष्ठ हाथी घोड़े सारथी मनुष्य और रथों को दबाकर चरणों से हाथियों को मलता सूंड़ से मारता हुआ चक्र के समान भ्रमण करनेलगा ७ फिर उसने उस बली पराक्रमी उत्तम हाथी के द्वारा लोहे के कवचों से अलंकृत मनुष्यों को और पत्तियों समेत घोड़ोंको भी गर्जनापूर्वक ऐसे शब्दायमान स्थूल नर्सल के समान गेरकरमारा ८ इसके पीछे अर्जुन धनुष की प्रत्यञ्चा के शब्द, मृदङ्ग, भेरी और बहुत से शङ्खों से शब्दायमान हज़ारों घोड़े रथ और हाथियों से संकुलित युद्धभूमिमें उत्तम रथ की सवारी से उत्तम हाथी के सम्मुखगये ९ वहां उस दण्डधारने अर्जुन को दश उत्तम बाणोंसे और श्रीकृष्णजी को सोलहबाणोंसे व्यथित करके तीन२ बाणों से घोड़ों को घायल किया इनको घायल करके बड़े शब्द को करके वारंवार हँसा और गर्जा १० इसके पीछे अर्जुन ने भल्लों से प्रत्यञ्चा समेत उसके धनुषको काटकर उसकी अलंकृत भुजाको भी काटा फिर रक्षकोंसमेत सारथियों को मारा इसकारण वह महाक्रोधितहुआ इसके अनन्तर उस मतवाले घातक वायुकेसमान तेजस्वी हाथी के द्वारा अत्यन्त व्याकुल करने के अभिलाषी उस राजाने तोमरों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को घायलकिया ११।१२ इसके पीछे इसकी हाथ की सूंड़ के

समान भुजाओं को और पूर्णचन्द्रमा के समान मुखको तीनक्षुरप्र से एकबार में छेदा और सैकड़ों बाणों से हाथी को घायल किया १३ स्वर्णमयी अर्जुन के बाणों से संयुक्त वह स्वर्णमयी कवचधारी हाथी सायङ्काल के समय ऐसा प्रकाशमानहुआ जैसे कि दावानल अग्नि से ज्वलित औषधियोंसमेत वृक्षोंवाला पर्वत प्रकाशित होता है वह बादल के समान गर्जता चलता घूमता दुःख से पीड़ित चलते २ सवार समेत ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्र से टूटाहुआ पर्वत गिरपड़ता है १४ । १५ उसके मरने के पीछे उसका दूसरा भाई द्वन्द्वयुद्ध में भाई के मरने पर श्रीकृष्ण अर्जुन के मारने का अभिलाषी स्वर्णमयी मालाधारी हिमाचलके शिखर के समान हाथी की सवारी से सम्मुखआया १६ वह सूर्य की किरणके समान प्रकाशित तीक्ष्ण तीन तोमरोंसे श्रीकृष्णजी को और पांचसे अर्जुन को घायल करताहुआ गर्जाइस के अनन्तर अर्जुन ने उसकी भुजाओं को काटा १७ सुन्दर तोमर और बाजूबन्द रखनेवाले चन्दन से चर्चित और क्षुरप्रबाण से कटीहुई दोनों भुजा हाथीपर से गिरतीहुई ऐसी शोभायमान हुईं जैसे कि अत्यन्त सुन्दर दो बड़े सर्प पर्वत से गिरतेहोयँ १८ इसी प्रकार अर्जुन के अर्धचन्द्र बाण से कटाहुआ दण्ड का शिर हाथी के ऊपर से पृथ्वीपर गिरते समय ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य अस्ताचल से पश्चिम दिशा में गिरता है १६ इसके पीछे अर्जुन ने सूर्य की किरणरूप उत्तम बाणों से उसके श्वेत हाथी को भी छेदा वह भी शब्द करताहुआ ऐसे गिरा जैसे वज्र से टूटा हिमाचल का शिखर गिरता है २० उसके सिवाय उसी के समान अन्य उत्तम २ हाथी विजयाभिलाषी हुए और वह भी उसी प्रकार से अर्जुन के हाथ से मरे जैसे कि वह दोनों हाथी मारेगये थे इसके पीछे शत्रुओं की बड़ीभारी सेना छिन्न भिन्न होगई २१ युद्ध में परस्पर मारनेवाले हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूह चारोंओरसे परस्पर में अत्यन्त घायल होकर गिरपड़े और बहुत से अत्यन्त बकनेवाले मनुष्य भी मारेगये २२ इसके पीछे पाण्डवीय सेना के मनुष्य अर्जुन को घेरकर ऐसे बोले जैसे कि देवताओं के समूह इन्द्र को घेरकर बोले थे कि हे वीर, अर्जुन ! हम लोग जिस से कि मृत्यु के समान भयभीत थे वह शत्रु प्रारब्ध से तुम्हारे हाथसे मारागया २३ जो इसप्रकार पराक्रमी शत्रुओंसे पीड्यमान इन मनुष्यों की तुम रक्षा नहीं करते तो शत्रुओं की वैसीही प्रसन्नता होती जैसी कि हमलोगोंको

हुई है २४ इसके अनन्तर शुभचिन्तकों के इन वचनों को सुनकर वह प्रसन्न-चित्त संसप्तकों का मारनेवाला अर्जुन प्रत्येक को उनकी योग्यता के अनुसार प्रसन्न करके चलदिया ॥ २५ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिदण्डधारवधयेकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे अर्जुन ने वहां से लौटकर मङ्गल ग्रह के समान वक्र और अतिवक्र गतियों से हज़ारों संसप्तकों को मारा १ हे भरतवंशिन्! अर्जुन के बाणों से घायल मनुष्य, घोड़े, रथ, हाथी सबके सब इधर उधरको तितिर बितिर होकर घूमनेलगे और घूम २ कर गिरे और मृतक होकर नष्ट होगये २ युद्ध में सम्मुख लड़नेवाले वीरों के उत्तम घोड़े, रथ, हाथी, रथी, ध्वजा, धनुष, शायक, हाथ वा हाथ में लिये शस्त्र भुजा और शिरों को अर्जुन ने अपने भल्ल क्षुरप्र अर्ध-चन्द्र और वत्सदन्तनाम बाणों से काटा ३।४ जैसे कि गौके निमित्त युद्धाभिलाषी अनेक बैल दूसरे बैलके सम्मुख जाते हैं उसी प्रकार हज़ारों शूरवीर अर्जुन के ऊ-पर गिरतेथे ५ उन सब वीरों के साथ अर्जुनका युद्ध ऐसा बड़ाभयकारी रोमहर्षण करनेवाला हुआ जैसे कि तीनोंलोकों की विजय के वास्ते दैत्यों का युद्ध इन्द्र के साथ में हुआ था ६ उग्रायुध के पुत्र ने सर्पों के समान तीन बाणों से उस अर्जुन को घायल किया और अर्जुन ने उसके शिर को धड़ से जुदा किया ७ फिर क्रोधित होकर उन लोगों ने सब ओर से अर्जुन के ऊपर नाना प्रकार के शस्त्रों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि वर्षा ऋतु में मरुत देवता के प्रेरित किये हुए बादल हिमालय पर जल की वृष्टि को करते हैं ८ अर्जुन ने शत्रुओं के अस्त्रोंको सब ओर से अपने अस्त्रों से रोककर अच्छी रीतिसे चलायेहुए बाणों से अनेक शत्रुओं को मारा ९ और उनके रथोंको भी बाणोंसे रथियों समेत ऐसी दशाका करदिया कि जिनके घोड़े और सारथी मरजाने से हाथों से तरकस और ध्वजा पताका गिरपड़ीं बागडोर हाथ से छूटगईं पहिये टूटे दांतुये और जुये और शरीर के कवच भी टूटे १० । ११ वहां टूटेहुए बहुमूल्यरथ ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि अग्नि वायु और जलसे टूटेहुए धनीलोगोंके घर होतेहैं १२ फिर वज्र और बिजली के समान बाणों से टूटेहुए हाथियों के कवच ऐसे टूटपड़े जिस प्रकार वज्रपात और अग्नि से पर्वतों के शिखर गिरपड़ते हैं १३ फिर अर्जुनके हाथ

से घायल होकर बहुत से घोड़े सवारों समेत गिरपड़े उन घोड़ों की जीभ और नेत्र निकल पड़े थे इसहेतु से वह पृथ्वी पर पड़े हुए रुधिर से लिप्त देखने के अयोग्य मालूम होते थे १४ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! अर्जुन के नाराचों से छिदे हुए मनुष्य घोड़े और हाथी गर्ज २ कर घूमते और मलिन मन हो २ कर पृथ्वीपर गिरपड़े १५ अर्जुन ने बड़े स्वच्छ बिजली और विषके समान बहुत से बाणों से उनको ऐसे मारा जैसे कि महेन्द्र दानवों को मारताहै १६ अर्जुन के हाथ से मरेहुए जो वीर रथ और ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर शयन करनेवालेहुए वह वीर बड़े मूल्य के कवच भूषण और नानाप्रकार की पोशाकों समेत शस्त्रों के धारण करनेवाले थे १७ वह पवित्रकर्मी वा उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ युद्धकर्ता अर्जुन के बाणों से पराजय होकर पृथ्वी पर गिरपड़े और अपने उत्तम कर्म के द्वारा स्वर्ग को गये १८ इसके पीछे भिन्न २ देशों के स्वामी क्रोधयुक्त शूरवीर आपके युद्ध-कर्ता अपने समूहों समेत रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन के सम्मुख गये १९ रथ घोड़े और हाथियों पर सवार मारने के अभिलाषी वह पत्तिलोग भी नाना प्रकार के शस्त्रों को चलातेहुए शीघ्र सम्मुखदौड़े २० जिनको अर्जुनरूपी वायु ने शीघ्रतापूर्वक छोड़ेहुए बाणों से उस शस्त्ररूपी बड़ी वर्षा को जोकि युद्धकर्तारूपी बड़े २ बा-दलोंसे छोड़ी हुई थी पृथक् २ करदिया था २१ वह घोड़े हाथी और पत्तियोंसे युक्त बड़े २ शस्त्रों से पूर्ण अर्जुन के शस्त्र और अस्त्ररूपी पुल से हटकर साथमें पार होने के अभिलाषी थे २२ इसके अनन्तर वासुदेवजी ने कहा कि, हे निष्पाप, अर्जुन! क्या खेल करता है इन संसप्तकों को मार कर फिर कर्ण के मारने का उपाय शीघ्रतासे कर २३ तब अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से बहुत अच्छा यह शब्द कहकर श्रेष्ठ संसप्तकोंको तुच्छकरके शस्त्रोंके बलसे ऐसा मारा जैसे कि दैत्योंको इन्द्र मारता है २४ अर्जुन बाणों को लेता चढ़ाता और मारता हुआ किसीको दिखाई नहीं दिया और सावधान वीरों ने उसको शीघ्रता से बाणोंको छोड़ता हुआ भी देखा २५ हे भरतवंशिन्! उन श्रीकृष्णजी ने बड़ा आश्चर्य किया कि हंसों के समान उज्ज्वल वह बाण सेनामें ऐसे पहुँचे जैसे कि सरोवरमें हंस पक्षी पहुँचते हैं २६ इसके अनन्तर मनुष्यों की प्रलय वर्तमान होने पर युद्ध-भूमिको देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले २७ हे अर्जुन! दुर्योधनके कारण से यह भरतवंशीय और अन्य राजाओं की प्रलय पृथ्वी पर वर्तमान है २८

हे भरतवंशिन्! बड़े धनुषधारियोंके सुवर्णपृष्ठवाले धनुषधारियों को वा आभूषणों समेत तूणीरों को टूटाहुआ देखो २९ और टेढ़े पर्व और सुनहरी पुङ्खवाले तेल से सचिक्कण कांचली से छुटे सर्पों के समान नाराचनाम बाणोंको देखो ३० हे भरतवंशिन्! सुवर्ण से अलंकृत चित्रविचित्र तोमरों को भी देखो और धनुष से टूटेहुए सुवर्ण पुङ्खवाले बाणों को देखो ३१ सुवर्णसे अलंकृत बाण वा कञ्चनसे शोभित शक्तियों को वा सुनहरी वस्त्रों से मढ़ीहुई गदाओं को देखो ३२ सुनहरी दुधारे खड्ग, पट्टिश और दण्डों समेत कटेहुए फरसों को देखो ३३ और बहुमूल्य के पड़ेहुए परिघ, भिन्दिपाल, भुशुण्डी, कुणप और अपरकुन्तों को देखो ३४ विजयाभिलाषी वेगवान् शूरवीर नाना प्रकार के शस्त्रोंको लेकर निर्जीव होकर जीवते से दिखाई देते हैं ३५ गदाओं से मथित अङ्गवाले हाथी, घोड़े और रथों समेत मूसलों से कूटेहुए मस्तकवाले हज़ारों युद्धकर्ताओं को देखो ३६ हे शत्रु-हन्तः! बाण, शक्ति, दुधारे, खड्ग, तोमर, पट्टिश, प्रास, नखरल, गुड़आदि अनेक शस्त्रों से अत्यन्त घायल मनुष्य, हाथी, घोड़ों के समूह रुधिरमें भरेहुए निर्जीव देहों से पड़े युद्धभूमि में वर्तमान हैं ३७। ३८ और बाजूबंद आदि शुभभूषण हस्तत्राण और केयूर को धारणकरनेवाली चन्दन से लिप्त भुजाओं से पृथ्वी शोभायमान है ३९ और वेगवान् शूरवीरों की टूटीहुई उत्तम भुजाओंसे वा हाथी की सूंड़ के समान टूटीहुई जङ्घाओं से और उत्तम चूड़ा बाँधनेवाले कुण्डलधारी शिरों से युद्धभूमि अत्यन्त शोभादेरही है सुनहरी घण्टे रखनेवाले उत्तम रथों को भी अनेक प्रकार से टूटाहुआ देखो ४०।४१ और रुधिर में भरेहुए बहुत से घोड़ों को देखो वा अनुकर्ष उपासङ्ग पताका और नानाप्रकार की ध्वजाओं को देखो ४२ युद्धकर्ताओं के फैलेहुए श्वेतरङ्ग के महाशङ्खों को और जिह्वा निकले पर्वत के समान पड़े सोतेहुए हाथियों को देखो ४३ वैजयन्तीनाम विचित्र मालाओं से और मरेहुए हाथियों के सवार और अनेक कालेकम्बलों से युक्त परिस्तोमों से ४४ अच्छी कृष्ण और विचित्र अद्भुतरूप कुथाओं से और हाथियोंसे टूटकर गिरेहुए घण्टाओं के चूर्णों को देखो ४५ वैडूर्य मणि के दण्डवाले पृथ्वीपर पड़ेहुए अंकुशों को और घोड़ों के जुये पीठ और रत्नजटित छिद्रों को देखो ४६ सवारों की ध्वजाओं की नौका पर टूटेहुए सुवर्ण से चित्रित घण्टाओंको और विचित्र मणियोंसे जटित सुवर्ण अलंकृत ४७ पृथ्वीपर पड़ेहुए मृगचर्म से बनेहुए घोड़ों

के ज़ीनपोशों को और राजाओं की चूड़ामणि और सुनहरी विचित्र मालाओं को देखो ४८ धनुष से छिदेहुए छत्र चामर और वैजयन्तियों को देखो चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान प्रकाशित सुन्दर कुण्डलधारी ४९ अलङ्कार युक्त डाढ़ी मूछोंसे संयुक्त पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखों से बिछीहुई पृथ्वी को देखो ५० इसी प्रकार कुमुद उत्पल नाम कमलों के समानरूपी राजाओं के मुखों से इस पृथ्वी को नक्षत्रसमूहों समेत निर्मल चन्द्रमा से शोभित आकाश के समान सदैव बाणरूप नक्षत्रों की मालाओं के रखनेवाली को देखो हे अर्जुन! इस महायुद्ध में यह कर्म तेरेही योग्य है ५१।५२ चाहै वह कर्म जो तुमने स्वर्ग के युद्ध में इन्द्र का किया इसरीति से वह युद्धभूमि अर्जुन को दिखाते ५३ और चलतेहुए श्रीकृष्णजी ने दुर्योधन की सेनामें शङ्ख, दुन्दुभी, भेरी और पणवों के बड़े शब्दों को सुना ५४ और रथ, घोड़े, हाथी और शस्त्रों के भयानक शब्दों को भी सुना फिर श्रीकृष्णजी ने वायु के समान घोड़ों के द्वारा उस सेना में प्रवेश करके ५५ राजा पाण्ड्य के हाथ से आपकी सेना को पीड़ित देखकर बड़ा आश्चर्य किया बाण और अस्त्रविद्या में अत्यन्त श्रेष्ठ उस पाण्ड्य ने युद्ध में अनेक प्रकार के बाणों से ५६ शत्रुओं के समूहों को ऐसे मारा जैसे कि मृत्यु निर्जीव मनुष्यों को मारती है घात करनेवालों में श्रेष्ठ पाण्ड्य ने तीक्ष्ण बाणों के द्वारा हाथी घोड़े और मनुष्यों के शरीरों को ५७ छेदकर उन निर्जीवों को गिराया फिर पाण्डवों ने शत्रुओं के चलाये अस्त्र और नाना प्रकार के शस्त्रों को शायकों से काटकर उन शत्रुओं को ऐसे मारा जैसे कि इन्द्र असुरों को मारता है॥ ५८।५९॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेविंशोऽध्यायः॥ २०॥

इक्कीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! तुमने प्रथमही लोक में विख्यात पाण्ड्य बड़ा वीर वर्णन किया परन्तु तुमने युद्धमें इसके कर्मको वर्णन नहीं किया १ अब उस बड़े वीर के पराक्रम और शिक्षाके प्रभाव बल बड़प्पन और अहङ्कार को ब्यौरेवार कहो २ सञ्जय बोले कि तुम भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, अर्जुन और श्रीकृष्ण आदि जिन रथियों को सर्वविद्या सम्पन्न और धनुष विद्या में सबसे श्रेष्ठ मानते हो और जो इन सब महारथियों को भी अपने पराक्रम से तुच्छ समझता है जिसने अन्य किसी राजा को अपने समान नहीं माना ३।४

और जो भीष्म द्रोणाचार्य के साथ में अपनी समानता को भी नहीं सहता है और जिसने अपने को वासुदेवजी और अर्जुनसे कम नहीं जाना ५ उस राजाओं में और सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ राजापाण्ड्य ने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर यम-राज के समान कर्ण की बड़ी सेना को मारा ६ बड़े रथ घोड़ों समेत अत्यन्त उत्तम पत्तियों से व्याप्त और पाण्ड्य के पराक्रम से घायल होकर वह सेना कुम्हार के चक्रके समान घूमतीहुई इधर उधर फिरनेलगी ७ पाण्ड्यने घोड़े ध्वजा और सारथियों से रहित रथों को और कठिन युद्ध से मारेहुए हाथियों को अच्छी रीति से चलाये बाणों से ऐसे हटादिया जैसे कि वायु बादलों को हटाता है ८ पताका ध्वजा और शस्त्रों से रहित हाथियों को हाथियों के सवारों समेत पीछे के रक्षकों को ऐसे मारा जैसे कि शत्रुहन्ता इन्द्र अपने वज्रसे पर्वतों को विदीर्ण करता है ६ उसने शक्ति, प्रास और तूणीरों समेत अश्वारूढ़ और घोड़ों कोभी मारकर पुलिन्द, खस, बाह्लीक, निषाद, अन्धक, कुन्तल १० दक्षिणात्य और भोजों को और युद्धमें निर्दयी शूरों को बाणोंके द्वारा शस्त्र और कवचोंसे रहित करके निर्जीव किया ११ युद्ध में बाणों से मारनेवाले रुधिर से उत्पन्न होनेवाले व्याकुलतासे पृथक् पाण्ड्य को देखकर अश्वत्थामाजी भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित चतुरङ्गिणी सेना समेत उसके सम्मुख गये १२ वहां प्रहार-कर्ताओं में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी ने निर्भयता के समान इसको मीठे वचनों से समझाकर कहा १३ और बड़ी मन्द मुसकानसमेत युद्ध के निमित्त बुलाया और कहा कि हे कमलदललोचन, उत्तम कुलीन, शास्त्रज्ञ, वज्र के समान दृढ़ शरीर और बलमें विख्यात, राजा पाण्ड्य ! १४ आपके धनुषकी प्रत्यञ्चा पृष्ठस्थान में चिपटीहुई दिखाई देतीहै और बड़े भुजदण्डोंसे बहुत बड़े धनुषको बड़े बादलके समान कठिन टङ्कोरतेहुए दृष्टिपड़ते हो १५ बड़े वेगवान् बाणोंकी वर्षासे शत्रुओं के सम्मुख मुझ बाणवर्षा करनेवाले के सिवाय आपके सम्मुख होनेवाला शूरवीर युद्ध में नहीं देखता हूं १६ तुम अकेलेही बहुत से हाथी, घोड़े, रथ और पत्ति लोगों को ऐसे मथते हो जैसे कि निर्भय और भयानकरूप पराक्रमी सिंह वन में मृगों के समूहों को मथन करता है १७ हे राजन् ! रथके बड़े शब्द से पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करतेहुए ऐसे दिखाई देते हो जैसे कि वर्षा के अन्त में खेती की हानि करनेवाला गर्जताहुआ बादल होताहै १८ विषैले सर्प

की समान तीक्ष्ण बाणों को तूणीर से निकाल २ कर मुझ अकेले से ऐसे युद्ध करो जैसे कि अन्धकने शिवजी के साथ युद्धकिया था १६ प्रहारकरो ऐसे कहे हुए घायलहुए उस मलयध्वजपाण्ड्य ने बहुत अच्छा ऐसा शब्द कहकर करणीनाम बाण से अश्वत्थामा को घायलकिया २० आचार्यों में श्रेष्ठ मन्द मुसकान करते अश्वत्थामा ने मर्मभेदी अत्यन्त उग्र अग्निशिखा के समान बाणोंसे पाण्ड्य को घायल किया इसके पीछे अश्वत्थामाजीने अत्यन्त तीक्ष्ण मर्मभेदी अन्य नाराचों को भी फेंका २१ । २२ पाण्ड्यने उन बाणों को अपने तीक्ष्णधारवाले नौबाणों से काटा और चार बाणोंसे घोड़ोंको घायलकिया और घायलहोतेही वह शीघ्र मरगये २३ इसके पीछे सूर्यकेसमान तेजस्वी पाण्ड्यने तीक्ष्णधारवाले बाणों से अश्वत्थामा के उन बाणों को काटकर धनुषकी बड़ी प्रत्यञ्चाकोकाटा २४ इसकेपीछे शत्रुहन्ता ब्राह्मण अश्वत्थामाजीने दिव्यधनुष को तैयार करके और शीघ्रही रथ में जुटेहुए दूसरे उत्तम घोड़ों को देखकर २५ उसमें बैठे हज़ारों बाणोंको चलाया आकाश और दिशाओंको बाणोंसे व्याप्त करदिया २६ इसके पीछे बाण फेंकनेवाले अश्वत्थामा के उन सब बाणों को अविनाशी जानकर उस पुरुषोत्तम पाण्ड्य ने उनको काटकर गिराया २७ फिर पाण्ड्य ने अश्वत्थामाजी के उन बाणों को काटकर युद्ध में अपने तीक्ष्णधार बाणोंसे उनके दोनों चक्ररक्षकों को मारा २८ इसके पीछे शत्रुकी हस्तलाघवता को देखकर धनुषको मण्डलरूप करनेवाले अश्वत्थामाजीने ऐसे बाणोंको छोड़ा जैसे कि पूषा का छोटा भाई पर्जन्यनाम जलकी वर्षाको छोड़ताहै २९ हे श्रेष्ठ! जिन शस्त्रों को आठ २ बैलवाले आठ छकड़े ले चलते हैं उनको अश्वत्थामा जी ने आधी घड़ी में चलाया ३० उस यमराज के समान क्रोधरूप और मृत्यु के सदृश अश्वत्थामाजी को जिन्हों ने वहां देखा था उनमें से बहुधा तो अचेत होगये ३१ जैसे कि वर्षाऋतु में बादलों के समूह पर्वत वृक्ष रखनेवाली पृथ्वीपर वर्षा करते हैं उसीप्रकार आचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उस सम्पूर्ण सेनापर बाणों की वर्षा करी ३२ पाण्ड्यरूपी वायुने उस अश्वत्थामारूप बादल से छोड़ेहुए बड़े दुःख से सहने के योग्य उस बाणरूपी वर्षा को बड़ी प्रसन्नता से अपने वायुरूप अस्त्र से हटाकर नाश करदिया ३३ अश्वत्थामाजी ने उस गर्जनेवाले पाण्ड्यकी ध्वजा को जोकि चन्दन अगर से चर्चित मलयाचलके

स्वरूप थीं काटकर चारों घोड़ोंको मारा ३४ फिर एक बाणसे सारथीको मारकर और अर्धचन्द्र से बड़े बादल की समान शब्दायमान धनुषको काटकर रथ को टुकड़े २ करदिया ३५ अश्वत्थामाने अस्त्रोंको अस्त्रों से रोककर और सबशस्त्रों को काटकर आधीन होनेवाले शत्रुको युद्धाभिलाषी होकर युद्धमें नहीं मारा ३६ इसी अन्तर में कर्ण हाथियों की सेना में गया और वहां उसने जाकर पाण्डवों की बड़ी सेना को भगाया ३७ हे भरतवंशिन्! उसने टेढ़े पर्ववाले बहुत से बाणोंसे रथियों को विरथ करके हाथी और घोड़ों को अचेत करदिया ३८ इसके पीछे बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा ने शत्रुहन्ता रथियों में श्रेष्ठ रथ से रहित पाण्ड्य को युद्धकी इच्छा करके नहीं मारा ३९ अच्छा अलंकृत शीघ्रगामी शब्द पर चलनेवाला अश्वत्थामा के बाणों से घायल पराक्रमी हाथी जिसका कि स्वामी मारागया था वेगसे हाथियोंको मलता हुआ शीघ्र उस पाण्ड्य की ओर गया ४० हाथियों के युद्धमें कुशल मलयध्वज पाण्ड्य बड़ी शीघ्रता को करता हुआ उस पर्वत के शिखर की समान श्रेष्ठ हाथीपर ऐसे सवार हुआ जैसे कि गर्जताहुआ सिंह पर्वत के शिखर पर चढ़ता है ४१ उस मलयाचल के स्वामी गर्जते और अंकुश से हाथी को क्रोधयुक्त करवानेवाले पाण्ड्यने पराक्रम और अस्त्र चलाने के उपायजाननेके अभिमानसे शीघ्रही सूर्य की किरण के समान तोमरको गुरुके पुत्रपर छोड़कर ४२ माराहै माराहै ऐसे आनन्दपूर्वक शब्दों को करताहुआ बड़ेवेग से गर्जा और अश्वत्थामा के उस मुकुट को तोमर से तोड़ा जो कि मणियों से जटित उत्तम हीरों से और सुवर्ण से शोभित बहुमूल्य के वस्त्र और मालाओं से अलंकृत था ४३ सूर्य चन्द्रमा ग्रह और अग्नि के समान प्रकाशित वह मुकुट कठिन आघातसे ऐसे चूर्ण होकर गिरपड़ा जैसे कि इन्द्रके वज्रसे घात कियाहुआ बड़ेशब्दयुक्त होकर पर्वत का शिखर पृथ्वीपर गिरे ४४ उसके पीछे अश्वत्थामाजी ने यमराजदण्ड के समान शत्रुओं के पीड़ा करने वाले चौदह बाणों को हाथ में लिया ४५ तब उस उत्तम तेजस्वी ने हाथी के चारों पैर और सूंड़ पांच बाणों से व राजा की दोनों भुजा और शिर को तीन बाणों से और राजा पाण्ड्य के पीछे चलनेवाले छः महारथियों को छः बाणों से मारडाला ४६ राजा की दोनों भुजा जो बहुत लम्बी चन्दन से चर्चित, सुवर्ण, मुक्ता, हीरे और अन्य २ मणियों से अलंकृत थीं पृथ्वीपर गिरपड़ीं और

गरुड़ से व्याकुल सर्पों की समान फड़फड़ाने लगीं ४७ वह पूर्णचन्द्रमाके समान प्रकाशमान और क्रोधसे बड़ी २ लाल आँख रखनेवाला कुण्डलधारीशिर भी पृथ्वीपर गिराहुआ ऐसाशोभायमान हुआ जैसे कि दोनों विशाखोंके मध्य में चन्द्रमा वर्तमान होता है ४८ फिर वह हाथी पांच उत्तम बाणों से छः भाग कियागया और राजा भी तीनबाणोंसे चार खण्डकियागया उस सावधान युद्ध कर्ता ने इस प्रकार से दशभाग किये जैसे कि दश देवताओं से सम्बन्ध रखने वाला हव्य होताहै ४९ वह पाण्ड्य घोड़े, हाथी और मनुष्यों को जोकि राक्षसों के भोजन थे टुकड़े २ कराके अश्वत्थामा के बाणों से ऐसे शान्त होगया जैसे कि पितरों की प्रिय अग्नि मृतक देहरूप हव्य को पाकर जलप्रवाह से शान्त होजाती है ५० फिर सुहृद्जनों समेत आपके पुत्र राजा दुर्योधन ने उस युद्ध कर्म में विशारद और निवृत्तकर्म गुरु के पुत्र से मिलकर प्रसन्नतासे ऐसे उनका धन्यवाद किया जैसे कि देवताओं के ईश्वर इन्द्रने बलि के विजय होने पर विष्णु को धन्यवाद दिया था ॥ ५१ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिपाण्ड्यवधेएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! पाण्ड्य के मरने और एकवीर कर्ण के हाथसे शत्रुओं के भागनेपर अर्जुनने युद्ध में क्याकिया १ वह विद्यामें पूर्ण पराक्रमी योग्य वीर अर्जुन महात्मा शङ्करजी से भी विजय नहीं कियागया २ उस शत्रुहन्ता अर्जुन से बड़ाभारी कठिन भय है उस अर्जुन ने जो २ वहां कर्म किये हे सञ्जय ! उन सबको मेरे आगे वर्णन करो ३ सञ्जय बोले कि पाण्ड्य के मरजानेपर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजी ने अर्जुनसे यह हितकारी वचन कहा कि मैं राजा युधिष्ठिर को और हटेहुए पाण्डवों को नहीं देखता हूं ४ लौटेहुए पाण्डव से शत्रु की फिर बड़ी सेना पराजयहुई परन्तु अश्वत्थामा के संकल्प से कर्ण के हाथसे सञ्जय मारेगये ५ इस प्रकारसे घोड़े हाथी और रथों के नाश करने वाले बड़े वीर वासुदेवजी ने अर्जुन से सब वृत्तान्तकहा ६ भाई युधिष्ठिर के उस बड़े भय को देख और सुनकर पाण्डव अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से कहा कि शीघ्र घोड़ों को चलाइये ७ इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी रथ की सवारी के द्वारा उसके सम्मुख शीघ्रगये जिसका कि कोई सम्मुखता करनेवाला न था फिरबड़ी

कठिन सम्मुखताहुई ८ तदनन्तर निर्भय कौरव पाण्डव अर्थात् कुन्ती के पुत्र भीमसेन आदि और कर्णआदिक कौरव और हम सबलोग परस्पर में सम्मुखहुए हे राजाओं में श्रेष्ठ! इसके पीछे कर्ण और पाण्डवों का युद्ध यमराज के देश का बढ़ानेवाला फिर जारीहुआ ९ । १० धनुष,बाण,परिघ, खड्ग,पट्टिश,तोमर, मूसल, भुशुण्डी, शक्ति, दुधारा खड्ग, फरसा ११ गदा, प्रास, तीक्ष्ण कुन्त, भिन्दिपाल और बड़े २ अंकुशों को हाथ में लेकर परस्पर मारने की इच्छा से चढ़ाई करनेवाले हुए १२ बाण और धनुषों की प्रत्यञ्चा के शब्दों से दिशा विदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करते हुए शत्रुओं के सम्मुखगये १३ बड़े शब्दों से अत्यन्त प्रसन्न युद्धसे पारहोने के अभिलाषी वीरों ने शत्रुओं के वीरों के साथ महाघोर युद्धकिया १४ तब धनुष की प्रत्यञ्चा के शब्द और चिङ्घाड़ते हाथी और गिरतेहुए मनुष्योंका महाघोर शब्द हुआ १५ फिर वहां पर सेनाके मनुष्य सम्मुख गर्जते हुए शूरवीरोंके नानाप्रकारोंके शब्दों को सुनकर अत्यन्त भयभीत और अचेत होकर गिरपड़े १६ उनके गर्जते और बाणों की वर्षा करतेहुए वीर कर्णने पाञ्चालदेशीय वीरोंके बीसरथियों को घोड़े सारथी और ध्वजाओंसमेत अपने बाणोंसे स्वर्ग को पठाया १७ । १८ युद्ध में पाण्डवों के बड़ेपराक्रमी उत्तम युद्धकर्ताओं ने शीघ्रतापूर्वक अस्त्रोंके चलानेसे आकाश को व्याप्त करके कर्णको चारोंओर से घेरलिया १९ इसके पीछेकर्ण ने बाणों की वर्षासे शत्रुओंकी सेनाको छिन्नभिन्न करके ऐसा व्यथित किया जैसे कि पक्षियों से व्याप्त कमलों के वनों को गजराज मथन करता है २० कर्ण ने शत्रुओं में घिरकर उत्तम धनुष को ले तीक्ष्णबाणों से उन शत्रुओं के शिरों को काटकर दूर गिराया २१ तब मृतक वीरों की टूटीहुई ढालें और कवच पृथ्वीपर गिरपड़ीं २२ धनुषसे छोड़ेहुए मर्मदेह और प्राणों के घातक बाणोंसे धनुषोंकी प्रत्यञ्चा और तूणीरों को ऐसा घायल किया जैसे कि चाबुकसे घोड़ोंको घायल करते हैं २३ कर्णने बाणके लक्ष्य में वर्तमान पाण्ड्य सृञ्जय और पाञ्चालों को बड़ेवेगसे ऐसे मर्दनकिया जैसे कि मृगोंके समूहोंको सिंह मर्दन करता है २४ हेश्रेष्ठ! इसके पीछे पाञ्चाल और द्रौपदी के पुत्र नकुल और सहदेव सात्यकी समेत एक साथही कर्णके सम्मुखगये २५ उन कौरव पाञ्चाल और पाण्डवों के उपाय करने पर युद्धमें बड़े२ युद्ध करनेवालोंने अपने प्रियप्राणोंको त्यागकरके

परस्पर में घायलकिया २६ अच्छे अलंकृत कवचधारी आभूषणों से युक्त महाबली कालदण्ड के समान गदा मूसल और परिघों को उठाये हुए गर्जते और एक२ को पुकारते शीघ्र सम्मुखगये २७।२८ इसके पीछे एकने एकको घायल किया और घायल हो हो कर गिरपड़े और कोई शूरवीर अङ्गों से रुधिर गेरते मस्तक नेत्र और शस्त्रों से हीन होकर २९ शस्त्रों से युक्त और दाँतों से पूर्ण रुधिर में भरेहुए अनार के वृक्ष की समान मुखों से जीवतेहुए से नियतहुए ३० इसीप्रकार दूसरोंने फरसा, पट्टिश, खड्ग, शक्ति, भिन्दिपाल, प्रास और तोमरों से ३१ काटा छेदा और घायलकरके फेंका, गिराया, मारा और क्रोधयुक्त वीरों ने युद्धरूपी महासमुद्रमें घायलकिया ३२ परस्पर में मारेहुए निर्जीव रुधिर से भरेहुए सुन्दर रथवाले रुधिर को गिराते हुए ऐसे गिरपड़े जैसे कि चन्दन के कटेहुए वृक्ष गिराये जाते हैं ३३ रथों से रथी मारेगये हाथियों से हाथी मारेगये मनुष्यों से मनुष्य और घोड़ों से मारेहुए हज़ारों घोड़े ३४ क्षुरप्र भल्ल और अर्धचन्द्रों से कटेहुए भुज, शिर, छत्र और हाथियों की सूंड़ोंसमेत मनुष्योंकी भुजा पृथ्वीपर गिरपड़ीं ३५ हाथियों ने रथोंसमेत घोड़े और मनुष्यों को मर्दनकिया अश्वारूढ़ों के हाथ से शूरवीर मारे गये ३६ और पताका ध्वजाओंसमेत कटी हुई सूंड़ों समेत हाथी ऐसे गिरे जैसे टूटेहुए पर्वत गिरतेहैं वह हाथी रथ पत्तियों के सम्मुख जाकर मरे और मरकर गिरपड़े ३७ और शीघ्रता करनेवाले अश्वसवार सम्मुख होकर पत्तियों के हाथ से मारेगये ३८ और युद्ध में अश्वसवारों के हाथ से मारेहुए पत्तियों के समूह ऐसे नष्ट होगये जैसे कि मर्दन कियाहुआ कमल और मुरझाई हुई माला होयँ ३९ इसी प्रकार उस बड़े युद्धमें मृतकों के मुख भङ्ग होगये और मनुष्यों के अत्यन्त प्रकाशमान रूप और हाथियों ने ऐसे कुरूपता को पाया जैसे कि म्लानवस्त्र होते हैं ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, आपके पुत्र के कहने से हाथियोंके सवार अपने हाथियोंके द्वारा मारने के इच्छावान् पर्षत के पोते क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न के सम्मुख गये १ हे भरतवंशिन्! अत्यन्त उत्तम हाथियों के सवार शूरवीर पूर्व दक्षिणके वासी अङ्ग, बङ्ग, पुण्ड्र, मागध, ताम्र, लिप्तक २ मेकल, कोशल, मद्र, दशार्ण, निषध, कलिङ्गों

समेत गजयुद्ध में कुशल ३ बाण, तोमर और नाराचों से बादल की समान बाणवृष्टि करनेवाले उन सबने पाञ्चालदेशीय सेना को अपने बाणरूप वृष्टि से सींचा ४ एंड़ी अंगुष्ठ और अंकुशों से अत्यन्त तेज किये हुए उन हाथियों को मर्दनकरने का अभिलाषी धृष्टद्युम्न बाण और नाराचों से वर्षाकरनेवालाहुआ ५ हे भरतवंशिन्! उन पर्वताकार हर एक हाथी को फेंके हुए दश छः और आठ बाणों से घायलकिया जैसे कि बादलोंमें सूर्य ढक जाताहै उस रीतिसे धृष्टद्युम्न को हाथियों से घिरा हुआ देखकर तीक्ष्ण शस्त्रधारी पाण्डव और पाञ्चाल लोग गर्जते हुए गये ६। ७ प्रत्यञ्चा के शब्दों से शब्दायमान बाणों से हाथियों के सम्मुख बाणवृष्टि करनेवाले नकुल और सहदेव और द्रौपदीके पुत्र वा प्रभद्रक ८ सात्यकी, शिखण्डी, चेकितान नाम पराक्रमी वीरों ने चारों ओर से ऐसे सींचा जैसे कि जल की धाराओं से बादल पर्वतों को सींचता है ९ बर्छों से भिदेहुए उन अत्यन्त क्रोधयुक्त हाथियोंने मनुष्य घोड़े और रथोंको भी सूंड़ों से पकड़ २ पटक २ कर पैरोंसे मर्दनकिया और किसी २ को दाँतों की नोकों से घायलकर करके घुमाकर दूर फेंकदिया और दाँतोंमें चिपटेहुए अन्य भयानकरूप जीव भी गिरपड़े १०। ११ सात्यकी ने सम्मुख वर्तमान राजा अङ्गके हाथीको उग्रवेगी नाराचसे मर्मस्थलोंमें छेदकर गिरादिया १२ फिर सात्यकीने उन प्रहारोंसे बचे हुए शरीरवाले हाथीसे उछलनेके अभिलाषी राजा अङ्गकी छातीको नाराच से घायलकिया तब वह पृथ्वीपर गिरपड़ा १३ सहदेवने पुण्ड्रके राजा के हाथीको चलायमान पर्वतके समान आतेहुएको बड़े उपायसे चलायेहुए तीन नाराचोंसे घायलकिया १४ सहदेव उसहाथी को पताका हाथीवान् कवच और ध्वजासमेत मारकर राजा अङ्गके सम्मुखगया १५ फिर नकुलने सहदेवको रोककर यमराज के दण्डके समान तीननाराचोंसे हाथीको और सौसे उस राजा अङ्गको घायल करके व्यथित किया १६ फिर राजा अङ्ग ने सूर्य की किरणों के समान प्रकाशित आठ सौ तोमरों को नकुल के ऊपर फेंका तब नकुल ने प्रत्येक तोमर के तीन २ खण्डकरदिये १७ और अर्धचन्द्रसे उसके शिरको काटा तब वह मृतक होकर अपने हाथी समेत गिरपड़ा १८ फिर हाथी की शिक्षामें कुशल इस अङ्गदेशीय राजपुत्र के मरनेपर अत्यन्त क्रोध में भरेहुए अङ्गदेशीय हाथी सवार अपने हाथियों समेत नकुल के सम्मुखगये १९ चलायमान सुन्दर मुख रखने-

वाली पताका और सुवर्ण के कवचधारी हाथियों समेत नकुलके पीड़ा करनेके अभिलाषी होकर अत्यन्त प्रकाशमान पर्वतों के समान उसके सम्मुख गये २० फिर वह मारने के आकांक्षी मेकल, उत्कल, कलिङ्ग, निषद, ताम्र, लिप्तक देशीय युद्धकर्ता बाण और तोमरोंकी वर्षा करतेहुए सम्मुखगये २१ जैसे बादलसे सूर्य ढकजाताहै उसीप्रकार हाथियोंसे ढकेहुए नकुलको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डव पाञ्चाल युद्ध करनेको उपस्थित हुए २२ उसके पीछे हज़ारों तोमर और बाणों की वर्षा करनेवाले रथियों का वह युद्ध हाथियों के साथ हुआ २३ जिसमें अत्यन्त घायल हाथियों के कुम्भ और नानामर्मांग वा दाँत वा आभूषणों को नाराचों से काटा २४ सहदेव ने उन हाथियों में से बहुत बड़े २ हाथियों को मारा वह सब मरेहुए हाथी अपने २ सवारों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े २५ फिर नकुल ने बड़े उपाय से उत्तम धनुष को चढ़ाकर सीधे चलनेवाले बाणोंसे हाथियोंको मारा २६ इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र प्रभद्रक नाम क्षत्रिय और शिखण्डी ने बाणोंकी वर्षासे बड़े २ हाथियोंको व्यथित किया २७ वह शत्रुओं के पर्वताकार हाथी पाण्डवीय युद्धकर्तारूपी बादलों की बाणरूप वर्षा से ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्रों की वर्षा से पर्वत गिरते हैं २८ इसप्रकारसे उन पाण्डवों के हाथी और रथियों ने आपके हाथियों को मारकर सेनाको ऐसे भागता देखा जैसे कि टूटा किनारा भागतीहुई नदी को देखता है २९ पाण्डवों की सेनाके मनुष्य इस सेना को छिन्न भिन्न करके कर्ण के सम्मुख गये ॥ ३० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वण्यन्योन्ययुद्धेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! भाई दुश्शासन उस आपकी सेनाके नाश करनेवाले क्रोधयुक्त भाई सहदेव के सम्मुख गया १ वहां महायुद्ध में भिड़ेहुए उन दोनों को देखकर सिंहनाद किये और दुपट्टोंको फिराया इसके पीछे क्रोधयुक्त आपके पुत्र के तीन बाणों से महाबली सहदेव छातीपर घायल हुआ २ । ३ हे राजन् ! तबतो क्रोध करके सहदेव ने नाराच से आपके पुत्रको छेदकर सत्तर बाणों से पीड्यमान किया ४ और तीन बाणों से सारथी को हे राजन् ! इसके पीछे दुश्शासनने उस बड़े युद्ध में धनुषको काटकर सहदेवकी दोनों भुजाओं को तिहत्तर बाणों से छाती समेत घायल किया ५ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त

सहदेव ने उस महायुद्ध में खड्ग को लेकर अत्यन्त शीघ्रता से घुमाकर आपके पुत्रके ऊपर छोड़ा ६ वह बड़ा खड्ग उसके प्रत्यञ्चा समेत धनुष को काटकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि आकाश से सर्प गिरता है ७ उसके पीछे प्रतापवान् सहदेवने दूसरे धनुषको लेकर फिर नाश करनेवाले बाणको दुश्शासनके ऊपर फेंका ८ तब उस कौरव दुश्शासन ने यमदण्ड के समान प्रकाशमान आतेहुए बाण को अपने तीक्ष्ण धारवाले खड्ग से दो टुकड़े करदिया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले महापराक्रमी सहदेव ने उस तीक्ष्णधार खड्ग को घुमाकर और दूसरे धनुष को लेकर बाणको हाथ में लिया ९। १० फिर युद्ध में हँसतेहुए सहदेव ने उस अकस्मात् आतेहुए खड्गको तीक्ष्ण बाणोंसे गिराया ११ हे भरतवंशिन्! इसके पीछे उस महायुद्ध में आपके पुत्र ने शीघ्रही चौंसठ बाणों को सहदेवके रथपर चलाया १२ उन वेगसे आतेहुए बाणोंको देखकर सहदेवने पांच बाणों से काटा १३ फिर उसने आपके पुत्र के चलायेहुए वेगवान् बाणों को हटाकर युद्ध में उसके ऊपर बहुत से बाणों की वर्षा करी १४ आपका पुत्रभी उन प्रत्येक बाण को तीन बाणोंसे काटकर पृथ्वीको फाड़ता हुआ बड़े शब्दोंसे गर्जा १५ हे राजन्! इसके पीछे दुश्शासनने युद्धमें सहदेवको घायल करके उसके सारथी को नौ बाणों से घायल किया १६ हे महाराज! इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी सहदेव ने मृत्युकाल और कालदण्ड के समान घोर बाण को हाथमें लिया १७ और अपने पराक्रम से धनुष को खैंचकर आपके पुत्रपर फेंका वह बाण उसको छेदके कवच को काटकर पृथ्वी में ऐसे समागया १८ जैसे कि बामी में सर्प समाजाताहै हे महाराज! इसके पीछे आपका महारथी पुत्र अचेत होगया १९ अत्यन्त भयानक तीक्ष्ण बाण से घायल रथ को चलाता हुआ सारथी उसको अचेत जानकर शीघ्रही दूर लेगया २० पाण्डुनन्दन ने इस कौरव को विजय करके और दुर्योधन की सेना को देखकर चारों ओरसे मर्दन किया २१ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! जैसे कि मनुष्य क्रोधयुक्त होकर चींटियों की पंक्तियोंको मर्दन करता है उसी प्रकार उसके हाथ वह कौरवीय सेना मर्दन करीगई॥ २२॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिदुश्शासनयुद्धोनामचतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

पच्चीसवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! सूर्य के पुत्र कर्ण ने क्रोध से युद्ध में सेना को

भगानेवाले वेगवान् नकुल को रोका १ उसके पीछे हँसता हुआ नकुल कर्ण से यह बोला कि बड़े दुःख की बात है कि देवताओं ने बहुतकाल के पीछे मुझको अपनी कृपादृष्टि से देखा हे पापिन् ! युद्ध में नेत्रों के सम्मुख आयेहुए मुझको देख २ तूही शत्रुता उपद्रव और अनर्थों का मूल है ३ तेरेही अपराध से कौरव परस्पर सम्मुख होकर नाशवान् होगये अब मैं युद्ध में तुझको मारकर कृतकृत्य होकर तपसे निवृत्त हूं इस प्रकार के वचनों को सुनकर कर्णने नकुल को उत्तर दिया ४ कि अधिकतर धनुषधारी राजकुमार के योग्य है हे वीर ! तू मुझपर प्रहार कर मैं तेरी वीरता को देखूंगा हे शूर ! प्रथम युद्धमें अपने शूरता रूपी कर्म को करके फिर अपनी प्रशंसा करनेको योग्य है ५ । ६ हे तात ! शूर वीर युद्ध में कुछ न कहकर सामर्थ्य से लड़ते हैं तू अपनी सामर्थ्यसे मेरे सङ्ग युद्ध कर मैं तेरे अभिमान को दूर करूंगा ७ कर्ण ने यह कहकर शीघ्रही नकुल पर प्रहार किया अर्थात् युद्ध में इसको तिहत्तरबाणों से घायल किया ८ हे भरत-वंशिन् ! इसके पीछे कर्णके हाथसे घायल नकुलने सर्पके समान अस्सी बाणों से सूर्य के पुत्र को छेदा ६ कर्ण ने सुनहरी पुङ्ख और तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसके धनुष को काटकर तीस बाणों से नकुलको पीड़ित किया १० उन बाणों ने उसके कवचको काटकर रुधिरको ऐसे पानकिया जैसे कि विषधर सर्प पृथ्वी को छेदकर जल को पीता है ११ इसके पीछे नकुल ने सुवर्णपृष्ठवाले असह्य दूसरे धनुष को लेकर कर्ण को सत्तर बाणसे और सारथी को तीनबाणसे घायल किया १२ फिर क्रोधयुक्त शत्रु के वीरोंके मारनेवाले नकुल ने बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्र से कर्णके धनुष को काटा १३ फिर हँसतेहुए वीर नकुल ने इस टूटे धनुषवाले सब लोक के महारथी कर्ण को तीनसौ शायकों से घायल किया १४ हे श्रेष्ठ ! तब तो नकुल के हाथसे पीड्यमान कर्णको देखकर रथियों ने देवताओं समेत बड़ा भारी आश्चर्य किया १५ तब सूर्य के पुत्र कर्ण ने दूसरे धनुष को लेकर नकुलको पांचबाणोंसे जत्रुस्थानपर घायलकिया १६ वहां जत्रुस्थान में नियत होनेवाले बाणोंसे नकुल ऐसा शोभायमान हुआ १७ जैसे कि संसारमें प्रकाश करताहुआ सूर्य अपनी किरणोंसे शोभायमान होता है हे श्रेष्ठ ! इसके पीछे नकुलने शीघ्रगामी सातबाणोंसे कर्णको छेदकर फिर उसके धनुष की कोटि को काटा १८ इसके पीछे उसने बड़े वेगवान् दूसरे धनुष को लेकर युद्ध में बाणों

करके नकुल की दिशाओंको ढकदिया १९ अकस्मात् कर्णके बाणोंसे घिरेहुए उस महारथी ने अपने बाणों सेही कर्ण के बाणोंको काटा २० इसके पीछे आकाशमें बाणोंका जाल फैलाहुआ ऐसा दिखाई दिया जिसप्रकार पटबीजनों के समूहोंसे व्याप्त आकाश होता है २१ हे राजन्! उन छोड़ेहुए सैकड़ों बाणों से नकुल ऐसा ढकगया जैसे कि शलभाओं के समूहों से कोई ढक जाता है २२ वह सुवर्णसे चित्रित वारंवार गिरतेहुए पंक्तिरूप बाण ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि पंक्तिरूप क्रौञ्चनाम पक्षी होते हैं २३ बाणजालसे आकाशको व्याप्त होजाने और सूर्यके ढकजानेसे कोई अन्तरिक्षगामी जीव पृथ्वीपर नहीं गिरा २४ बाणों के समूहोंसे चारों ओरके मार्गों के रुकजानेपर दोनों महात्मा उदयमान काल सूर्यके समान शोभायमान हुए २५ हे राजेन्द्र! कर्णके धनुषसे गिरेहुए बाणों के समूहोंसे घायल दुःखसे दुःखित और अत्यन्त पीड्यमान सब सोमक पृथक् २ होगये २६ इसी प्रकार नकुलके बाणों से घायल आपकी सेनाभी दिशाओं में ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि वायुके वेग से बादलों के समूह तिरंबिरं होजाते हैं २७ तब उन दोनोंके दिव्य और बड़े बाणोंसे घायल वह दोनों सेना बाणों की आधिक्यताको विचारकर चित्रलिखीसी खड़ी रहगईं २८ कर्ण और नकुल के बाणों से उन मनुष्योंके समूहोंके हटजानेपर उन दोनों महात्माओं ने बाणों की वर्षासे परस्परमें घायलकिया २९ परस्पर मारनेके अभिलाषी वह दोनों अकस्मात् सेनाके मस्तकपर दिव्य शस्त्रों के दिखानेवाले और सेनाओं के ढकनेवाले हुए ३० नकुलके छोड़े कङ्कपक्षसे जटित बाण कर्ण को ढककर आकाश में नियतहुए ३१ इसी प्रकार कर्णके चलायेहुए बाण नकुलको ढककर आकाशमें नियतहुए ३२ हे राजन्! बादलों से ढकेहुए सूर्य और चन्द्रमा के समान बाण पञ्जरमें प्रविष्ट होकर वह दोनों किसीको दिखाई नहीं दिये ३३ इसके पीछे युद्ध में क्रोधयुक्त कर्णने शरीरको बड़ाघोर करके ३४ बाणोंकी वर्षासे नकुलको चारों ओर से ढकदिया हे महाराज! कर्णके बाणों से ढकेहुए उस नकुलने ऐसे पीड़ा को नहीं माना जैसे कि बादलोंसे ढकाहुआ सूर्य पीड़ाको नहीं मानता है ३५ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! इसके पीछे कर्णने हँसकर युद्धमें हजारों बाणजालोंको उत्पन्न किया ३६ उस महात्मा के बाणों से सब संसार छायामान हुआ और गिरतेहुए उत्तम बाणों से बादल के समान छाया उत्पन्न होगई ३७ हे महाराज! इसके

पीछे हँसतेहुए कर्ण ने महात्मा नकुल के धनुष को काटकर सारथीको रथ की नीड़से गिरादिया ३८ हे भरतवंशिन् ! इसके अनन्तर तीक्ष्णधार चार बाणोंसे उसके चारों घोड़ों को शीघ्रही मारकर यमपुर को भेजा ३९ इसके पीछे फिर तीक्ष्ण बाणोंसे इसके उस दिव्यरथ पताका और चक्रके रक्षकों समेत गदा और खड्गको भी तिलके समान खण्ड २ करदिया ४० और सूर्य चन्द्रमाके चिह्नवाली ढाल और अन्य सब प्रकार के अस्त्र शस्त्रों को भी काटडाला हे राजन् ! वह रथ और कवच से विहीन शीघ्रही रथ से उतरकर ४१ परिघ को लेकर नियत हुआ तब कर्ण ने उसके उठायेहुए उस महाघोर परिघको ४२ अत्यन्त तीक्ष्ण भारवाहक बाणोंसे तोड़डाला तब तो कर्णने उसको शस्त्रहीन देखकर टेढ़ेपर्ववाले ४३ अनेक बाणोंसे घायल किया परन्तु इसको अधिक पीड्यमान नहीं किया युद्ध में उस शस्त्रज्ञ पराक्रमी कर्ण से घायल ४४ होकर महाव्याकुल नकुल अकस्मात् भागा तब तो वारंवार हँसते हुए कर्ण ने उसके पास जाकर ४५ अपनी प्रत्यञ्चा समेत धनुष को उसके कण्ठमें डालदिया इसके पीछे वह नकुल कण्ठमें लगेहुए उस धनुष से ऐसा शोभायमान हुआ ४६ जैसे कि आकाशमें चन्द्रमा अपने मण्डलसे युक्त होताहै व जैसे श्याममेघ इन्द्रधनुषसे शोभित होताहै ४७ इसके पीछे कर्णने कहा कि तुमने मिथ्या कहा था अब वारंवार घायल हुए प्रसन्नचित्त होकर फिर कहो ४८ हे पराक्रमिन्, पाण्डव ! तुम कौरवोंके साथ मत लड़ो हे तात ! अपने समानवालों से लड़ो हे पाण्डव ! लज्जा मत करो ४९ हे माद्री के पुत्र ! घरको जावो अथवा जहां श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं वहां जावो हे महाराज ! ऐसा कहकर उसको छोड़ दिया ५० तब उस धर्मज्ञ शूरवीर ने मारने योग्य को नहीं मारा हे राजन् ! कुन्ती के वचन को स्मरण करके उसको छोड़ दिया ५१ फिर धनुषधारी कर्णसे छोड़ाहुआ नकुल लज्जायुक्त शीघ्रही युधिष्ठिर के रथ के पास गया ५२ कर्णसे अत्यन्त सन्तप्त कियाहुआ घटमें बन्दहुए सर्प के समान दुःख से दुःखी वारंवार श्वास लेताहुआ रथके ऊपर सवार हुआ ५३ कर्ण भी उसको विजयकरके शीघ्रही बड़े पताकावाले चन्द्रवर्ण घोड़े रखनेवाले रथ की सवारी से पाञ्चालों के सम्मुखगया ५४ वहां पाञ्चालों के रथसमूहों पर जातेहुए सेनापति को देखकर पाण्डवों में बड़ा शब्द हुआ ५५ हे महाराज ! महाचक्र के समान घूमतेहुए कर्णने मध्याह्नके समय शूरवीरों का नाशकिया ५६

उस समय हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! वहांपर हमने टूटीहुई ध्वजा पताका फूटीआँखके मृतक घोड़े और सारथियों समेत कितनेही रथों से ५७ हटेहुए पाञ्चालों के रथसमूहों को देखा वहां भ्रान्तियुक्त हाथी और रथ जहां तहां ऐसे घूमते थे ५८ जैसे कि महावन में दावानलसे जलेहुए हाथी होतेहैं टूटेहुए कुम्भ रुधिर से भरे खण्डित हाथ ५६ अङ्गभङ्ग आदि और कोई पूंछकटेहुए हाथी महात्मा के हाथसे घायल टूटेहुए बादलोंके समान गिरपड़े ६० नाराचबाण और तोमरोंसे भयभीत हाथी उसके सम्मुख ऐसे गये जैसे कि शलभानाम पक्षी अग्निके सम्मुख जातेहैं ६१ जल डालनेवाले पर्वतोंके समान अङ्गोंसे रुधिर की रक्षा करतेहुए अन्य बड़े २ हाथी शब्दकरतेहुए दृष्टिपड़े ६२ वहां हमने उरःछिदवाले बालबन्दोंसे वियुक्त घोड़ोंको सुवर्ण चांदी और कांसे के भूषणों से पृथक् ६३ और अन्य २ भूषण और लगामों के विना चामर जीनपोश और गिरेहुए तूणीर ६४ और युद्ध में शोभादेनेवाले शूरवीर सवारों सहित युद्धभूमि में घूमते हुओं को देखा ६५ हे भरतवंशिन् ! हमने प्रास खड्ग और दुधारे खड्ग से रहित लोहेके कवच और दि-स्तारोंके धारणकरनेवाले अश्वारूढ़ोंको देखा ६६ और मरे वा मरनेवाले अथवा काँपतेहुए नानाप्रकारके अङ्गोंसे रहित युद्धकरनेवालोंकोभी जहां तहां देखा ६७ हमने रथियोंके मरनेपर सुवर्णसे जटित शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त शीघ्र घूमतेहुए रथोंको देखा ६८ हे भरतवंशिन् ! हमने अक्षकूबर और पायेवाले पताका ध्वजा से रहित कितनेही अन्य रथों को देखा ६६ वहां कर्णके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल मृतकरूप जहां तहां दौड़नेवाले रथियोंको देखा ७० इसीप्रकार शस्त्रोंसे खाली बाण रखनेवाले बहुत से मृतकों को देखा और तारका जालों से ढकेहुए उत्तम कण्ठोंसे शोभायमान ७१ नानाप्रकार की विचित्र पताकाओंसे अलंकृत चारों ओरसे दौड़नेवाले हाथियोंको देखा ७२ इसी प्रकार चारों ओरको कर्णके धनुष से निकलेहुए बाणों से टूटेहुए शिर भुजा और जङ्घाओं को देखा ७३ कर्ण के बाणों से घायल और तेजबाणों से लड़नेवाले युद्धकर्ताओं का बड़ा भयानक दुःख वर्तमान हुआ ७४ युद्धमें कर्णके हाथ से घायल वह सृञ्जय उसके सम्मुख ऐसे जाते थे जैसे कि अग्निके सम्मुख पतङ्ग जातेहैं ७५ प्रलयकालकी अग्नि के समान जहां तहां सेनाओं के भस्मकरनेवाले उस महारथी कर्णको क्षत्रियों ने त्यागकिया ७६ जो पाञ्चालों के महारथी वीरलोग मरनेसे बाकी रहे थे उन

शीघ्रगामी पृथक् २ होनेवाले महारथियोंके पीछे से बाणोंको छोड़ताहुआ कर्ण सम्मुख दौड़ा ७७ उस महाबली सूतपुत्र ने उन टूटे कवच ध्वजावाले दुःखी वीरों को बाणों से ऐसे सन्तप्त किया ७८ जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य जीवधारियों को तपाता है ॥ ७९ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णयुद्धेपञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, आपके पुत्र युयुत्सु की सेनाके भगानेवाले उलूकके सम्मुख गया और तिष्ठ २ इस वचन को कहा १ हे राजन् ! उसके पीछे युयुत्सु ने वज्र की समान तीक्ष्ण धारवाले बाणों से महाबली उलूक को घायलकिया २ फिर क्रोधयुक्त उलूक ने युद्ध में आपके पुत्र के धनुष को क्षुरप्र से काटकर करणी नाम बाण से उसको घायलकिया ३ फिर लालनेत्र करनेवाले युयुत्सुने उस टूटे धनुष को डालकर दूसरे बड़े वेगवान् उत्तम धनुष को हाथ में लिया ४ उसके पीछे शकुनी के पुत्रको सात बाणोंसे और तीनबाणोंसे सारथीको घायल करके वारंवार छेदा ५ फिर उलूक ने उसको सुवर्ण से चित्रित बीसबाणों से घायल करके महा क्रोध में भरकर उसकी सुनहरी ध्वजा को काटा ६ हे राजन् ! वह टूटीहुई बड़ीभारी सुवर्ण की ध्वजा युयुत्सुके सम्मुख गिरपड़ी ७ फिर क्रोध से मूर्च्छित युयुत्सु ने ध्वजा को टूटीहुई देखकर पांच बाणों से उलूक को छाती पर घायल किया हे श्रेष्ठ,राजन् ! फिर उलूक ने युद्ध में तेल से स्वच्छ कियेहुए भल्लों से उसके सारथी के शिर को काटा ८ । ९ तब युयुत्सु के सारथी का वह कटाहुआ शिर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे अपूर्व तारा आकाशसे पृथ्वीपर गिरता है १० चारों घोड़ों को मारा और उसको पांचबाणों से भेदा फिर इस पराक्रमी के हाथ से घायल वह युयुत्सु दूसरे रथपर चलागया ११ हे राजन् ! युद्ध में उलूक उसको विजय करके शीघ्रतासे तीक्ष्णबाणोंको फेंकता पाञ्चालों और सृञ्जयोंको मारताहुआ सृञ्जयोंके सम्मुख गया १२ हे महाराज ! भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित आपके पुत्र श्रुतकर्मा ने अर्धनिमेष मारने मेंही शतानीकको घोड़े रथ और सारथी से रहित करदिया १३ फिर मृतक घोड़ेवाले रथपर नियत अत्यन्त क्रोधयुक्त शतानीक ने आपके पुत्र के ऊपर गदा को फेंका १४ वह गदा, रथ, घोड़े, सारथी समेत रथको भस्म कर कवच को फाड़ती

हुई शीघ्र पृथ्वीपर गिरपड़ी १५ रथ से विहीन परस्पर में देखनेवाले कौरवों की कीर्तिके बढ़ानेवाले दोनों वीर युद्धमें हटगये १६ फिर भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित आपका पुत्र रथपर सवार हुआ और शीघ्रता करनेवाला शतानीक भी प्रतिविन्ध्य के रथपर गया १७ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनीने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से सुतसोम को ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि जल का समूह पर्वत को कम्पित नहीं करसक्ता १८ हे भरतवंशिन्! सुतसोम ने पिता के बड़े शत्रु शकुनी को देखकर हज़ारों बाणों से ढकदिया १९ तेज अस्त्र और मित्र के अर्थ लड़नेवाले विजय से शोभायमान शकुनी ने शीघ्रही दूसरे बाणों से उन बाणों को काटा २० और क्रोधयुक्त होकर युद्ध में उन बाणोंको भी तीक्ष्ण धारवाले बाणों से रोककर तीन बाणों से सुतसोम को घायलकिया २१ हे महाराज! आपके साले ने बाणों से उसके घोड़े ध्वजा और सारथी को तिल के समान खण्ड २ किया इस हेतु से सब मनुष्य बड़े शब्द से पुकारे २२ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! वह मृतक घोड़े और टूटी ध्वजावाला रथसे रहित होकर उत्तमरथको लेकर रथसे पृथ्वीपर खड़ाहुआ २३ सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण धारवाले बाणोंको छोड़ताहुआ युद्ध में आपके साले के उस रथको ढकदिया २४ वह महारथी शकुनी शलभनाम पक्षी के समूहों की समान रथ के समीप वर्तमान बाणों के समूहोंको देखकर पीड्यमान नहीं हुआ २५ और बड़े यशस्वी ने अपने बाणों के समूहों से उसके बाणों को मथडाला उस स्थानपर युद्ध करनेवाले आकाशवासी सिद्ध भी प्रसन्न हुए २६ सुतसोमके उस अद्भुत और श्रद्धा के योग्य कर्म को देखकर प्रसन्न हुए और बहुत से पदाती और रथ सवार शकुनीके साथ युद्धकरनेवाले हुए २७ हे राजन्! तीक्ष्ण वा बड़े वेगवान् टेढ़े पर्ववाले भल्लों से उसके धनुष और सब तूणीरोंको तोड़ा २८ फिर वह टूटे धनुष रथ से विहीन वैडूर्य और नील कमल के वर्ण हाथीदाँत के मूठ रखने वाले खड्ग को उठाकर बड़ी ध्वनि से गर्जा २९ उसके पीछे बुद्धिमान् सुतसोम के घुमाये हुए निर्मल आकाश के समान उस खड्ग को कालदण्ड के समान समझा ३० हे महाराज! वह शिक्षायुक्त पराक्रमी खड्गधारी एकाएकी हज़ारों प्रकारसे चौदह मण्डलोंको घूमा ३१ उनके नाम भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, विप्लुत, सृतसम्पात, समुदीर्ण इन मण्डलों को युद्ध में दिखाया यह सात

मण्डल लोम विलोमके विभागसे द्विगुणित होकर चौदह होजाते हैं ३२ फिर उसके पीछे पराक्रमी शकुनीने बाणोंको उसके ऊपर फेंका उसने उन आतेहुए बाणोंको उत्तम खड्गसे काटा ३३ हे महाराज ! इसके अनन्तर क्रोधयुक्त शकुनी ने फिर भी सर्पके विषके समान बाणों को सुतसोम के ऊपर फेंका ३४ युद्ध में गरुड़जी के समान पराक्रमी सुतसोम ने अपनी हस्तलाघवता को दिखातेहुए खड्ग की शिक्षा के पराक्रम से उन बाणोंको काटा ३५ हे राजन् ! तब दायेंबायें मण्डलों के घूमनेवाले उस सुतसोम के प्रकाशमान खड्गको बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे काटा और रुकाहुआ खड्ग एकबारही पृथ्वीपर पड़ा और उस श्रेष्ठ खड्ग का आधा भाग उसके हाथ में नियतरहा ३६ । ३७ महारथी सुतसोमने खड्गको टूटा जानकर और छः चरण हटकर फिर उस आधे खड्गको प्रहारकिया ३८ वह सुवर्ण और हीरोंसे अलंकृत खड्ग उस महात्मा के डोरीसमेत धनुषको काटकर शीघ्रही पृथ्वीपर गिरपड़ा ३९ फिर सुतसोम श्रुतिकीर्ति के बड़े रथपर चलागया और शकुनी भी बड़े कष्ट से विजय होनेवाले दूसरे घोर धनुषको लेकर ४० शत्रुओं के बहुत से समूहों को मारताहुआ पाण्डवीय सेना के सम्मुख गया हे राजन् ! युद्ध में निर्भय के समान घूमनेवाले शकुनी को देखकर पाण्डवों के बड़े शब्द हुए महात्मा शकुनी के हाथ से वह अहङ्कारी शस्त्रों की धारण करनेवाली सेना भागतीहुई दृष्टि पड़ी जैसे कि देवराज इन्द्र ने दैत्यों की सेना को मर्दन किया इसी प्रकार शकुनी ने भी पाण्डवों की सेना का नाश किया ॥ ४१ । ४३ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसुतसोमसौबलयुद्धेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! कृपाचार्य ने युद्ध में धृष्टद्युम्नको ऐसे रोका जैसे कि वनमें हाथीको सिंह रोकता है १ हे भरतवंशिन् ! वहां उस पराक्रमी गौतम कृपाचार्यजी से रुकाहुआ धृष्टद्युम्न एकचरण चलनेको भी समर्थ नहीं हुआ २ कृपाचार्य के रथको धृष्टद्युम्न के रथके समीप देखकर सब जीवमात्र भयभीत होकर नाशको मानने लगे ३ वहांपर चित्तसे उदास होकर रथी और अश्वारूढ़ कहने लगे कि निश्चय करके द्रोणाचार्य के मरने से क्रियाओंमें भेद ४ बड़े तेजस्वी दिव्यास्त्रों के जाननेवाले बड़े बुद्धिमान् शार्दूलरूप कृपाचार्य अत्यन्त क्रोधयुक्त हैं अब कृपाचार्य के हाथ से धृष्टद्युम्न की कुशल ५ और इस सब सेनाका भी भय

से निवृत्त होना और हम सब भागनेवालों का भी इस ब्राह्मण से बचना कठिन विदित होता है ६ क्योंकि यह आचार्यरूप काल के समान दृष्टि पड़ता है हे कृपाचार्य ! अब द्रोणाचार्य के मार्गपर चलेंगे ७ यह कृपाचार्य सदैव हस्तलाघव करके युद्ध में विजयका पानेवाला अस्त्रज्ञ पराक्रमी होकर क्रोधयुक्त है ८ अब धृष्टद्युम्न युद्ध में मुख को फेरनेवाला दिखाई देता है महाराज ! वहां उनदोनों के सम्मुख होनेमें आपके पुत्रोंके नानाप्रकारके शब्द दूसरों के साथ में कहेहुए सुनेगये ९ इसके पीछे शार्दूल कृपाचार्य ने क्रोध से बड़ी २ श्वासें लेकर १० सदैव चेष्टा करनेवाले धृष्टद्युम्न को सब अङ्गों पर पीड्यमान किया फिर महात्मा कृपाचार्यसे घायलहोकर बड़ेमोहमें व्याकुल होके उसने युद्धमें ११ करनेके योग्य कर्मको नहीं जाना इसके पीछे सारथीने कहा हे धृष्टद्युम्न ! कुशल है १२ मैंने कहीं तेरे ऐसे समयको नहीं देखा था दैवयोग से सब ओर में तेरे मर्मस्थलोंको लक्ष्य करके इस उत्तम ब्राह्मणके फेंकेहुए बाण तेरे मर्मों के छेदनेवाले मर्मोंपर पड़े हैं जो तुम कहो तो रथको शीघ्रही ऐसे लौटाऊं जैसे कि समुद्रसे नदीके वेग को हटातेहैं १३ । १४ मैं ब्राह्मणको अवध्य मानता हूं इसीसे तेरा पराक्रम नष्ट होगयाहै हे राजन् ! यह सारथीके वचनको सुनकर धृष्टद्युम्न बड़ेधीरेपनेसे यहवचन बोला १५ हे तात ! मेरा चित्त अचेत होताहै और अङ्गोंपर पसीना उत्पन्न होता है और शरीरमें कम्प और रोमाञ्च खड़ेहैं १६ युद्धमें ब्राह्मणको त्यागकरके उधर को बड़े धीरे २ चल जहां कि अर्जुन है हे सारथे ! अब युद्ध में अर्जुन को या भीमसेन को पाकर १७ कुशल होगी यही मेरा दृढ़ विश्वास है हे महाराज ! इसके पीछे वह सारथी घोड़ों को मारता हुआ १८ बड़ी शीघ्रता से वहां गया जहां बड़ा धनुर्धर भीमसेन आपकी सेना के मनुष्यों से युद्ध कररहाथा हे श्रेष्ठ ! तब गौतम कृपाचार्य धृष्टद्युम्न के रथ को भागाहुआ देखकर १९ सैकड़ों बाणों को छोड़तेहुए उसके पीछे गये और शत्रु के विजय करनेवाले ने वारंवार शङ्ख को बजाया २० और धृष्टद्युम्न को ऐसे भयभीत किया जैसे कि इन्द्र ने नमुचि को भयभीत किया था फिर भीष्मजीके मृत्युरूप विजयी शिखण्डीको २१ वारंवार मन्द मुसकान करतेहुए कृतवर्माने रोका तब तो शिखण्डीने भी हार्दिक्यों के महारथी को पाकर तीक्ष्ण धारवाले पांचबाणों से जत्रुस्थानपर घायलकिया फिर हँसतेहुए महारथी कृतवर्मा ने साठबाणों से २२ । २३ शिखण्डी को घायल

करके एकबाणसे उसके धनुषको काटा फिर पराक्रमी द्रुपदके पुत्रने दूसरे धनुष को लेकर २४ अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर कृतवर्मा से तिष्ठ २ ऐसा वचन कहा हे राजन्! इसके अनन्तर सुनहरी पुङ्खवाले नौबाणोंको उसके ऊपर चलाया २५ वह बाण उसके कवचपर लगकर गिरपड़े उन निष्फल पृथ्वीपर गिरेहुए बाणों को देखकर २६ अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रसे धनुषको काटा फिर टूटे धनुषवाले कृत-वर्मा को २७ शिखण्डी ने क्रोधयुक्त होकर अस्सी बाणोंसे छाती और भुजापर घायल किया तब अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्माने अङ्गोंसे ऐसे रुधिरको डाला जैसे कि मटके से जल डालाजाता है फिर रुधिरसे भराहुआ कृतवर्मा ऐसा शोभाय-मानहुआ जैसे कि वर्षासे धातु रखनेवाला पर्वतहोताहै इसके पीछे प्रभु कृतवर्मा ने बाणसमेत धनुष को लेकर २८। ३० बाणोंके समूहोंसे शिखण्डीको स्कन्ध स्थान में घायल किया फिर शिखण्डी स्कन्धपर लगेहुए बाणोंसे ऐसा शोभाय-मान हुआ जैसे कि छोटी बड़ी शाखाओं से बड़ावृक्ष शोभित होता है ३१ वह दोनों परस्परमें अत्यन्त घायल और रुधिरमें भरेहुए ऐसे शोभितहुए ३२ जैसे कि परस्पर सींगोंसे घायल दो बैल होते हैं परस्परमें मारने की इच्छा करनेवाले वह दोनों महारथी ३३ वहां हजारों मण्डलों को घूमे हे महाराज! कृतवर्मा ने शिखण्डीको ३४ तीक्ष्णधार सुनहरी पुङ्खवाले सत्तर बाणों से घायल किया इसके पीछे शीघ्रतायुक्त युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ भोज वंशीय कृतवर्मा ने युद्धमें ३५ मृत्युकारी घोर बाण को उसके ऊपर छोड़ा हे राजन्! वह शिखण्डी उस बाण से घायल होकर शीघ्र मूर्च्छायुक्त होगया ३६ और मूर्च्छा से अचेत होकर अकस्मात् ध्वजाकी यष्टीका आश्रय लिया और सारथी इस महारथीको शीघ्रही युद्ध से दूर लेगया ३७ इस शूरवीर शिखण्डी के परास्त होनेपर कृतवर्मा के बाण से दुःखी वारंवार श्वास लेनेवाली चारों ओर से घायल वह पाण्डवीय सेना भागी ॥ ३८ । ३९ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! इसके पीछे अर्जुन ने आपकी सेनाको पाकर चारों ओरसे छिन्न भिन्न ऐसा करदिया जैसे कि वायु रुईको तिर्र बिर्र करदेता है १ तब त्रिगर्त, शिबि, शाल्व, संसप्तक और कौरवों की नारायणी सेना उस

के सम्मुखगई हे भरतवंशिन् ! सत्यसेन, चन्द्रदेव, मित्रदेव, शत्रुञ्जय, सौश्रुति, चित्रसेन, मित्रवर्मा और बड़े धनुर्धारी अपने पुत्र भाइयों समेत राजा त्रिगर्त ने २।४ बाणों के समूहों को छोड़ा और युद्ध में अर्जुन पर एकाएकी बाणों की वर्षा करते हुए सम्मुख वर्तमान होकर ऐसे विलायमान होगये जैसे कि गरुड़ को देखकर सर्प विलायमान होते हैं ५।६ हे महाराज ! युद्धमें घायल उन युद्धकर्ताओं ने पाण्डवों को ऐसे त्याग नहीं किया जैसे कि घायलहुए शलभ अग्नि को नहीं त्याग करते हैं ७ सुतसेन ने तीन बाण से मित्रदेव ने तिरेसठ बाणों से चन्द्रसेन ने सात बाणोंसे युद्धमें पाण्डवों को घायलकिया ८ मित्रवर्मा ने तिहत्तर बाणोंसे सौश्रुति ने सातबाणों से शत्रुञ्जय ने बीस बाणों से सुशर्मा ने नौ बाणों से ९ घायल किया बहुतों के हाथ से घायल उस अर्जुनने इसक्रम से युद्धमें उन राजाओं को घायलकिया कि सौश्रुतिको सात बाणों से सुतसेन को तीन बाणोंसे शत्रुञ्जयको बीसबाणोंसे चन्द्रसेन को आठ बाणों से मित्रदेव को सौबाणों से श्रुतिसेन को तीन बाणोंसे १०।११ मित्र-वर्मा को नौबाणों से सुशर्मा को आठबाणों से घायलकिया और राजा शत्रुञ्जय को बाणों से मारकर १२ सौश्रुति के शिर को धड़समेत शरीर से जुदा कर दिया और शीघ्रही चन्द्रदेव को बाणों के द्वारा यमलोक में पहुँचाया १३ हे महाराज ! इसी प्रकार उपाय करनेवाले अन्य महारथियोंको भी पांच २ बाणों से रोका १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतिसेन ने युद्ध में श्रीकृष्णजी को लक्ष्यकर उनके ऊपर बड़े तोमर को फेंक सिंहनाद से गर्जा वह सुवर्ण दण्ड वाला लोहे का तोमर महात्मा माधवजीकी वाम भुजा को छेदकर पृथ्वीपर गिर-पड़ा १५।१६ उस समय उस बड़ेयुद्ध में घायल माधवजी के हाथ से चाबुक और घोड़ों की रस्सियां छूटगईं १७ हे राजन् ! तब कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने वासुदेवजीको अङ्ग से घायल देखकर बड़ा क्रोधकिया और श्रीकृष्णजी से कहने लगा १८ हे महाबाहो, प्रभो ! घोड़ों को सुतसेन के पास पहुँचाओ मैं उसको अपने तीक्ष्ण बाणों से यमलोक में पहुँचाऊंगा १९ फिर श्रीकृष्णजी ने पूर्व के समान दूसरे चाबुक और घोड़ों की डोरी को पकड़कर उन घोड़ों को सुतसेन के रथपर चलाया २० कुन्तीके पुत्र महारथी अर्जुनने श्रीकृष्णको घायल देख-कर तीक्ष्णबाणों से सुतसेन को रोककर २१ सेनाके मध्यमें अत्यन्त तीक्ष्णधार

वाले भल्लों से उस राजा के कुण्डलोंसमेत बड़ेशिरको देहसे काटा २२ उसको मारकर तीक्ष्णबाणों से मित्रवर्मा को और मत्स्यदन्तनाम तीक्ष्णबाणोंसे उसके सारथी को मारा २३ हे श्रेष्ठ! इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी अर्जुनने सैकड़ों बाणों से संसप्तकों के हज़ारों समूहों को गिराया २४ हे राजन्! उसके पीछे उसमहारथीने सुवर्णपुङ्खवाले क्षुरप्रसे महात्मा मित्रसेनके शिरको काटा २५ और अत्यन्त क्रोध से सुशर्मा को जत्रुस्थानपर घायल किया इसके पीछे क्रोध में भरे दशों दिशाओं को शब्दायमान करनेवाले सब संसप्तकों ने अर्जुन को घेर कर शस्त्रों के समूहों से घायल किया इन्द्र की समान पराक्रमी बड़े साहसी संसप्तकों से पीड्यमान महारथी अर्जुन ने २६। २७ ऐन्द्रअस्त्र को प्रकट किया हे राजन्! उस ऐन्द्रास्त्रसे हज़ारोंबाण प्रकटहुए हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! जहां तहां टूटीहुई ध्वजा धनुष और पताकासमेत रथ बाजुओंके समेत तूणीरोंके बड़े शब्द सुनेगये २८। २९ युद्ध में गिरनेवाले अक्ष, चक्र, बागडोर, योक्त्र बरूथ और पार्षदोंके शब्दसुनेगये ३० गिरतेहुए घोड़े, प्रास, दुधारा, खड्ग, गदा, परिघ, शक्ति, तोमर और पट्टिशोंके भी बड़े २ शब्द सुनेगये ३१ चक्र, शतघ्नी और जङ्घाओंसमेत भुजा, कण्ठ, सूत्र, बाजूबन्द समेत केयूरों के शब्द सुनेगये ३२ हे भरतवंशिन्! हार, निष्क, कवच, छत्र, व्यजन और शिरों के मुकुटों समेत जहां तहां बड़ा भारी शब्द सुनागया सुन्दर कुण्डल नेत्रवाले पूर्णचन्द्रमा के समान मुखोंसे युक्त शिरोंके समूह पृथ्वीमें गिरेहुए ऐसे शोभायमानथे जैसे कि आकाशमण्डलमें तारागण चमकते हैं सुन्दर माला वस्त्रालङ्कार आदि चन्दनों से लिप्त ३३। ३५ मृतकों के शरीर पृथ्वी पर गिरेहुए दृष्टि पड़े तब युद्धभूमि गन्धर्व नगर के समान घोररूप होगई ३६ वह सब पृथ्वी राजकुमार और महाबली क्षत्रिय और पड़ेहुए हाथी घोड़ोंसे ३७ युद्धमें ऐसी दुर्गम होगई जैसे कि पर्वतों के गिरने से होती है, वहां महात्मा पाण्डव अर्जुन के रथ का मार्ग नहीं रहा ३८ इससे हे राजन्! भल्लोंसे शत्रुओंको और घोड़े हाथियोंको मारते हुए रथों के पाये बड़े पीड़ित होते थे ३९ उन रुधिररूप कीच रखनेवाले युद्ध में उस घूमनेवाले अर्जुन के पीड्यमान पायों को घोड़ों ने अच्छे प्रकार से चलाया ४० मन और वायुके समान सदैव शीघ्रगामी वह घोड़े बहुत थकगये फिर धनुषधारी अर्जुन के हाथ से घायल वह सब सेना ४१ बहुधा मुख फेरकर

सम्मुख नियत नहीं हुई तब वह कुन्तीनन्दन अर्जुन युद्ध में संसप्तकों के बहुत समूहों को विजय करके निर्धूम अग्नि के समान प्रकाशमान होकर शोभायमान हुआ ॥ ४२ । ४३ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिमहासंसप्तकयुद्धेऽष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! निर्भय होनेवालेके समान आप राजा दुर्योधन ने बहुत बाणों के छोड़नेवाले युधिष्ठिर को रोका १ धर्मराज ने उस अकस्मात् आतेहुए आपके पुत्र महारथीको शीघ्र घायलकरके तिष्ठ २ इसवचनको कहा २ फिर उसने तीक्ष्णधारवाले नौबाणों से उसको घायल किया और अत्यन्त क्रोध युक्त होकर उसने भल्लसे उसके सारथीको घायल किया ३ इसके पीछे युधिष्ठिर ने सुनहरी पुङ्खवाले तेरह बाणों को दुर्योधन के ऊपर फेंका ४ फिर महारथी ने चारबाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको मारकर पांचवें बाणसे उसके सारथी का शिर शरीर से जुदाकरदिया ५ फिर छठे बाण से राजा की ध्वजा को सातवें से धनुष को और आठवें से खड्गको पृथ्वीपर गिराया फिर धर्मराज ने पांचबाणों से राजा को अत्यन्त पीड़ित किया ६ तब वह उस मरे सारथी और घोड़ेवाले रथ से कूद कर बड़ी आपत्तियों में फँसा हुआ आपका पुत्र पृथ्वी परही नियत हुआ फिर कर्ण अश्वत्थामा और कृपाचार्य आदि उस आपत्ति में फँसेहुए राजा को देख कर ७ । ८ उसको चाहतेहुए अकस्मात् सम्मुख आनकर वर्तमानहुए फिर सब लोगोंने युधिष्ठिरको चारोंओर से घेरकर युद्ध में पीछे २ चले हे राजन् ! इसके पीछे युद्ध जारीहुआ और उस महायुद्धमें हजारों बाजेबजे ९ । १० और कलकला शब्द प्रकटहुआ जिस स्थान पर पाञ्चाल कौरवों से युद्ध कररहे थे ११ वहां मनुष्य मनुष्य से हाथी हाथी से रथी रथियों से घोड़े घोड़े से अश्वसवार अश्वसवार से १२ हे महाराज ! उस युद्ध में देखने के योग्य बुद्धिसे बाहर शस्त्रोंसे संयुक्त नाना प्रकारसे उत्तम द्वन्द्वयुद्ध हुए १३ युद्धमें बड़े वेगवान् परस्पर मारने के इच्छावान् उन सब सवारोंने अपूर्व तीव्रतापूर्वक चित्तरोचक युद्धकिया १४ और युद्धकर्ताओं की वृत्ति में नियत होकर उन लोगोंने युद्धमें परस्पर शस्त्रोंके प्रहारकिये और किसी दशामें भी मुखको न मोड़ा १५ हे राजन् ! वहयुद्ध एक मुहूर्त पर्यन्त देखने में बड़ा प्यारा हुआ इसके अनन्तर उन्मत्तों के समान

बे मर्याद युद्ध वर्तमानहुआ १६ तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे चीरतेहुए रथीने हाथीको पाकर टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे मारकर यमपुरको भेजा १७ युद्धमें बहुतसे युद्धकर्ताओं को फेंकतेहुए हाथियोंने जहां तहां घोड़ों को सम्मुख पाकर अत्यन्त भयकारक दशासे चीरडाला १८ बहुत से घोड़े रखनेवाले अश्वसवारों ने उत्तम घोड़ोंको घेरकर इधर उधर दौड़कर तल के शब्द किये १६ इसके पीछे अश्वसवारों ने उस दौड़ते और भागतेहुए हाथियों को बगल और पीठ की ओर से घायल किया २० हे राजन् ! मतवाले हाथी बहुतसे घोड़ोंको भगाकर किसीने दाँतों से किसी ने पैरोंसे मलकर मारा २१ और क्रोधयुक्त होकर सवारोंसमेत घोड़ों को दाँतों से घायल किया फिर दूसरे पराक्रमियों ने अत्यन्त वेगसे एक ने एकको पकड़कर फेंक दिया २२ पदातियोंके हाथसे इन्द्रियोंपर घायल हाथियोंने चारों ओरसे पीड़ा के घोर शब्द किये और दशों दिशाओं को भागे २३ फिर उस महायुद्ध में एकाएकी छोड़कर भागनेवाले पदातियों के आभूषणों को झुककर उस युद्धभूमि में से उठालिया २४ विजय के चिह्न पानेवाले बड़े २ हाथियोंके सवारों ने हाथी को झुकाकर अपूर्व २ भूषणोंको लेलिया और उनको छेदा २५ वहां उन बड़े वेगवान् पराक्रम से मदोन्मत्त पदातियों ने उन युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारों को घेरकर मारा २६ बड़े युद्ध में अच्छे शिक्षित हाथियोंकी सूंड़ोंसे आकाशको फेंकेहुए अन्य युद्धकर्ता पृथ्वीपर गिरतेहुए दाँतोंकी नोकों से अत्यन्त घायलहुए २७ कितनेही अकस्मात् पकड़कर दाँतोंसे मारेगये और कितनेही पदाती सेनाके मध्यको पाकर २८ बड़े हाथियोंसे वारंवार उछालेहुए होकर घायल हुए और कितनेही युद्धमें पंखेके समान घुमा २ कर मारेगये २६ हे राजन् ! कोई २ मनुष्य जो हाथियों के सम्मुखथे उनके शरीर उस युद्धभूमि में जहां तहां अत्यन्त घायलहुए ३० और कितनेही हाथी, प्रास, तोमर और शक्तियोंसे दोनों दाँतोंके मध्यमें कुम्भ और दन्तवेष्टोंपर कठिन घायलहुए ३१ बगल में नियत बड़े भयानकरूप युद्धकर्ताओंके हाथसे घायलहोकर कितनेही हाथी रथ और रथ के सवार वहां शरीर से घायल होकर गिरपड़े ३२ उस महायुद्ध में घोड़ों समेत सवारों ने ढाल बांधनेवाले पदातियों को बड़ी शीघ्रता से अपने तोमरों से मर्दनकिया ३३ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र ! जहां तहां हाथियोंने आभूषणोंसे अलंकृत कितनेही रथियों को पाकर और पकड़कर ३४ अकस्मात्

उस घोररूप युद्ध में फेंकदिया और नाराचोंसे घायल होकर बड़े २ पराक्रमी हाथी भी जहां तहां गिरपड़े ३५ युद्धमें शूरों ने शूरों को पाकर मुष्टिकाओंसे व्यथित किया ३६ और परस्पर शिरके बालोंको पकड़कर एक ने दूसरे को गिरादिया और घायल किया और किसी ने ध्वजाओं को उठाके पृथ्वी पर गिराकर ३७ चरण से छातीको दबाकर फड़कते हुए शिरों को काटा ३८ इसी प्रकार दूसरोंने भी शस्त्रको जीवते शरीरमें प्रवेश करादिया हे भरतवंशिन् ! वहां युद्धकर्ताओं का मुष्टियुद्ध अच्छे प्रकार से हुआ ३९ इसी प्रकार शिरके बालों का पकड़ना उग्रहुआ और भुजाओं का महायुद्ध बड़ा भयकारी हुआ इसीरीति से एक दूसरे से भिड़े हुए युद्ध में नाना प्रकार के शस्त्रों से बहुतप्रकार से एक ने एक के प्राणोंको हरणकिया युद्धकर्ताओं के भिड़ने और संकुल युद्धहोनेपर ४० । ४१ हज़ारों कबन्ध अर्थात् धड़ उठखड़ेहुए और रुधिरसे भरेहुए शस्त्र कवच ४२ ऐसे शोभायमानहुए जैसेकि बड़े रङ्गोंसे रङ्गीनवस्त्र इन भयानक शस्त्रोंसे व्याकुल ४३ बड़े युद्ध में उन्मत्त गङ्गा के समान शब्दों से जगत को पूर्ण किया बाणों से पीड्यमान अपने और दूसरोंके कुछ नहीं जानेगये ४४ विजय के लोभी राजा लोग युद्ध करनाचाहिये ऐसा समझकर युद्ध करते हैं हे महाराज ! भाइयों ने भाइयों को और भिड़ेहुए शत्रुओंको भी मारा ४५ दोनों सेना वीरों से व्याकुल युद्ध में वर्तमानहुई हे राजन् ! टूटेरथ और गिरायेहुए हाथियोंसे ४६ और वहां पर पड़ेहुए घोड़ों से वा गिरायेहुए मनुष्यों से वह पृथ्वी क्षण भरही में दुर्गम होगई ४७ हे राजन् ! एकक्षण मेंही रुधिररूप जल की बहनेवाली नदी होगई वहां कर्ण ने पाञ्चालों को और अर्जुन ने त्रिगर्त देशियों को मारा ४८ और भीमसेनने कौरवलोगों को और हाथियों की सेनाको सब रीतिसे मारा इस रीति से दिन के तीसरे भाग में सूर्य के होतेहुए बड़े यश की चाहनेवाली कौरवीय और पाण्डवीयसेना का यह बड़ा नाशहुआ ॥ ४९ । ५० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेएकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! मैंने बड़े असह्य और कठिन बहुतसे दुःखों को और पुत्रों के नाश को तुझसे सुना १ हे सूत ! जैसे कि तू मुझसे कहताहै और जैसे युद्ध वर्तमान हुआ वैसे नहीं है यह मुझको अपनी बुद्धि से दृढ़

विश्वास है २ वहां महारथी दुर्योधन विरथ कियागया फिर धर्मपुत्र ने किस रीति से उससे युद्धकिया ३ उसके पीछे फिर तीसरी बार रोमहर्षण करनेवाला युद्ध कैसेहुआ हे सञ्जय ! उसको मूलसमेत मुझसे वर्णनकर ४ सञ्जय बोला कि हे राजन् ! सेना के भिड़ने वा विभागियोंके घायल होनेपर विषैले सर्प के समान क्रोधयुक्त आपके पुत्र दुर्योधन ने दूसरे रथपर सवार होकर धर्मराजयुधिष्ठिर को देखकर सारथी से कहा कि शीघ्रतापूर्वक मुझको वहीं पहुँचा जहांपर पाण्डव लोग हैं ५ । ७ वह राजा युधिष्ठिर कवच और छत्रधारण कियेहुए शोभायमान है राजा की आज्ञा पातेही सारथी ने उसके उत्तम रथ को ८ युद्ध में युधिष्ठिरके सम्मुख पहुँचाया उसके पीछे मतवाले हाथी की समान युधिष्ठिर ने सारथी को आज्ञाकरी कि जहां दुर्योधन है वहीं चल वह रथियों में श्रेष्ठ शूरवीर दोनों भाई परस्परमें सम्मुखहुए ६ । १० उन क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद महाधनुषधारी दोनोंवीरों ने युद्ध में परस्पर बाणों की वर्षाकरी ११ तदनन्तर राजा दुर्योधन ने युद्ध में तीक्ष्णधारवाले भल्ल से उस धर्माभ्यासी युधिष्ठिर के धनुषको काटा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने उस अपने अपमान को नहीं सहा इस हेतु से क्रोधयुक्त लालनेत्र होकर दूसरे धनुष को लेके सेनामुख पर दुर्योधन की ध्वजा और धनुष को काटा १२ । १४ फिर उसने भी दूसरे धनुष को लेकर युधिष्ठिर को बहुत घायल किया तब तो उन अत्यन्त क्रोधयुक्तों ने परस्परमें शस्त्रों की वर्षाकरी १५ सिंहों के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बैलों की समान गर्जने वाले दोनों ने विजयाभिलाषी होकर परस्पर में घायल किया १६ फिर वह दोनों महारथी अवकाश को ढूंढ़ते हुए फिरनेलगे इसके पीछे कर्ण पर्यन्त खैंचे हुए बाणों से घायल दोनों १७ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि फूलेहुए किंशुकके वृक्ष शोभित होते हैं इसके पीछे वारंवार सिंहनादों को करते १८ उन दोनों नरोत्तमों ने उस बड़े युद्ध में तलधनुष और शङ्खों के शब्दों को किया १६ हे राजन् ! उन दोनों ने परस्परमें एकने एकको बहुत पीड्यमान किया फिर क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने आपके पुत्र को २० वज्र के समान वेगवान् महा असह्य तीनबाणों से छाती पर घायल किया फिर राजा दुर्योधन ने सुनहरी पुङ्ख युक्त तीक्ष्ण धारवाले पांचबाणों से शीघ्रही उसको घायलकिया २१ इसके पीछे राजा दुर्योधन ने तीक्ष्ण बड़ीभारी उल्कारूप लोहे की शक्ति को फेंका २२ उस अकस्मात् आती

हुई शक्ति को देखकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने तीन तीक्ष्ण बाणों से काटा और उस को भी पांचबाणों से घायल किया २३ इसके पीछे सुनहरी दण्डवाली महा-शब्द करनेवाली वह शक्ति गिरपड़ी, और अग्निरूप बड़ी उल्का के समान गिरकर शोभायमान हुई २४ हे राजन्! फिर आपके पुत्र ने शक्ति को टूटा हुआ देखकर तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणों से युधिष्ठिर को घायलकिया २५ परा-क्रमी शत्रु के हाथ से अत्यन्त घायल शत्रुहन्ता युधिष्ठिर ने दुर्योधन को विचार करके शीघ्रही बाण को लिया २६ हे राजन्! उस क्रोधयुक्त महाबली युधिष्ठिर ने उसबाण को धनुष में चढ़ाकर छोड़ा २७ फिर उसबाण ने आपके महारथी राजा को पाकर अचेतकिया और पृथ्वी को फाड़ा २८ इसके पीछे युद्ध की इति श्री करने का अभिलाषी क्रोधयुक्त दुर्योधन शीघ्रतासे गदा को उठाकर धर्मराज के सम्मुख गया धर्मराज ने यमराज के समान गदा उठानेवाले दुर्योधन को देखकर आपके पुत्रपर उस शक्ति को चलाया जोकि बड़ी वेगवान् अग्नि के समान देदीप्यमान उल्का के समान थी २६ । ३० उस गदा से कवच कटकर हृदयपर घायल रथपर सवार अत्यन्त अचेत होकर गिरपड़ा और अचेत हो-गया ३१ उसके पीछे अपनी प्रतिज्ञाको स्मरण करनेवाले भीमसेन ने उनसे कहा कि हे राजन्! यह आपके हाथसे नहीं माराजायगा यह सुनकर युधिष्ठिर लौट गये ३२ इसके पीछे कृतवर्मा ने शीघ्र आकर आपके पुत्र राजा दुर्योधन को आपत्ति के समुद्र में डूबाहुआ पाया ३३ और भीमसेन भी सुवर्ण वस्त्रोंसे अलं-कृत गदा को लेकर युद्धमें बड़े वेगसे कृतवर्मा के सम्मुखगया ३४ हे महाराज! तीसरे पहर युद्ध में विजयाभिलाषी आपके पुत्रों का युद्ध पाण्डवों के साथ इस रीति से हुआ ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिद्वन्द्वयुद्धेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे युद्ध में दुर्मद आपके युद्धकर्ताओं ने कर्ण को आगे करके फिर भी लौटकर देवासुरों के युद्धके समान युद्ध किया १ मनुष्य, रथ, हाथी, घोड़े और शङ्खों के शब्दों से प्रसन्न नाना प्रकारके शस्त्रोंकी अधि-कता से क्रोधयुक्त हो उन हाथी रथी और सवारों के समूहों ने सम्मुख होकर प्रहार किये २ उत्तम पुरुषोंके श्वेत फरसे, खड्ग, पट्टिश और नाना प्रकारके भल्लों

से हाथी, रथ और घोड़े उस महायुद्ध में मारेगये और अनेक २ प्रकार की सवारियोंसे मनुष्य चूर्ण होगये ३ कमल सूर्य और चन्द्रमा के समान श्वेत दाँत सुन्दर आँख नाक समेत मुख और अद्भुतकुण्डल मुकुटवाले मनुष्योंके कटेहुए शिरों से आच्छादित वह युद्धभूमि बड़ीही शोभायमान हुई ४ तब सैकड़ों परिघ, मूसल, शक्ति, तोमर, नखर, भुशुण्डी और गदाओं से घायल हज़ारों हाथी, घोड़े, मनुष्य रुधिर की नदी के जारी करनेवाले हुए ५ मृतक घायल भयानक और अत्यन्त घायल रथ, मनुष्य, घोड़े, हाथीवाली शत्रुओं से घायल वह सेना ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि संसार के नाश करने में यमराज का देश होताहै ६ हे राजन् ! इसके पीछे आपकी सेना के मनुष्य और देवकुमारों के समान आपके पुत्रोंसमेत उत्तम कौरवलोग जिनके आगे चलनेवाली असंख्य सेना थी सब मिलकर सात्यकी के सम्मुख गये ७ रुधिरसे अत्यन्त भय उत्पन्न करनेवाले उत्तम पुरुष घोड़े रथ और हाथियोंसे व्याप्त और उठेहुए समुद्रकी समान शब्दायमान वह सेना देवता और असुरों की सेना के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुई ८ इसके पीछे इन्द्र के समान पराक्रमी युद्ध में विष्णु के समान सूर्य के पुत्र कर्ण ने सूर्य की किरणोंके समान प्रकाशित पृषत्कनाम वामबाणों से शूरों में बड़ेवीर सात्यकी को घायल किया ९ तब शीघ्रता करनेवाले सात्यकी ने बिषैले सर्प की समान नाना प्रकारके बाणोंसे पुरुषोत्तम कर्ण को रथ घोड़े और सारथी समेत ढकदिया १० आपके शुभचिन्तक अतिरथी, हाथी, रथ, घोड़े और पदातियों समेत शीघ्रही उस रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी के बाणों से पीड्यमान सुषेण के पास गये ११ बड़े शीघ्रगामी शत्रुओं से दबाई हुई समुद्र के रूप वह सेना भागी तब धृष्टद्युम्न आदि के हाथ से मनुष्य, घोड़े, रथ और हाथियों का बड़ा विनाश हुआ १२ इसके पीछे नित्यकर्म से निवृत्त होकर बुद्धि के अनुसार प्रभु शिवजी के पूजनेवाले और शत्रुओं के मारने में निश्चय करनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुन और केशवजी शीघ्रही आपकी सेना के ऊपर चले १३ तब टूटेहुए चित्तवाले शत्रुओंने बादल के समान शब्दायमान वायुसे कम्पित पताका ध्वजावाले श्वेत घोड़ोंसे युक्त सम्मुख आनेवाले रथ को देखा इसके पीछे रथ पर नाचतेहुए अर्जुन ने गाण्डीवधनुष को टङ्कारकर आकाश और दिशा विदिशाओं को बाणोंसे आच्छादित किया १४ । १५ और

विमानरूप रथों को शस्त्र ध्वजा और सारथियों समेत बाणों से ऐसा मारा जैसे कि वायु बादलों को ताड़ित करता है १६ फिर उसने हाथी हाथीवान् और वैजयन्ती, शस्त्र, ध्वजा, अश्वारूढ़ और पत्तियों को बाणों से यमलोक में पहुँचाया १७ सीधे बाणों से मारताहुआ अकेला दुर्योधन उस यमराजके समान क्रोधयुक्त मुख न मोड़नेवाले महारथी अर्जुनके सम्मुख गया १८ अर्जुनने सात बाणोंसे उसके धनुष और ध्वजा को काटकर सारथी घोड़ोंको मारकर एक बाण से उसके छत्र को काटा १९ और प्राणोंके नाशकरनेवाले उत्तम नवें बाणको धनुषपर चढ़ाकर दुर्योधनके ऊपर छोड़ा उस बाणके अश्वत्थामा ने आठ टुकड़े करडाले २० इसके पीछे अर्जुन ने बाणों से धनुष को काट रथ के घोड़ों को मारकर कृपाचार्य के उस उग्रधनुष को भी काटा २१ तब कृतवर्मा के धनुष और ध्वजा को काटकर घोड़ों को मारा और दुश्शासन के धनुषको काटकर कर्ण के सम्मुख गया २२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने सात्यकीको छोड़कर तीन बाणों से अर्जुन को और बीसबाणों से श्रीकृष्णको घायल करके फिर अर्जुन को वारंवार घायलकिया २३ युद्ध में बहुत शायकों को छोड़ते शत्रुओं को मारतेहुए कर्ण की ऐसी ग्लानि नहीं हुई जैसे कि क्रोधयुक्त इन्द्र की हुई २४ इसके पीछे सात्यकी ने आकर तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को घायल करके एक सौ निन्नानवे उग्रबाणों से घायल किया २५ इसके पीछे पाण्डवों के इन सबवीरों ने कर्ण को पीड्यमान किया जिनके नाम युधामन्यु शिखण्डी द्रौपदी के पुत्र प्रभद्रक २६ उत्तमौजा युयुत्सु, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, चन्देर, कारुष, मत्स्य और कैकेयदेशियोंकी सेना २७ पराक्रमी चेकितान सुन्दर व्रतवाले धर्मराज युधिष्ठिर इनसबों ने उग्रपराक्रमी कर्ण को रथघोड़े हाथी और पत्तियों समेत घेरकर २८ युद्धमें नानाप्रकार के अस्त्रों और शस्त्रों से ढकदिया और उग्रवचनों से वार्तालाप करते हुए सब कर्ण के मारने में प्रवृत्तचित्त हुए २९ कर्ण ने उस अस्त्रों की वर्षा को अपने तीक्ष्ण बाणों से अनेकरीति से काटकर अस्त्रों के बल से ऐसे हटादिया जैसे कि वायु वृक्ष को काटकर हटादेता है ३० अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण रथी और सवारों समेत हाथी घोड़े और अश्वसवारों समेत सहायकों के समूहोंको मारता हुआ दिखाईदिया ३१ कर्ण के अस्त्रोंसे घायल वह पाण्डवीयसेना शस्त्र बाण शरीर और प्राणों से रहित होकर बहुधालोग मुखोंको मोड़गये ३२ इसके पीछे मन्द

मुसकान करतेहुए अर्जुन ने कर्णके अस्त्र को अपने अस्त्रसे दूर करके दिशा विदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाश को बाणों की वर्षा से ढकदिया वह बाण फिर मुसल और परिघों के समान गिरे कितनेही शतघ्नियों के समान और कोई२ उग्रवज्रों के समान आकाश से पृथ्वीपर गिरे पत्ति, घोड़े, रथ और हाथियों से संयुक्त वह सेना उन बाणों से घायल आँखों को बन्द करनेवाली होकर बहुत घूमी ३३ । ३५ तब घोड़े हाथी और मनुष्यों ने उस युद्धको पाया जिसमें मरना निश्चय होगया था तब बाणोंसे घायल पीड्यमान और भयभीत होकर भागे ३६ युद्ध में प्रवृत्त विजयाभिलाषी आपके युद्धकर्ताओं के बाणों से ऐसी दशा हुई और सूर्य अस्ताचल को प्राप्तहुआ ३७ हे महाराज ! फिर हमने अधिक अन्धकार और धूलि के गुब्बारों से अँधेरे में कुछ अच्छा बुरा नहीं देखा ३८ हे भरतवंशिन् ! रात्रिके युद्धसे भयभीत बड़े २ धनुषधारी वर्तमान लोग सब शूरवीरों समेत युद्धभूमि से अलगहुए ३९ हे राजन् ! दिनके समाप्तहोनेपर सायङ्कालके समय कौरवों के हटजानेपर प्रसन्नचित्त पाण्डव विजय को पाकर अपने २ डेरों को गये ४० और नाना प्रकारके बाजे और सिंहनादों समेत गर्ज २ कर शत्रुओं का हास्यकरते अर्जुन और श्रीकृष्णजी की प्रशंसा करते चलेगये ४१ उन वीरों के विश्राम करने पर उन सब सेना के लोगों ने और राजाओं ने पाण्डवों को अशीर्वाद दिया ४२ उसके पीछे वहां विश्राम के करने पर अत्यन्त प्रसन्नयुक्त होकर पाण्डव और अन्य राजालोग रात्रिमें अपने २ डेरों में जाकर विश्रामयुक्त हुए ४३ इसके पीछे राक्षस पिशाच और भेड़िये आदि मांसाहारी पशुओं के समूह उस युद्धभूमि में गये जोकि रुद्रजी की क्रीड़ा के स्थानरूप थी ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिप्रथमयुद्धेएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, यह प्रत्यक्ष है कि अर्जुन ने अपनी इच्छा से हम सबको मारा इसशस्त्रधारी के युद्ध में मृत्यु भी मरनेसे न छूटे १ अकेले अर्जुनने सुभद्रा का हरणकिया अकेलेने ही अग्नि को तृप्तकिया और अब इसी अकेले ने इस भारी पृथ्वी को विजय करके भेज देनेवाली किया २ दिव्य धनुर्धारी अकेले ने किरातरूपधारी शिवजी से युद्धकिया और निवातकवचोंको मारा ३ अकेलेनेही भरतवंशियों की रक्षाकरी अकेलेने ही शिवजी को प्रसन्न किया उस उग्रतेज

वाले ने सब राजालोगोंको विजय किया ४ और हमारे शूरवीर भी निन्दाके योग्य नहीं हैं किन्तु प्रशंसा के योग्य हैं जो उन्हों ने किया उसको भी कहो हे सूत ! इसके पीछे दुर्योधन ने क्या किया ५ सञ्जय बोले कि उन घायल और टूटे अङ्ग सवारियोंसे गिरेहुए कवच शस्त्र और सवारियों से रहित दुःखित शब्दकरते शत्रुओं से कम्पायमान पराजित अहङ्कारी उन कौरवों ने ६ फिर दूरन्देशी की सलाहकारी जोकि टूटीडाढ़ विषसे रहित पैरसे दबायेहुए सर्पों की समान थे ७ उसके पीछे सर्पकी समान श्वास लेताहुआ आपके पुत्र को देखता क्रोधयुक्त कर्ण हाथसे हाथोंको मलकर उनसे बोला कि अर्जुन सदैव सावधान दृढ़पराक्रमी और धैर्यमान है और श्रीकृष्णजी भी समयके अनुसार उसको समझादेते हैं ८। ९ अब हम उसके अस्त्रों के छोड़ने से अकस्मात् ठगेगये हे राजन् ! अब कल के दिन में उसके सब सङ्कल्पों को नाश करूंगा १० यह कर्ण के वचन सुनकर दुर्योधन ने बहुत अच्छा कहकर उत्तम राजाओं को आज्ञा दी तब उसकी आज्ञा पाकर सब राजालोग अपने डेरों को गये ११ उस रात्रिमें सुखपूर्वक निवास करके प्रातःकाल बड़ी प्रसन्नता से युद्ध करने के लिये निकले उन्हों ने कौरवों में श्रेष्ठ बृहस्पति और शुक्रजी के मतमें नियत धर्मराज के बड़े उपाय से रचेहुए कठिनता से विजयहोनेवाले व्यूहको देखा १२ इसके पीछे शत्रुहन्ता दुर्योधन ने उस शत्रुओं के मारनेवाले बड़े वीर पराक्रमी और उन्नत स्कन्धवाले कर्ण को स्मरण किया १३ जो कर्ण युद्ध में इन्द्र के समान पराक्रम में मरुद्गणों के सदृश बल में सहस्राबाहु के समान था उस कर्ण में राजा का चित्तगया १४ सब सेनाओं का चित्त भी उस बड़े धनुषधारी कर्ण में ऐसागया जैसे कि प्राणों के सङ्कट में मन बन्द होकर एक ओर को जाता है १५ धृतराष्ट्र बोले कि हे सूत ! इसके पीछे दुर्योधन ने क्या किया हे हीनप्रारब्धीलोगो ! जो तुम्हारा मन सूर्य के पुत्र कर्ण में गया १६ तो सेनाओंके विश्रामकरनेके पीछे फिर युद्धके जारी होने पर कर्ण को ऐसे देखा जैसे कि शीत से पीड़ित मनुष्य सूर्य को देखता है १७ वहां सूर्य का पुत्र कर्ण इस रीति से युद्ध में प्रवृत्तहुआ हे सञ्जय ! फिर वहां सब पाण्डवों ने कर्ण से कैसे युद्ध किया १८ अकेला ही महाबाहु कर्ण सृञ्जयों समेत सब पाण्डवों को मारसक्ता है क्योंकि युद्ध में कर्ण की भुजाओं का पराक्रम इन्द्र और विष्णु के समान है १९ उस महारथी के पराक्रमसंयुक्त

शस्त्र बड़े घोर हैं युद्धमें कर्ण का आश्रय लेकर राजा दुर्योधन मदोन्मत्त है २० इसके पीछे पाण्डव के हाथ से अत्यन्त पीड्यमान दुर्योधन को देखकर और पाण्डवों को भी पराक्रम करनेवाला देखकर महारथी कर्ण ने क्या किया २१ फिर अभागा दुर्योधन युद्ध में कर्ण का आश्रय लेकर पाण्डवों को श्रीकृष्ण और उनके पुत्रों समेत विजय करने की अभिलाषा करता है २२ यह महाशोककारी दुःख है जिस स्थानपर कि वेगवान् कर्ण ने युद्ध में पाण्डवों को नहीं विजय किया इससे निश्चय करके दैव बड़ा है २३ यह द्यूत की निष्ठा वर्तमान है और शोक का स्थान है मैं दुर्योधन के उत्पन्न कियेहुए भाले के समान घोर कठिन दुःखों को सहरहा हूं हे तात, सञ्जय! वह दुर्योधन शकुनी को नीतिज्ञ मानता है २४ । २५ और सदैव राजा के आज्ञावर्ती वेगवान् कर्ण कोभी नीतिमान् मानता है हे सञ्जय ! महाभारी युद्धों के वर्तमान होने के कारण २६ मैंने सदैव अपने पुत्रों को घायल और मृतक सुना और युद्ध में पाण्डवों का कोई रोकने वाला नहीं है २७ जैसे कि स्त्रियों के मध्य में डोलते हैं उसी प्रकार सेना कोभी मभ्काते हैं इससे दैव अधिक बलवान् है सञ्जय बोले कि हे राजन्! पूर्व समय के धर्मसम्बन्धी वार्ताओं को विचारो २८ जो मनुष्य असम्भव कार्य को पीछे से शोचता है उसका वह कार्य नहीं होता है किन्तु शोचसे नाश को पाताहै २९ हे राजन्! मुझ बुद्धिमान् के पूर्वयोग्य विचार को जो तुमने नहीं किया इसी से वह कार्य तुम्हारे हाथ से जातारहा ३० हे राजन् ! सदैव मैंने समझाया था कि पाण्डवोंसे युद्ध मतकरो तुमने अपनी अज्ञानता से उस वचनको नहीं माना ३१ तुमने पाण्डवों के साथ में परस्पर मिलकर बड़े २ घोर पाप किये और आपही के कारण से अच्छे २ हजारों राजाओं का नाश वर्तमान हुआ ३२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! अब समय आगया शोच मतकरो हे अजेय ! जैसे कि यह घोर नाशहुआ उस सबको मुझ से सुनो ३३ प्रातःकाल के समय कर्ण राजा दुर्योधन के पासगया और मिलकर दुर्योधन से कहनेलगा ३४ कि हे राजन्! अब मैं यशस्वी पाण्डवों से युद्ध करूंगा मैं किसो उस वीर अर्जुन को मारूंगा या वही मुझ को मारेगा ३५ हे भरतवंशिन्, राजन्, दुर्योधन ! मेरे और अर्जुनके कार्यों की आधिक्यता से मेरी और अर्जुन की सम्मुखता नहीं हुई ३६ हे दुर्योधन ! मेरे इस वचन को तुम बुद्धिके अनुसार सुनो कि मैं युद्धमें अर्जुन को

मारकर न आऊंगा ३७ जिसके बड़े २ वीर मेरे वर्तमान होने पर युद्ध में मारे गये वह अर्जुन मेरे सम्मुख आवेगा जोकि मैं इन्द्र की शक्ति से पृथक् हूं ३८ हे राजन्! जो अपनी रक्षा करनेवाला है उसको तुम समझो कि मेरे और अर्जुन के अस्त्रों का पराक्रम और प्रताप समान है शत्रुके बड़े कार्य का नाश हस्तलाघवता बाणों का दूर फेंकना और अस्त्र गिराने की सावधानी में अर्जुन मेरे समान नहीं है ३९।४० हे भरतवंशिन्! देह का बल वा मनका बल वा अस्त्रों की शिक्षा वा पराक्रम में लक्ष्यभेदन करने में भी अर्जुन मेरे समान नहीं है ४१ सब शस्त्रों में श्रेष्ठ विजयनाम धनुष इन्द्रके प्रिय होने की इच्छा से विश्वकर्माजी ने उत्पन्न किया ४२ हे राजन्! निश्चय करके इन्द्र ने उसी धनुष के द्वारा दैत्यों के समूहों को विजयकिया और जिसके शब्द से दैत्यों की दशोंदिशा मोहित हुईं ४३ वह बड़ा उत्तम धनुष इन्द्र ने भार्गवजी को दिया और भार्गवजी ने वह दिव्य धनुष प्रसन्न होकर मुझको दिया ४४ हे महाविजयिन्! उसी धनुष के द्वारा मैं महाबाहु अर्जुन से लड़ूंगा वैसेही लड़ूंगा जैसे कि भागे हुए दैत्यों से इन्द्र लड़ा था ४५ परशुरामजी का दियाहुआ घोर धनुष गाण्डीवधनुष से अधिक है जिसके द्वारा यह पृथ्वी इक्कीसबार विजय करीगई ४६ इस धनुष के घोर कर्म को भार्गव परशुरामजी ने मुझसे कहा है उनके उस दियेहुए धनुषके द्वारा मैं पाण्डवोंसे लड़ूंगा ४७ हे दुर्योधन! अब मैं बड़े विजयी विख्यात अर्जुन को युद्ध में मारकर तुझ को बान्धवों समेत प्रसन्न करूंगा ४८ हे राजन्! अब पर्वत वन द्वीप और समुद्रों समेत यह सब पृथ्वी तेरी होगी जिसके कि वीर मारे गये और पुत्र पौत्रों की प्रतिष्ठा है ४९ अब तेरे अभीष्ट के निमित्त मेरी कोई अच्छे प्रकार की विशेषता ऐसी नहीं है जैसे कि अच्छे धर्मपर प्रीति करनेवाले मनुष्य की मोक्ष होती है ५० वह अर्जुन युद्ध में मेरे सहने को ऐसे समर्थ नहीं होसक्ता जैसे कि वृक्ष अग्नि को नहीं सहसक्ता मैं जिस हेतु से कि अर्जुन से कम हूं उसको अब मुझे कहना अवश्य है ५१ एक तो उसके धनुष की प्रत्यञ्चा दिव्य है और इसी प्रकार उसके दो तूणीर अक्षय हैं और उसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं मेरा वैसा सारथी नहीं है ५२ उसका गाण्डीव धनुष दिव्य उत्तम होकर युद्ध में सबसे अजेय है और मेरा विजयनाम धनुष भी दिव्य और उत्तम है ५३ हे राजन्! वहां मैं उस धनुष के कारण से अर्जुन से अधिक हूं और जिनकारणों से कि वीर

पाण्डव अर्जुन मुझसे अधिक है उसको भी मुझसे सुनो ५४ प्रथम तो सब के पूज्यरूप श्रीकृष्णजी सारथी हैं और अग्निदेवता का दियाहुआ सुवर्णजटित रथ भी दिव्य है ५५ हे वीर ! वह सब प्रकार से अजेय हैं उसके घोड़े भी चित्तके अनुसार शीघ्रगामी हैं और ध्वजा भी दिव्य प्रकाशमान है और उस ध्वजा में हनूमान्जी बड़े आश्चर्यकारी हैं ५६ और संसार के स्वामी श्रीकृष्णमहाराज उसके रथकी रक्षा करते हैं इन वस्तुओं से रहित होकर मैं अर्जुन से लड़ना चाहता हूं ५७ युद्ध को शोभा देनेवाला यह राजाशल्य श्रीकृष्णजी के समान है जो राजाशल्य मेरा सारथी बन जाय तो अवश्य तेरी विजय होय ५८ शत्रुओं के साथ कठिन कर्म करनेवाला शल्य मेरा सारथी होय और कङ्कपक्षवाले मेरे अनेक बाणों के बहुत से छकड़े साथ में ले चलें ५९ हे भरतर्षभ, राजेन्द्र ! उत्तम घोड़ों के रथ में बैठकर तुमभी मेरे साथही साथ चलो ६० मैं अपने गुणों से अर्जुन से अधिक होजाऊंगा शल्य भी श्रीकृष्णजी से अधिक है और मैं भी अर्जुनसे अधिक हूं ६१ जिस प्रकार शत्रुहन्ता श्रीकृष्णजी अश्वहृदयनाम विद्या के जाननेवाले हैं इसी प्रकार महारथी शल्य भी अश्वविद्या का ज्ञाता है ६२ और भुजा में राजा शल्य के समान कोई नहीं है इसी प्रकार अस्त्रवेत्ता मेरे समान कोई नहीं है ६३ जोकि अश्वविद्या में शल्य के समान कोई नहीं है इसी से यह मेरा रथ अर्जुन से भी अधिक होगा हे कौरवों में श्रेष्ठ ! ऐसा करने से मैं रथ की सवारी में अधिक होजाऊंगा और युद्ध में अर्जुन को विजय करूंगा ६४।६५ इन्द्रसमेत देवता भी मेरे सम्मुख होनेको समर्थ नहीं हैं हे शत्रुहन्तः, महाराज, दुर्योधन ! यह काम मैं तुमसे करवाया चाहता हूं ६६ यह मेरा मनोरथ पूर्ण करो इस समय को किसी प्रकार से उल्लङ्घन न करना चाहिये ऐसा करने से सब अभीष्ट सिद्ध होंगे ६७ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे जैसा मैं युद्ध करूंगा उसको भी तुम देखोगे मैं सम्मुख आनेवाले पाण्डवों को सब प्रकार से विजय करूंगा ६८ सुर और असुर भी युद्ध में मेरे सम्मुख आने को समर्थ होने को समर्थ नहीं हैं हे राजन् ! फिर मनुष्ययोनि पाण्डवलोग मेरी सम्मुखता क्या करेंगे ६९ सञ्जय बोले कि कर्ण के इन सब वचनों को सुनकर आपका पुत्र दुर्योधन अत्यन्त प्रसन्न होकर कर्ण से प्रशंसापूर्वक यह वचन बोला ७० कि हे कर्ण ! जैसा तुम कहते हो मैं इन सब बातों को वैसाही करूंगा तूणीरों से भरेहुए रथ तुम्हारे पीछे २

चलेंगे ७१ कङ्कपक्ष से जटित तुम्हारे बाणों के बहुत से छकड़े लेचलूँगा और मुझ समेत सब राजालोग तुम्हारे पीछे २ चलेंगे ७२ सञ्जय बोले कि हे महाराज ! आपका प्रतापी पुत्र दुर्योधन इस प्रकार के वचन कहकर मद्रदेश के राजाशल्य के पास जाकर उससे यह वचन बोला ॥ ७३ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णदुर्योधनविचारेद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! आपका पुत्र बड़ी नम्रता समेत समीप जाकर महारथी शल्य से यह वचन बोला १ हे सत्यव्रती, महाबाहु, शत्रुशोककारी, मद्रदेश के स्वामी, युद्ध में शूर और शत्रु की सेना को भय उत्पन्न करनेवाले २ श्रेष्ठवक्ता ! आपने कर्ण का वचन सुना है मैं सब श्रेष्ठ राजाओं में आपको उत्तम जानता हूं ३ हे अनुपम पराक्रमी, शत्रुपक्ष के नाशकारी, राजा मद्र ! मैं नम्रता पूर्वक आपको शिर से दण्डवत् करता हूं ४ हे रथियों में श्रेष्ठ ! आप अर्जुन के नाश और मेरी वृद्धिके अर्थ न्याय से सारथ्य कर्म करने को योग्य हो ५ आपके सारथी होनेसे कर्ण मेरे शत्रुओं को विजयकरेगा कर्ण की बागडोरों का पकड़ने वाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है ६ हे महाबाहो ! युद्धमें वासुदेवजी के समान तेरे सिवाय दूसरा मनुष्य नहीं है ७ आप सब प्रकार से कर्ण की ऐसी रक्षाकरिये जैसे कि ब्रह्माजीने महेश्वरजी की और श्रीकृष्ण ने सब आपत्तियों में पाण्डवों की करीहै और करतेहैं हे महाराज ! उसीप्रकार आपभी कर्णकी रक्षा करिये ८ भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण और पराक्रमी कृतवर्मा, सौबलका पुत्र शकुनी, अश्वत्थामा, मैं और हमारी सब सेना ९ हे राजन् ! इस रीतिसे यह नौ भागकिये हैं परन्तु इन भागों में महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य का भाग नहीं है १० इन्हों ने उन दोनोंभागों को उल्लङ्घन करके मेरे शत्रुओं को मारा वह दोनों वृद्ध बड़े धनुषधारी युद्ध में छलसे मारे गये ११ हे निष्पाप ! वह दोनों कठिन कर्मों को करके यहांसे स्वर्ग को गये और इसी प्रकार अन्य २ भी बहुतसे पुरुषोत्तम युद्ध में शत्रुओं के हाथ से मारेगये १२ हमारे अनेक शूरवीर युद्धमें बड़े २ पराक्रमों को करके प्राणों को त्यागकर स्वर्ग को गये १३ हे राजन् ! यह मेरी बहुत सी सेना मारीगई पूर्व में भी इन अत्यन्त थोड़े पाण्डवों से मेरे बहुत से मनुष्य मारेगये अब कौनसी बात करनी उचितहै १४ कुन्तीके पुत्र महाबली

सत्यपराक्रमी हैं सो हे राजन् ! जिस रीति से वह पाण्डवलोग मेरी शेष बची हुई सेना को न मारसकें वही उपाय आपको करना योग्यहै १५ हे समर्थ ! यह सेना युद्ध में पाण्डवों के हाथ से मृतक हुए शूरवीरवाली है अर्थात् इसके युद्ध-कर्ता शूरवीर मारेगये अब हमारी वृद्धि चाहनेवाला एक महाबाहु पराक्रमी कर्ण और सब लोगों के महारथी पुरुषोत्तम आप हो हे शल्य ! अब कर्ण युद्ध में अर्जुन के साथ लड़ना चाहताहै १६।१७ हे राजन्, शल्य ! उस कर्ण में मुझको विजय की बड़ी आशा है इस पृथ्वी पर उसका उत्तम सारथी कोई नहीं है १८ जैसे कि युद्ध में अर्जुन के सारथी श्रीकृष्णजी हैं उसी प्रकार आप भी कर्ण के रथपर सारथी हूजिये १९ हे राजन् ! श्रीकृष्णजी से युक्त और रक्षित होकर जैसे कि वह अर्जुन जिन २ कर्मों को करताहै वह सबके प्रत्यक्षहैं २० पूर्वमें अर्जुन ने युद्धमें हमारे शत्रुओं को मारा अब श्रीकृष्ण को साथ रखनेवाले इस अर्जुन का पराक्रम है २१ हे राजन्, मद्र ! अर्जुन श्रीकृष्णजी के साथ हमारी बड़ीभारी सेना को प्रतिदिन युद्धमें भगाताही हुआ दिखाई देताहै २२ हे बड़ेतेजस्विन् ! कर्ण का और तुम्हारा भाग शेष रहगया है कर्ण समेत आप एकही भागसे उस पाण्डवीय सेना का नाशकरो जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से अन्धकार को दूर करताहै उसीप्रकार आप भी कर्ण समेत होकर युद्धमें अर्जुन को मारो २३।२४ सूर्य के समान उदय होनेवाले बालार्क के समान प्रकाशमान कर्ण और शल्य को देखकर युद्ध से सब महारथी ऐसे भागेंगे जैसे कि सूर्योदय में अरुण को देखकर अन्धकार दूरहोता है २५ इसी प्रकार आपके युद्ध में प्रकाशमान होतेही पाञ्चाल और सृञ्जयोंसमेत कुन्ती के पुत्रभी नाशको पावेंगे २६ कर्ण रथियों में अत्यन्त श्रेष्ठ है और आप रथियों में असादृश्य हैं जैसा तुम दोनों का योग होगा वैसा संयोग न पूर्व में हुआ है न आगे होगा २७ जैसे कि श्रीकृष्णजी सब दशाओं में पाण्डवों की रक्षा करतेहैं उसी प्रकार आप भी सूर्य के पुत्र कर्ण की रक्षाकरो २८ यह कर्ण तुझ सारथी के साथ होकर इन्द्रसमेत देवताओं से भी युद्ध में अजेय होगा फिर पाण्डवों के युद्ध में कैसे विजयी न होगा हे राजन् ! तुम मेरे वचनोंमें सन्देह मतकरो २९ सञ्जय बोले कि कुलीनता शास्त्रज्ञता अधिकार और पराक्रमसे अजेय महाबाहु शल्य दुर्योधन के वचन को सुनकर क्रोध में भराहुआ वारंवार हाथियों को प्रेरणा करताहुआ भृकुटी को त्रिबली करके

क्रोध से रक्तवर्ण नेत्रों को खोलकर यह वचनबोला ३० । ३१ हे गान्धारी के पुत्र ! निश्चय करके तू मेरा अपमान करता है और सन्देह करता है जो तू निस्सन्देह होकर मुझ से कहताहै कि सारथीपना करो ३२ और कर्ण को मुझसे भी अधिक जानकर उसकी प्रशंसा करता है मैं युद्ध में कर्ण को अपनी समान नहीं समझता हूं ३३ हे राजन् ! तुम मेरा अधिकतर भाग विचारकरो मैं युद्ध में उसको विजय करके जहां से आया हूं वहां को चलाजाऊं ३४ हे कौरवनन्दन ! चाहे मैंही अकेला युद्ध करूंगा अब तुम युद्ध में मुझ शत्रुहन्ता के पराक्रम को देखो ३५ जैसे कि मुझ सा पुरुष उस अपमान को हृदय में धारण करके फिर त्याग करने को कर्मकर्ता होजाय वैसेही तुम भी मुझ में सन्देह न करो ३६ अथवा युद्ध में भी मेरा अपमान किसी प्रकार से न करना चाहिये मेरी वज्र-रूपी मोटी २ भुजाओं को देखो ३७ और मेरे चित्र धनुषसमेत विषवाले सर्प के समान बाणों को देखो और वायु के समान वेगवान् उत्तम घोड़ों से अलंकृत मेरे श्रेष्ठ रथ को देखो ३८ हे गान्धारी के पुत्र ! सुवर्ण सूत्रों से वेष्टित मेरी गदा को देखो मैं सम्पूर्ण पृथ्वी को फाड़कर पर्वतों को भी तोड़सक्ता हूं ३९ और हे राजन् ! अपने तेज से समुद्र को शोषण करसक्ता हूं मुझ शत्रुओं के वि-जय करने में समर्थ ऐसे सामर्थ्यवान् को ४० युद्धमें तू नीच अधिरथी के सारथी-पने में क्यों संयुक्त करता है हे राजन् ! तुम मुझको नीचकर्म में संयुक्त करने को योग्य नहीं हो ४१ मैं उत्तम होकर नीचजाति के सेवन करने को नहीं चाहता हूं जोकि प्रीति से समीप आया और स्वाधीनता में नियतहुआ ४२ उसको तू नीचजाति की आधीनता में करता है देखो छोटे बड़ों का विपर्यय करना बड़ापाप है ब्रह्माजी ने मुखसे ब्राह्मण उत्पन्नकिये और भुजासे क्षत्रियों को उत्पन्नकिया ४३ वैश्योंको जङ्घासे और शूद्रों को चरणों से उत्पन्नकिया यह वेद का वचन है इन चारोंवर्णों से अनुलोम प्रतिलोम लोग हुए हैं हे भरतवंशिन् ! चारों वर्णोंकी मिलावट से उत्पन्न होनेवालों के क्षत्रिय लोग रक्षक दण्ड देनेवाले और दान करनेवाले कहे हैं ४४ । ४५ और ब्राह्मणों को ब्रह्माजी ने यज्ञकरने क-राने दान देनेलेने और वेद पढ़ने और शुद्ध दानों के द्वारा लोक के अनुग्रह के निमित्त इस पृथ्वीपर नियत किया है ४६ वैश्यों का कर्म धर्म से खेती करना पशुपालन और दान करना है और शूद्रलोग ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्योंके सेवा

करनेवाले वर्णन कियेहैं ४७ और सूतलोग तो अवश्यही क्षत्रिय और ब्राह्मणों के सेवाकरनेवाले हैं क्षत्रिय किसी दशामें भी सूतों का आज्ञावर्ती नहींहोसक्ता४८ हे राजन् ! मैं राजर्षियों के कुल में उत्पन्न मूर्धाभिषेकनाम से प्रसिद्ध इसरीति से वन्दीजनों का पूज्य और स्तूयमान हूं ४९ हे शत्रुसेनापहारिन् ! सो मैं ऐसा होकर सूत के सारथीपने को इच्छा नहीं करताहूं ५० मैं अपमानयुक्त होकर फिर किसी प्रकार से भी युद्ध नहीं करूंगा हे गान्धारी के पुत्र ! मैं तुमसे पूछकर अब अपने घरको जाऊंगा ५१ सञ्जय बोले कि हे महाराज ! युद्धमें शोभापानेवाला क्रोधयुक्त शल्य इसप्रकार से कहकर राजाओं के मध्यमें से शीघ्रही उठकर चलदिया ५२ आपका पुत्र बड़ी प्रतिष्ठापूर्वक उसको पकड़कर सबप्रयोजनों के सिद्ध करनेवाले मीठे २ वचनों से बड़ी नम्रतापूर्वक बोला ५३ हे शल्य ! जैसा आप जानते हो और कहते हो सो यथार्थही है इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है इसमें मेरा प्रयोजनहै उसको आप कृपाकरके सुनिये ५४ हे राजन् ! कर्ण आपसे अधिक नहींहै और न मैं आपपर सन्देहकरता हूँ आप मद्रदेश के राजा हैं जो मिथ्या समझें तो उसका मको न करियेगा ५५ हे पुरुषोत्तम ! तुम्हारे वृद्धलोगों को रत अर्थात् सत्यतायुक्त बोलते हैं उनकी सन्तान होनेसे आप आर्तायन कहे जातेहैं यह मेरा मतहै ५६ हे प्रतिष्ठादेनेवाले ! इस कारणसे आप युद्धमें शत्रुओं के शल्यरूप अर्थात् भल्लरूप हो इसीहेतुसे पृथ्वीपर आपका नाम शल्य विख्यात है ५७ हे बड़े दक्षिणा देनेवाले ! आपने जो प्रथम कहा है उसीको करो हे धर्मज्ञ ! मेरे निमित्त जो २ कहाजाता है ५८ कर्णसमेत मैं भी आपसे अधिक पराक्रमी नहीं हूँ परन्तु मैं युद्ध में आपको उत्तम घोड़ोंका सारथी चाहताहूँ ५९ हे शल्य ! मैं कर्ण को भी उत्तम गुणों के द्वारा अर्जुन से अधिक मानता हूं और आपको वासुदेवजीसे भी अधिक मुझसमेत सबलोक मानतेहैं ६० हे नरोत्तम ! कर्ण अस्त्रोंमें भी अर्जुन से अधिक है इसी प्रकार आप भी अश्वविद्या के जानने में और पराक्रम में श्रीकृष्ण से अधिक हो ६१ जैसे कि बड़ेसाहसी वासुदेवजी अश्वहृदय को जानते हैं उसी प्रकार उनसे भी द्विगुणित आप जानतेहो ६२ शल्य बोला कि हे गान्धारी के पुत्र, कौरव ! जो तुम सेनाके मध्य में मुझको श्रीकृष्णजी से अधिक मानते और कहते हो इसीसे मैं तुमपर प्रसन्न हूं ६३ अब मैं अर्जुन के साथ युद्धकरनेवाले यशस्वी कर्ण के साथ सारथीपने में नियत

होताहूँ हे वीर! जैसे कि तुम मानकर चाहते हो ६४ हे वीर! कर्ण के विषयमें मेरा यह सङ्कल्प है अर्थात् प्रतिज्ञा है कि मैं इसके सम्मुख श्रद्धा के समान करूँगा ६५ सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! आपका पुत्र कर्ण समेत बोला कि जैसी राजा मद्र की इच्छा है वैसाही हो ॥ ६६ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यसारथ्येत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

दुर्योधन बोले कि, हे राजन्, मद्र! आप से जो मैं कहता हूँ उसको फिर भी तुम सुनो हे समर्थ! जैसे कि पूर्व देवासुरों के संग्राम में जो वृत्तान्तहुआ १ उसी को महर्षि मार्कण्डेयजी ने जिसरीति से मेरे पिता से कहा हे राजर्षभ! आप उसको मुझसे सुनिये और चित्त से समझिये २ तुमको इसमें विचार न करना चाहिये हे राजन्! परस्पर में विजय की इच्छा से देवता और असुरों का प्रथम युद्ध ३ तारकसम्बन्धी हुआ तब दैत्य देवताओं से हारगये यह हमने सुना ४ हे राजन्! दैत्योंके हारनेपर तारक के तीनपुत्र ताराक्ष, कमलाक्ष, विद्युन्माली ५ उग्रतपी होकर बड़े भारी नियम में नियतहुए हे शत्रुसन्तापिन्! उन तीनों ने तपस्याओं से अपने २ शरीरों को दुर्बल करदिया उनकी शान्तचित्तता तप नियम और समाधि से प्रसन्नहोकर वरदाता ब्रह्माजी ने उनको वरदानदिये ६।७ हे राजन्! उन सब मिलेहुओं ने सब जीवमात्र के हाथसे मृत्युका न होना लोक के पितामह ब्रह्माजी से वरमाँगा तब ब्रह्माजी ने उनसे कहा कि सबकी अविनाशिता नहींहै हे असुरलोगो! इसविचारसे लौटो ८। ९ और इसके सिवाय जो दूसरा वर चाहते हो उसको माँगो हे राजन्! इसके पीछे वह सब मिलेहुए प्रभु का वारंवार ध्यान करके १० और सर्वेश्वर को नमस्कारपूर्वक यह वचन बोले हे देव, पितामह! हमको यह वरदान दो ११ कि हम तीनपुरों में नियत होकर आप की कृपा से इसलोक में इस पृथ्वीपर घूमें १२ इसके पीछे हज़ार वर्षके अनन्तर परस्पर में मिलेंगे हे निष्पाप! यह तीनोंपुर एकहीरूप होजायँ १३ हे भगवन्! उस समय जो देवता हमारे इस मिले हुए पुरको एकही बाण से ढहानेवाला होगा उसी से हमारी मृत्यु हो १४ ब्रह्माजी तथास्तु कहकर स्वर्ग में चलेगये फिर वह तीनों वरप्रदानको पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए १५ और तीन पुर बनाने के लिये असुरों के विश्वकर्मा अजर अमर और दैत्यों से पूजित जो

मयनाम दैत्य है उससे बोले १६ उसके पीछे उस बुद्धिमान् मयदैत्य ने अपने तप से तीन पुरोंको उत्पन्न किया उनमें एक सुवर्ण का दूसरा चांदीका तीसरा लोहेका था १७ वह सुवर्ण का पुर तो स्वर्ग में नियत हुआ चांदीका अन्तरिक्ष में और लोहेका पुर इच्छा के अनुसार पृथ्वी पर चलनेवाला हुआ १८ उनमें प्रत्येकपुर सौयोजन वर्गात्मक गृह अट्टादिकों से युक्त प्राकार और तोरणोंसे शोभित अत्यन्त शोभित धामों से भराहुआ और खुलाहुआ निविड़ता से रहित बड़े २ चौड़े मार्गों का रखनेवाला नाना प्रकार के हर्म्य और स्वच्छ द्वारों से शोभायमानथा १९ । २० हे राजन् ! उन तीनोंपुरों में जुदे २ राजाहुए सुवर्ण का पुर तो महात्मा ताराक्ष का हुआ और चांदीवाला कमलाक्ष का हुआ और लोहेवाला विद्युन्माली का हुआ वह तीनों दैत्यों के राजा अस्त्रों के तेजों से तीनोंलोकों को जीतकर नियतहुए २१।२२ और कहनेलगे कि कौन प्रजापतिहै उन उत्तम वीर दैत्यों की संख्या प्रयुत अर्बुदों थीं और किरोड़ों दैत्य जहां तहां से आये वह मांसभक्षी महाबली पूर्वसमय में देवताओं से पराजित २३ । २४ बड़े ऐश्वर्य के चाहनेवाले त्रिपुरनाम गढ़ में आश्रितहुए फिर मय दैत्य इनके सब मनोरथों का पूरा करनेवाला हुआ २५ वह सब दैत्य उस मयकी रक्षामें होकर निर्भय रहतेथे त्रिपुरके राजाओं ने जिस २ अभीष्टको मनसे ध्यानकिया २६ उस अभीष्ट को उनके निमित्त मयदैत्य ने अपनी मायासे प्रकट किया तारकाक्ष के पुत्र वीर पराक्रमी हरिनाम ने बड़ीघोर तपस्या करी २७ उस तपसे ब्रह्माजी प्रसन्नहुए तब ब्रह्माजी को प्रसन्न जानकर उसने यह वर माँगा कि हमारेपुर में एक ऐसी वापी अर्थात् बावड़ी उत्पन्न हो २८ जिसमें शस्त्रों से मृतकलोग उसमें डालने से सजीव होकर बलवान् होजायँ हे राजन् ! उस तारकाक्ष के पुत्र हरि ने इस वरको पाकर २९ वहां मृतक सञ्जीविनी बावड़ी को तैयार किया फिर मरेहुए दैत्य जिस रूप और पोशाक थे उसमें डालेगये ३० वह उसी रूपको धारण किये पोशाक समेत उत्पन्नहुए उन्होंने उस बावड़ीको पाकर फिर उन सब लोकोंको पीड़ित किया ३१ वह सब दैत्य बड़े २ तपस्वी और सिद्धलोगों के भी भयके बढ़ानेवाले हुए हे राजन् ! कभी उनकी युद्धमें पराजय नहींहुई ३२ उसके पीछे लोभ मोहसे व्याप्त निर्बुद्धि निर्लज्ज होकर वह सबलोभ में फँसेहुए नियत हुए ३३ वरदान से अहङ्कारी होकर वह सब जहां तहां देवताओं के

समूहों को भगाकर अपनी इच्छा के अनुसार घूमने लगे ३४ देवताओं के प्रियकारी सब क्रीड़ा स्थानों को वा ऋषियों के पवित्र आश्रमों को और अनेक सुन्दर २ देशोंको नाश करके उन दुष्टकर्मी दैत्यों ने मर्यादाओं को भी विगाड़ा इसके पीछे सबके पीड़ित होनेपर मरुद्गणों समेत इन्द्र ने ३५। ३६ चारों ओर को वज्रों के प्रहार से तीनोंपुरों से युद्ध किया जब इन्द्र उन वरदान पानेवालों के पुरों के तोड़ने और पराजय करने को समर्थ नहीं हुआ तब भयभीत होकर वह उन पुरोंको छोड़कर ३७। ३८ देवताओं को साथ लेकर ब्रह्माजी के पास गया वहां जाकर उसने असुरों की प्रबलता ब्रह्माजी से वर्णनकरी ३९ फिर शिरों से दण्डवत् करके उनका मूलवृत्तान्त वर्णन किया और उनके मारनेका उपाय ब्रह्माजी से पूछा भगवान् ब्रह्माजी इन्द्र के वचन को सुनकर देवताओं से बोले कि जो तुमसे शत्रुता करता है वह मेरा भी शत्रुरूप और अपराधी है निश्चय करके वह देवताओं से विरोध करनेवाले निर्बुद्धि असुर जो तुमको पीड़ित करते हैं इसीसे वह सदैव अपराधीहैं ४०। ४२ मैं सब जीवमात्रको निस्सन्देह समान दृष्टिसे देखताहूं परन्तु धर्मके विरोधी जीव मारने केही योग्यहैं यही मेरा नियतव्रत है ४३ मैं उन पुरों को एकही बाणसे तोडूंगा इसमें मिथ्या न होगा उन पुरोंको एकही बाण से शिवजी के सिवाय तोड़नेवाला दूसरा देवता कोई समर्थ नहींहै ४४ हे देवताओ! तुम उस युद्ध करनेवाले अचल आदि ईश्वर शिवजी की शरणलो जिससे कि वह शिवजी उन असुरोंको मारें ४५ इन्द्रसमेत सब देवता ब्रह्माजी के वचनों को सुनकर ब्रह्माजी को आगे करके शिवजी की शरणमें गये ४६ वह धर्मज्ञ देवता ऋषियों समेत तप और नियमों में नियत होकर सनातन वेदोंको पढ़तेहुए सर्वात्मारूप शिवजी के पासगये ४७ हे राजन्! उन्होंने उस सर्वात्मा निर्भयतादेनेवाले जगदीश्वर शिवजीको उत्तम २ स्तुतियों से प्रसन्न किया जिस आत्मारूप से सब जगत् व्याप्त है ४८ और नाना प्रकार के मुख्यतपों से मन के योगवाली सब वृत्तियों को रोकने को जानता है और जिसका चित्त भी सदैव अपने आधीनहै ४९ उसने उस सर्वशक्तिमान् षड़ैश्वर्य के स्वामी उपाधिरहित शिवजी को देखा ५० और उसी अद्वितीय ईश्वरको ही नाना प्रकार के रूपों का धारण करनेवाला कल्पनाकिया अर्थात् उस परमात्मा में अपने सङ्कल्प के अनुसार अनेक रूपों को ५१ और एक ने दूसरे के रूप को

देखा जिसने विष्णुरूप से कल्पनाकिया उसको विष्णुरूप दृष्टपड़े और जिसने इन्द्ररूप ध्यान किया उसको इन्द्ररूप दिखाई दिये यह देखकर सब आश्चर्यित होकर उस जगत् के स्वामी अजन्मा को सर्वरूप देखकर ५२ देवता और ब्रह्मऋषियों ने शिरों को पृथ्वी में धरकर प्रणामकिया फिर शिवजी ने उठकर उनको स्वस्तिवचनसे पूजन किया ५३ फिर मन्द मुसकान करतेहुए भगवान् ने कहा कि कहौ किस निमित्त आये हो तब तो शिवजी की आज्ञा पाकर वह सबदेवता नियतचित्ततासे तप नियमों में नियत होकर सनातन वेद को पढ़ते हुए शिवजी की स्तुति करनेलगे ५४ (स्तोत्र) नमोनमोनमस्तेस्तु प्रभोइत्य ब्रुवन्वचः । नमोदेवाधिदेवाय धन्विने वनमालिने ५५ प्रजापतिमखघ्नाय प्रजा पतिभिरिज्यते । नमोस्तुताय स्तुत्याय स्तूयमानाय शम्भवे ५६ विलोहिताय रुद्राय नीलग्रीवाय शूलिने । अमोघाय मृगाक्षायप्रवरायुधयोधिने ५७ अर्हाय चैवशुद्धाय क्षयाय क्राथनाय च । दुर्वारणाय क्राथाय ब्रह्मणे ब्रह्मचारिणे ५८ ईशा नायाप्रमेयाय नियन्त्रे चर्मवाससे । तपोरताय पिङ्गाय व्रतिनेकृत्तिवाससे ५६ कुमारपित्रे यक्षाय प्रवरायुधयोधिने । प्रपन्नार्त्तिविनाशाय ब्रह्मद्विट्संघघातिने ६० वनस्पतीनां पतये नराणां पतये नमः । गवां च पतये नित्यं यज्ञानां पतये नमः ६१ नमोस्तु ते ससैन्याय त्र्यम्बकायामितौजसे । नमोवाक्कर्मभिर्देवत्वां प्रपन्नान्भजस्व नः ६२ ततःप्रसन्नोभगवान् स्वागतेनाभिनन्द्य च । प्रोवाचव्ये तुभीतिर्वो ब्रूतकिंकरवाणि च ॥ ६३ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणित्रिपुराख्यानेचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्योधन बोले कि पितृदेवता और ऋषियों के समूहों को शिवजी ने निर्भयता दी उस निर्भयता के देनेपर ब्रह्माजी शिवजी की प्रशंसा करके यह लोकों का हितकारी वचन बोले १ हे देवताओं के ईश्वर ! आपके दियेहुए प्रजापतिके पदपर वर्तमान होकर मैंने दैत्यों को बड़ाभारी वरदान दिया था २ उन मर्यादा उल्लङ्घन करनेवाले असुरों के मारने को आपके सिवाय किसी को सामर्थ्य नहीं है हे भूत-भविष्य के स्वामिन् ! आपही उनके मारने को विरोधी शत्रु हो ३ हे देवेश्वर, शङ्कर, देव ! तुम शरणागत आनेवाले और प्रार्थना करनेवाले देवताओं के ऊपर कृपाकरो और दानवलोगों को मारो ४ हे बड़ाई देनेवाले ! आप

की कृपा सेही सब संसारवृद्धि पाता है हे लोकेश ! आपही रक्षा के स्थान हैं हम सब आपकी शरण हैं ५ शिवजी ने कहा कि तुम्हारे सब शत्रु मारडालने केही योग्य हैं यह मेरा मत है परन्तु मैं अकेला उनके मारने को उत्साह नहीं करता हूं क्योंकि वह बहुतसे असुर बड़े २ पराक्रमी हैं ६ सो तुम सब बड़े २ पराक्रमी मेरे साथी होकर मेरे आधेतेजसे उन शत्रुओं को युद्धमें विजय करो ७ देवता बोले कि हे विश्वनाथ ! जितना हमारा पराक्रम है उससे द्विगुणित उनका पराक्रम युद्ध में हम मानते हैं क्योंकि उनका तेजबल हमने देखा है वह वास्तव में हमसे द्विगुणित बलवान् हैं ८ श्रीभगवान् बोले कि तुम से शत्रुता करने से वह सब पापात्मा हैं इससे वध के अवश्य योग्य हैं तुम उन शत्रुओं को मेरे आधे तेज और बल से मारोगे ९ देवता बोले हे महेश्वरजी ! हम आपका आधातेज और बलधारण करने को समर्थ नहीं हैं आपही हमसब के आधेबल से शत्रुओं को मारो १० श्रीभगवान् शिवजीने कहा जो मेरा पराक्रम धारणकरने को तुम्हारी कोई सामर्थ्य नहीं है तो तुम्हारे आधे तेज से वृद्धिपानेवाला मैंहीं उनको मारूंगा ११ तब देवताओं ने कहा बहुतअच्छा यह देवताओं के वचन को सुनकर देवेश्वर शिवजी सब के आधे तेज को लेकर अधिक होगये १२ अर्थात् शिवजी उनके आधेबल से सब से अधिक बलवान् होगये तभी से शिवजीका महादेवनाम प्रसिद्ध हुआ १३ इसके पीछे महादेवजी बोले कि हे देवताओ ! मैं धनुषबाण धारी हूं और युद्धभूमि में रथ की सवारी के द्वारा तुम्हारे उनशत्रुओं को मारूंगा १४ इसहेतु से तुम मेरे रथ और धनुष बाणको विचार करके तब तक खोजो जबतक कि उनशत्रुओं को पृथ्वीपर न गिराऊं १५ देवता बोले कि हे देवेश्वर ! हम जहां तहां से तीनों लोकोंका सब तेज इकट्ठा करके उससे आपके प्रकाशमान रथ को तैयारकरैंगे १६ फिर जैसा कि बुद्धि के अनुसार बतायागया वैसाही विश्वकर्माजी ने शुभ और उत्तम रथ को तैयार किया तदनन्तर उन उत्तम देवताओं ने उस बनेहुए दिव्य रथ को अच्छेप्रकार से अलंकृतकिया १७ विष्णुजी चन्द्रमा और अग्निदेवता यह तीनों तो शिवजी के बाणमें कल्पितहुए अग्नि शृङ्ग हुआ और चन्द्रमा भल्ल हुआ १८ और विष्णुजी उस उत्तम बाण में कुन्तल हुए और बड़े २ पुरों की धारण करनेवाली धरा अर्थात् पृथ्वीदेवी शिवजी का रथ बनी वह पृथ्वी पर्वत वा द्वीपों से युक्त होकर अखिलजीवों की

धारण करनेवाली थी उस समय मन्दराचल पर्वत अक्ष हुआ और उसकी जङ्घा महानदी हुई १६ । २० तब दिशा विदिशा रथ के परिवारहुए और नक्षत्रों के समूह ईशाहुए उस रथ में सतयुग जुआहुआ और सर्पों में श्रेष्ठ वासुकी सर्प रथ का कूबर हुआ २१ हिमाचल और विन्ध्याचल यह दोनों रथ के पहियों के उपस्करहुए उदयाचल और अस्ताचल पायेहुए २२ और दानवों का उत्तम स्थान समुद्र अक्ष बना और सप्तऋषियों का मण्डल रथ का पुरस्कर हुआ २३ गङ्गा सरस्वती सिन्धु और आकाश धुर हुआ और जलसमेत सब नदियां भी रथ की उपस्कर हुईं २४ दिनरात्रि और कला काष्ठा नाम समय और सब ऋतुओं समेत प्रकाशमान ग्रह अनुकर्ष हुए और नक्षत्र बरूथहुए २५ धर्म, अर्थ, काम से संयुक्त त्रिवेणु द्वार और बन्धनहुए ओषधी वीरुध और फलफूलयुक्त वृक्ष घण्टे बने २६ उस महाउत्तम रथ में सूर्य और चन्द्रमा पूर्व और पश्चिम के पायेहुए और दिन वा रात्रि पूर्वापरनाम शुभपक्ष हुए २७ तब धृतराष्ट्र नाम नागपतिको आदिलेकर दश नागपतियों को ईशाकिया और श्वास लेनेवाले बड़े २ सर्पों को योक्र किया २८ सर्पको दूसरा जुआ बनाया और संवर्तक वा बलाहक नाम बादलोंका जुये का चर्म बनाया कालपृष्ठ नहुष कर्कोटक धनञ्जय और अन्य २ सर्प घोड़ों के बालबन्धनहुए और दिशा विदिशा आदि घोड़ों के मार्गहुए २९ । ३० सन्ध्या पृथ्वी मेधा स्थिति सन्नति और नक्षत्रोंसे चित्रित आकाशको रथका चर्मकिया ३१ मद्यजल और प्रेतों के स्वामी लोकेश्वरों को घोड़ा बनाया पूर्व अमावास्या और पूर्व पूर्णिमा और उत्तर अमावास्या वा उत्तर पूर्णमासी इन सुन्दर व्रतवालियों को योक्र बनाया ३२ उस रथ में उस अमावास्या आदि के अधिष्ठाता पितरों को इशावनकी कीलक बनाई उनकीलकों में धर्म सत्य और तपको रस्सियां बनाईं ३३ उस रथ का आधार मन हुआ और सरस्वती प्रचार मार्गहुई और नानाप्रकार के वर्णवाली विचित्र प्रेरणाही उत्तम पताका हुई ३४ बिजली इन्द्रधनुष से अलंकृत प्रकाशमान रथको प्रकाशित किया वषट्कार मन्त्र चाबुक हुआ और गायत्री शिरका बन्धन हुई ३५ पूर्वसमय में यज्ञके मध्य में महात्मा महेश्वरजी का जो संवत्सरनाम धनुष नियत हुआ था वही धनुष ठहरायागया और बड़ी शब्दवाली सावित्रीजी प्रत्यञ्चाबनी ३६ और दिव्यकवच वह नियतकिया जोकि बड़ोंकेयोग्य रत्नों से जटित खण्डित न होनेवाला रजोगुणरहित कालचक्र से बाहर था ३७

श्रीमान् सुवर्ण का मेरु पर्वत ध्वजा की यष्टिहुई और बिजलियों से अलंकृत बादल पताकाहुआ ३८ और अध्वरों के मध्य में देदीप्यमान अग्नियां प्रकाशमान हुईं फिर देवतालोग उस अलंकृत रथ को देखकर आश्चर्ययुक्त हुए ३९ हे श्रेष्ठ! इसके पीछे देवताओं ने सबलोकों के तेज को एक स्थानपर इकट्ठा देखकर उस सजे हुए रथ को ४० उस महात्मा के सम्मुख वर्तमानकरके वर्णनकिया हे महाराज, नरोत्तम ! इस प्रकार से देवताओं की ओर से उसशत्रुओं के मारनेवाले उत्तमरथ के तैयारहोनेपर ४१ शङ्करजी ने अपने अस्त्रशस्त्रों को उस रथपर रक्खा और आकाशको ध्वजाकी यष्टि बनाके नन्दीगणको उसपर नियत किया ४२ ब्रह्मदण्ड, कालदण्ड, रुद्रदण्ड और तप यह चारों सर्वदिशाओं से युक्त रथ के ओर पास के रक्षक हुए ४३ अथर्वा और अङ्गिरस उस महात्मा के रथचक्रों के रक्षकहुए ऋग्वेद सामवेद और पुराण यह सब आगे चलनेवालेहुए ४४ इतिहास और यजुर्वेद पीछे के रक्षकहुए और दिव्यवाणी और विद्या यह रथ के चारों ओर नियत हुए ४५ हे राजेन्द्र ! स्तोत्रादिक वषट्कार और प्रणव यह मुखमें शोभाकरनेवालेहुए ४६ और छओं ऋतुओं समेत वर्ष के अन्त को विचित्र धनुप करके अपने सम्मुख अविनाशी छायारूप सावित्री को युद्ध में धनुष की प्रत्यञ्चा बनाई ४७ वेगवान् रुद्रजी कालरूप हुए और उनका धनुष वर्षान्तरूप हुआ इसहेतु से रौद्री कालरात्रिको धनुषकी प्रत्यञ्चा बनाया ४८ विष्णु अग्नि और चन्द्रमा भी बाणरूप हुए यह सब जगत् अग्निष्टोम नाम दोरूपवाला वैष्णव कहाजाता है ४९ और विष्णुजी उस भगवान् महातेजस्वी शिवजी की आत्मा हैं इस कारण से उन्होंने शिवजीके धनुषकी प्रत्यञ्चा के स्पर्शको न सहा ५० ईश्वरने भृगु वा अंगिराऋषि के क्रोधसे उत्पन्न बड़ी कठिनतासे सहनेकेयोग्य तेजसङ्कल्पवाले असह्य क्रोधाग्नि को उस बाण में लगाया ५१ और नीललोहित धूम्रवर्ण दिगम्बर भयकारी दश हज़ार सूर्य के समान प्रकाशों से संयुक्त ज्वलित तेज को ५२ कठिनता से गिरने के योग्य राक्षसों का संहार करनेवाला और ब्राह्मणों के मारनेवाले शत्रुओं का नाश करनेवाला सदैव धर्म में नियत मनुष्यों की रक्षा करनेवाला और अधर्मी लोगों का संहारकर्ता था ५३ शत्रुओं के मथन करनेवाले भयानक बल और रूप चित्त के समान शीघ्रगामी इन अपने गुणों से युक्त भगवान् शिवजी प्रकाशमान हुए ५४ यह जड़ चैतन्यरूप विश्व उन शिवजी के अङ्गों में शरणरूप

होकर अपूर्व दर्शनवाला शोभायमान हुआ ५५ वह धनुषधारी शिवजी उस तैयार हुए रथ को देखकर और चन्द्रमा विष्णु और अग्निसे उत्पन्न होनेवाले उस बाण को लेकर ५६ नियतहुए हे प्रभो, राजन्, शल्य ! तब देवताओं ने उसके पीछे चलनेवाले देवताओं में श्रेष्ठ वायु को पवित्र गन्धियों का पहुँचानेवाला विचार किया ५७ तब सावधान शिवजी देवताओं को भी भयभीत करते हुए पृथ्वी को कम्पायमान करके उस रथपर सवार हुए ५८ उस रथपर सवार होने के अभिलाषी देवताओं के ईश्वर शिवजी को परमऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओंके गणोंने स्तूयमान किया ५९ ब्रह्मऋषियोंसे स्तुतिमान् और बन्दीजनों से प्रतिष्ठित और नृत्यविद्या में कुशल नाचनेवाली अप्सराओं से शोभायमान ६० खड्ग बाण और धनुषधारी वरदाता शिवजी देवताओं से बोले कि, हमारा सारथी कौन होगा ६१ तब देवगणोंने कहा कि, हे देवेश ! आप जिसको आज्ञा देंगे वही निस्सन्देह आपका सारथी होगा ६२ फिर शिवजी ने कहा कि जो मुझ से श्रेष्ठतम होय उसको तुम अच्छी रीति से विचारकर शीघ्रही मेरा सारथी बनावो विलम्ब न करो ६३ इसके पीछे शिवजी के इस वचन को सुनकर देवतालोग ब्रह्माजी के समीप पहुँच बहुत प्रसन्न करके यह वचन बोले ६४ कि हे देवताओ ! असुरों के मारने में जो २ आपने कहा वह सब हमने किया और शिवजी हमपर प्रसन्न हैं ६५ हमने विचित्र शस्त्रों से युक्त रथ को तैयार किया है हम नहीं जानते हैं कि उस उत्तम रथमें सारथी कौन होगा ६६ हे देवोत्तम ! इस हेतु से आपही किसी सारथी को विचार कीजिये हे समर्थ, देवताओ ! हमारे इस वचनके सफलकरने को आपही समर्थ हैं ६७ हे भगवन् ! तुमने पूर्व समय में हमलोगों से ऐसा कहाहै कि मैं तुमलोगों का हित करूंगा उसको आप करने के योग्य हैं ६८ हे देव ! तब वह रथियों में श्रेष्ठ कठिनता से सहने के योग्य शत्रुलोगों का भगानेवाला पिनाकधनुषधारी हमारे अनुकूल युद्ध करनेवाला विचार कियागया वह दानवों को भयभीत करता हुआ वर्तमान है ६९ उसी प्रकार चारोंवेद यही चारों उत्तम घोड़ेहुए और पर्वतों समेत पृथ्वी रथहुई नक्षत्रों समेत आकाश निवासस्थान और शिवजी युद्धकर्ता बने हैं परन्तु सारथी जानने के योग्य है इन सबसे अधिक तेज बलवाला सारथी चाहिये हे देव ! रथ घोड़े समेत लड़नेवाला देवता नियत है ७०।७१ और हे पितामहजी ! कवच

धनुष और शस्त्र भी तैयार हैं परन्तु उनका सारथी आपके सिवाय दूसरा हम नहीं देखते हैं ७२ हे प्रभो ! आपही सब गुणों से सम्पन्न देवता से अधिक हो सो तुम शीघ्रही उत्तमरथपर सवार होकर घोड़ों की बाग पकड़ो ७३ आपको देवताओं के विजय और असुरों के नाश के लिये ऐसा करना उचित है यह कहकर उन देवताओं ने तीनोंलोकों के ईश्वर ब्रह्माजी को शिर से दण्डवत करी और उनको सारथी बनने के निमित्त प्रसन्नकिया ब्रह्माजी बोले हे देवताओ ! तुमसे जो कहा है उसमें कुछ भी मिथ्या नहीं है ७४ । ७५ अब मैं युद्धकर्ता शिवजी के घोड़ों को थाँभता हूं यह कहकर वह संसार के स्वामी ब्रह्माजी ७६ देवताओं की प्रार्थना से सारथी नियत हुए उन लोकेश ब्रह्माजी के रथपर सवार होने पर ७७ उन वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों ने शिरों से पृथ्वी को प्राप्तकिया अपने तेज से ही प्रकाशमान भगवान् ७८ ब्रह्माजी ने रथपर चढ़कर बागडोरों समेत चाबुक को हाथमें लिया उसके पीछे देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् ब्रह्माजी उन वायु के समान घोड़ों को उठाकर ७९ शिवजी से बोले कि, रथपर सवार हूजिये इसके अनन्तर शिवजी विष्णु अग्नि और चन्द्रमा से उत्पन्न होने वाले उस बाण को लेकर ८० धनुष से शत्रुओं को कंपाते सवारहुए परम ऋषि, गन्धर्व, देवगण और अप्सराओं के गणों ने उस रथारूढ़ देवेश की स्तुति करी वह शोभायमान खड्ग धनुषबाणधारी वरदाता ८१ । ८२ अपने तेज से तीनों लोकों को अत्यन्त प्रकाश करतेहुए रथपर सवारहुए और इन्द्रादिक देवताओं से फिर कहनेलगे ८३ कि यह तुम सन्देह न करना कि शत्रु नहीं मारेजायँगे ८४ इस बाण से तुम असुरों को माराहुआही जानना उन देवताओं ने कहा कि सत्य है असुर मारेगये यह वचन जो आपके मुखसे निकलाहै वह मिथ्या नहीं है ८५ देवता लोग ऐसा विचारकर बड़े प्रसन्न हुए उसके पीछे सब देवगणों समेत देवेश शिवजी ८६ उस बड़ेरथ में बैठेहुए चले जिसके समान कोई नहीं वह बड़ायशस्वी देवता मांसभक्षी अजेय दौड़ते नाचते और चारों ओर से धमकाते हुए अपने पार्षदों से शोभित था ८७ महाबाहु तपोमूर्ति बड़े गुणवान् सब ऋषि और देवगणोंने महादेवजी की विजय की आशाकरी ८८ हे नरोत्तम ! इस रीति से लोकों को निर्भय करनेवाले लोकेश के चलनेपर सब संसारीजीवोंसमेत देवता लोगप्रसन्नहुए ८९ वहां ऋषिलोग बहुत से स्तोत्रों से शिवजी की स्तुति को

करतेहुए वारंवार इनकेतेजकी वृद्धिकरनेवालेहुए ६० उनके यात्राकरनेपर प्रयुतों अर्बुदों गन्धर्वों ने नाना प्रकार के बाजों को बजाया ६१ इसके पीछे वरदाता ब्रह्माजी के रथपर सवारहोने और असुरों की ओर को चलनेपर मन्द मुसकान करतेहुए शिवजी बोले कि धन्य है धन्य है ६२ हे देवताओ! उधर को चलो जिधर दैत्यलोगहैं और सावधान होकर तुम घोड़ों को तेजकरो अब तुम मुझ शत्रुहन्ता के युद्धमें भुजबल को देखो ६३ हे राजन्! इसके पीछे मन और वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ोंको तीक्ष्ण किया और जिस ओरको दैत्य दानवोंसे संयुक्त वह त्रिपुर था उधर कोही उनका मुख किया ६४ भगवान् शिवजी देवताओंकी विजयके निमित्त लोकपूजित इन आकाशके पानकरनेवाले घोड़ों के द्वारा बड़ी शीघ्रतासे चले ६५ शिवजीको रथपर सवार होकर त्रिपुरके सम्मुख चलने के समय नन्दीगण दिशाओं को शब्दायमान करताहुआ बड़े वेगसे गर्जा ६६ वहां देवताओंके शत्रु तारक दैत्य इस नन्दीगणके महाभयकारी शब्दको सुन कर नाशको प्राप्तहुए ६७ तब दूसरे असुरलोग वहां युद्धके निमित्त सम्मुखगये हे महाराज! इसके पीछे त्रिशूलधारी शिवजी क्रोध में ज्वलितहुए ६८ तब सब जीवधारी और तीनों लोक भयभीत हुए और पृथ्वी कम्पायमानहुई और धनुषके चढ़ातेही बड़े २ शकुनहुए ६९ उससमय चन्द्रमा अग्नि विष्णु ब्रह्मा और रुद्रसमेत जो धनुषथा उसके वेगसे वह रथ अत्यन्त पीड़ाको पाताथा १०० इसके पीछे नारायणजी उस बाणके भाग में से बाहर निकले और वृषभरूप होकर उस बड़े रथ को उठालिया १०१ रथके पीड़ित होने और शत्रुओंके गर्जनेपर उन महाबली शिवजीने भ्रान्ति से शब्द किया १०२ इसके पीछे बैलके मस्तक और घोड़ोंके पीछे नियतहोनेवाले रथपर बैठकर उन शिवजीने दानवोंके पुरको देखा १०३ हे नरोत्तम! तब बैल और घोड़ोंपर नियत रुद्रजी ने उनके घोड़ों के स्तनों का नाश करके खुरों के टुकड़े २ करदिये १०४ हे राजन्, शल्य! आपका भलाहो तभीसे गौ और बैलोंके पैर बीचमें से फटे और उसी समयसे घोड़ों के स्तन नहीं हुए १०५ अद्भुतकर्मी महाबली रुद्रजी ने उनको पीड़ित कर अपने धनुष को सन्धान बाणको चढ़ाके पाशुपत अस्त्र से संयुक्त करके त्रिपुरको अच्छेप्रकार से चिन्तायुक्तकिया हे महाराज! उसधनुषधारी शिवजीके नियतहोने १०६।१०७ पर दैवकी प्रेरणा से समय के आने पर वह तीनों पुर एकत्वभाव को प्राप्त हुए

फिर उन त्रिपुरनाम की एकदशा होनेपर देवताओंको बड़ी प्रसन्नता हुई १०८ इसके पीछे महेश्वरजी की स्तुति करतेहुए देवगण और सब सिद्ध महर्षियों ने यह शब्द किया कि विजय करिये इसके पीछे त्रिपुर और असुरों के मारनेवाले क्षमा न करनेवाले तेजस्वी देवता शिवजी के शरीरमें से एक महाउग्ररूपवाला दूसरा रूप प्रकट हुआ फिर उस भगवान् लोकेश्वर ने अपने उस दिव्य धनुष को खैंचकर १०६। १११ उस तीनों लोक के सारवान् बाणको त्रिपुर के ऊपरमारा हे महाराज ! उस उत्तम बाणके छोड़नेपर ११२ पृथ्वीपर वह तीनोंपुर गिरपड़े और उनके पीड़ित शब्द बड़े भयकारी हुए उस बाण ने उन दैत्यगणों को नाश करके पश्चिमी समुद्रमें डालदिया ११३ इस प्रकार क्रोधयुक्त महेश्वरजी के हाथ से तीनोंलोकों का दुःखदायी त्रिपुर नाश को प्राप्त हुआ उनका नाश तीनोंलोकों की वृद्धि का कारण हुआ और दैत्य भी सब मारेगये ११४ इसके पीछे बड़ा हाहाकार करके अपने क्रोध से उत्पन्न होनेवाली उसप्रचण्ड अग्निको शान्तकिया और उसको रोककर शिवजी ने कहा कि तू संसार को भस्म मत कर ११५ इसके अनन्तर सब देवगण ऋषि और महर्षिलोग स्वस्थचित्त हुए और उत्तम २ वचनों से शिवजी को प्रसन्न करके सब ने स्तुतिकरी ११६ इन बातों के पीछे ब्रह्मादिक सब देवता शिवजी को प्रणामकर उनकी आज्ञा ले २ कर जहां २ से आयेथे वहां २ को चलेगये ११७ इस रीति से उस संसार के स्वामी देव ऋषियों के पूज्य महेश्वर महाराजजी ने लोकों के कल्याण को किया ११८ जैसे कि सृष्टि के कर्ता भगवान् ब्रह्माजी ने वहां रुद्रजी के सारथ्यकर्म को किया ११६ उसी प्रकार आप भी शीघ्रता से महात्मा कर्ण के सारथी होकर घोड़ोंकी रस्सी पकड़िये १२० हे राजाओं में श्रेष्ठ ! आप श्रीकृष्ण कर्ण और अर्जुन से अधिक श्रेष्ठ हो यह निश्चय है कि यह कर्ण युद्ध में रुद्रजी के समानहैं और आप नीति में ब्रह्माजी के बराबर हो इस कारण से आप मेरे उन शत्रुओं के मारने को वैसेसमर्थ हो जैसेकि इन्द्रअसुरोंके मारनेको समर्थ होताहै १२१।१२२ हे शल्य ! अब यह कर्ण श्रीकृष्ण सारथी समेत श्वेत घोड़ेवाले अर्जुन को युद्ध में मथन करके जिस रीतिसे अर्जुन को मारे वही प्रकार आपको करना उचित है १२३ हे मद्रदेश के स्वामिन् ! तुम्हारे ही कारण से हमको राज्य मिलने की और अपने जीवन की आशा है अब मुझ कर्ण के मन्त्री की विजय है अर्थात्

तुम्हीं हमारे राज्य की प्राप्ति और शत्रुओं के नाशके हेतु हो १२४। १२५ जिसको धर्मज्ञ ब्राह्मण ने मेरे पिताके सम्मुख कहा हे शल्य! इस कारण अर्थ और कर्म से युक्त अपूर्व वचन को सुनकर बड़े निश्चय के साथ कर्मकरो इसमें किसी बात का विचार मतकरो १२६ भार्गववंश में बड़े यशस्वी जमदग्निजी उत्पन्न हुए उनके पुत्र तेजगुण में पूर्ण परशुरामजी प्रसिद्धहुए १२७ उस प्रसन्नचित्त सावधान जितेन्द्रिय ने अस्त्रों के निमित्त उत्तम व्रतों को धारण करके शिवजी को प्रसन्न किया १२८ उसकी भक्ति और शान्तचित्तता से प्रसन्नहोकर शिवजी ने उनको दर्शन दिया १२९ और परशुराम से कहा हे परशुरामजी! तुम्हारा कल्याण हो मैं प्रसन्न हूं और तुम्हारे चित्त की इच्छा भी मुझको विदित हुई तुम अपनी आत्मा को पवित्रकरो सब अभीष्टों को पावोगे १३० और जब तुम पवित्र होगे तभी तुम को अस्त्र दूंगा क्योंकि यह अस्त्र अपात्र और असमर्थ को भस्म करते हैं १३१ शिवजी के इस वचन को सुनकर परशुरामजी ने उत्तर दिया १३२ हे देवेश! जब आप मुझको पवित्र और पात्र जानें तभी अस्त्र दीजियेगा १३३ दुर्योधन ने कहा कि हे शल्य! इसके पीछे तप शान्ति और नियमपूर्वक पूजा भेंट और बलिप्रदान होम और मुख्य मन्त्रों के द्वारा १३४ बहुत वर्षोंतक शिवजी की आराधना करी तब उन महादेवजी ने महात्मा भार्गवजी की १३५ प्रशंसा देवी पार्वतीजी के सम्मुख वर्णन करी कि यह दृढ़व्रत रखने वाले परशुराम सदैव मुझमें भक्ति रखनेवाले हैं १३६ हे शत्रुहन्तः! इस प्रकार से प्रसन्नहोकर शिवजीने देवता और पितरों के सम्मुख उन परशुरामजीके बहुतसे गुणों का वर्णनकिया १३७ इसके पीछे उसी समयमें दैत्यलोग बड़ेपराक्रमी हुए और प्रबल और अहङ्कारी राक्षसों से देवतालोग पराजितहोकर घायल हुए १३८ तब उनके मारने में निश्चय करनेवाले देवताओं ने इकट्ठे होकर उन शत्रुओं के मारनेका उपायकिया परन्तु उनके मारनेको समर्थ नहीं हुए १३९ इसके पीछे देवताओं ने उमापति महेश्वरजी को भक्ति से प्रसन्नकिया और प्रार्थनाकरी कि शत्रुओंके समूहोंको मारिये १४० इसके अनन्तर वह देवेशशिवजी देवसन्तापी दैत्यों के नाश करने का प्रण करके भार्गव परशुरामजी को बुलाकर यह वचन बोले १४१ कि हे भार्गव! देवताओं के सब आयेहुए शत्रुओं को हमारी प्रीति और लोकों के हित के अर्थ तुम मारो १४२ यह वचन सुनकर परशुरामजी ने

शिवजी से प्रार्थना करी कि हे देवेश! युद्ध में दुर्मद अस्त्रवेत्ता दानवों के मारने को अस्त्रों से अभिज्ञ कैसे मारने को समर्थ हो सक्ता है महेश्वरजी ने कहा कि मेरी आज्ञा से तुम वहां जावो शत्रुओं को मारोगे १४३। १४४ और शत्रुओं के समूहों को विजय करके बड़े गुणों को प्राप्त होगे इस वचन को सुनकर परशुरामजी सब बातों को अङ्गीकार करके १४५ स्वस्तिवाचनपूर्वक दानवोंकी ओर चले वहां जाकर बड़े अहङ्कार और बलसे उन दानवों से बोले १४६ कि हे युद्धदुर्मद, दैत्यलोगो! मुझसे युद्ध करो हे महाअसुरलोगो! मुझको महादेवजी ने तुम्हारे विजय करने को भेजा है १४७ फिर भार्गवजीके इस वचन को सुन कर दैत्यों ने युद्ध किया उस समय उस भार्गवनन्दन ने वज्र और बिजली के समान स्पर्शवाले प्रहारों से युद्ध में उन दैत्यों को मारकर शिवजी का दर्शन किया फिर जमदग्निजी के पुत्र ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजी दानवों के हाथसे घायलशरीर शिवजीके हाथके स्पर्शसे घातजन्य पीड़ासे रहित हुए और शिवजी महाराज ने इनके उस कर्म से अत्यन्त प्रसन्न १४८।१५० होकर इन महात्मा भार्गवजी को बहुत से वरदान दिये और उन प्रसन्नमूर्ति शिवजीने परशुरामजी से कहा १५१ कि शस्त्रों के आघात से यह तेरे शरीर में पीड़ा हुई उस पीड़ा से हे भृगुनन्दन! तेरा मानुषीकर्म नष्ट होकर दिव्यकर्म प्राप्तहुआ १५२ अब तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे दिव्य अस्त्रों को लो, दुर्योधन ने कहा कि इसके पीछे परशुरामजी सब अस्त्रों को और अनेक अभीष्ट वरों को पाकर शिर से दण्डवत् कर शिवजी की आज्ञा लेकर वहां से चलेगये १५३ तब ऋषि ने इसरीति से प्राचीन वृत्तान्त को वर्णन किया भार्गवजी ने भी अत्यन्त प्रसन्न अन्तःकरण के साथ दिव्य धनुर्वेद महात्मा कर्ण को दिया हे पुरुषोत्तम, राजन्, शल्य! जो कर्ण में कुछ पाप होता तो भृगुनन्दनजी काहे को दिव्य अस्त्र उसको देते और मैं भी उसको सूत के वंश में उत्पन्न नहीं समझता हूँ १५५।१५६ मैं इसको क्षत्रियों के वंश में उत्पन्न देवकुमार जानता हूँ और यह कुल के गुप्तकरने को आज्ञा दिया है यह मेरा मत है १५७ हे शल्य! यह कर्ण सबप्रकार से क्षत्रिय है और सूत के वंश में नहीं उत्पन्न हुआहै कुण्डल और कवचधारी महाबाहु महारथी १५८ सूर्य के समान तेजस्वी सिंह को मृगी कैसे उत्पन्न करसक्ती है और जैसे कि इसके दोनों भुजा गजराज की सूंड़के समान

मोटी हैं १५६ उसी प्रकार हे शत्रुहन्तः ! इसकी बड़ी छाती को भी देखो यह सूर्यका पुत्र धर्मात्मा कर्ण कोई प्राकृत पुरुष नहीं है १६० हे राजेन्द्र ! यह कर्ण महात्मा परशुरामजी का प्रतापवान् और महापराक्रमी शिष्य है ॥ १६१ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यदुर्योधनसंवादेपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

दुर्योधन बोले कि, इस रीति से वहां सब लोकों के पितामह भगवान् ब्रह्माजी ने सारथ्य कर्म किया और श्रीरुद्रजी रथी हुए १ हे वीर ! रथी से अधिक रथ का सारथी करना योग्य है हे पुरुषोत्तम ! इस हेतुसे तुम युद्ध में घोड़ों को थाँभो जैसे कि शिवजीके निमित्त देवगणोंने भगवान् ब्रह्माजीको सारथ्य कर्म के लिये प्रार्थना करी उसी प्रकार हमलोगों की ओर से कर्ण से भी अधिक आप प्रार्थना किये गये हो २ । ३ जैसे कि देवताओं की ओरसे शिवजीसे बड़े भी ब्रह्माजी प्रार्थना कियेगये हे महाराज ! उसी प्रकार आप भी कर्ण से अधिक होने के कारण प्रार्थना किये गये हैं जैसे कि ब्रह्माजी ने रुद्रजीके घोड़ों को थाँभा ४ उसी प्रकार आप भी बड़े तेजस्वी कर्ण के घोड़ों को थाँभो शल्य बोले कि, हे नरोत्तम ! मैंने भी इन नरोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुनके मुखसे कही हुई इस उत्तम अद्भुतकथा को बहुधा सुना है जैसे कि ब्रह्माजी ने शिवजी के सारथ्य कर्मको किया है ५ और जैसे कि शिवजीने एकही बाणसे सब असुरों को मारा हे भरतवंशिन् ! यह भूतकाल का वृत्तान्त श्रीकृष्णजी का भी जाना हुआहै ६।७ जैसे कि भगवान् ब्रह्माजी सारथीहुए उसीप्रकार श्रीकृष्णजीभी भूत भविष्यके वृत्तान्तोंको जानते हैं ८ इसी हेतुसे जैसे कि जान बूझकर भगवान् ब्रह्माजीने शिवजी के सारथ्यकर्म को किया हे भरतवंशिन् ! उसीप्रकार श्रीकृष्ण जीने अर्जुनकी रथवानी अङ्गीकार करी ९ जो कर्ण किसी दशामें भी अर्जुनको मारडालेगा तो अर्जुन के मरनेके पीछे आप श्रीकृष्णजी युद्ध करेंगे १० शङ्ख चक्र गदाके हाथ में धारण करनेवाले श्रीकृष्णजी तेरी सेनाको भस्मकरेंगे उस समय उन क्रोधयुक्त श्रीकृष्णजी के सम्मुख तेरी सेनामें से कोई भी युद्ध करने को समर्थ न होगा ११ सञ्जय बोले कि शत्रुओं का विजय करनेवाला महा-साहसी आपका पुत्र दुर्योधन ऐसे वचन कहनेवाले शल्यसे बोला हे महाबाहो ! तुम सूर्य के पुत्र महापराक्रमी कर्णका अपमान मत करो १२।१३ जो कर्ण कि

सब अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ होकर सर्व शस्त्रोंका पारगामी है जिसके धनुष की भयानक प्रत्यञ्चाके शब्दको सुनकर १४ पाण्डवीय सेना दशोंदिशाओंको भागतीहै हे महाबाहो ! आपके नेत्रों केही सम्मुख हुआ था जैसे कि वह मायावी सैकड़ों मायाओं का प्रकट करनेवाला घटोत्कच मारागया और अर्जुन किसी प्रकारसे भी सेनाके सम्मुख नहीं हुआ १५ । १६ बड़ा भयभीत अर्जुन इस सब दिनों में कभी सम्मुख नहीं हुआ और पराक्रमी भीमसेन धनुष्की कोटिसे प्रेरित किया गया १७ हे राजन् ! बहुतसे लोगोंने कर्ण से कहा था कि तू पेटपालन करनेवालों के समान अज्ञान है इसीप्रकार बड़ेयुद्धमें माद्रीके पुत्र शूरवीर नकुल और सहदेवको विजय करके १८ किसी प्रयोजनसे युद्धमें नहीं मारा हे श्रेष्ठ ! जिस कर्णने वृष्णियों में बड़ावीर और यादवों में श्रेष्ठ महापराक्रमी सात्यकी को १६ युद्धमें विजयकरके रथसे विहीन करदिया और उसी मन्द मुसकानवाले ने सृञ्जयों को आदि लेकर अन्य सब योद्धाओं को जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न था उन को वारंवार युद्ध में विजय किया उस महारथी पराक्रमी कर्ण को पाण्डवलोग युद्धमें कैसे विजय करसक्के हैं २० । २१ जो क्रोधयुक्त होकर युद्ध में वज्रधारी इन्द्रको भी मारसक्ताहै और आप सर्वविद्यासम्पन्न महाअस्त्रज्ञ और पण्डित हो २२ और पृथ्वीपर आपके भुजबलके समान भी कोई नहीं है तुम शत्रुओंके भल्लरूप होकर पराक्रममें भी अजय हो २३ हे शत्रुहन्तः, राजन्, शल्य ! इसी हेतु से आपका नाम विख्यात है आपके भुजबलको पाकर सब यादवलोग समर्थ नहीं हुए २४ हे राजन् ! श्रीकृष्णजी आपके भुजबलसे अधिकहैं जैसे कि अर्जुन के मरनेपर श्रीकृष्णजीसे सेना रक्षाके योग्यहै २५ उसीप्रकार कर्ण के नाश होजाने पर सेनाके लोगआपसे रक्षाके योग्यहैं जैसे कि वासुदेवजी युद्धमें सेनाको रोकेंगे उसीप्रकार आप भी सेनाको अवश्यमारोगे २६ आपके कारणसे युद्धमें अनृणता प्राप्तकरना चाहता हूं और सब सगे भाई इष्ट मित्र और अन्य सब राजाओं की अनृणता चाहता हूं २७ शल्य बोला कि हे प्रशंसा करनेवाले दुर्योधन ! तुम सब सेना के समक्ष जो कृष्णजी से भी अधिक मुझको कहते हो इस हेतु से मैं तुमपर प्रसन्न हूं अब मैं प्रसन्नता से अर्जुनसे लड़नेवाले यशस्वी कर्णके साथ उसके रथपर इस प्रतिज्ञासे सारथी बनता हूं कि मैं जिस समय जो चाहूंगा वह कर्ण के विषयमें कहूंगा उसका किसी प्रकार का मान नहीं करूंगा २८।३०

सञ्जय बोले कि हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र ! तब आपका पुत्र कर्णसमेत यह बोला कि ऐसाही होय यह कहकर सब क्षत्रियों के समक्ष में ३१ शल्य के सारथी होने से विश्वासयुक्त होकर दुर्योधन बड़ी प्रसन्नता से कर्ण से प्रीतिपूर्वक मिला ३२ और बड़ी प्रशंसा करके कहनेलगा कि युद्ध में तुम सब पाण्डवों को ऐसे मारो जैसे कि महेन्द्र सब दानवों को मारता है ३३ इसके अनन्तर घोड़ों के हांकने पर शल्य के तैयार होनेपर प्रसन्नचित्त होकर कर्ण ने दुर्योधन से कहा ३४ यह मद्रदेश का राजा अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर बात नहीं करता है हे राजन् ! आप मीठेवचनों से फिर इस प्रकार से कहो ३५ तब महाज्ञानी सर्वशास्त्र और अस्त्रों का वेत्ता पराक्रमी राजा दुर्योधन मद्रदेशियों के महाराजसे बोला ३६ हे शल्य ! अब कर्ण बादल के समान घिरेहुए शब्दयुक्त बाणोंसे युद्धभूमि को पूर्ण करना मानता है कि अर्जुनके साथ युद्ध करना चाहिये ३७ हे पुरुषोत्तम ! आप युद्ध में उसके घोड़ों को थाँभो कर्ण आप सब योद्धाओं को मारकर फिर अर्जुन को मारना चाहता है ३८ हे राजन् ! मैं वारंवार आपको कर्ण के सारथी बनने के निमित्त अपनी इच्छा से प्रार्थना करताहूं जैसे कि सारथियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुन के मन्त्री हैं उसी प्रकार आप भी कर्ण की सब ओरसे रक्षा करो ३९।४० सञ्जय बोले कि इसके पीछे प्रसन्नचित्त हो राजा शल्य आपके पुत्र दुर्योधन से बड़े स्नेहसे मिलाप करके यह वचन बोला ४१ हे गान्धारी के पुत्र, अपूर्वदर्शन, राजन्, दुर्योधन ! जो तुम मुझको ऐसा मानते हो इस हेतु से तेरा जो अभीष्ट है उस सबको मैं करूंगा ४२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, शत्रुसन्तापिन् ! मैं जिस २ कर्म के योग्य हूं और जहां २ जैसा २ मैं करसक्ताहूं वहां २ अपने मन से सर्वात्मा से तेरे कर्म को करूंगा ४३ मैं वृद्धि का चाहने वाला होकर कर्णसे जो कुछ प्रियवार्ता कहूं उस वचन को आप और कर्ण दोनों सब प्रकार से सहने के योग्य हैं ४४ कर्ण बोला हे राजन्, मद्र ! जिस प्रकार से ब्रह्माजी शिवजी के और श्रीकृष्णजी अर्जुन के सारथी हुए उसी प्रकार तुम भी हमारी वृद्धिमें प्रवृत्तहूजिये ४५ शल्यने कहा कि अपनी निन्दा और स्तुति और दूसरेकी निन्दा और स्तुति यह चारप्रकारके कर्म अच्छेलोग नहीं करते हैं ४६ हे बुद्धि-मन् ! फिर भी मैं तेरे निश्चय होनेके लिये अपनी प्रशंसा से भरेहुए वचनको कहताहूं उसको तुम यथार्थही समझो हे प्रभो ! मैं मातलिके समान सावधानी

वा अश्वकी रथवानी अथवा आगे होनेवाले दोषके जानने और उसके दूरहोने के उपायके जानने से और दोषों के दूर करनेकी सामर्थ्य रखने से इन्द्रके सारथी होनेके योग्य हूं ४७।४८ हे निष्पाप, कर्ण! इस हेतुसे युद्धमें अर्जुनसे युद्ध करने वाले तुझ रथीके साथ सारथी होकर तप से पृथक् घोड़ोंको चलाऊंगा॥ ४६ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसारथ्यस्वीकारेषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्योधन बोला कि, हे कर्ण! यह राजा मद्र तेरा सारथी बनेगा यह तुम्हारा सारथी श्रीकृष्णजीसे भी ऐसा अधिक है जिसप्रकार इन्द्रका सारथी मातलि १ जैसे कि मातलि हरित घोड़ों के रथको चलाताहै उसी प्रकार यह शल्य भी तेरे रथके घोड़ों को चलावेगा २ तुझ युद्धकर्ताके रथी होने और राजा मद्रके सारथी होनेपर तुम्हाराही उत्तम रथ निश्चय करके पाण्डवों को विजय करेगा ३ सञ्जय बोले कि हे राजन्! इसके अनन्तर प्रातःकाल होजाने पर राजा दुर्योधनने उस वेगवान् राजा मद्र से फिर कहा ४ कि हे राजन्, मद्र! आप अब युद्ध में कर्ण के उत्तम घोड़ों को थाँभो तुमसे रक्षित होकर यह कर्ण अर्जुनको अवश्य विजय करेगा ५ हे भरतवंशिन्! यह वचन सुनकर शल्यने रथपर नियत हो कर कहा कि ऐसाही होगा तब प्रसन्नचित्त कर्ण अपने सारथी शल्य के पास आकर यह वचन बोला कि हे सूत! आप मेरे रथको शीघ्र तैयार करो उसके पीछे सारथी शल्य ने कहा विजयकरो यह शब्द कहकर रथों में श्रेष्ठ गन्धर्वनगर के समान ६ । ७ बुद्धि के अनुसार अलंकृत कल्याणरूप और विजयी रथको बड़ी शीघ्रतासे तैयार करके वर्तमान किया उस उत्तम रथको प्रथम तो महारथी कर्ण ने ब्रह्मज्ञानी अपने पुरोहित के द्वारा बुद्धिके अनुसार पूजके परिक्रमा कर विचारपूर्वक सूर्य का उपस्थान करके ८।६ सम्मुख वर्तमान हुए शल्यसे कहा कि आप सवार हूजिये इसके पीछे बड़ा तेजस्वी शल्य कर्ण के उस अत्यन्त उत्तम बड़े अजेय रथ पर ऐसे चढ़ा १० जैसे कि पर्वतपर सिंह चढ़ता है तदनन्तर कर्ण अपने उत्तम रथको शल्य के स्वाधीन देखकर ११ ऐसे सवार हुआ जैसे बिजली से भरेहुए बादलपर सूर्य सवार होताहै फिर वह सूर्य और अग्निके समान प्रकाशमान दोनों एक रथपर सवारहोकर १२ ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि स्वर्ग के सूर्य और चन्द्रमा दोनों बादलों में शोभित होते हैं उस समय वह महात्मा

बड़े तेजस्वी ऐसे दिखाई दिये १३ जैसे कि यज्ञ में ऋत्विज और सदस्यों से स्तूयमान इन्द्र और अग्नि होते हैं फिर वह कर्ण रथपर नियत होगया जिसके घोड़ोंको शल्यने पकड़रक्खा था १४ बाणरूप किरणोंका रखनेवाला कर्ण घोर धनुषको टङ्कारता हुआ अपने उत्तम रथपर ऐसे नियतहुआ जिसप्रकार मण्डल-युक्त सूर्य नियत होता है १५ वह पुरुषोत्तम ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन्दराचल पर्वतपर सूर्य नियत होता है फिर शल्य उस महाबाहु रथ पर चढ़े हुए तेजस्वी कर्ण से १६ यह वचन बोला कि हे वीर, कर्ण ! युद्ध में द्रोणाचार्य और भीष्मजी से कठिन कर्म नहीं कियागया १७ तुम सब धनुषधारियों के समक्ष में उसको करो मेरे चित्त में यह पूर्ण विश्वास था कि महारथी भीष्म और द्रोणा-चार्य १८ अवश्य अर्जुन और भीमसेन को मारेंगे हे वीर ! उस महायुद्ध में जो वीरता का कर्म उन दोनोंसे नहीं हुआ १९ हे कर्ण ! तुम द्वितीय इन्द्रके समान होकर उस कर्म को करो तुम धर्मराज को बांधो अथवा अर्जुन को मारो २० हे कर्ण ! तुम भीमसेन समेत माद्री के पुत्र नकुल और सहदेव को भी मारो हे पु-रुषोत्तम ! तुम यात्रा करो तुम्हारा कल्याणहै और विजय होगी २१ वहां जाकर पाण्डवों की सब सेना को भस्मकरो इसके पीछे तूरी नामादि हज़ारों बाजे और भेरी बजाईं २२ उनका शब्द ऐसा सुन्दर विदितहुआ जैसे कि स्वर्ग में बादलों के शब्द होते हैं फिर वह महारथी रथमें बैठाहुआ कर्ण उसके वचनको अङ्गीकार करके २३ उस युद्ध में अत्यन्त सावधान शल्य से बोला हे महाबाहो ! घोड़ोंको तीक्ष्ण करो मैं अर्जुनको मारूंगा २४ और भीमसेन समेत दोनों नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर को मारूंगा हे शल्य ! अब तुम अर्जुन को और मुझ हज़ारों बाण फेंकनेवाले के भुजबलको देखो अब मैं बड़े प्रकाशित बाणों को २५ । २६ पाण्डवों के नाश और दुर्योधन की विजय के लिये फेंकता हूं शल्य बोला कि हे सूत के पुत्र ! तुम इस रीति से पाण्डवों का अपमान करते हो २७ वह पा-ण्डव सब अस्त्र शस्त्रों के ज्ञाता बड़े धनुषधारी अतिबली कभी मुख न मोड़ने वाले महाभाग अजेय और सत्यपराक्रमी हैं २८ जो साक्षात् इन्द्रको भी भयके उत्पन्न करनेवाले हैं हे कर्ण ! जब वज्रके समान २९ गाण्डीव धनुषके शब्द को सुनोगे तब ऐसा नहीं कहोगे अथवा जब कि भीमसेन के हाथ से ३० हाथियों की सेना को खण्डित दन्तहोकर मृतक देखोगे तब ऐसा नहीं कहोगे

जब युद्धमें धर्मपुत्र युधिष्ठिर वा नकुल सहदेवको देखोगे ३१ और जब तीक्ष्ण बाणों से आकाशको आच्छादित करनेवाले बाणों के चलानेवाले हस्तलाघव करनेवाले अजेय शत्रुओं को अथवा अन्य २ बड़े २ प्रतापी राजाओंको देखोगे तब तुम ऐसे वचन नहीं कहोगे ३२। ३३ सञ्जय बोले कि इसके पीछे कर्ण राजा मद्रके कहेहुए वचनों को निन्दित करके उस वेगवान् राजा मद्रसे कहनेलगा कि अब चलो ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यसंवादेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, प्रसन्नमूर्ति सब कौरव उस बड़े धनुषधारी युद्धाभिलाषी कर्ण को देखकर चारों ओरसे पुकारे १ इसके पीछे दुन्दुभी और नाना प्रकारके बाणोंके घोड़ोंकी गर्जना समेत शब्दोंको करते आपके युद्धकरनेवाले २ युद्ध में मृत्यु को लौटाकर निकले इसके पीछे कर्ण समेत प्रसन्नचित्त युद्धकर्ताओं के चलने पर ३ पृथ्वी कम्पायमान हुई और बड़ीदूरतक शब्दायमान होगई और सूर्यादि नवग्रह युद्ध के निमित्त निकलते हुए दृष्टपड़े ४ और उल्काओं का गिरना वा शुष्क विद्युत्पातन होना प्रारम्भहुआ और महाभयकारी वायु चली उस समय महाभयसूचक पशु और पक्षियों के समूह आपकी सेना को बहुधा दाहिने हुए और यात्रा करनेवाले कर्ण के घोड़े पृथ्वी पर गिरे और अन्तरिक्षसे अस्थियोंकी महाभयकारी वर्षाहुई ५।७ अस्त्र शस्त्र अग्निरूपहुई ध्वजा कम्पायमान हुई और वाहनोंने अश्रुपात किया ८ ऐसे २ अनेक भय और अशुभसूचक उत्पात कौरवों के नाश के लिये प्रकट हुए ९ परन्तु दैवसे मोहित हुए उन सब राजाओंने इन भयकारी उत्पातोंको कुछनहीं गिना और यात्राकरनेवालेकर्ण से कहने लगे कि विजय करो उस स्थानपर कौरवलोगों ने पाण्डवों को पराजय माना १० हे राजन्! इसके पीछे शत्रुओंके वीरोंका मारनेवाला रथियोंमें श्रेष्ठ यह रथपर बैठाहुआ कर्ण बड़े पराक्रमी सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशमान भीष्म और द्रोणाचार्यको विचारकर ज्वलितरूप हुआ ११ अहङ्कार और क्रोधप्रज्व-लितरूप श्वासाओं को लेता हुआ कर्ण अर्जुन के अद्भुतकर्म को विचारकर शल्य को सम्मुख करके यह वचन बोला कि हे शल्य! मैं शस्त्रधारी रथमें सवार होकर युद्ध में वज्रधारी इन्द्र से भी नहीं डरता हूँ भीष्मही जिनमें मुख्य गिने

जाते थे उनको पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर मुख न मोड़ना यह जो प्रशंसाहै वह मुझको त्यागकरती है १२ । १३ जब कि महेन्द्र और विष्णुके रूपवाले निर्दोष अत्यन्त उत्तम रथ और घोड़ेवाले और हाथियों के संहार करनेवाले घायल न होने के समान भीष्म और द्रोणाचार्यजी शत्रुओं के हाथ से मारेगये इसहेतु से इस युद्ध में मुझको भी भय नहीं है १४ बड़े अस्त्रज्ञ ब्राह्मणों में श्रेष्ठ गुरुजी ने सारथी वा हाथी और रथों समेत बड़े २ वीर पराक्रमी राजाओं को युद्ध में शत्रुओं के हाथ से मराहुआ देखकर किस कारण से युद्ध में सब शत्रुओं को नहीं मारा १५ सो मैं इस प्रबल घोर युद्धमें द्रोणाचार्य को स्मरण करताहुआ सत्य २ कहता हूं हे कौरव ! तुम उसको समझो तुम में से मेरे सिवाय कौन सा दूसरा मनुष्य है जो उस मृत्यु के समान सम्मुख आनेवाले उग्ररूप अर्जुन से सम्मुख लड़े १६ द्रोणाचार्यजी में शिक्षा करना वा बल धैर्य और महान् अस्त्रज्ञतापूर्वक नम्रता थी जो वह महात्मा मृत्यु के वशीभूत हुए तो मैं अब उसको आसन्नमृत्यु ही मानता हूं १७ मैं इस लोक में शोचताहुआ कर्म और दैवयोग से सबको नाशवान्ही जानता हूं गुरु के गिराये जानेपर सूर्योदय के समय सन्देह से रहित कौन मनुष्य अपने जीवनेकी आशा करसक्ताहै १८ निश्चय करके अस्त्र, बल, पराक्रम, कर्म, श्रेष्ठनीति और उत्तम शस्त्र मनुष्य के सुख के कर्म को नहीं कर सक्ते हैं क्योंकि जब इस रीतिसे गुरुजी शत्रुओंके हाथसे मारे गये १९ तब कोई भी अस्त्रादिक उन असहिष्णु अग्नि वा सूर्यके समान तेजस्वी पराक्रममें इन्द्र और विष्णु के सदृश नीति में शुक्र और बृहस्पतिके समान गुरुजी की रक्षाकरने को समीपतामें नियत नहीं हुए २० स्त्री वा बालकों को पीड़ित और रोदन करने पर और दुर्योधन के उपायों के निष्फल होने पर मुझको कर्म करना उचित है यह मेरा मत है हे शल्य ! इस हेतु से शत्रुओं की उस सेनामें चलो २१ जहां सत्यसङ्कल्प राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, वासुदेवजी, सात्यकी, सञ्जय, नकुल और सहदेव नियत हैं उनसे युद्धकरनेवाला मेरे सिवाय अन्य दूसरा कौन है २२ इस हेतु से हे राजन्, मद्र! शीघ्र चलो मैं युद्ध में सम्मुख होकर उन पाञ्चालों को वा सृञ्जयों समेत पाण्डवों को मारूंगा वा उनके हाथ से मरकर द्रोणाचार्य के समान यमराज के समीप जाऊँगा २३ हे शल्य ! यह बात नहीं है कि मैं भीष्मादि शूरोंके समान न मरूँगा किन्तु मरना अवश्यहै परन्तु

मुझसे मित्र के द्रोह करनेवाले नहीं सहेजाते इस हेतु से उनसे पराक्रमपूर्वक लड़कर प्राणों को त्यागकरके द्रोणाचार्य के पीछे जाऊंगा २४ जीवन के अन्त होनेपर मृत्यु के चाहेहुए बुद्धिमान् और अबुद्धिमान् दोनों बच नहीं सक्ते हे बुद्धिमन्! इसहेतुसे मैं पाण्डवोंके सम्मुख जाऊंगा निश्चयकरके दैवके उल्लङ्घन करने को कोई समर्थ नहीं है २५ राजा धृतराष्ट्र का पुत्र सदैव से मेरा शुभचिन्तक और मित्र रहा है इस निमित्त मैं उसके अभीष्ट सिद्ध होने के लिये प्रियभोग्य और कठिनता से त्यागने के योग्य अपने प्राणों को भी त्यागकरूंगा २६ वह व्याघ्रचर्म से मढ़ाहुआ रथ मुझको परशुरामजी ने दिया है जो शब्दरहित चक्र सुवर्णमय त्रिकोश और रजतमय त्रिवेणु और अत्यन्त उत्तम घोड़ों से संयुक्त है २७ हे शल्य! चित्र विचित्र धनुष ध्वजा गदा वा उग्ररूप शायक प्रकाशित खड्ग और उत्तम आयुधों समेत शब्दायमान उग्र उज्ज्वल शङ्खको देखो २८ मैं इस पताकाधारी वज्र के समान दृढ़ शब्दायमान श्वेत घोड़े और तूणीरों से शोभायमान रथों में श्रेष्ठ इस रथपर आरूढ़ होकर युद्धमें अपने पराक्रमसे अर्जुन को मारूंगा २९ जो युद्धभूमि में सदैव सावधान सबका नाशकरनेवाला काल भी अर्जुन की रक्षाकरे तो भी युद्ध में सम्मुख होकर उसको अवश्य मारूंगा अथवा भीष्म के समक्ष यमराज के पास जाऊंगा ३० जो युद्ध में यमराज, वरुण, कुबेर, इन्द्र अपने सब समूहों समेत इकट्ठे होकर भी अर्जुन की रक्षाकरें तब भी मैं उनसब समेत अर्जुन को विजय करूंगा बहुत बातों के कहने से क्या प्रयोजन है ३१ सञ्जय बोले कि कर्ण के वचनों को सुनकर पराक्रमी राजा शल्य उसका अपमान करके हँसा और निषेध करके उत्तर दिया ३२ शल्य ने कहा हे कर्ण! अपनी प्रशंसा मतकरो हे बड़े अहङ्कारिन्! तुम बड़ा बोल बोलते हो बड़े आश्चर्य की बात है कि कहां तो नरोत्तम अर्जुन और कहां नराधम तुम ३३ अर्जुन के सिवाय कौन पुरुष विष्णुजी और इन्द्र से रक्षित देव स्वरूप यदुभवन को विलोड़न करके श्रीकृष्ण की छोटी बहिन सुभद्राको हरणकर सक्ता था ३४ और मृगवध कलह में अर्थात् शूकर के शिकार करने में इन्द्रके समान पराक्रमवाले अर्जुन के सिवाय कौनसा पुरुष इस लोक में त्रिभुवन के स्वामी ईश्वरों के भी ईश्वर शिवजी को युद्ध में बुलासक्ता है ३५ अर्जुन ने अग्नि की गौरवता से असुर, सुर, महाउरग, मनुष्य, गरुड़, पिशाच, यक्ष और राक्षसोंको

अपने बाणोंसे विजयकिया और अग्नि को यथेच्छ भोजनरूप हव्य दिया ३६ तुझको स्मरण है कि जब युद्ध में कौरवोंसमेत तुम सबको पराजय करके गन्धर्वों ने इस धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन को बांधलिया था और तुमलोग भाग आये थे उस समय इसी अकेले अर्जुन ने सूर्य के समान प्रचण्ड शायकों से गन्धर्वों को पराजय करके उसको छुटाया था ३७।३८ फिर गोहरण में सेना वा सवारी समेत चढ़ाई करनेवाले गुरु, गुरुपुत्र और भीष्मादिक तुम सब उस पुरुषोत्तम के हाथ से विजय कियेगये थे उस समय तुम ने क्यों नहीं अर्जुन को विजय किया ३९ सञ्जय बोले कि इस रीति से शत्रुओं की प्रशंसा बड़े साहसी शल्य के मुख से होनेपर कौरवीय सेना का सेनापति कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजा मद्र से बोला ४० ऐसाही होगा २ क्या अधिक वर्णनकरते हो अब तो निश्चय करके मेरा उसका युद्ध वर्तमान है जो वह इस युद्ध में मुझ को विजय करलेगा तब तेरा यह कहना ठीक २ होगा ४१ । ४२ राजा मद्र ने कहा ऐसा ही होय यह कहकर उत्तर नहीं दिया तब युद्धकी इच्छा करके कर्ण ने शल्य से कहा कि हे शल्य ! सावधान होजाओ ४३ वह श्वेतघोड़ों से युक्त शल्य को सारथी रखनेवाला युद्ध में शत्रुओं को मारताहुआ उन वीर शत्रुओं के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि अन्धकार को दूरकरताहुआ सूर्य जाताहै उसके पीछे व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुए श्वेतघोड़ों के रथ के द्वारा वहां पहुँचकर सबपाण्डवीय सेनाको देखकर बड़ी शीघ्रता से अर्जुन को पूछा ॥ ४४ । ४५ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यसंवादेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

उनतालीसवां अध्याय ॥

इसके अनन्तर यात्रा करने में आपकी सेनाको प्रसन्न करतेहुए कर्ण ने युद्धमें प्रत्येक को देखकर पाण्डवों से कहा १ कि इस समय जो पुरुष महात्मा अर्जुन को मुझे दिखावे उसको मुंह माँगा धन दूं २ और जो पुरुष अर्जुन को मुझ से थोड़ा जाने उसको मैं रत्नों का भराहुआ एक शकट दूं ३ और जो अर्जुन का बतलानेवाला पुरुष उसको भी थोड़ा माने तो मैं उसको भोजन और कांस्य दोहानियों समेत सौ गौवें दूं ४ अर्जुन के दिखलाने पर सौ उत्तम गाँव दूं और खच्चरों समेत रथ भी दूं ५ अथवा इन सबको भी थोड़ा जाने तो मैं उसको कृष्ण केशों से शोभित स्त्रियों को दूंगा जो अर्जुन का दिखलानेवाला इसको भी

साधारण जाने ६ तो उसको सुनहरी हाथी के समान छःबैलोंसेयुक्त रथ दूं और इसी प्रकार उसे ऐसी वस्त्रालङ्कारयुक्त स्त्रियों का एक सैकड़ा दूंगा ७ जोकि निष्क की माला धारणकिये गीतवाद्य में कुशल श्यामाङ्गी हों अथवा जो अर्जुन का दिखलानेवाला उसको भी कम जाने उसको सौ हाथी सौ गाँव सौ रथ और दशहज़ार सुवर्ण से युक्त ८ । ९ सुशिक्षित हृष्ट पुष्ट रथ के लेचलने में समर्थ होंय ऐसे घोड़े दूंगा और सुवर्ण शृङ्गों से युक्त सवत्सा चार सौ गौवें दूंगा १० जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ा माने ११ उसके लिये दूसरा वर देकर ऐसे पांच सौ घोड़े दूं जोकि श्वेतवर्ण और सुवर्ण से मण्डित स्वच्छ मणियों के भूषणों से अलंकृत हों १२ इसके विशेष मैं अठारह अच्छे शिक्षित अन्य घोड़ोंको भी दूंगा और अति उज्ज्वल सुवर्ण से अलंकृत काम्बोजी घोड़ोंसे युक्त रथ दूं १३ जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष उसको भी न्यून समझे १४ तो दूसरा दान दूं अर्थात् नाना प्रकार के स्वर्ण भूषणों से और मालाओं से अलंकृत पश्चिमीय कच्छदेशों में उत्पन्न और माल्यवान् हाथीवानोंसे शिक्षित सौ हाथी दूं और जो इसको भी थोड़ा माने १५ । १६ उसको बहुतवृद्धियुक्त धन से पूर्ण वन जङ्गलवाले ऐसे चौदह गाँव दूं जो निर्भय और अच्छे राजाओं के भोगने के योग्य होयँ १७ इसी प्रकार निष्क की माला धारण करनेवाली मगध-देशीय दासियों का एक सैकड़ा दूं और जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ा माने तो जो वह माँगे वह दूं अर्थात् बेटी स्त्री को आदि ले जो मेरा प्रियधन होय उसको भी दूंगा इसके विशेष जो २ मेरा धन है और वह चाहताहै वह सब उसको देसक्ताहूं जो अर्जुन को मुझे बतावे वा दिखावे १८।२० श्रीकृष्ण और अर्जुन को एक समय में ही मारकर उनका सबधन उसको दूं जो अर्जुन और श्रीकृष्णजी को मुझे दिखावे २१ युद्ध में ऐसे वचनों को कहतेहुए कर्ण ने समुद्र से उत्पन्नहुए अपने शङ्ख को बजाया २२ हे महाराज ! कर्ण के इन वचनोंको सुनकर दुर्योधन अपने साथियों समेत अत्यन्त प्रसन्न हुआ २३ इसके पीछे हे पुरुषोत्तम ! दुन्दुभी आदि मृदङ्गों के सब प्रकार के शब्द वा बाजों समेत सिंहनाद और हाथियों के शब्द २४ सेनाओं के मध्य में प्रकट हुए इसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्नचित्त शूरवीरों के अनेक शब्द हुए २५ तब तो सेना के प्रसन्न होनेपर राजामद्र हँसकर उस शत्रुओं के विजय करनेवाले और

अपनी प्रशंसा करतेहुए जानेवाले महारथी कर्ण से यह वचन बोला ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णावलेपेनवत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

शल्य बोले कि, हे सूतपुत्र ! दान करने से बन्द हो तू सुवर्णमय हाथी के समान छः बैलों से संयुक्त रथको पुरुषके अर्थ अर्थात् ब्रह्मके अर्पण करो तब तुम अर्जुन को देखोगे १ हे राधाके बेटे ! तुम यहां बालबुद्धिसे अज्ञानों के समान धनको देते हो अब तुम बिना उपाय केही अर्जुन को देखोगे २ तुम अज्ञानियों के समान जो निरर्थक धनको देतेहो सो अपात्रके दानदेनेमें जो दोषहैं उनको भी अपने मोह से नहीं जानते हो ३ जो तुम बहुतसे धनको देतेहो उस धन के द्वारा तुमको उचित है कि यज्ञोंको करो ४ जो तुम अपनी अज्ञानता से श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारना चाहते हो वह निरर्थक है शृगालों से सिंहोंका मारना हमने कभी और कहीं भी नहीं सुनाहै ५ तू अप्रियता को और अप्राप्त को चाहताहै तेरे शुभचिन्तक मित्र हैं जोकि तुझको अग्निमें गिरतेहुए नहीं रोकते हैं ६ तू शुभाशुभ कर्मको भी नहीं जानताहै और निस्सन्देह तू कालके गालमें फँसता है जीवन का चाहनेवाला कौन पुरुष सर्वथा निष्प्रयोजन और सुनने के अयोग्य वार्ताओंको करे ७ जैसे कि गले में पत्थर की शिला को बांधकर समुद्र में पैरना चाहै अथवा पर्वत के शिखर से गिरनाहोय वैसेही प्रकारका तेरा ईप्सितकर्म है ८ जो अपना कल्याण चाहते हो तो तुम सब योद्धाओं से युक्त सजीहुई अपनी सेना समेत अर्जुनसे युद्धकरो ९ मैं दुर्योधन की वृद्धिके लिये तुझसे कहता हूं जो तू जीवन की इच्छा रखता है तो मेरे वचनों को शत्रुता और ईर्षासंयुक्त न जान १० कर्ण बोला मैं अपनेही भुजबलके आश्रित होकर युद्ध में अर्जुन को चाहता हूं हे उत्तम, मित्र ! तुम शत्रुरूप होकर मुझको भय-भीत कराते हो ११ अब मुझको मेरे इस विचार से कोई भी नहीं हटा सक्ता इन्द्र भी जो वज्र दिखाकर मुझको युद्धसे निवृत्त कियाचाहै तो नहीं निवृत्त होसक्ता फिर मनुष्य की क्या सामर्थ्य है १२ सञ्जय बोले कि फिर कर्ण को क्रोधयुक्त करने की इच्छा से मद्रदेश के स्वामी शल्य ने कर्ण के बोलने के पीछे इस उ-त्तररूप वचन को कहा १३ कि जब अर्जुन के वेग से युक्त प्रत्यञ्चा से प्रेरित तीव्र हाथों से छोड़ेहुए कङ्कपक्षसे जटित तीक्ष्ण नोकवाले बाण तेरे सम्मुख आवेंगे

तब तू अर्जुन के विषयमें ऐसे वचन कहने को दुःखी होगा १४ जब सेना को सन्तप्त करताहुआ तुझको तीक्ष्ण नोकवाले बाणों से मर्दन करना चाहनेवाला अर्जुन अपने दिव्य धनुष को लेकर तेरे सम्मुख आवेगा तब हे सूतपुत्र ! तू महादुःखी होगा १५ जैसे कि माता की गोदी में कोई सोताहुआ बालक चन्द्रमा के पकड़ने की इच्छा करताहै उसी प्रकार अब तुम इस रथपर सवार होकर प्रकाशमान अर्जुन को अपने मोहसे विजय किया चाहते हो १६ हे कर्ण ! अब तुम अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले त्रिशूल से चिपटकर अपने अङ्गों को घसीटते हो जोकि अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले त्रिशूलकर्मी अर्जुनके साथमें लड़ना चाहते हो १७ जैसे कि अज्ञान बालक वा वेगवान् नीचमृग क्रोधयुक्त बड़े केसरी सिंह को युद्ध के निमित्त बुलावे हे सूतपुत्र ! इसी प्रकारसे तू भी अर्जुनको बुलाता है १८ हे सूत के पुत्र ! तू राजकुमार को मतबुलावे जैसे कि मांस से तृप्तहुआ शृगाल वनमें केसरी सिंह को नहीं बुलासक्ता उसी प्रकार तुम अर्जुन को प्राप्त होकर अपना नाशकरना चाहतेहो सो मतकरो १९ जैसे कि शृगाल ईशा के समान दाँत रखनेवाले मुख और गराडस्थलमें मद भाड़नेवाले बड़े हाथीको युद्ध में बुलावे हे कर्ण ! उसी प्रकार तुम पाराडव अर्जुनको बुलाते हो २० तुम अपनी अज्ञानता और बल बुद्धि से बिल में बैठेहुए क्रोधयुक्त महाविषधर कालेसर्पको लकड़ी से मारते हो जो अर्जुनसे युद्धकरना चाहते हो २१ हे कर्ण ! अब शृगालरूप अज्ञान होकर तुम केसरी सिंहरूप क्रोधयुक्त नरोत्तम पाराडव अर्जुनको उल्लङ्घन करके गर्जते हो २२ और सर्प के समान तुम अपनी मृत्यु के लिये सुन्दर पक्षवाले अद्भुत पराक्रमी गरुड़ के समान वेगवान् महाबली पाराडव अर्जुन को बुलाते हो २३ सब जलों के स्वामी भयानक मत्स्यादिक जीवों से व्याप्त चन्द्रोदयमें प्रसन्नरूप वृद्धिपानेवाले मूर्तिमान् समुद्रको भुजाओं से तरना चाहतेहो २४ हे कर्ण ! बछड़ेके समान तुम दुन्दुभीरूप क्षुद्रघरिटकाओंके शब्द रखनेवाले होकर तीक्ष्ण शृङ्ग से घात करनेवाले बड़े बैल के समान पाराडव अर्जुन को युद्धमें बुलाते हो २५ तुम मेढक के समान होकर लोकमें घोर जल बरसानेवाले नररूप बादलके समान अर्जुनके सम्मुख ऐसे गर्जते हो २६ जैसे कि अपने घरमें नियत कुत्ता वनमें वर्तमान व्याघ्रको अपने स्थान से भौंकता है उसी प्रकार तुम भी कुत्ते के समान नररूपव्याघ्र अर्जुनकी ओर को भौंकते

हो २७ हे कर्ण ! खरगोशों से युक्त शृगाल भी वन में निवास करता हुआ अपने को उस समय तक सिंहरूप मानता है जबतक कि सिंह को नहीं देखता है २८ हे राधा के पुत्र ! इसी प्रकार शत्रुओं के विजय करनेवाले अर्जुन को न देखके तुम भी अपने को सिंहरूप मानरहे हो २९ जबतक एकरथपर सूर्य और चन्द्रमा के समान नियत श्रीकृष्ण और अर्जुन को नहीं देखते हो तबतक तुम अपनी आत्माको व्याघ्र मानते हो ३० हे कर्ण!जबतक कि तुम युद्धमें गाण्डीव धनुष के शब्द को नहीं सुनतेहो तभीतक तुम इन अस्तव्यस्त वचनों को मुख से बोलरहेहो रथ और धनुषों से दशोंदिशाओं को शब्दायमान करनेवाले और शार्दूलके समान गर्जनेवाले अर्जुनको देखकर तू शृगालरूप होजायगा ३१।३२ तुम सदैव शृगालरूप हो और अर्जुन सदैव सिंहरूप है हे अज्ञान ! इस कारण वीरलोगों से शत्रुता करने में तू शृगाल के समान दिखाई देताहै ३३ जैसे कि चूहा बिलार और महावनमें कुत्ता और व्याघ्र होय और जैसे शृगाल और सिंह होयँ और जिस प्रकार खरगोश और हाथी होयँ ३४ अथवा मिथ्या और सत्य वा विष और अमृत होय उसी प्रकार तुम और अर्जुन भी अपने २ कर्म से विख्यात हो ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णशल्यसंवादेचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, तेजस्वी शल्य से निन्दा कियाहुआ कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर वचनरूप भालों को सहन करताहुआ बोला १ कि हे शल्य ! गुणवानों के गुणों को गुणवान्ही जानता है गुणहीन मनुष्य नहीं जानताहै तुम गुणों से रहित हो इसीसे गुण और अवगुणों को क्या जानसक्तेहो २ हे शल्य ! मैं महात्मा अर्जुन के बड़े अस्त्रों को वा क्रोध बल पराक्रम धनुष और बाणों को अच्छे प्रकार से जानता हूं ३ और राजाओं में वा यादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजीकी भी महानता को जैसा कि मैं जानता हूं वैसा तुम नहीं जानते हो ४ मैं अपने और पाण्डवों के पराक्रम को अच्छेप्रकार से जानताहुआ युद्धमें उस गाण्डीव धनुषधारी को बुलाताहूं ५ हे शल्य ! यह सुन्दर पुङ्खवाला रुधिर पीनेवाला तरकस में अकेला ही रहनेवाला स्वच्छ अलंकृत ६ चन्दन से लिप्त बहुत वर्षों से पूजित सर्परूप विषधर उग्र मनुष्य घोड़े और हाथियोंके समूहों का मारने

वाला ७ घोर रुद्ररूप कवचसमेत अस्थियों का चूर्णकर्ता जिसके द्वारा मैं क्रोध-युक्त होकर मेरुपर्वत सरीखे बड़े २ पर्वतों को भी चीर डालता हूं ८ मैं अर्जुन और देवकीनन्दन श्रीकृष्ण के सिवाय उस बाण को कभी दूसरे पर नहीं चलाऊंगा इस हेतुसे मैं सत्य २ वचन कहताहूं ९ कि मैं अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उस बाण से अर्जुन और वासुदेवजी से लड़ूंगा यह कर्म मेरेही योग्य है १० सब वृष्णिवंशीय वीरों की लक्ष्मी श्रीकृष्णजी में नियत है और सब पाण्डवों की विजय अर्जुन में नियत है ११ इससे अब दोनों को पाकर कौन लौटसक्ता है वह दोनों पुरुषोत्तम भागेहुए हैं वा रथ पर नियत हैं १२ मुझ अकेले के सम्मुख होनेपर हे शल्य! मेरे युद्ध की शोभा को देखना बुआ और मामा के बेटे अजेय दोनों भाइयों को १३ सूत में पोही हुई दो मणियों के सदृश मेरे हाथ से मृतकही देखोगे अर्जुन के पास गाण्डीव धनुष है श्रीकृष्ण के पास सुदर्शनचक्र है और गरुड़ वा हनूमान्जी के रूप रखनेवाली दोनों ध्वजा हैं १४ हे शल्य! भयभीतों को भय के उत्पन्न करनेवाले और मेरी प्रसन्नता के बढ़ानेवाले वह दोनों हैं दुष्टप्रकृति अज्ञानी महायुद्धमें अनभिज्ञ भयसे विदीर्णचित्त तुम भयभीत होकर बहुतसे भयकारी वचनों को कहते हो हे पापिन्! देशमें उत्पन्न होनेवाले निर्बुद्धि नीच क्षत्रियों के कुल को कलङ्क लगानेवाले अब युद्ध में उन दोनों को मारकर तुझको भी बान्धवों समेत मारूंगा १५। १७ तू मित्रहोकर शत्रुके समान शत्रुओं की प्रशंसा करताहै मुझको श्रीकृष्ण और अर्जुनसे क्या डराता है कै तो वह दोनों मुझकोही मारेंगे वा मैंहीं उन दोनों को मारूंगा १८ मैं अपने पराक्रमको जानताहुआ श्रीकृष्ण और अर्जुनसे नहीं डरताहूं मैं अकेला ही हजारों वासुदेव और अर्जुनों को मारसक्ताहूं १९ हे दुर्देश में उत्पन्न होनेवाले! मौन हो दुष्ट अन्तःकरणवाले मद्रदेशियों के विषय में क्रीड़ाके निमित्त इकट्ठे होनेवाले स्त्री, बालक, वृद्ध, मनुष्य बहुधा जिन कथाओं को गान करके पढ़ा करतेहैं हे शल्य! उन गाथाओंको मुझसे सुनो २०। २१ और पूर्व समयमें इन्हीं कथाओं को राजाओंके समक्षमें ब्राह्मणोंने भी जिस प्रकारसे वर्णन करी हैं हे अज्ञानिन्! तुम उनको एकाग्रचित्त से सुनकर क्षमाकरना वा उत्तर देना २२ अर्थात् मद्रदेशीय सदैव मित्र से शत्रुता करनेवाले हैं जो हमसे शत्रुता करताहै हम उसको मद्रदेशीयही जानते हैं मद्रदेशीय में मेल मिलाप नहीं होता है और

आपस में क्षुद्रवचन बोला करते हैं २३ हमने सुनाहै कि मद्रदेशीयलोग सदैव दुष्टात्मा मिथ्यावादी और कुटिल होते हैं २४ पिता, माता, पुत्र, सास, ससुर, मामा, जामाता, लड़की, भाई, पोते, बान्धव और समान अवस्थावाले, अभ्यागत और अन्य दासी दास आदि सब मिलेहुए हैं और बुद्धिमान् होकर भी अज्ञानियों के समान अपनी इच्छा से पुरुषों से विषय भोग करनेवाले हैं २५। २६ इसी प्रकार जिन नीच अचेतता में युक्त मत्स्यखादकों के घरमें गौके मांससमेत मद्य को पीकर पुकारते और हँसतेहैं २७ और अयोग्य गीतोंको भी गातेहुए इच्छा-नुसार कर्मोंको करते हैं और परस्परमें भी इच्छानुसार वार्त्तालाप करते हैं उनमें धर्म कैसे होसक्ता है २८ जोकि मद्रदेशीय अहङ्कारी होकर दुष्टकर्मी विख्यात हैं इस हेतु से मद्रदेशियों से मित्रता और शत्रुता दोनों न करे २९ मद्रदेशियों में स्नेह और प्रीति नहीं होती और वह सदैव अपवित्र हैं मद्रदेशीय और गान्धार देशियों में पवित्रता नष्ट होगई है ३० राजा जिसमें याचक है उस यज्ञ में जो दियाजाता है वह सब जैसे नष्टता को पाता है और जिस प्रकार शूद्रोंका संस्कार करनेवाला तिरस्कार को पाता है और जैसे इस लोक में ब्राह्मणों के शत्रु सदैव नाश होते हैं उसी प्रकार मद्रदेशियों से प्रीति करके मनुष्य नष्टता को पाता है ३१। ३२ मद्रदेशियों में मेल मिलाप नहीं है हे विषैले बिच्छू! मैंने तेरे विष को अथर्वणवेद के मन्त्रों से शान्तकिया है ३३ इसीप्रकार ज्ञानीलोग बिच्छू के काटे हुए विष के वेग से घायल मनुष्य की ओषधी करते हैं वह भी सत्य २ देखने में आते हैं ३४ हे बुद्धिमन्! की तो मौन होजाओ नहीं तो ऐसे२ वचनों को सुनोगे जिन वचनों को मद्यसे मदोन्मत्त स्त्रियां गाकर नाचती हैं ३५ उन स्वेच्छाचारी पतिवञ्चक भोगों में अनियम स्त्रियों का पुत्र मद्रदेशीय किस रीतिसे धर्म कहने को योग्य होसक्ताहै ३६ जो स्त्रियां कि ऊंट और गधोंसमान खड़ी २ पेशाब किया करती हैं उन बेधर्म और निर्लज्ज ३७ स्त्रियों का पुत्र होकर तू धर्म कहना चाहता है जो स्त्रियां कांजी माँगनेपर कीचोंको खींचती हैं ३८ और न देने की इच्छा से इन भयकारी असह्य वचनों को कहती हैं कि कोई हम से कांजी मतमाँगो वह हमारी बड़ी प्रियहै ३९ बेटीको दें पतिको दें परन्तु कांजी को न देंगी कन्या और वृद्ध स्त्री निर्लज्ज हैं और कम्बलों की धारण करनेवाली होकर बहुधा दुराचारिणी और भ्रष्ट हैं इस रीति से अन्यलोग भी शिर की चोटी

से पैरके नखोंतक अयोग्य और अनुचित बातें मद्रदेशियोंके विषयमें कहाकरते हैं और यह भी हम ने सुना है कि ४० । ४२ पापिष्ठ देशमें उत्पन्न होनेवाले म्लेच्छरूप धर्मों से रहित मद्र, सिन्धु, और सौवीरदेशीयलोग कैसे धर्मों को जानेंगे क्षत्रियों का यह श्रेष्ठ धर्म है ४३ कि युद्धभूमि में मृतक होकर अथवा सत्पुरुषों से स्तूयमान होकर पृथ्वीपर शयनकरें इस हेतु से जो मैं युद्धभूमि में जीवनको त्याग करूं ४४ तो मुझ स्वर्गाभिलाषी का यह प्रथमकल्प है ऐसा मैं बुद्धिमान् दुर्योधन का प्यारा मित्र हूं ४५ उसके लियेही मेरे प्राण और धनहैं हे पापिन् ! देश में पैदा होनेवाले विदित होताहै कि तूभी पाण्डवोंसे भगायाहुआ है तुम शत्रुके समान जैसे कर्म हमारे साथमें करते हो वह सब तुम इच्छापूर्वक करो यह निश्चय समझो कि मैं तुझ सरीखे सैकड़ों मनुष्योंसे भी युद्धमें अजेय हूं जैसे कि धर्मज्ञ मनुष्य नास्तिक के वचनों से धूप के मारे सारङ्ग पक्षीके समान विलाप करके शरीरको सुखाताहै ४६ । ४८ उसी प्रकार क्षत्रियके व्यवहार में नियत होकर मैं डराने के योग्य नहीं हूं पूर्वसमयमें मेरेगुरु श्रीपरशुरामजीने युद्धमें मुख न मोड़नेवाले और शरीर त्यागनेवाले नरोत्तमलोगोंकी जो गति कही है उसको मैं स्मरण करता हूं और धृतराष्ट्र के पुत्रों की रक्षा और शत्रुओं के नाश करने में प्रवृत्त हूं ४९ । ५० मुझको उत्तम व्यवहार में नियत पुरूरवा वंशीय जानों हे राजन्, मद्र ! मैं तीनोंलोकों में ऐसा किसी जीवधारीको नहीं देखता हूं ५१ जो मुझको इस विचार से हटावे यह मेरा सिद्धान्त है हे बुद्धिमन् ! ऐसा जानकर मौन हो भयभीत होकर क्यों बहुत बकता है ५२ हे मद्रदेशियों में नीच ! मैं तुझको मारकर कचे मांसभक्षियों को नहीं दूंगा हे शल्य ! तुम मित्र और मित्रके पिता धृतराष्ट्र इन दोनों विचारों से और कठिन वचनों की सहनशीलतासे अबतक जीवते बचे हो हे राजन्, मद्र ! जो तू फिर ऐसे वचनों को कहैगा ५३ । ५४ तो तेरे शिरको अपनी वज्र की समान गदासे काटकर पृथ्वीपर गिराऊंगा हे दुष्टदेशमें उत्पन्न होनेवाले ! अब यहां इस बातके देखने और सुननेवाले हैं ५५ कि श्रीकृष्ण और अर्जुन कर्णको मारें अथवा कर्ण उन दोनों को मारे हे राजन् ! इस प्रकार कहकर ५६ फिर कर्ण राजा मद्र से बोला कि निर्भय होकर तुम रक्षा करो रक्षा करो ॥ ५७ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यकर्णपरस्परनिन्दनन्नामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे श्रेष्ठ ! फिर शल्य युद्ध के अभिलाषी अधिरथी कर्ण के वचनों को सुनकर उससे यह विश्वासरूप वचन बोला १ कि मैं अपने धर्म में नियत यज्ञकर्ता युद्ध में मुख न मोड़नेवाले मूर्द्धाभिषेक राजाओं के वंश में उत्पन्न हुआ हूं २ हे कर्ण ! जैसे मदिरा से उन्मत्त मनुष्य होताहै वैसाही तू मुझ को दिखाई देताहै इससे अब मैं उसी प्रकारसे शुभचिन्तकतासे तुझ मतवाले की चिकित्सा करताहूं ३ हे नीच, कुलकलङ्की, कर्ण ! इस मेरी कहीहुई काकोपमा को समझो उसको सुनकर अपनी इच्छा के अनुसार कर्म करना ४ हे कर्ण ! मैं अपने विषय में उस दोष को स्मरण नहीं करता हूं अर्थात् नहीं जानताहूं जिसके हेतु से हे महाबाहो ! तुम मुझ निरपराधी को मारना चाहते हो ५ मुख्य कर राजा का अभ्युदय चाहनेवाले रथपर सवार होकर मैं तेरे हानि लाभ के कहने के योग्य हूं मेरे इन वचनों को समझो ६ कि टेढ़ा सीधा मार्ग रथके सवारों की बल निर्बलता रथ की सवारी में घोड़ों का क्लेश और थकावट ७ शस्त्रों का ज्ञान पशु पक्षियों के शब्द भारकी न्यूनाधिकता बाणोंके भालों की चिकित्सा ८ अस्त्रों का योग युद्ध और शकुन यह सब बातें मुझ रथ के रक्षक से तुमको जानने के योग्य हैं ९ हे कर्ण ! इस हेतु से यह दृष्टान्त तुझसे कहताहूं ठेठ समुद्र के किनारेपर एक बड़ा धनी वैश्य अनाज रखनेवाला था १० वह वैश्य यज्ञों का करनेवाला महादानी शान्तचित्त होकर पवित्रतापूर्वक अपने कर्म में नियत बहुत से पुत्र पौत्रादि से युक्त प्रीतिमान् और जीवमात्रोंपर दया करनेवाला था ११ वह धर्मपर चलनेवाले राजा के देश में निर्भयता से निवासकरता था उसके कुमार बालकों की जूठन का खानेवाला एक उच्छिष्टभृतनाम काक था उसको वैश्य के कुमार बालक सदैव मांस, उष्ण अन्न, दही, दूध, खीर, मधु, घृत यह सब वस्तु खिलायाकरते थे उस बालकों के जूठन खानेवाले अहङ्कारी काक ने अपने बराबरवाले वा अपनेसे बड़ोंकी भी निन्दा करी इसके पीछे किसी समय दैवयोग से समुद्र के तटपर चलने में गरुड़ के समान मन के समान बड़े शीघ्रगामी प्रसन्नचित्त चक्राङ्ग आदिक हंस आये तब वह वैश्यों के बालक उन हंसों को देखकर अपने जूठन खानेवाले को ऐसे बोले १२ । १६ हे आकाशचारिन्,

काक ! आप तो सब पक्षियोंसे उत्तम हो यह प्रशंसा सुनकर उस निर्बुद्धि काक ने अपने अहङ्कार और अज्ञानता से उस वचन को सत्यही जाना और उन दूर जानेवाले बहुत हंसों के पास जाकर उस दुर्बुद्धि ने कहा कि तुमलोगों मेंसे जो श्रेष्ठ होय वह मेरे साथ उड़े यह सुनकर वह सब आयेहुए हंस हँसे १७।२० और उन आकाशचारी मनगामी और पक्षियों में श्रेष्ठ हंसों में से चक्राङ्ग नाम हंस ने उस अहङ्कारी काक से कहा २१ कि हम हंसों की गति मन के समान है और दूर जाने के कारणसे हम सबपक्षियों में शिरोमणि गिने जाते हैं हे निर्बुद्धे ! तू काक होकर अपने साथ हमको उड़नेके लिये कैसे बुलाताहै २२।२३ भला कहतो सही कि तू हमारे साथ किस प्रकार से उड़ेगा यह सुनकर उस निकृष्ट जाति और अपनी प्रशंसा आप करनेवाले काकने हंसों के कहे हुए वाक्यों को वारंवार निन्दा करके उत्तर दिया २४ कि मैं निस्सन्देह सौ प्रकार की गति से उड़सक्ता हूं और प्रत्येक गति शतयोजन लम्बी चित्र विचित्र और जुदे २ प्रकार की है २५ उन गतियों के यह नाम हैं उड्डीन अर्थात् ऊपर को उड़ना अवड्डीन, नीचेको चलना प्रड्डीन, सबओरको जाना विडीन,केवल उड़ना निडीन, धीरेचलना सण्डीन, चित्तरोचकगति तिरछी डीन गतिभी चार प्रकार की है २६ विडीन, वड़ी विस्तृत परिडीन, सबओर से चलना पराडीन, पीछे को उड़ना सुडीन, स्वर्गमार्ग में चलना अभिडीन, सम्मुख चलना महाडीन, पवित्र और ऊंचीगति खडीन, आकाशको जाना परिडीन, चारोंओर को चलना अवडीन, चढ़ना प्रडीन, अद्भुतगति सण्डीन, डीन, डीनक, ऊपर की ओरकी गतें विडीन, उड्डीन, सण्डीन, पुनर्डीन, विडीन २७।२८ सम्पात, समुदीष, व्यतरिक्त, गतागत, प्रतिगत, वन्ही, निकुलीन इत्यादि अनेक प्रकार की गति हैं २९ उन गतियों को मैं तुम्हारे सम्मुख करता हूं इसी से मेरे पराक्रम को देखोगे मैं उन गतियों में से एक गति के द्वारा आकाशमें उड़ताहूं हे हंसलोगो ! आप जिस गतिसे कहो उसी गति से उड़ूं ३०।३१ हे पक्षियो ! निश्चय करके इस निराश्रय आकाशमें इन गतियों से उड़सक्ते हो तो तुम भी अच्छे प्रकारसे निश्चय करके मेरे साथ उड़ो काक के इस वचन को सुनकर ३२ एक हंस ने हँसकर काक को उत्तर दिया है हे कर्ण ! उस वचन को मुझसे समझो अर्थात् हंसने कहा हे काक ! तुम निश्चय करके सौ प्रकारकी गतिको उड़ोगे ३२ और

मैं उसी गतिसे उडूंगा जिस गतिसे सब पक्षी उड़तेहैं क्योंकि मैं इस एक गति के सिवाय दूसरी गतिको नहीं जानताहूं ३४ हे ताम्राक्ष ! अब तुमभी चाहै जिस गति से उड़ो इसके पीछे जो वहां और काक इकट्ठे होगये थे वह सब हँसे ३५ और कहनेलगे कि हंस एकही गतिवाला होकर सौ गति जाननेवाले को कैसे परास्त करसक्ता है ३६ इसके अनन्तर हंस और काक ईर्षा करके उड़े अर्थात् एक गति उड़नेवाला हंस सौ गतिवाले काकके साथ उड़ा ३७ काक उड़तेही वृक्षों पर बैठ २ अहङ्कार में भराहुआ इधर उधर फिरता बोलने लगा ३८ उसकी ऐसी गति को देखकर सब काक प्रसन्न हुए और सब हंस उसकी अभाग्यता देखकर हँसनेलगे ३९ इस रीति से एक मुहूर्ततक उड़कर हंस को पुकार २ कर कहता था कि ४० । ४१ मेरी इन कलाओंको देखकर आप भी अपनी कलाओं को प्रकट कीजिये ४२ हंस उसके वचन को सुन बहुत सा हँसकर पश्चिमसमुद्र की ओर को चला ४३ । ४४ और उसके सङ्ग काक भी अपने परों को चपल करताहुआ चला समुद्र के ऊपर चलते २ कुछ दूरपर काक थकित होगया ४५ और कोई वृक्ष टापू न देखके धैर्यता से रहित होकर उड़नेलगा ४६ जब उसके सब पक्ष शिथिल होगये तब समुद्र में गिरपड़ा ४७ उसको गिराहुआ देखके वह हंस वहां स्थिर होकर हँसकर कहनेलगा ४८ हे काक ! आप अपना व्रत और स्नान शीघ्र करके चलो क्योंकि अभी समुद्र का पाट सौ योजन है कहो सौ गतियों में से यह कौन सी आपकी गतिहै कि जल में मौन होकर अपने पक्ष और चोंच को डुबाते और निकालते हो यह वचन सुनकर वह नीच वायस आरत वचनों से बोला हे हंस ! अब आप अपनी ओर को देखकर मेरे ऊपर क्षमा करो और जल से निकालकर मुझको आनन्द दो और हमने अपनी कुमति के वशीभूत होकर जो आपसे कुत्सित वचन कहे उनको अपने हृदय से दूर कर दया करके मुझको जल से निकालिये हे कर्ण ! यह काकके वचन सुनकर हंसने अपने पञ्जेसे उसको पकड़कर स्थलमें लाकर डालदिया सो जैसे कि वैश्य के घरमें उच्छिष्ट खाखाकर काक पुष्ट हुआ और हंस से प्रण करके अपना हास्य कराया उसी प्रकार तुम भी धृतराष्ट्र के घरमें खाके मोटे होकर बढ़े हो अब तुम काक के समान हो हंसरूपी पार्थ से लड़कर अपना हास्य कराया चाहते हो और विराटनगर में द्रोणाचार्य कृपाचार्य और भीष्मादिकसरीखे शूरवीरों को

पार्थ ने विजय किया तब तुमने अकेले अर्जुन को क्यों नहीं मारा ४६ । ७३ उस स्थानपर पृथक्२ और संयुक्त तुम सबलोगोंको अर्जुनने ऐसे विजय किया जैसे कि शृगालोंको सिंह विजय करताहै तब तेरा पराक्रम कहांथा ७४ युद्धमें अर्जुनके हाथ से मारेहुए भाई को देखकर सब कौरवीय वीरों के देखतेहुए प्रथम तो तुम्हीं भागे ७५ हे कर्ण ! इसी प्रकार द्वैतवन में गन्धर्वों से सम्मुखता होने में प्रथम तुमहीं सब कौरवों को छोड़कर भागे थे ७६ वहां भी हे कर्ण ! अर्जुन नेही युद्ध में गन्धर्वोंको मारकर और चित्रसेनादिकोंको विजय करके स्त्रीसमेत तेरे मित्र वा पालनकरनेवाले दुर्योधन को छुटाया था ७७ हे कर्ण ! फिर परशुरामजी ने राजाओं के मध्य सभा के बीच अर्जुन और केशवजीका प्राचीन प्रभाव वर्णन किया था ७८ तुमने राजालोगों के समक्षमें श्रीकृष्ण और अर्जुन को अवध्य वर्णन करनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य के वारंवार कहेहुए वचनों को सुना मैं उसको कहांतक तुझसे कहूं अर्जुन अनेक प्रकार से तुझसे ऐसा अधिक है जैसे कि सब जीवों से ब्राह्मण अधिक होता है ७९ । ८० तू अभी रथपर चढ़ेहुए वसुदेवनन्दन और कुन्तीनन्दन श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखेगा जैसे कि बुद्धि में नियत होकर काक हंस के पास शरणागत हुआ उसी प्रकार तू भी वासुदेवजी और अर्जुनके पास जाकर शरणागत हो ८१ । ८२ हे कर्ण ! जब तुम युद्ध में पराक्रमी अर्जुन और वासुदेवजी को एक रथपर देखोगे तब ऐसी २ बातें न कहोगे ८३ जब अर्जुन सैकड़ों बाणों से तेरे अहङ्कारका नाश करेगा तभी तुम अपने और अर्जुन के बलाबलरूप अन्तर को देखोगे ८४ अरे जो नरोत्तम देव असुर और मनुष्यों में प्रसिद्ध हैं उनका अपमान तुम ऐसे मत करो जैसे कि पटबीजना सूर्य का अपमान नहीं करसक्ता ८५ जैसे कि सूर्य और चन्द्रमा हैं उसी प्रकार अर्जुन और श्रीकृष्णजी अपने तेज से विख्यातहैं तुम मनुष्यों में पटबीजने के समान हो ८६ हे बुद्धिमन्, सूत के पुत्र, कर्ण ! तू अर्जुन और केशवजी का अपमान मत कर वह दोनों नरोत्तम महात्मा हैं मौनहोजा अपनी प्रशंसा मत कर ॥ ८७ ॥

दो० सूर्य चन्द्रसम विदित हैं, पारथ कृष्ण अमान ।
तिनकी सरवरि जनि करो, तुम खद्योत समान ॥ १ ॥
वरप्रभाव हरि पार्थ को, पूर्व कह्यो बलराम ।

सोभुलाय कत मोहवश, लरनचहतजयकाम॥ २ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यसंवादेहंसकाकोपाख्यानेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, महात्मा कर्ण शल्य के अप्रिय वचनों को सुनकर शल्यसे बोला कि मैं ठीक २ जानताहूं जैसे कि अर्जुन और श्रीकृष्णजी हैं १ मैं अर्जुन के रथके हांकनेवाले केशवजी और अर्जुन के पराक्रम समेत बड़े अस्त्रों को भी अच्छी रीतिसे जानता हूं हे शत्रुरूप, शल्य ! उसको तू नहीं जानता है २ मैं उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और निर्भयरूप श्रीकृष्ण और अर्जुनसे युद्ध करूंगा परन्तु ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ परशुरामजीका दियाहुआ शाप अब मुझको अधिकतर दुःख देरहा है ३ हे शल्य ! शापका कारण यह था कि मैं पूर्व समय में दिव्य अस्त्रोंका अभिलाषी होकर ब्राह्मण का रूप बनाकर कपट से परशुरामजी के पास ठहरने को गयाथा वहां भी अर्जुनकीही उन्नति चाहनेवाले देवराज इन्द्रने ४ भयानकरूप कीटके शरीर में प्रवेशकरके मेरी जङ्घामें चिपटकर काटने से विघ्न कर दिया अर्थात् मेरी जङ्घापर शिर रखकर गुरु परशुरामजी के सोनेपर उस कीट ने मेरी जङ्घाको काटा ५ और बड़े घाव होने के कारण मेरी जङ्घामें से बहुतसा रुधिर प्रकटहुआ परन्तु मैंने गुरुजी के भय से शरीरको जरा भी न कँपाया इसके पीछे जब गुरुजी जागे और उस मेरी जङ्घाके रुधिरको देखा ६ उन्होंने उस घावसेभी मुझको धैर्यता में नियत देखा तब यह वचन कहा कि निश्चय करके तू ब्राह्मण नहीं है कौनहै यह सत्य २ कहो हे शल्य ! तबतो मैंने सूत के समान समीप जाकर अपना यथार्थ वृत्तान्त कहा ७ उस समय क्रोधयुक्त होकर महातपस्वी गुरुजीने मुझको देखकर शाप दिया कि हे सूत ! तैंने अपनी ज्ञातिको गुप्त करके जो इस अस्त्रको प्राप्त कियाहै वह युद्धकर्मके समयपर तुझको स्मरण न रहैगा ८ इसके सिवाय और कालमें इस अस्त्रसे तेरी मृत्यु होगी क्योंकि ब्राह्मण के विना मन्त्र और वेदरूप ब्रह्म अचल होकर स्थिर नहीं होताहै अब इस भयकारी कठिन युद्धमें उस बड़े अस्त्र का प्रयोग संहार स्मरण नहीं आता है ९ हे शल्य ! जो यह सबका मारनेवाला महाघोर भयानकरूप प्रबलयुद्ध भरतवंशियों में उत्पन्न हुआहै यह कालरूप युद्ध बहुत से बड़े २ क्षत्रिय शूरवीरों को निश्चय करके सन्तप्तकरेगा परन्तु मैं उस उग्र धनुषधारी महावेगवान् भयानक कठिनतासे सहने

के योग्य सत्यपराक्रम और प्रतिज्ञावाले पाण्डव अर्जुन को युद्धमें मृत्यु के मुख में पहुँचाऊंगा १० । ११ वह मेरा अस्त्र वर्तमानहै उसीके द्वारा युद्धमें शत्रुओं के समूहोंको और प्रतापी बलवान् अस्त्रज्ञ और महाउग्र धनुषधारी तेजस्वी नि-र्दयी शूर रुद्र शत्रुओं के नाशकरनेवाले अर्जुन को युद्धमें ऐसे मारूंगा जैसे कि महावेगवान् अप्रमेय जलों का स्वामी समुद्र अनेक जीवों को अपने में मग्न करलेताहै १२ । १३ जैसे समुद्र बड़ा वेगवान् बुद्धिसे परे मर्यादा और किनारों समेत बड़े २ प्रभाववालोंको धारणकरताहै १४ इसीप्रकार अब मैं भी इस लोक के युद्ध में मर्मों के भेदी वीरोंके मारनेवाले तीक्ष्ण बाणसमूहों के छोड़नेवाली प्रत्यञ्चा खैंचनेवालों में श्रेष्ठ अर्जुन के साथ युद्ध करूंगा १५ इस रीति से बाणों के बलके प्रताप से उस बड़े पराक्रमी अस्त्रज्ञ समुद्रकी समान महादुर्जय बड़े २ शूरवीर राजाओं के नाशकरनेवाले अर्जुन को ऐसे सहूंगा जैसे कि समुद्र को मर्यादा सहलेती है १६ अब युद्ध में जिसके समान दूसरे धनुषधारी को नहीं समझता और मानता हूं वह देवता और असुरोंको भी युद्धमें विजय करसक्ताहै उसके साथ अब मेरे महाघोर युद्ध को देखो युद्धाभिलाषी महाअहङ्कारी अर्जुन दिव्य महाअस्त्रों के द्वारा मेरे सम्मुख आवेगा १७ तब मैं युद्ध में उसके अस्त्रों को अपने अस्त्रों से हटाकर उत्तम बाणों से उस सूर्य के समान उग्रदिशाओं के तपानेवाले अर्जुन को गिराऊंगा १८ जैसे कि बड़ाबादल सूर्य को ढकदेता है उसीप्रकार अग्निरूप क्रोधरखनेवाले महातेजस्वी इस लोक के भस्म करनेवाले अर्जुनको अपने बाणोंसे आच्छादित करदूंगा १९ मैं बादलरूप अपने वर्षारूप बाणोंसे युद्धमें उस अग्निरूप बल पराक्रम रखनेवाले प्रहारकर्त्ता वायुरूप उग्र अर्जुन को शान्त करूंगा २० हिमालय पर्वत के समान युद्ध में अग्नि के समान क्रोधरूप पण्डित सत्यवक्ता अर्थमार्गों में समर्थ महाबली अर्जुन को देखूंगा २१ लोक में अद्वितीय धनुर्धर जिसके समान दूसरा नहीं देखता और जिसने सब पृथ्वी को विजय किया मैं युद्धमें सम्मुख होकर उस अर्जुनसे लड़ूंगा २२ जिस अर्जुन ने इन्द्रप्रस्थ के समीप खाण्डववन में देवताओं समेत सब जीवोंको विजयकिया २३ उस वीरके सम्मुख मेरे सिवाय इच्छापूर्वक कौन युद्ध करसक्ता है वह महाअहङ्कारी अस्त्रज्ञ हस्तलाघवका करनेवाला दिव्य अस्त्रों के प्रयोग संहारोंका ज्ञाता प्रलयका मचानेवालाहै २४ अब मैं तीक्ष्ण बाणों से

उस अतिरथीके शिरको देहसे जुदा करूंगा हे शल्य ! मैं युद्ध में विजयको और मृत्युको आगे करके इस अर्जुन से लडूंगा २५ ऐसा मेरे सिवाय दूसरा कोई मनुष्य नहीं है जोकि उस इन्द्र के समान पराक्रमी के साथ एकरथ से युद्धकरे मैं युद्ध में प्रसन्नचित्त होकर क्षत्रियों के देखतेहुए उस पाण्डव अर्जुन की वीरता वर्णन करताहूं २६ तुम महामूर्ख और अज्ञानचित्त होकर हठ से उस अर्जुन की वीरताको क्या कहते हो जो पुरुष सबका अप्रिय कठोरचित्त नीच और अशान्तचित्त होता है वह शान्तचित्तवालोंकी निन्दा करता है २७ मैं इसप्रकार के सैकड़ों पुरुषों को मारसक्ता हूं परन्तु मैं क्षमा करने के समय आनेपर क्षमा कर देता हूं हे पापात्मन्, शल्य ! तू अज्ञानी के समान मुझको डराकर अर्जुन के लिये प्रियवचनों को कहता है २८ हे सत्यता के समय मित्र से शत्रुता करनेवाले, कुटिलबुद्धे ! निश्चय करके मित्रता सात पदों से सम्बन्ध रखनेवाली है वह भयकारी समय सम्मुख आता है जिससे कि दुर्योधन ने युद्ध को प्राप्त किया है २९ और मैं भी उसी के अभीष्ट सिद्धि का चाहनेवाला हूं परन्तु तुम उसी बात को मानते हो जिसमें कि प्रीति नहीं है अर्थात् हमारा पक्षवाला होकर भी अन्य के साथ प्रीति करता है मित्रशब्द "मिद" धातु से सम्बन्ध रखता है जिसका अर्थ मोद है वा "मिदि" धातु से जिसका अर्थ प्रसन्न करना तृप्त करना रक्षाकरना और अन्त में कुशल करना है अथवा सुख से सम्पन्न करना कहा है इन लक्षणों से मित्र कहाजाता है ३० मैं तुझसे सत्य २ कहता हूं कि यह सब गुण मुझमें प्राप्त हैं राजा दुर्योधन मेरे इन सब गुणों को जानता है और मारना शासन करना, स्वाधीन करना दण्ड देना लम्बे श्वासलेने में पकड़लेना और पीड़ित करना इन गुणों के होने से शत्रु कहाजाता है ३१ यह सब गुण बहुधा तुझमें नियत हैं इस निमित्त अब मैं दुर्योधन की वा तेरी इच्छा अथवा अपनी शुभ-कीर्त्ति और ईश्वर की प्रसन्नता के लिये अर्जुन और वासुदेवजी से लडूंगा अब उस कर्म को वा ब्रह्मास्त्र आदि महाउत्तम और दिव्य अस्त्रों को और मानुषी शस्त्रों को देखो ३२ । ३३ मैं उस उग्र पराक्रमी को ऐसे प्राप्त करूंगा जैसे कि बड़ा मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथी को और विजय के हेतु उस अजेय ब्रह्मास्त्र को मन से अर्जुन के ऊपर चलाऊंगा ३४ उस मेरे अस्त्र से भी युद्ध में कोई शत्रु नहीं बचसक्ता है जो कदाचित् यह रथ का चक्र किसी गढ़े में नहीं गिरे ३५

तो हे शल्य ! मैं दण्डधारी यमराज पाशभृत् वरुण गदाधारी कुबेर वज्रधारी इन्द्र और युद्धाभिलाषी शस्त्रों से मारनेवाले किसी प्रकार के भी शत्रु से ३६ नहीं डरता हूं इसी हेतु से मुझको अर्जुन और श्रीकृष्णजी से जरा भी भय नहीं है ३७ मेरा युद्ध उन दोनों के साथ परलोक के निमित्त होगा हे राजन् ! इसका हेतु यह है कि एक समय अस्त्रों के सीखने में मैंने घोररूप अस्त्रों को फेंका था ३८ वहां अज्ञानता से एक ब्राह्मण की होमसाधन करनेवाली गौ का बछड़ा जो निर्जन वन में चररहा था वह मेरे बाण से मारागया उसके मरजाने से उस ब्राह्मण ने कहा कि ३९ जो तुझ बड़े मतवाले ने मेरी होम की गौ के बछड़े को मारा है इस हेतु से तुझ युद्ध में लड़नेवाले को रथ का पहिया पृथ्वी में घुस जायगा यह ब्राह्मण ने मुझको शाप दिया है ४०।४१ इस हेतु से मैं ब्राह्मण के शाप से बहुत डरता हूं इन ब्राह्मणों का राजा चन्द्रमा है इसी से यह सब ब्राह्मण सुख दुःख के स्वामी हैं ४२ हे मद्रदेशाधिपते ! मैंने हज़ारों गौ और बैल देने से भी उसको प्रसन्न करना चाहा परन्तु वह किसी प्रकार से भी प्रसन्न नहीं हुआ ४३ वह उत्तम ब्राह्मण सात सौ हाथी और सैकड़ों दास दासी देनेपर भी मुझपर प्रसन्न नहीं हुआ ४४ श्वेतवत्सा चौदह हज़ार कृष्णागौवों के भी भेट करने से उसका चित्त मुझसे प्रसन्न नहीं हुआ इसके सिवाय सब पदार्थों से युक्त मैंने अपने स्थान धनआदि जो २ मेरी वस्तु थीं ४५ उन सब को भी वारंवार उसको भेट किया तब भी उसने इच्छा नहीं करी ४६ और मुझ अपराध क्षमा करानेवाले से कहा कि हे सूत ! जो मैंने कहा है वह वैसेही होगा मिथ्या कभी नहीं होसक्ता ४७ मिथ्या बोलना सन्तान का नाशकरनेवाला होता है पाप का भागी होता है इस कारण धर्म की रक्षा के निमित्त मैं मिथ्या नहीं बोलसक्ता हूं ४८ तू ब्राह्मण की गति को नाश मत कर तुम ने बड़ा अपराध किया है इस लोक में मेरे वचन को कोई मिथ्या नहीं करसक्ता इससे मेरे शाप को अङ्गीकार कर ४९ हे अनम्र होनेवाले ! मैंने शुभचिन्तकता से यह कहा है मैं तुझ निरादर करनेवाले को जानता हूं तू मौन होकर उत्तर को सुन ॥ ५० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णशल्यसंवादेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! इसके पीछे शत्रुविजयी कर्ण राजामद्र को

सम्बोधन करके यह वचन बोला कि १ हे शल्य ! जो तुमने निदर्शनके निमित्त अर्थात् दृष्टान्तार्थ मुझसे कहाहै सो मैं युद्ध में तेरे वचनों से भयभीत नहीं होसक्ता जो देवताओं समेत इन्द्र भी मुझसे युद्धकरें तो भी मैं भयभीत नहीं होसक्ता फिर श्रीकृष्णजी को साथ रखनेवाले अर्जुन से क्या भय करसक्ता हूं वह क्या करसक्ते हैं २ । ३ मैं केवल बातोंहीसे किसी दशामें भी भयभीत होने को योग्य नहीं हूं हे शल्य ! वह कोई दूसरेही मनुष्य होंगे जो युद्ध में अर्जुन से डरें ४ नीच मनुष्य की इतनीही सामर्थ्य है जो तुमने मुझको कठोर वचन कहे हे दुर्बुद्धे ! मेरी प्रशंसा करने को असमर्थ होकर तुम बहुतसी बातें करते हो ५ हे मद्रदेशीय ! इस लोक में कर्ण भय के लिये नहीं उत्पन्नहुआ है किन्तु यशकीर्त्ति और पराक्रम के हेतु मैंने जन्म लिया है हे राजन्, शल्य ! तुम इन तीन कारणों से जीवते बचे हो एक तो सारथ्यकर्म करने से उत्पन्नहुई मित्रता दूसरे मेरी क्षमायुक्त प्रकृति तीसरे अपने परममित्र दुर्योधन के कार्य सिद्ध के लिये ६ । ७ हे शल्य ! राजा दुर्योधन का बड़ा भारी कार्य वर्तमान होकर मुझमें नियत है इसहेतु से अल्पकाल तक मेरे हाथ से जीवते हो क्योंकि प्रथम मैं नियम करचुका हूं कि तेरे अप्रिय वचनों को सहूंगा मैं शल्य के विना भी शत्रुओं को विजय करसक्ता हूं क्योंकि मैं अकेलाही हज़ार शल्य के बराबर हूं ८ । ९ और मित्र से शत्रुता करना पापकर्म कहा है इसी कारण से तुम जीवते हो ॥ १० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णशल्यसंवादेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

शल्य बोला कि हे कर्ण ! निश्चय करके ये सब निष्फल बातें हैं जिनको तुम शत्रुओं के विषय में कहते हो युद्ध में हज़ार कर्ण के विना भी मेरे हाथ से शत्रु विजय होनेके योग्य हैं अर्थात् मैं हज़ार कर्ण के समान हूं १ सञ्जय बोले कि इस पीछे कर्ण ने इस प्रकार के कठोर वचन कहनेवाले शल्य से फिर प्रथम से भी द्विगुणित ऐसे कठोर वचन कहे जो देखने और सुनने के अयोग्य थे २ कर्ण बोला कि हे राजन्, मद्र ! तुम चित्त को स्थिर करके उन वचनों को सुनो जो दुर्योधन के समक्ष में ३ ब्राह्मणों ने धृतराष्ट्र की सभा के मध्य नाना प्रकार के अद्भुतदेशों के भूत भविष्य वृत्तान्तों को राजाओं से वर्णन किया था वहां एक वृद्धब्राह्मणोत्तम भूतकालीनवृत्तान्तविषयक कथाओं को कहता वाहीक

और मद्रदेशों की निन्दा करता हुआ यह वचन बोला ४। ५ कि जो लोग हिमाचल पर्वत श्रीगङ्गाजी सरस्वती यमुना और कुरुक्षेत्र से अलग कियेगये हैं और जो लोग पंजाब और सिन्धु के मध्यमें निवास करनेवाले हैं उन धर्महीन अपवित्र वाहीक नामवालों को त्यागकरें ६। ७ वहां पर गोवर्धन अर्थात् गौओं के मारने को स्थान और मद्य पीनेवालों के चौतरे यही दोनों राजकुल के द्वार हैं मैं बालक से लेकर वृद्धोंतक के मुख से सुनाहुआ स्मरण करता हूं ८ मैंने बड़ेकार्य के कारण से वाहीकदेशियों में सातरात्रि निवास करके वहां का सब चरित्र जाना ९ उनमें शाकलनाम नगर और आपगानाम नदी वा जरत्का नाम वाहीक इन तीनों का चरित्र महानिन्दित है १० यह लोग जौ और गुड़ की मद्य को पानकर लहसन के साथ गोमांस को खाके मांस के पूप आदि बाजार के सम्पूर्ण भोजनों की करनेवाली शीलता से रहित नङ्गे शरीर और दिखाने को माला चन्दन आदि धारण करनेवाली स्त्रियां नगरके स्थानों में अथवा नगर के वा प्रागार में गाती और नाचती हैं ११। १२ और गधे वा ऊंटों के समान शब्दों से नानाप्रकार के निर्लज्ज गीतोंसे मतवाली विषयभोगों में अपने और पराये जाति कुजाति का विवेक न रखनेवाली सब प्रकार से स्वैरिणी अर्थात् स्वेच्छाचारिणी कुत्सित कर्म करानेवाली हैं १३ उन मदोन्मत्त असभ्य वार्त्ता करनेवालियों ने बड़े विनोदपूर्वक इन गीतों को गाया कि हे घायलभग ! हे घायलभग ! हे पति और स्वामी से ताड़ितभग ! १४ वह संस्काररहित अजितेन्द्रिय स्त्रियां इस रीति से पुकारतीहुई उत्सवों के दिनों में यथेच्छा नृत्य करती हैं फिर ब्राह्मणने कहा कि वाहीकवासियों से श्रेष्ठ कुरु जाङ्गलदेशों में निवास करनेवाली १५ अप्रसन्नचित्त स्त्रियों ने यह गीत गाया कि निश्चय करके कुरुजाङ्गलदेशों में बृहती गौरी और सूक्ष्म कम्बलों की धारणकरनेवाली स्त्रियां शाक लहसन के मिलनेपर काक के समान हर्षित होती हैं १६ और मद्यपान कर हँसती और नाचती हैं ऊंट वा गधे के समान स्वर से हरसमय गान किया करती हैं सदैव मैथुन में ऐसी रत हैं कि कभी नहीं अघाती हैं १७ और पुरुषों को बुला २ कर अपने आप प्रसन्नता से मिलती हैं और अपने वा पराये पुरुष के वर्ण कामी जहां विचार नहीं वह स्त्रियां कलह हास्य और विहार में परस्पर गालियोंसे बातें करती हैं १८ वहां स्त्री पुरुष रात्रि दिन इसी प्रकारसे बकतेरहते

हैं और अपनी पराई स्त्री वा अपना पराया पुरुष इन बातों का जो विचार करे वह कुत्सित गिनाजाता है १६ और जहां वराह कुक्कुट गौ गधा इनके मांस को जो न खाय अथवा मद्यका जो पान न करे उसका जन्म निष्फल गिनाजाता है २० इसप्रकार से कहकर वह ब्राह्मण पञ्चनदों के नाम राजासे कहनेलगा कि २१ चन्द्रभागा शतद्रू विपाशा इरावती वितस्ता और छठवां सिन्धु इन नदोंके मध्य में वह पुरुष बसते हैं जिनके पूर्वजन्म के पाप सञ्चित होते हैं २२ उनका दिया हुआ देव पितर और ब्राह्मण ग्रहण नहीं करतेहैं कुत्सितकर्म करनेवाले अशुभ वेष भक्ष्याभक्ष्य और गम्यागम्य का विचाररहित जिस देश में धर्म का लवलेश भी नहीं होता है २३ इस वृत्तान्त को अन्यब्राह्मणों ने भी कौरवों की सभा में हमसे कहा कि यह पांचों नदियां जहां बहती हैं २४ वहां पीलूनाम वृक्षों के वन हैं वह धर्महीन देश आरट्टनाम से प्रसिद्धहैं २५ यज्ञोपवीत आदि संस्कारों से रहित दासीपुत्र कुचाली यज्ञों के न करनेवाले वाहीकों के इन देशों में नहीं जाना उचित है २६ देव पितर और ब्राह्मण भी उनके हव्य कव्य और दानों को नहीं ग्रहण करते कष्ट कुण्ड नाम मृत्तिका विशेष और मट्टी के पात्रों में भोजन करते हैं २७।२८ सत्तू वा मद्य से अहङ्कारी उच्छिष्ट भोजी कुत्ते, भेड़ी, ऊंट, गधे इनका दूध और मांस खाते पीते हैं पुत्रों के मारनेवाले महामूर्ख सब अन्न और दूध के खानेवाले हैं २६ । ३० वह आरट्ट वाहीक पण्डितलोगों से त्यागने के योग्य हैं हे शल्य ! इसको समझकर फिर उस दूसरी बात को तुझ से कहता हूं ३१।३२ जिसको अन्यब्राह्मणों ने कौरवों की सभा में वर्णनाकिया है कि युगन्धरदेश जहां भक्ष्याभक्ष्य का विचार नहीं है उसमें दूध पीकर और अच्युतस्थल नाम नगरमें निवास करके ३३ । ३४ और भूतल तड़ाग जिसमें चाण्डाल और ब्राह्मण सब सङ्ग स्नान करते हैं उसमें स्नान करके कैसे स्वर्गको जायगा जहां यह पांचों नदी पर्वत से निकलकर बहती हैं ३५ । ३६ उस आरट्टनाम वाहीकदेश में श्रेष्ठ मनुष्य दो दिन भी न वास करें विपाशानदी में वहि और हीकनाम दो पिशाच हैं ३७ । ३८ उन दोनों की सन्तान वाहीक लोग हैं यह ब्रह्माजीकी सृष्टिमें नहीं हैं वह नीचयोनि में उत्पन्न होनेवाले नाना प्रकार के धर्मों को कैसे जानसक्के हैं ३६ । ४० कारस्कर माहिष कलिङ्ग केरल कर्कोटक और वीरक इन भ्रष्टधर्मियों को त्याग करना योग्य है ४१ । ४२ बड़े

उलूखल के समान मेखला रखनेवाली किसी राक्षसी ने तीर्थयात्रा करनेवाले एकरात्रि घरमें निवास करनेवाले ब्राह्मणसे यह वचन कहा ४३ । ४४ कि वह आरट्टदेश और वाहीकनाम जल ब्राह्मणों के निमित्त सदैव ब्रह्माजी के काल के समान हैं ४५ उन जातिवेदरहित यज्ञहीन पूजनादि के अकर्ता दासीपुत्र कुटिलबुद्धि संस्कार से हीन लोगों के अन्न को देवता पितर भोजन नहीं करते हैं ४६ प्रस्थल मद्र गान्धार आरट्टनाम पखश वा सातिसिन्धु और सौवीरनाम देशों के रहनेवाले बहुधा निन्दित हैं ॥ ४७ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

कर्ण बोला कि हे शल्य ! समझो मैं फिरभी तुमसे कहताहूं तुम चित्तको स्थिर करके अच्छे प्रकार से मेरे वचनों को सुनो १ निश्चय करके पूर्व समय में एक अतिथि ब्राह्मण हमारे घर में आया और हमारे आचार को देखकर प्रसन्नचित्त होके कहनेलगा २ कि मुझ अकेले ने बहुतकालपर्यन्त हिमाचल के शिखरपर निवास किया था तब वहां मैंने नाना प्रकार के धर्मों से युक्त देशोंको देखा ३ जहां प्रजालोग किसी अधर्म से भी शास्त्र के विरोधी नहीं होते हैं वहां के वेद-पारग ब्राह्मणोंके कहेहुए सब धर्मोंको तुझसे कहताहूं ४ हे महाराज ! नानाप्रकार के धर्मों से युक्त देशोंमें घूमताहुआ वाहीकदेशों में आनेके समय मैंने सुना ५ निश्चयकरके उस देशमें ब्राह्मण होकर फिर क्षत्रिय होताहै वैश्य शूद्र और वाहीक होकर फिर नाई होताहै ६ नाई होजाने के पीछे ब्राह्मण होता है फिर वह द्विज होकर दास होजाताहै ७ सब कुलभरेमें एकही वेदपाठी होताहै और अन्य सब भाईलोग वर्णसंकर स्वेच्छाचारी कर्मोंके करनेवाले होते हैं ८ गान्धार मद्रदेशीय और वाहीक यह निर्बुद्धि होते हैं मैंने सम्पूर्ण पृथ्वी को घूमकर उस वाहीक देश में धर्मों का संकर करनेवाला यह विपर्यय सुना है उसको मैं फिर कहता हूं ९ तुम चित्त से सुनो इस वाहीकों के निन्दित वृत्तान्तोंको एक अन्य ब्राह्मण ने कहा है १० वह भी मैंने सुना है कि पूर्वकाल में किसी पतिव्रता स्त्रीको उस आरट्टदेश से चोरोंने हरलिया तब वह अधर्मयुक्त होगई तब उस स्त्री ने उनको शाप दिया ११ कि जो मुझबाला और भाइयोंवालीको तुमने अधर्म से प्राप्तकिया इस कारण से तुम्हारे कुलकी सब स्त्रियां वेश्या होजायँगी १२ हे नीच,मनुष्यो!

तुम इस घोरपाप से कभी न छूटोगे इस हेतु से उनके पापभागी भानजे हैं पुत्र नहीं हैं अर्थात् माता के धनकी लेनेवाली बेटीही होतीहै और पिता के धनका लेनेवाला पुत्र होता है यद्यपि वह दोनों कुकर्म से उत्पन्न हैं तौ भी पुत्र तो पिता का नहीं कहलाता है परन्तु बेटी माता कीही कहलाती है इस हेतु से भानजाही अंश का भागी होता है १३ कौरव, पाञ्चाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, कोशल, काश, पौण्ड्र, कालिङ्ग, मागध १४ और चन्देरीदेशीय यह महाभाग सनातनधर्म को जानते हैं बाह्लीकदेश में केवल असन्तलोग रहते हैं १५ मत्स्यदेशियों से लेकर कौरव पाञ्चाल देशीय और नैमिषदेशियों से लेकर चन्देरीदेशियों तक जो उत्तम और सन्तलोग हैं वह सब प्राचीनधर्मों से अपना कर्म धर्म और निर्वाह करते हैं इन कुटिल पाञ्चाल और मद्रदेशियों के सिवाय १६ हे बुद्धिमन्, राजन्, शल्य ! इस रीति से धर्मकथाओं में मौन और जड़ के समान होकर तुम उन मनुष्यों के रक्षक होकर उनके पाप पुण्य के छठे भाग के लेने वाले हो १७ अथवा तुम उनकी रक्षा न करनेवाले पापभागी हो क्योंकि प्रजा की रक्षा करनेवाला राजा पुण्य का भागी है परन्तु तुम पुण्यभागी नहीं हो १८ पूर्व समय में सब देशों के बीच सनातनधर्म के पूजित होनेपर ब्रह्माजीने पंजाब देश के धर्म को देखकर कहा कि धिक्कार है १९ सतयुग में भी संस्कार से रहित अशुभकर्मी दासीपुत्रों का धर्म ब्रह्माजी से निन्दित होनेपर तुम बाह्लीक लोक में क्या कहा करते हो २० जिन ब्रह्माजी ने पंजाब के धर्म को नष्ट कहा है उन ब्रह्माजी ने सब वर्णों को अपने २ धर्म में नियत होने पर भी उनकी प्रशंसा नहीं की २१ हे शल्य ! इसको तुम समझो और दूसरा वृत्तान्त कहता हूं जो कल्माषपाद के सरोवर में डूबनेवाले राक्षस ने कहा है २२ क्षत्रिय का मल भिक्षा है और ब्राह्मण का मल व्रत का न करना है और सम्पूर्ण पृथ्वी भरे का मल बाह्लीकलोग हैं और स्त्रियों का मल मद्रदेश की स्त्रियां हैं २३ किसी राजा ने उस डूबनेवाले राक्षस को डूबनेसे निकालकर उससे जो २ पूछा और उसने जो २ उत्तर दिये उन सबको मुझसे सुनो २४ मनुष्यों का मल वह म्लेच्छ हैं जो पाप में प्रवृत्त होकर अपशब्द बोलते हैं और म्लेच्छों का मल औष्ट्रिक हैं औष्ट्रिकों का मल नपुंसक हैं और नपुंसकों का मल राजपुरोहित अथवा राजा के यज्ञ करानेवाले होते हैं २५ राजा से विनय करके याचना करनेवाले वा उसके

याज्ञिकलोगों का और मद्रदेशियों का जो मल है वह तुझको प्राप्त होय जो हम को नहीं त्याग करता है २६ राक्षस से वा भूतादिक के आवेश से व्याकुल और पीड़ित मनुष्यों की चिकित्सा कौल करार करके पीछे स्वाधीन होनेवाला राक्षस होता है २७ पाञ्चालदेशीय वेदों का सञ्चय रखनेवाले हैं कौरव लोग धर्मसंयुक्त कर्म के करनेवाले हैं मत्स्यदेशीय सत्यवक्ता हैं सूरसेनदेशीय यज्ञ को करते हैं और पूर्व के वासी दास हैं अर्थात् शूद्रधर्मवाले हैं और मत्स्यों के खानेवाले हैं दाक्षिणात्यलोग धर्माभ्यासी हैं परन्तु बाह्लीक और सौराष्ट्रदेशीय चोर और वर्ण-सङ्कर हैं २८ कृतघ्नता दूसरे का धनहरना मद्य पीना गुरुकी स्त्री से सम्भोग करना कठोर वचन कहना गौ को मारना और घर से बाहर रात्रि में अन्य की स्त्री से भोग करना अन्य पुरुषों के वस्त्रों का धारण करना यह अवगुणही २९ जिन लोगों का धर्म है उनमें कहो कि अधर्म नहीं है नहीं अवश्य है परन्तु अरट्ट और पंजाबदेशियों को धिक्कार है पाञ्चालदेशियों से लेकर कुरव देशियोंतक और नैमिषदेशियोंसे लेकर मत्स्यदेशियोंतकके लोग भी धर्मको जानते हैं फिर उत्तरमें रहनेवाले अङ्ग और मगधदेशीय वृद्ध मनुष्य उत्तम धर्मों से अपना बर्ताव करके निर्वाह करते हैं ३० जिनमें मुख्य अग्निहै वह देवता पूर्वदिशा में रहते हैं और शुभकर्म करनेवाले यमराज से रक्षित होकर दक्षिणदिशा में पितरलोग निवास करते हैं ३१ और पराक्रमी वरुणदेवता सब देवताओं समेत पश्चिम दिशा की रक्षा करता है और भगवान् चन्द्रमा ब्राह्मणों समेत उत्तर दिशा की रक्षा करता है ३२ हे महाराज! इसीप्रकार राक्षस और पिशाच हिमालयनाम श्रेष्ठ पर्वतको गुह्यक गन्धमादन शैल को रक्षा करते हैं ३३ और सब जीवमात्रों की भगवान् विष्णुजी रक्षाकरते हैं मगधदेशीय लोग अङ्गचेष्टाओं से उत्पन्न होनेवाले वृ-त्तान्तों के जाननेवाले हैं और कौशलदेशीय प्रत्यक्ष और प्रकटहुए वृत्तान्तों के ज्ञाता हैं ३४ कौरव पाञ्चालदेशीय आधी बात केही कहने से पूरी बात के जान-नेवाले हैं शाल्वदेशीय सब आज्ञाओं के पूरे करनेवाले हैं और पर्वतीय विषम हैं इससे कठिनतासे आधीन होनेवाले हैं ३५ हे राजन्! मुख्य करके सब बातोंके जाननेवाले सुरयुवन अर्थात् यूनानी म्लेच्छ बनावट के धर्मपर चलते हैं अर्थात् वैदिक धर्म को नहीं मानते हैं और अन्यलोग विना समझाये हुए मङ्गलपूर्वक पूर्ण होनेवाले वचनोंको नहीं समझतेहैं ३६ बाह्लीकलोग अपने शुभचिन्तकों

के विरोधी हैं और मद्रदेशीय कुछ भी नहीं हैं हे शल्य ! इस निमित्त तुम ऐसे उत्तरदेनेको योग्य नहीं हो इस पृथ्वीपर सब देशोंका मल मद्रदेश कहाताहै ३७ मद्यका पान गुरु की स्त्री से सम्भोग कुश्ती लड़ना पराये धन का हरना यही जिनलोगों का धर्म है उनमें धर्म अवश्य है उन अरट्टदेशीय और पंजाबदेशियों को धिक्कार है ३८ इस बात को जानकर मौन होकर विरुद्धता मत कर नहीं तो मैं प्रथम तुझको मारूँगा फिर अर्जुन और केशवजी को मारूँगा कर्ण की इन सब बातों को सुनकर शल्य बोला कि, हे कर्ण ! अङ्गदेश में रोगी दुखिया लोगों का त्याग और अपनी स्त्री पुत्र का बेचडालना वर्तमान है उन देशों का तू अधिपति है ३९ । ४० भीष्मजी ने जो तुमको रथी अतिरथी की संख्या में कहा उन अपने दोषों को जानकर क्रोधरहित होकर क्रोधयुक्त मत हो ४१ हे कर्ण ! सर्वस्थानों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं और सुन्दर व्रतवाली पतिव्रता स्त्रियां हैं ४२ मनुष्य मनुष्य के साथ में हास्यविनोदपूर्वक क्रीड़ा करते हैं और विषयभोग करनेवाले मनुष्य प्रत्येक देश में परस्पर रक्षा करनेवाले होते हैं ४३ हर एक मनुष्य सदैव दूसरे की बुराइयों में कुशल होता है और अपने दोषों को नहीं जानता वा जानताहुआ भी अज्ञान होकर मोहित होजाता है ४४ अपने २ धर्मपर कर्म करनेवाले राजा सब स्थानों में हैं दुराचारियों को दण्ड देते हैं और सर्वत्र धर्म के रखनेवाले मनुष्य हैं ४५ हे कर्ण ! देश के सामान्य होने से सब मनुष्य पाप को सेवन नहीं करते हैं वह अपने स्वभाव से जैसे होते हैं वैसे देवता भी नहीं होते सञ्जय बोले कि इसके पीछे राजा दुर्योधनने मित्रता की रीति से कर्ण को और हाथ जोड़कर शल्य को निषेध किया ४६ । ४७ इस के पीछे हे श्रेष्ठ ! दुर्योधन के निषेध करने से कर्णने उत्तर नहीं दिया और शल्य भी शत्रुओं के सम्मुख हुआ ४८ फिर कर्ण ने शल्य को प्रेरणा करी कि शत्रु के सम्मुख चलो ॥ ४९ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णशल्यसंवादेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसके पीछे धृष्टद्युम्न से रक्षित पाण्डवों की सेना को देखकर कर्णने शत्रु की सेना के सहनेवाले अपूर्व व्यूह को अलंकृत किया १ और रथ शङ्ख और अन्य २ बाजों के द्वारा पृथ्वी को कम्पायमान करताहुआ चला २

हे भरतर्षभ! बड़े तेजस्वी युद्ध में कुशल शत्रुसन्तापी क्रोधयुक्त कर्ण ने बुद्धि के अनुसार व्यूह को शोभित करके ३ पाण्डवों की सेना को ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि आसुरी सेना को इन्द्र छिन्न भिन्न करदेता है वहां युधिष्ठिर को घायलकरके वाम अङ्ग में करदिया ४ धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय! कर्णने भीमसेन से रक्षित उन सब पाण्डवों के सम्मुख जिन में अग्रगामी धृष्टद्युम्न था कैसे व्यूह को अलंकृत किया ५ और देवताओं से भी अजेय बड़े धनुषधारी सब युद्धकर्त्ताओं को किस २ रीति से रोका और हे सञ्जय! मेरी सेना के पक्ष और प्रपक्ष पर कौन २ हुए ६ और न्याय के अनुसार सेना का विभाग करके किस रीति से नियत हुए और पाण्डवों ने भी मेरे पुत्रों के सम्मुख कैसे २ व्यूह को रचा ७ और वह महाभयानक युद्ध कैसे जारी हुआ और उससमय अर्जुन कहां था जब कि कर्ण युधिष्ठिर के सम्मुख गया था ८ क्योंकि अर्जुन के समक्ष में युधिष्ठिर के सम्मुख जाने को कौन समर्थ होसक्ता है कि जिस अकेले ने पूर्वकाल में खाण्डव वन के सब जीवमात्रों को विजय किया उसके सम्मुख कर्ण के सिवाय कौनसा पुरुष जीवन की आशा करके युद्ध को करे ९ सञ्जय बोले कि व्यूह की रचना को सुनिये और जैसे अर्जुन वहांसे गया और जिस रीति से अपने २ राजा को घेरेहुए युद्ध जारी हुआ १० हे राजन्! सारद्वत कृपाचार्य, वेगवान् मगधदेशीय यादव कृतवर्मा यह तो दाहिने पक्षपर नियत हुए ११ और उनके प्रपक्ष पर महारथी शकुनी, और महारथी उलूक ने स्वच्छप्रास रखनेवाले सवारोंसमेत आप की सेना को रक्षित किया १२ भय से उत्पन्न होनेवाले व्याकुलता से रहित गान्धारदेशीय लोग और कठिनता से विजय होनेवाले उन पहाड़ियों समेत जोकि टीड़ीदल के समान पिशाचों के तुल्य कठिनता से देखने के योग्य थे १३ मुख न मोड़नेवाले चौबीस हजार रथी युद्ध में कुशल संसप्तकोंने बायें पक्ष को रक्षित किया १४ वह सब आपके पुत्रों से युक्त श्रीकृष्ण अर्जुन के मारने के अभिलाषी थे और पाण्डवों के प्रपक्ष में यवनों समेत काम्बोजदेशीय शकजाति के लोग हुए १५ और कर्ण की आज्ञा से रथ घोड़े और पत्तियोंसमेत सब लोग श्रीकृष्णजी और अर्जुन को पुकारतेहुए नियतहुए १६ वह अपूर्व कवच बाजूबन्द और मालाधारण करनेवाला कर्ण भी सेनामुख को रक्षित करताहुआ सेना के मुखपर नियत हुआ १७ वह अत्यन्त क्रोधित आप के पुत्रों से व्याप्त

शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शूरवीर कर्ण सेना का संहारकर्त्ता मध्य सेना मुखपर शोभायमान हुआ १८ और सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशित अपूर्वदर्शन पिङ्गल वर्ण नेत्रवाले बड़े हाथीपर सवार सेना समेत व्यूह के पृष्ठभागपर दुश्शासन नियत हुआ हे राजन्! उसके पीछे अद्भुत अस्त्र और कवचधारी निज भाइयों से और एकत्र हुए बड़े शूरवीर मद्र और कैकेयदेशियों से चारों ओर से रक्षित आप राजा दुर्योधन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि देवताओं के मध्यमें रक्षा कियाहुआ इन्द्र शोभित होताहै और अश्वत्थामा वा कौरवोंके बड़े २ महारथी शूर म्लेच्छोंसे युक्त सदैव मतवाले बादलोंके समान मदरूप जलके डालनेवाले हाथी उस रथोंकी सेना के पीछे २ चले १६।२३ वह ध्वजा पताका वा प्रकाशित उत्तम शस्त्र और सवारों समेत नियत होकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि वृक्षधारी पर्वत होतेहैं २४ उन पदाती और हाथियोंके पादरक्षक भी पट्टिश और खड्ग के धारण करनेवाले मुख न मोड़नेवाले हज़ारों शूरवीर वर्तमान थे २५ वह देवासुरों की सेना के समान व्यूहराज सवार रथ और हाथियोंसमेत अलंकृत महाशोभायमान हुआ २६ उस बुद्धिमान् सेनापतिने इस रीतिसे बार्हस्पत्य व्यूहको रचा उस नाचते हुए महाव्यूह को देखकर शत्रुओंको भय उत्पन्न हुआ २७ उस के पक्ष और प्रपक्षों से पत्ती घोड़े रथ और हाथी सब के सब युद्धाभिलाषी होकर ऐसे निकलते थे जैसे कि वर्षा ऋतु में बादल निकलते हैं २८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर कर्ण को सेना मुखपर देखकर शत्रुओं के मारनेवाले अकेले अर्जुन से बोले २९ हे अर्जुन! युद्ध में कर्ण के रचेहुए उस महाव्यूह को देखो जो पक्ष और प्रपक्षों से संयुक्त शत्रुकी सेनाको प्रकाशित करताहै ३० सो तुम इस शत्रु की बृहत्सेनाको अच्छे प्रकारसे देखकर ऐसी नीति विचारो जिससे कि यह हम को भयभीत न करे ३१ राजाके इस रीतिके वचनको सुनकर अर्जुन हाथ जोड़ कर राजा से कहनेलगा कि जैसा आप कहतेहैं वैसाही है मिथ्या नहीं है ३२ हे भरतर्षभ! जिस रीति से इसका मारना विचारकिया है उसको मैं करूंगा इसका मारना बहुत श्रेष्ठहै इससे मैं इसका नाशकरताहूं ३३ युधिष्ठिर बोले कि तुम तो कर्ण से लड़ो भीमसेन सुयोधन से नकुल वृषसेन से सहदेव सौबलसे ३४ शतानीक दुश्शासनसे सात्यकी कृतवर्मासे पाण्ड्य अश्वत्थामा से सम्मुख होकर लड़ो और मैं आप कृपाचार्य से युद्ध करूंगा ३५ और शिखण्डी समेत द्रौपदी

के सब पुत्र उन शेषबचेहुए धृतराष्ट्र के पुत्रों से सम्मुख होकर लड़नेको जाओ और सब हमारे शूरवीर उनके शूरवीरों को मारो ३६ सञ्जय बोले कि इस रीति से धर्मराज के वचनों को सुनकर अर्जुन ने कहा कि ऐसाही होगा यह कहकर अपनी सेनाओं को आज्ञा दी और आप सेनासुख पर गया ३७ जोकि यह वैश्वानर अग्नि विश्व का प्रभुहै वह प्रथम ब्रह्माजीके मुखसे उत्पन्न चन्द्रमारूप से प्रकट होनेवाला है उसीने घोड़े के रूप को पाया उस घोड़े को देवता और ब्राह्मणों ने जानलिया कि यह ब्रह्माजी के मुख से उत्पन्न है वही अकेला एक देवता अपने चाररूप बनाकर अर्जुनके रथको ले चलता है ३८ जिसने पूर्वसमयमें ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र और वरुणको क्रमपूर्वक सवार कियाहै इसहेतुसे प्रथम तो रथपर सवार होकर केशवजी और अर्जुन चले ३६ तदनन्तर शल्य उस अपूर्वदर्शनीय आतेहुए रथको देखकर उस युद्धदुर्मद अधिरथी कर्ण से बोला ४० यह श्वेत घोड़ों से युक्त सारथी श्रीकृष्णजीसमेत सब सेनाओंसे भी कठिनता से रोकने के योग्य अर्जुन का रथ आया यह रथ ऐसे कठिनतासे रोकने के योग्य है जैसे कि कर्मों का फल रोकने के योग्य नहीं होताहै ४१ हे कर्ण ! जिसको तुम पूछते थे वह शत्रुओं को मारताहुआ अर्जुन चला आता है उसका ऐसा कठोर शब्द सुनाई देता है जैसा कि बादल का घोर शब्द होता है ४२ निश्चय करके यह दोनों महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन हैं देखो यह उठी हुई धूलि आकाश को व्याप्त करके नियत है ४३ हे कर्ण ! रथके पहिये के नीचे से चलायमान पृथ्वी कम्पायमान है और महावेगवान् वायु आप की सेनाके सम्मुख चलरही है ४४ यह कच्चे मांसखानेवाले राक्षस आदि भी बोलरहेहैं यह मृग भयानक शब्दोंको करते हैं हे कर्ण ! इस घोर भयदायक रोमहर्षण करनेवाले सूर्य को आच्छादित कियेहुए बादल की सूरत केतुनक्षत्र को देखो और सब दिशाओंमें नानाप्रकार के पशुओं के झुण्ड और पराक्रमी शार्दूल सूर्यको देखते हैं हजारों भागनेवाले और सम्मुख नियत होनेवाले परस्परमें घोर शब्द करनेवाले कङ्क और गृध्रोंको देखो और हे कर्ण ! तेरे रथपर लगेहुए अति उत्तम चमर भी अग्नि के समान होगये हैं ४५ । ४८ और ध्वजा काँपती है बड़े वेगवान् उन्नत बलिष्ठ शरीर वाले घोड़ों के कम्प को देखो ४६ जैसे दर्शन करनेके योग्य आकाशमें उड़ने वाले गरुड़ों को देखते हैं उसी प्रकार निश्चय करके युद्धों में हजारों मरे हुए

राजालोग पृथ्वीपर आश्रय लेकर ५० शयन करेंगे और शङ्खों के कठोर शब्द रोमाञ्च खड़े करनेवाले सुनाई देते हैं ५१ हे कर्ण! ढोल और मृदङ्गों के शब्दों को सुनो हे राधा के पुत्र ! बाणों के मनुष्यों के और घोड़े हाथियों के शब्द ५२ महात्मा के प्रत्यञ्चा के तलत्रों के शब्दों को और कारीगरों के हाथ से सुवर्ण और चांदी से निर्मित वस्त्रों के बनायेहुए ५३ नाना प्रकार की वर्णवाली ध्वजाओं से कम्पायमान पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य और नक्षत्र रखनेवाली क्षुद्रघण्टिकायुक्त पताका रथपर महाशोभायमान फर्रारही हैं ५४ हे कर्ण ! देखो कि अर्जुन की ध्वजा वायुसे चलायमान ऐसी कणकणारही हैं जैसे कि आकाश में बिजलियां कणकणाया करती हैं ५५ और महात्मा पाञ्चालों के यह पताकाधारी रथ कैसे शोभायमानहैं ५६ वानराधीश को धारण करनेवाली अति उत्तम विजयकारिणी ध्वजा संयुक्त आनेवाले अजेय कुन्तीनन्दन अर्जुन को देखो ५७ यह चारोंओर से देखने के योग्य महाभयानक शत्रुओं का भयकारी वानर अर्जुन की ध्वजा की नोकपर दिखाई देरहा है ५८ और बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी का यह शङ्ख, चक्र, गदा और शार्ङ्ग धनुष है जिसमें श्रीकृष्णजी का कौस्तुभमणि न्यारीही, शोभा देरहा है ५९ यह शार्ङ्ग धनुष और गदा हाथ में रखनेवाले पराक्रमी वासुदेवजी वायु के समान शीघ्रगामी श्वेतघोड़ों को चलातेहुए चलेआते हैं ६० अर्जुन से खैंचाहुआ यह गाण्डीव धनुष कैसे शब्दों को करता है उस हस्तलाघवीय के छोड़ेहुए यह तीक्ष्णबाण शत्रुओं को माररहे हैं ६१ और मुख न मोड़नेवाले बड़ेलम्बे रक्तनेत्रधारी पूर्णचन्द्रमा के समान मुखवाले शूरवीरों के शिरों से यह पृथ्वी आच्छादित होती चलीआती है ६२ उठाये हुए शस्त्रों में कुशल युद्धकर्ताओं के परिघ की समान पवित्र चन्दनादि से चर्चित भुजदण्ड शस्त्रों के द्वारा गिरायेजाते हैं ६३ जिनके नेत्र और जिह्वा निकल पड़ीं वह सवारोंसमेत घोड़े पृथ्वीपर मरकर गिरेहुए सोरहे हैं ६४ पर्वत के शिखर की समान रूपवाले यह हाथी मारेगये और अर्जुन के हाथ से घायल वा चूर्णीभूत अङ्गवाले हाथी पर्वतों के समान घूमते हैं ६५ यह गंधर्वनगर के समान रूपवाले रथ जिनके कि राजा मरगये वह स्वर्गवासियों के पवित्र विमानों के समान पृथ्वीपर गिरते हैं ६६ अर्जुन के हाथ से अत्यन्त व्याकुल सेना ऐसी दिखाई देती है जैसे कि नाना प्रकार के हज़ारों पशुओं के समूह केशरीसिंह से व्याकुल होते हैं ६७

आपके हाथी घोड़े रथ और पत्तियों के समूहों को मारनेवाले सम्मुख दौड़नेवाले यह वीर पाण्डवलोग राजाओं को मारते हैं ६८ जैसे कि बादलों से सूर्य ढक जाता है उसी प्रकार यह अर्जुन ढकाहुआ दिखाई नहीं देता है उसकी ध्वजा की नोकही दिखाई देती है और प्रत्यञ्चा का शब्द भी सुनाजाता है अब उस श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले युद्ध में शत्रुओं के मारनेवाले वीर अर्जुन को देखोगे ६९ जिसको कि तुम पूछते थे हे कर्ण! अब तुम इन पुरुषोत्तम लालनेत्र शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले एकरथ पर नियत अर्जुन और वासुदेवजी को देखोगे ७० जिसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं और धनुष जिसका गाण्डीव है हे कर्ण! उसको जो तुम मारोगे तो हमारे राजा होगे ७१ संसप्तकों का बुलाया हुआ यह अर्जुन उनके समीप सम्मुख होकर उन महापराक्रमियों का युद्ध में नाश कररहाहै ७२ ऐसे शल्य के वचनों को सुनकर कर्ण महाक्रोध-युक्त होकर बड़े अहङ्कार से बोला कि हे शल्य! तुम महाक्रोधयुक्त संसप्तकों से सब ओर से घिरेहुए अर्जुन को देखो ७३ जैसे कि सूर्य बादलों से ढकजाय उसी प्रकार ढकाहुआ यह अर्जुन दिखाई नहीं पड़ता है हे शल्य! अर्जुन ऐसेही अन्त का करनेवाला है जोकि युद्धकर्ताओंके समुद्रमें डूबरहा है ७४ शल्य बोला कि, कौन पुरुष वरुण को जल से मारे और कौन मनुष्य इन्धन से अग्नि को बुझावे और कौन हवा को पकड़े अथवा कौन पुरुष महासमुद्र को पानकरे ७५ मैं युद्ध में अर्जुन का मरना असम्भव मानता हूं इन्द्रसमेत देवतालोग भी युद्ध में अस्त्रों से अर्जुन को विजय नहीं करसके ७६ अब तेरी प्रसन्नता है तो अपने वचन को कहकर चित्त को प्रसन्न कर वह तो युद्ध में किसी से विजय करने के योग्य नहीं है अब तू दूसरे मनोरथ को कर ७७ जो भुजाओं से पृथ्वी को उठा-सके और क्रोधयुक्त होकर इन सब जड़ चैतन्यों का नाशकरे स्वर्ग से देवताओं को गिरासके उस अर्जुन को युद्ध में कौन विजय करसक्ता है ७८ साधारणकर्मी महाप्रकाशमान द्वितीय मेरुपर्वत के समान नियत महाबाहु कुन्ती के पुत्र शूर-वीर भीमसेन को देखो ७९ कि सदैव क्रोधयुक्त असहिष्णु विजयाभिलाषी यह पराक्रमी भीमसेन चिरकाल की शत्रुता को स्मरण करता युद्ध में नियत है ८० यह धर्मधारियों में श्रेष्ठ युद्ध में शत्रुओं के साथ कठिन कर्म करनेवाला शत्रुओं के पुरों का विजय करनेवाला धर्मराज युधिष्ठिर नियत है ८१ यह कठिनता से

विजय होनेवाले दोनों पुरुषोत्तम अश्विनीकुमारों के समान निज सहोदर नकुल सहदेव दोनों भाई युद्ध में नियत हैं ८२ यह पांच पर्वतों के समान पांचो द्रौपदी के पुत्र नियत हैं यह सब अर्जुन के समान युद्धाभिलाषी युद्ध में वर्तमान हैं ८३ बल की वृद्धिवाले बड़े तेजस्वी सत्यवक्ता द्रुपद के शूरवीर पुत्र जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न है वह भी नियत हैं ८४ इन्द्र के समान असह्य पूर्व समय में क्रोधयुक्त मृत्यु के समान यादवों में श्रेष्ठ युद्धाभिलाषी यह सात्यकी हमारे सम्मुख आता है ८५ उन दोनों पुरुषोत्तमों के इस रीति से वार्त्तालाप करते २ वह दोनों सेना श्रीगङ्गा और यमुना के समान बड़े वेग से भिड़गईं ॥ ८६ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णशल्यसंवादेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इस रीति से सेनाओं के तैयार होनेपर और अच्छी रीतिसे भिड़जाने पर अर्जुन किस रीति से संसप्तकों के सम्मुख गया और कर्ण कैसे पाण्डवों के सम्मुख गया १ इस युद्ध को ब्यौरे समेत कहो क्योंकि तुम बड़े चतुर हो मैं युद्धमें शत्रुओं के पराक्रमों के सुननेसे तृप्त नहीं होताहूं २ सञ्जय बोले कि आपके पुत्रके हेतु अन्याय होनेपर अर्जुन ने शत्रुओं की बड़ी सेनाको नियत जानकर व्यूह को रचा वह अश्वसवार हाथियों समेत रथ और पदातियों से आवृत बड़ी सेनावाला व्यूह जिसमें मुख्य धृष्टद्युम्न था शोभायमान हुआ ३ । ४ चन्द्रमा और सूर्य के समान तेजस्वी धनुषधारी मूर्त्तिमान् काल के समान धृष्टद्युम्न कपोतवर्ण घोड़ों समेत शोभित हुआ ५ दिव्य कवच और धनुष रखनेवाले शार्दूल के समान पराक्रमी शरीर से प्रकाशमान युद्धाभिलाषी द्रौपदी के पुत्रों ने अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्नको ऐसा रक्षित किया जैसे कि तारागण चन्द्रमा को रक्षित करते हैं तदनन्तर सेनाओं के सन्नद्ध होनेपर युद्ध में संसप्तकों को देख कर ६ । ७ क्रोधयुक्त अर्जुन अपने गाण्डीव धनुषको टङ्कारताहुआ सम्मुखगया इसके पीछे मारने के अभिलाषी संसप्तकलोग अर्जुन के सम्मुख दौड़े ८ वह विजय में सङ्कल्प करनेवाले मृत्यु को तिरस्कार करके सम्मुख गये मनुष्य, हाथी, घोड़ों के समूहों से युक्त मतवाले हाथी और रथों से व्याप्त ९ पत्तियों से युक्त शूर वीरों के उस समूह को अर्जुन ने बड़ी शीघ्रतासे पीड़ित किया अर्जुनके साथ में उनलोगों का ऐसा कठिन युद्ध हुआ १० जैसा कि उसका युद्ध निवातकवचियों

के साथ हमने सुना था रथ, घोड़े, ध्वजा, हाथी इन युद्धमें वर्तमानोंको भी ११ बाण धनुष खड्ग चक्र फरसे आदि नाना प्रकारके शस्त्रों को उठायेहुए भुजाओं वा नाना प्रकार के शस्त्रों १२ को और शत्रुओं के हज़ारों शिरोंको अर्जुनने काटा तब पातालतल के समान उस सेनारूपी सागर में १३ इस प्रकार मग्न हुए उस रथ को देखकर संसप्तकलोग गर्जे तदनन्तर उसने उन शत्रुओं को मारकर फिर भी उत्तर की ओर से मारा १४ दक्षिण और पश्चिम ओरसे भी ऐसा मारा जैसे कि क्रोधयुक्त रुद्र पशुओं को मारते हैं उसके पीछे हे श्रेष्ठ! पाञ्चाल चन्देरी और सृञ्जयदेशियों के युद्ध १५ आपके युद्धकर्त्ताओं से बड़े भारी कठिन हुए युद्ध में दुर्मद अत्यन्त क्रोधयुक्त रथसमेत सेनाको मारनेवाले प्रसन्नचित्त कृपाचार्य कृतवर्मा और सौबल के पुत्र शकुनी ने कोशल, काशी, मत्स्य, कारूष, कैकय १६ । १७ और शूरसेनदेशीय उत्तमशूरों समेत युद्ध किया यह तीनों उन के युद्ध का अन्त करनेवाले शरीर पाप और प्राणों के नाशकरनेवाले १८ क्षत्रिय वैश्य और शूद्र वीरों के धर्म स्वर्ग और यश के उत्पन्न करनेवाले हुए हे भरतर्षभ! इसके पीछे बड़ेवीर कौरव और महारथी मद्रदेशियों से रक्षित वीर दुर्योधन ने भाइयों समेत युद्ध में आकर पाण्डव पाञ्चाल और चन्देरीदेशियों समेत सात्यकी के साथ १९ । २० युद्ध करनेवाले कर्ण को चारों ओरसे रक्षित किया फिर कर्णने भी तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे बड़ीभारी सेनाको मारकर २१ उत्तम २ रथियों को मर्दन करके युधिष्ठिर को पीड्यमान किया हज़ारों शत्रुओं को वस्त्र शस्त्र शरीर और प्राणों से पृथक्कर २२ स्वर्ग और यश को स्पर्श करके अपने शूरवीरों को प्रसन्न किया हे श्रेष्ठ ! इस रीतिसे मनुष्य हाथी और घोड़ोंका नाश करनेवाला युद्ध कौरव और सृञ्जयों में देवासुरों के युद्धके समान हुआ ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिपरस्परयुद्धेऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय ! मनुष्योंका नाश करनेवाले कर्णने पाण्डवोंकी उस सेना में जाकर राजा युधिष्ठिर को जैसे अचेत किया वह सब मुझसे वर्णन करो १ युद्धमें पाण्डवों के कौन २ से बड़े वीरों ने कर्णको रोका और अधिरथी कर्ण ने कौन २ से वीरोंको मथकर युधिष्ठिरको पीड़ित किया २ सञ्जय बोले कि शत्रुओं का विजय करनेवाला कर्ण सम्मुख वर्तमान पाण्डवोंको जिनमें मुख्य

धृष्टद्युम्न था देखकर शीघ्रही पाञ्चाल के सम्मुख दौड़ा ३ विजयसे शोभायमान पाञ्चाल शीघ्रही उस सम्मुख दौड़नेवाले महात्माके सम्मुख ऐसे गये जैसे कि हंस सम्मुख जाते हैं ४ इसके पीछे दोनों ओर से हज़ारों शङ्खों के चित्तरोचक शब्द प्रकट हुए और भेरियों के भयानक शब्द होनेलगे ५ तब नाना प्रकारके बाणों का गिरना और हाथी घोड़े वा रथोंके शब्द और भयकारी वीरों के सिंहनाद उत्पन्न हुए ६ पर्वत वृक्ष और समुद्रसमेत पृथ्वी वायु और बादलोंसमेत आकाश अथवा सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्रादिकसमेत स्वर्ग यह सब प्रत्यक्षमें घूमनेलगे ७ सबजीव-मात्र उस शब्द को इस प्रकार का मानकर घातकरने से बन्द हुए और छोटे २ जीव तो भयभीत होकर मरगये ८ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने शीघ्र ही अस्त्र को प्रकट करके पाण्डवीय सेना को ऐसे मारा जिस प्रकार आसुरीसेना को इन्द्र मारता है ९ बाणों को छोड़तेहुए उस कर्ण ने पाण्डवीय सेना में घुस कर प्रभद्रकों के बड़े २ सतहत्तर वीरों को मारा १० इसके पीछे उस महारथी कर्ण ने सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्णधार पच्चीस उत्तम बाणों से पचीसही पाञ्चालों को मारा ११ फिर उस वीर ने सुनहरी पुङ्खवाले शत्रुओं के चीरनेवाले नाराचों से हज़ारों चन्देरीदेशियों को भी मारा १२ हे महाराज ! इसके पीछे पाञ्चालों के रथसमूहों ने इस रीति के बुद्धि से बाहर कर्म करनेवाले कर्ण को चारों ओर से घेर लिया १३ फिर तो सूर्य के पुत्र महात्मा कर्णने दुस्सह पांचविशिखों को धनुषपर चढ़ाकर पांच पाञ्चालों को मारा १४ अर्थात् हे भरतर्षभ ! युद्ध में भानु-देव, चित्रसेन, सेनाबिन्दु, तपन, शूरसेन इन पाञ्चालों को मारा १५ उस युद्ध में शूरवीर पाञ्चालों के मरने पर पाञ्चालों में बड़ा हाहाकार हुआ १६ हे महाराज ! तब तो पाञ्चालोंके दश महारथियोंने कर्णको चारोंओर से घेर लिया उस समय भी कर्णने शीघ्रही बाणों से उनको मारा १७ इसके पीछे चक्र के रक्षक दुर्जय कर्ण के पुत्र सुषेन और सत्यसेन ने कर्ण को त्यागकर युद्ध किया १८ फिर कर्ण के पुत्र पृष्ठरक्षक वृषसेन ने कर्ण को पीछे की ओर से रक्षित किया १९ कवच और शस्त्रों के धारण करनेवाले धृष्टद्युम्न, सात्यकी, द्रौपदी के पुत्र, भीमसेन, जनमेजय, शिखण्डी और बड़े वीर प्रभद्रक २० चन्देरी, केकय, पाञ्चालदेशीय, नकुल, सहदेव और मत्स्यदेशीय शूरवीर यह सब मारने के इच्छावान् उस प्रहार करने वाले कर्ण के सम्मुख दौड़े २१ और नाना प्रकार की बाणवर्षा से इस कर्ण

को ऐसा मर्दन किया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल पर्वत को मर्दन करते हैं २२ इसके पीछे पिता के चाहनेवाले प्रहारकर्ता कर्णके पुत्रोंने और आपके अन्य २ वीरों ने उन सब वीरों को रोका २३ सुसेन भल्ल से भीमसेन के धनुष को काट कर और सात नाराचों से भीमसेन को छातीपर घायल करके गर्जा २४ इसके पीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन ने बड़े दृढ़ दूसरे धनुष को लेकर अपने बाण से सुसेन के धनुष को २५ काटकर क्रोधसे युक्त नाचतेहुए भीमसेन ने दश बाणों से उसको घायल किया और बड़ी शीघ्रता से कर्ण को भी तिहत्तर बाणों से घायल किया २६ और देखनेवाले मित्रों के मध्य में कर्ण के पुत्र भानुसेन को घोड़े, सारथी, रथ, शस्त्र और ध्वजासमेत दशबाणों से गिरादिया २७ फिर क्षुरप्र से कटाहुआ उसका वह प्रकाशमान शिर ऐसा शोभित मालूमहुआ जैसे कि नाल से जुदाहुआ कमल होता है २८ भीमसेन ने कर्ण के पुत्र को मारकर आपके शूरवीरों को फिर पीड्यमान करके कृपाचार्य और कृतवर्मा के धनुषों को काटकर उनको भी व्याकुल किया फिर दुश्शासन को तीनबाण से और शकुनी को छः लोहे के बाणों से घायल करके उलूक और पत्री इनदोनों को विरथ किया हाय सुसेन को मारा है ऐसा कहतेहुए भीमसेन ने शायक को लिया तब कर्ण ने उसके उस बाण को काटकर तीन बाणों से उसको भी घायल किया २९।३१ इसके पीछे भीमसेनने सुन्दर पर्ववाले बाण को लेकर सुसेनके ऊपर छोड़ा फिर कर्ण ने उस बाण को भी काटा ३२ इसके पीछे पुत्र को चाहते निर्दय कर्ण ने मारने की इच्छा से तिहत्तर बाणों से निर्दय होकर भीमसेन को फिर घायल किया ३३ फिर सुसेन ने बड़े भारवाहक उत्तम धनुष को लेकर पांच बाणों से नकुल को दोनों भुजा और छातीपर घायलकिया ३४ तब नकुल भी भारसहनेवाले बीस बाणों से उसको घायल करके बड़े शब्द से गर्जा और कर्ण के भय को उत्पन्न किया ३५ फिर महारथी सुसेन ने शीघ्रगामी तीक्ष्ण दशबाणों से उसको घायल करके शीघ्रही क्षुरप्र से उसके धनुष को काटा ३६ इसके पीछे क्रोध से भरेहुए नकुल ने दूसरे धनुष को लेकर युद्ध में नौबाणों से सुसेन को रोककर ३७ उस शत्रुहन्ता ने बाणों से दिशाओं को ढककर इसके सारथी को घायल किया फिर सुसेन को तीनबाण से ३८ और तीन भल्लों से उसके बड़े दृढ़ धनुषके तीनखण्ड करदिये इसके पीछे क्रोधयुक्त सुसेनने दूसरे धनुषको लेकर ३९

साठबाणों से नकुल को घायल करके सातबाणों से सहदेव को छेदा परस्पर के युद्ध में शीघ्रतापूर्वक शायक मारनेवाले वीरों का युद्ध देवासुरों के युद्ध के समान हुआ फिर सात्यकी तीन बाणों से वृषसेनके सारथी को मारकर ४०।४१ भल्ल से उसके धनुषको काट घोड़ों को भी सातबाणोंसे मारा एक बाण से ध्वजा को काटकर तीनबाणों से उसको भी हृदयपर घायलकिया ४२ इसके पीछे एक मुहूर्त अपने रथपर अचेत होकर फिर उठ खड़ा हुआ युद्ध में सात्यकी के हाथ से सारथी घोड़े रथ और ध्वजा से रहित कियाहुआ वह वृषसेन ४३ सात्यकी के मारने की इच्छा से ढाल तलवार बांधकर सात्यकी के सम्मुख गया उस शीघ्रता से आनेवाले वृषसेन की ढाल तलवार को सात्यकी ने ४४ वराहकर्ण नाम दशबाणोंसे काटा और दुश्शासनने उस रथ और शस्त्रसे हीन वृषसेनको देखकर ४५ अपने रथपर सवार करके शीघ्रही दूसरे रथपर सवारकिया इसके पीछे महारथी वृषसेन ने दूसरे रथपर सवार होकर ४६ तिहत्तर बाणों से द्रुपद के पुत्रों को और पांचबाणों से सात्यकी को चौंसठ बाणों से भीमसेनको पांच से सहदेवको ४७ तीनबाणों से नकुल को सातबाणों से शतानीक को दश बाण से शिखण्डी को और सौबाणों से धर्मराजको घायलकिया ४८ हे राजन् ! उस धनुषधारी कर्ण के पुत्रने इन और अन्य २ शूरवीरोंको पीड्यमान किया ४९ इसके पीछे उस अजेय ने युद्ध में कर्ण के पृष्ठभागको रक्षितकिया फिर सात्यकी ने नवीन लोहेके नौ बाणों से दुश्शासन को ५० सारथी घोड़े और रथसे विहीन करके तीन बाण से उसके ललाट को घायल किया फिर वह दुश्शासन बुद्धि के अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर ५१ कर्णके बल को बढ़ाता हुआ पाण्डवों के साथ युद्ध करनेलगा इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने दश बाणों से कर्ण को घायलकिया ५२ द्रौपदी के पुत्रों ने तिहत्तर बाणों से सात्यकीने सात बाणों से भीमसेन ने चौंसठ बाणों से सहदेव ने सात बाणों से नकुल ने तीन सौ बाण से शतानीक ने सातबाण से ५३ शिखण्डी ने दशबाणों से और वीर धर्मराजने सौबाणों से घायलकिया ५४ हे राजेन्द्र ! विजयाभिलाषी इनवीरोंने और अन्यवीरोंने उस महायुद्ध में बड़ेभारी धनुषधारी को पीड्यमान किया ५५ फिर रथसे घूमकर उस शत्रुविजयी वीर कर्ण ने विशिखनाम दश २ बाणों से प्रत्येकको घायलकिया ५६ हे महाबाहो ! हमने महात्मा कर्ण के अस्त्रबल और

हस्तलाघवताको देखकर बड़ा आश्चर्य किया ५७ क्रोधमें बाणों को लेते चढ़ाते और मारतेहुए कर्ण को नहीं देखा परन्तु शत्रुओं को मृतक हुआ देखा ५८ उस समय तीक्ष्णधारवाले बाणों से पृथ्वी स्वर्ग दिशा और आकाशभर व्याप्त होगया उस स्थानपर आकाश लालबादलों से व्याप्त होने के समान परिपूर्ण होगया ५६ उस समय धनुष हाथ में लिये नाचताहुआ प्रतापवान् कर्ण जिन २ के हाथसे घायलहुआथा उन २ को एक २ करके तिगुने बाणोंसे घायल किया ६० फिर हज़ारबाणों से उनको घायल करके बड़ेवेग से गर्जा इसके पीछे घोड़े रथ सारथी समेत वह सब लोग घायल हो होकर हटगये ६१ शत्रुओं का घायल करनेवाला कर्ण बाणों की वर्षा से उन बड़े २ धनुषधारियों को मथ कर परस्पर मर्दनरूप पीड़ासे रहित होकर हाथियोंकी सेनाओं में आया ६२ वहां उस कर्ण ने मुख न मोड़नेवाले चन्देरीदेशियों के तीनसौ रथों को मारकर तीक्ष्णधार वाले बाणों से युधिष्ठिरको घायलकिया ६३ इसकेपीछे हे राजन्! सब पाण्डव सात्यकी और शिखण्डी जोकि राजा को कर्णसे रक्षा कररहे थे उन सबने आकर युधिष्ठिर को चारों ओर से रक्षित किया ६४ उसी प्रकार सावधान शूरवीर महाधनुषधारी आपके सब युद्धकर्ताओं ने युद्ध में दुर्जय कर्ण को चारोंओर से रक्षित किया ६५ हे राजन्! फिर नाना प्रकार के बाजों के शब्द प्रकटहुए और सम्मुख गर्जनेवाले वीरोंके सिंहनाद उत्पन्नहुए ६६ इसके पीछे निर्भय पाण्डव और कौरव फिर सम्मुख हुए पाण्डवों का मुख्य युधिष्ठिर था और हमारा मुख्य अग्रगामी कर्ण था ॥ ६७ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेनवचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

पचासवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे हज़ारों रथ घोड़े हाथी और पत्तियों समेत कर्ण उस सेनाको चीरकर युधिष्ठिरके सम्मुखगया १ वहां कर्ण निर्भयतापूर्वक शत्रुओं से सन्तप्तहोकर नानाप्रकारके हज़ारों शस्त्रोंको काटकर सैकड़ों महाउग्र बाणोंसे शत्रुओंको घायल किया २ कर्णने उनके शिर जङ्घा और भुजाओंको काटा तब वह घायल और मृतक होकर पृथ्वीपरपड़े और बहुतसे भागगये ३ फिर सात्यकी के कहनेपर द्राविड़ निषाद और शूरवीर पत्तीलोग युद्ध में मारने की इच्छा से कर्णके सम्मुखगये ४ वह लोगभी कर्णके हाथसे शायक और भुजाओंसे रहित

होकर मारेगये और एकसाथही पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि टूटाहुआ तालका वन गिरपड़ताहै ५ इसरीतिसे युद्धभूमिमें दिशाओंको व्यासकरते सैकड़ों और हज़ारों शूरवीर मृतक होकर पृथ्वीपर वर्तमानहुए इसके पीछे पाण्डव और पाञ्चालोंने मृत्युके समान सूर्य के पुत्र कर्णको ऐसे रोका जैसे कि मन्त्र और ओषधियोंके द्वारा रोगको रोकतेहैं ६।७ वह कर्ण उनकोभी मर्दनकरके फिर युधिष्ठिर के पास ऐसे पहुँचा जैसे कि मन्त्र वा ओषधियों के कर्म को उल्लङ्घन करनेवाला महाकठिन रोग होता है ८ राज्य के अभिलाषी पाण्डव पाञ्चाल और केकय लोगों से रोकाहुआ वह कर्ण उल्लङ्घन करने को ऐसे समर्थ नहीं हुआ जैसे कि काल ब्रह्मज्ञानी को नहीं उल्लङ्घन करसक्ता है ९ इसके पीछे समीप वर्तमान शत्रुविजयी रोकेहुए कर्ण से वह क्रोध से रक्तनेत्र युधिष्ठिर बोले १० हे वृथा दीखने वाले, सूतपुत्र, कर्ण ! मेरे वचन को सुन तू सदैव युद्ध में महावेगवान् अर्जुन से ईर्षा करता है ११ और दुर्योधन के मत में होकर सदैव हमलोगों को पीड़ा देता है तेरा तेज बल पराक्रम और पाण्डवों के साथ में जो शत्रुता है १२ उस सबको तू बड़ी वीरता में नियत होकर दिखला अब मैं बड़े युद्ध में तेरे युद्ध के निश्चय का नाश करूंगा १३ हे महाराज ! पाण्डव युधिष्ठिर ने कर्ण से ऐसे वचन कहके सुनहरी पुङ्खवाले दशबाणों से उसको घायल किया १४ हे भरतवंशिन् ! शत्रुओं के विजयी कर्ण ने हँसकर विषदन्तनाम दशबाणों से उसको घायलकिया १५ हे श्रेष्ठ ! कर्ण के हाथ से घायल वह युधिष्ठिर उसको तुच्छ करके ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि हव्य के कारण से अग्नि प्रज्वलित होती है १६ प्रलयकाल करने की इच्छावाली ज्वालाओं की मालाओं से व्याप्त युधिष्ठिर का शरीर ऐसा दिखाई दिया जैसे कि प्रलयकाल में कामनाओं का भस्म करनेवाला दूसरा संवर्तक अग्नि होता है १७ हे राजेन्द्र ! इसके पीछे वह सेना के मनुष्य जोकि अत्यन्त प्रकाशित शस्त्रों के धारण करनेवाले थे और जिनके प्रकाशमान वस्त्र और माला गिरपड़ी थीं वे दशोदिशाओं को भागे १८ उसके पीछे सुवर्ण से जटित बहुत बड़े धनुष को टङ्कार कर पर्वतों के भी विदीर्ण करनेवाले बहुत तीक्ष्णबाणों को चढ़ाया १९ इसके पीछे राजा ने कर्ण के मारने की इच्छा से शीघ्र कर्णतक खींचेहुए यमराज के दण्ड की समान बाण को छोड़ा २० फिर वह उस वेगवान् के हाथ से छूटाहुआ बिजली के समान

शब्दायमान बाण अकस्मात् उस महारथी कर्ण के बाईकोख में नियत हुआ २१ तब वह महाबाहु उस बाण से पीड़ित होकर रथपर धनुष को छोड़कर अचेत होगया २२ इसके पीछे दुर्योधन की बड़ी सेना ने कर्ण को उसदशा में विपरीतचेष्टायुक्त देखकर बड़ा हाहाकार किया २३ हे राजन्! युधिष्ठिर के पराक्रम को देखकर पाण्डवों का सिंहनाद और क्रीड़ापूर्वक किलकिला शब्द प्रकट हुआ २४ फिर बड़े पराक्रमी कर्ण ने थोड़ेही काल में सचेत होकर राजा के मारने का मनोरथ किया २५ और उस साहसी ने सुवर्णजटित विजयनाम धनुष को टङ्कारकर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से पाण्डवों को घायल किया २६ इसके पीछे युद्ध में महात्मा राजा के चक्र के रक्षक पाञ्चालदेशीय चन्द्रदेव और दण्डधार को दो क्षुरप्रों से घायल किया २७ धर्मराज के वह दोनों बड़ेवीर दोनों पहियों की ओर रथ के समीप ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि चन्द्रमा के पास पुनर्वसु नक्षत्र शोभायमान होते हैं २८ युधिष्ठिर ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से कर्ण को फिर छेदा और सुसेन वा सत्यसेन को तीनबाणों से घायल किया २९ शल्य को नब्बे बाणों से और कर्ण को तिहत्तर बाणों से पीड्यमान किया और उनके उन रक्षकों को सीधे चलनेवाले तीन २ बाणों से घायल किया ३० इसके पीछे धनुष को चलायमान करताहुआ वह कर्ण बहुत हँसा और भल्ल से राजा को व्यथितकर साठबाणों से घायल करके गर्जा ३१ इसके पीछे युधिष्ठिर पाण्डव के बड़े २ वीर क्रोधयुक्त होकर युधिष्ठिर की रक्षाकरने को कर्ण के सम्मुख दौड़े और बाणों से उसको पीड्यमान किया ३२ सात्यकी, चेकितान, युयुत्सु, पाण्ड्य, धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पुत्र, प्रभद्रक ३३ नकुल, सहदेव, भीमसेन, शिशुपाल के पुत्र, कारुष्य, मत्स्य, कैकेय, काशी, कोशल इनदेशों के शेष शूरवीरों ने ३४ सुसेन को घायलकिया और पाञ्चालदेशीय जनमेजय ने शायकों से कर्ण को पीड़ित किया ३५ बराहकर्ण, नाराच, नालीक, वत्सदन्त, विपाठ, क्षुरप्र, चुटका, मुख ३६ और नाना प्रकार के उग्रशस्त्रों से और रथ हाथी घोड़े और अश्वसवारों से कर्ण को घेरकर मारने की इच्छा से सम्मुख दौड़े ३७ सब प्रकार करके पाण्डवों के उत्तम शूरवीरों से घिराहुआ होकर ब्रह्मास्त्र को प्रकट करतेहुए उस कर्णने बाणों से दिशाओं को व्याप्त करदिया ३८ इसके पीछे बाणरूप बड़ी अग्नि और पराक्रमरूप बड़ी उष्णता रखनेवाला अग्निरूप

कर्ण पाण्डवरूपी वन को भस्मकरताहुआ इधर उधर भ्रमणकरने लगा ३९ फिर बड़े धनुषधारी वीर कर्ण ने हँसकर महाअस्त्रों को चढ़ाकर बाणों से महाराजा युधिष्ठिर के धनुष को काटा ४० इसके पीछे कर्णने एक पलभर मेंही नब्बे बाणों को चढ़ाकर युद्ध में राजा के कवच को छेदा ४१ उससमय वह रत्नजटित सुवर्ण से खचित कवच पृथ्वीपर गिरताहुआ ऐसा शोभायमानहुआ जैसा कि बिजली का रखनेवाला बादल वायु से ताड़ित होकर सूर्य से चिपटाहुआ होता है ४२ उस महाराजके शरीरसे गिराहुआ अपूर्व रत्नोंसे अलंकृत वह कवच ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि रात्रिके समय बादलों से रहित आकाश होता है ४३ इसके पीछे बाणोंसे टूटे कवच रुधिरसे भरेहुए उस राजा ने केवल लोहे की बनीहुई शक्तिको कर्णके ऊपर फेंका ४४ कर्णने उस अग्निरूपी शक्ति को आकाश मेंही सात बाणों से काटा और वह शक्ति पृथ्वीपर गिरपड़ी ४५ इसके पीछे २ पाण्डव युधिष्ठिर चार तोमरोंसे कर्णको दोनों भुजा ललाट और हृदयपर घायलकरके बड़ी प्रसन्नतासे गर्जा ४६ फिर रुधिरभरे क्रोधयुक्त सर्प के समान श्वास लेनेवाले कर्ण ने भल्ल से ध्वजाको काटकर तीन बाणों से पाण्डव युधिष्ठिरको घायल किया ४७ और उसके दोनों तूणीरोंको काटकर रथको तिल २ के समान चूर्ण करडाला जिन कृष्णवर्ण बालरखनेवाले दन्तवर्ण घोड़ोंने युधिष्ठिर को सवार किया ४८ राजा उन घोड़ों के रथपर चढ़कर मुख मोड़कर घर को चलदिया इसरीति से वह युधिष्ठिर जिसका सारथी और पीछे रहनेवाला मरगया था वह हटगया ४९ फिर वह महाखेदितचित्त होकर कर्ण के सम्मुख होने को समर्थ नहीं हुआ फिर कर्ण ने पाण्डव युधिष्ठिर के पास जाकर ५० वज्र, अंकुश, मत्स्य, ध्वजा, कच्छप और कमल आदि के चिह्नवाले हाथ से उसको पकड़ना चाहा ५१ और अपने पवित्र होनेको हाथसे कन्धेको छूकर बलसे पकड़ना चाहाही था कि कुन्ती का वचन उसको स्मरण होआया ५२ तब शल्य ने कहा कि हे कर्ण ! इस उत्तम राजा को मत पकड़ो वह पकड़तेही तुझको भस्म न करडाले ५३ हे राजन् ! इस बातके सुनतेही वह कर्ण हँसा और पाण्डवों की निन्दा करता हुआ बोला बड़े कुल में उत्पन्न क्षत्रियधर्म में नियत होकर ५४ इस बड़े युद्ध में भयभीतता से प्राणों की रक्षा करते युद्धको त्यागकर कैसे जाते हो इससे मेरे मत से आप क्षत्रियधर्म में कुशल नहीं हो ५५ आप ब्राह्मणों के समूहों में वेदपाठ और यज्ञ

करने में योग्य हो हे कुन्ती के पुत्र ! युद्ध मत करो और वीरोंके सम्मुख मत हो ५६ इनको अप्रिय मत कहो बड़े युद्ध में मत जाओ उस बड़े वीरने इसरीति से कहकर पाण्डव को छोड़ ५७ पाण्डवीय सेना को ऐसे मारा जैसे वज्रधारी इन्द्र आसुरी सेना को मारता है हे राजन् ! इसके पीछे लज्जायुक्त राजा युधिष्ठिर शीघ्रही हटगया ५८ तदनन्तर उस अजेय राजाको हटाहुआ मानकर आगे लिखेहुए वीर इसके पीछे २ चले चन्देरी देशवाले, पाण्डव, पाञ्चाल, महारथी सात्यकी ५६ शूर द्रौपदीके पुत्र, नकुल, सहदेव इत्यादि तदनन्तर युधिष्ठिर की सेना को फिराहुआ देखकर ६० अत्यन्त प्रसन्नचित्त कर्ण कौरवों समेत पीछे की ओर से चला और धृतराष्ट्र के पुत्रों के भेरी, शङ्ख, मृदङ्ग, धनुष ६१ और सिंहनादों के शब्द हुए हे कौरव्य, महाराज ! फिर युधिष्ठिर ने शीघ्रही ६२ श्रुतकीर्ति के रथपर चढ़कर कर्ण के पराक्रम को देखा फिर धर्मराज अपनी सेना को छिन्न भिन्न देखकर ६३ महाक्रोधित हो अपने शूरवीरोंसे बोला कि तुम कैसे खड़े हो इनको क्यों नहीं मारते तब वह राजा की आज्ञा पाकर पाण्डवों के सब महारथी ६४ जिनमें अग्रगामी भीमसेन था आपके पुत्रों के सम्मुख दौड़े तब वहां शूरवीरोंके बड़े कठोर शब्दहुए ६५ रथ हाथी घोड़े और पत्तियोंके जहां तहां शब्द होनेलगे फिर उठो घायलकरो सम्मुख होजाओ दौड़ो ६६ इस प्रकार की परस्पर में वार्ता करतेहुए शूरवीरों ने उस बड़े युद्ध में एक ने एक को मारा और आकाशमें बाणोंके कारण घटासी छागई ६७ परस्परमें मारनेवाले लौटेहुए उत्तम पुरुषोंके हाथसे युद्धमें ध्वजा पताकाओंसे खण्डित घोड़े सारथी और शस्त्रोंसेरहित एक २ शरीरके अङ्गोंसे चूर्णित राजालोग मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े ६८ जैसे कि टूट २ कर पहाड़ों के शिखर गिरपड़ते हैं इसी प्रकार सवारों समेत ६९ उत्तम २ हाथी मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्र से टूटेहुए सारोह भूषण और कवचोंसे संयुक्त पर्वत गिरते हैं ७० हज़ारों सवारों समेत घोड़े जिन के बहुत से शूरवीर मारेगये वह भी पृथ्वीपर गिरपड़े और जिनके शस्त्र अत्यन्त टूटगये वह रथहीन होकर रथों सेही मारेगये ७१ और युद्ध में सम्मुख युद्ध करनेवाले वीरों से पत्तियों के हज़ारों समूह मारेगये बड़ी लम्बी लाल आँख और चन्द्रमा कमल के समान मुख रखनेवाले ७२ युद्धकुशल पुरुषों के उत्तम शिरों से सब ओर में पृथ्वी आच्छादित होगई और जो २ काम पृथ्वीपर हुआ उसका

शब्द मनुष्यों ने आकाश में भी सुना ७३ उत्तमगीत और बाजों समेत अप्स-राओं के समूह हज़ारों वीरलोगों को ७४ विमानों में बैठाकर लिये जाती थीं उस बड़े आश्चर्य को प्रत्यक्ष में देखकर स्वर्ग की अभिलाषासे ७५ अत्यन्तप्रसन्न-चित्त शूरवीरों ने बड़ी शीघ्रता से परस्पर में मारा और रथियों ने रथों समेत बड़ी वीरता से अद्भुत युद्धकिया ७६ पत्तियों ने पत्तियों के साथ हाथियों ने हाथियों के साथ घोड़ों ने घोड़ों के साथ मनुष्य और हाथियों का नाशकारक युद्धकिया ७७ इस रीति के युद्ध जारी होने और धूलि से सेना के ढकजाने पर कचाकच युद्ध हुआ और एकने एकको वा अपनों ने अपने को मारा और अन्योन्य में बालों का पकड़ना दाँतों से काटना नखों से विदीर्ण करना ७८ मुष्टि प्रहार करना भुजासे भुजाको तोड़ना यह सब युद्ध पाप और प्राणोंके नाशकारीहुए इसरीति से हाथी घोड़े और मनुष्योंका नाशकारक युद्ध जारी होनेपर ७९ मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरों से रुधिरकी ऐसी नदी बह निकली जिसने हाथी घोड़े और मनुष्यों के कटे गिरे शरीरों को पृथ्वीपर बहाया ८० मनुष्य हाथी और हाथियों के परस्पर जुड़जानेपर घोड़े हाथी और सवारोंका रुधिररूप जल रखनेवाली ८१ महाघोर मांस, रुधिर, मज्जारूप कीच से संयुक्त नदी मनुष्य घोड़े और हाथियों के शरीरों की बहानेवाली और भयभीतों को भय की करानेवाली थी विजया-भिलाषी वीरों ने उस अपार नदी के पार को पाया ८२ और कोई २ उछलते डूबतेहुए स्नान करने के अभिलाषीहुए हे भरतर्षभ ! उन भयभीत युक्त शरीर वाले उत्तम रक्तवर्ण कवच और शस्त्रोंके धारण करनेवालों ने ८३ उस नदी में स्नान किया और पानकरतेही कुम्भलाकर लज्जितहुए हमने रथ, घोड़े, मनुष्य, हाथी, भूषण ८४ कपड़े और टूटेहुए कवचोंको पृथ्वी दिशा और आकाश स-मेत बहुधा रक्तवर्णही देखा ८५ हे भरतवंशिन् ! रुधिर के गन्ध स्पर्श रस और कठिनतारूप समेत शब्दों से ८६ बहुतसी सेना में व्याकुलता प्राप्तहुई तब भी-मसेन और सात्यकी जिनमें मुख्य थे वह वीर उस अत्यन्त घायल और मृतक सेना के सम्मुख फिरगये ८७ उस समय उन चढ़ाई करनेवाले वीरों का वेग असह्य हुआ ८८ हे राजन् ! आपके पुत्रों के समेत बड़ी सेनाके मुख मुड़गये और मनुष्य घोड़ोंसे व्याकुल वह आपकी सेना रथ घोड़े और हाथियों से रहित होकर ८९ टूटी ढाल टूटे कवच और खण्डित शस्त्र धनुषवाली चारोंओरसे ऐसे

तिर्र बिर्र होकर भागी ६० जैसे कि वन में सिंह से पीड़ित हाथियों के समूह व्याकुल होकर भागते हैं ॥ ६१ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! आपकी सेना के सम्मुख दौड़नेवाले पाण्डवों को देखकर दुर्योधन ने सेनाको हरप्रकारसे रोका १ हे भरतर्षभ ! उस दुर्योधन ने बड़े २ शूरवीरों को और सेना को अनेक प्रकार से रोका परन्तु आपके पुत्रके भी पुकारने से वह लोग नहीं लौटे २ तब उसके पीछे पक्ष प्रपक्ष समेत सौबलका पुत्र शकुनी और शस्त्रधारी कौरव युद्ध में भीमसेन के सम्मुख गये ३ कर्ण भी राजाओं समेत धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखकर मद्र के राजा से यह बोला कि तुम भीमसेन के रथके समीप चलो ४ कर्ण के इस वचन को सुनकर राजा मद्र ने हंसवर्णके उत्तम घोड़ोंको वहां पहुँचाया जहां कि भीमसेन था ५ हे महाराज ! युद्ध को शोभा देनेवाले कर्ण के प्रेरित घोड़े भीमसेन के रथको पाकर अच्छे प्रकार से भिड़े ६ हे भरतर्षभ ! क्रोधयुक्त भीमसेनने कर्णको आताहुआ देखकर उसके मारने का उपाय विचारा ७ और वीरसात्यकी और धृष्टद्युम्न से बोला कि तुम धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर की रक्षाकरो ८ क्योंकि वह मुझको देखकर बड़े सन्देहको न करे और मुझपर कर्ण चला आता है ९ सो मैं आज उसको युद्ध में वधकरके अपने जय के होने की विधि करता हूं १० मैं तुमसे सत्य २ कहता हूं कि घोरयुद्धके द्वारा कितो मैंही कर्णको मारूंगा अथवा कर्ण मुझको मारेगा ११ अब मैं राजाको आपलोगों के सुपुर्द करताहूं तुम सबलोग अनेक प्रकारसे उस की रक्षाके उपाय को करो १२ वह महाबाहु भीमसेन इस प्रकार धृष्टद्युम्न से कहकर बड़े शब्द से सिंहनाद को करके दिशाओंको शब्दायमान करताहुआ कर्णके रथकी ओर गया १३ इसके पीछे मद्रदेशियोंका स्वामी समर्थ शल्य युद्ध के चाहनेवाले शीघ्रतापूर्वक आनेवाले भीमसेन को देखकर कर्ण से बोला १४ हे कर्ण ! इस अत्यन्त क्रोधयुक्त बहुतकालसे दबेहुए क्रोधको तेरेऊपर निकालने की इच्छावाले पाण्डुनन्दन भीमसेन को देखो १५ हे कर्ण ! पूर्व में मैंने अभिमन्यु और घटोत्कच के मरनेपर भी इसका इसप्रकार का रूप नहीं देखा था जैसा कि अब देखने में आता है १६ यह क्रोधयुक्त तीनों लोकोंकेभी हटाने में

समर्थ है इससमय इसने प्रलयकाल की अग्निके समान देदीप्यमान अपने रूप को धारण कियाहै १७ सञ्जय बोले कि हे राजन् ! शल्यके इसप्रकारके कहतेही कहते में महाविकरालरूप भीमसेन कर्ण के सम्मुख वर्तमान हुआ इसके पीछे हँसताहुआ कर्ण उस सम्मुख आयेहुए भीमसेन को देखकर शल्य से यह वचन बोला १८ । १९ हे मद्रदेश के स्वामिन् ! अब तुमने भीमसेन के विषय में जो वचन मुझ से कहा वह सत्य है इसमें सन्देह नहीं है २० यह भीमसेन बड़ा शूरवीर क्रोधमें भरा शरीरसे असादृश्य पराक्रमियों में भी अधिक पराक्रमी है २१ विराट नगर में गुप्त रहनेवाली द्रौपदी के अभीष्ट चाहनेवाले ने केवल भुजबल केही द्वारा २२ गुप्त उपाय में आश्रित और प्रवृत्त होकर कीचक को उसके सब समूहोंसमेत मारा अब कवचधारी क्रोधसे व्याकुल यह भीमसेन दण्डधारी मृत्यु के सङ्ग भी युद्ध करने को समर्थ है फिर यह मेरे मन का अभिलाप बहुत कालसे होरहाहै कि मैं युद्धमें अर्जुनको मारूं अथवा अर्जुन मुझे मारे वह मेरा प्रयोजन भीमसेन के लड़नेसे कदाचित् अभी होजाय क्योंकि भीमसेनके मरनेपर अथवा विरथ करनेपर अर्जुन मेरे सम्मुख आवेगा यही मुझको श्रेष्ठ लाभ होगा २३।२६ अब यहां जो उचित समझते हो उसको शीघ्रता से करो बड़े तेजस्वी कर्ण के इस वचन को सुनकर २७ शल्य कर्ण से बोला कि हे महाबाहो ! तुम बड़े पराक्रमी भीमसेन के सम्मुखचलो २८ तुम भीमसेन को विजय करके अर्जुनको पाओगे जो तेरे चित्तका अभीष्ट बहुत कालसे हृदयमें वर्तमानहै २९ हे कर्ण ! वह अभीष्ट तेरा तुझको प्राप्तहोगा इसमें मिथ्या न होगा ऐसाकहनेपर फिर कर्ण शल्य से बोला ३० कि मैं युद्धमें अर्जुनको मारूंगा वा अर्जुन मुझको मारेगा तुम युद्ध में मन लगाकर वहां चलो जहां भीमसेन है ३१ तब सञ्जयने कहा हे राजन् ! फिर शल्य रथ के द्वारा वहां गया जहांपर बड़े धनुषधारी भीमसेन ने आपकी सेनाको भगाया था ३२ हे राजेन्द्र ! इसके पीछे कर्ण और भीमसेनकी सम्मुखतामें तूरी और भेरीआदि बाजोंके शब्द होनेलगे ३३ तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेनने उसकी महादुर्जय सेनाको साफ और तीक्ष्ण नाराचोंसे दिशाओंमें भगादिया ३४ हे महाराज,धृतराष्ट्र ! इसके पीछे भीमसेन और कर्ण का महाभयकारी कठिन रोमहर्षण युद्ध हुआ ३५ इसके पीछे एक क्षणमात्र में ही भीमसेन कर्ण की ओर दौड़ा फिर सूर्य के पुत्र धर्मात्मा कर्ण ने

उस आतेहुए भीमसेनको देखकर ३६ अत्यन्त क्रोधित होकर छातीपर घायल किया और बाणोंकी वर्षासे ढक दिया ३७ कर्ण के हाथ से छिदेहुए भीमसेन ने भी कर्ण को बाणों से ढककर टेढ़े पर्ववाले नौ बाणोंसे देह में घायलकिया ३८ फिर कर्ण ने बाणोंसे उसके धनुषको दो स्थानों से काटकर अत्यन्त तीक्ष्ण सब प्रकार के कवचों के काटनेवाले नाराच से उसकी छाती को घायल किया ३९ फिर मर्मों के जाननेवाले उस भीमसेन ने दूसरे धनुष को लेकर तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको ४० मर्मस्थलों में घायल किया और पृथ्वी वा आकाशको कम्पायमान करताहुआ महाघोर शब्द करके गर्जा ४१ फिर कर्ण ने उसको पच्चीस नाराचों से ऐसे घायल किया जैसे कि वन में मतवाले हाथी को उल्काओं से घायल करते हैं ४२ इसके पीछे शायकों से घायल शरीर क्रोध से व्याकुल क्रोध और ईर्षा से लाल नेत्र करके उसके मारने की इच्छा से भीमसेन ने ४३ बड़े भार-वाही पर्वतों के भी छेदनेवाले उग्रबाण को धनुष में चढ़ाया ४४ और बड़े धनुष-धारी वेगवान् वायुपुत्र भीमसेन ने कर्ण के मारने की अभिलाषा से कर्ण पर्यन्त धनुष को खैंच कर वह बाण चलाया ४५ पराक्रमी भीमसेन के हाथ से छूटेहुए वज्र और बिजली के समान शब्दायमान उस प्रबल बाण ने युद्ध में कर्ण को ऐसे घायल किया जैसे कि वज्र का वेग पर्वत को व्याकुल करके घायल करता है ४६ हे कौरव्य! वह सेनापति कर्ण भीमसेन के हाथ से घायल और अचेत होकर रथ के बैठने के स्थान पर गिरपड़ा ४७ तब तो राजा मद्र कर्णको अचेत देखकर युद्ध में शोभा देनेवाले कर्ण को युद्धभूमि से दूरलेगया ४८ इसके पीछे कर्ण के विजय होनेपर भीमसेन ने दुर्योधन की बड़ी सेना को ऐसा भगाया जैसे कि पूर्वकाल में इन्द्र ने दानवों को भगाया था ॥ ४९ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णापयानोनामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय! भीमसेन ने यह अत्यन्त कठिन कर्मकिया जिस ने अपने हाथ से कर्ण को रथ के स्थान में अचेत करके गिराया १ अकेला कर्ण युद्धमें सृञ्जयों समेत सब पाण्डवों को मारेगा हे सञ्जय! यह बात बारंबार मुझसे दुर्योधन ने कही है २ युद्ध में भीमसेन के हाथ से विजय कियेहुए कर्ण को देख कर मेरे पुत्र दुर्योधन ने क्या किया ३ हे महाराज! युद्ध में आपका पुत्र कर्णको

मुख मोड़नेवाला देखकर अपने निजभाइयों से बोला कि ४ तुम्हारा भला हो तुम शीघ्र जाकर कर्ण को भीमसेन के महाकष्टरूपी अथाह समुद्रमें डूबेहुए कर्ण की सबओर से रक्षाकरो ५ राजा की आज्ञा पातेही वह सबलोग महाक्रोधयुक्त होकर भीमसेन के सम्मुख ऐसेहुए जैसे कि अग्नि के सम्मुख पतङ्ग होते हैं ६ श्रुतवान्, दुर्द्धर, क्राथ, विवित्सु, विकट, सम, निषङ्गी, कवची, पाशी, नन्द, उपनन्द ७ दुष्प्रधर्ष सुबाहु, बाणवेग, सुवर्चस, धनुर्ग्राह,दुर्मद,जलसन्ध,शल, सह इन महापराक्रमी रथों से रक्षित धृतराष्ट्र के पुत्रों ने भीमसेन को पाकर चारों ओर से घेरलिया ८। ९ और नाना प्रकार के रूपवाले बाणसमूहों को चारों ओर से फेंका फिर वह महाबली भीमसेनने उन्होंके हाथसे पीड्यमान होकर १० उन आतेहुए आपके पुत्रों के पन्द्रह रथों समेत पचास रथियों को मारा ११ इस के पीछे फिर क्रोधयुक्त भीमसेन ने भल्ल से विवित्सु के शिर को देह से जुदाकिया और वह मरकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १२ पूर्णचन्द्रमा के समान कुण्डल भी उसके शिर के साथही गिरा हे राजन्! तब तो उसके सब भाई उस शूरवीर अपने भाई को मराहुआ देखकर १३ युद्ध में भयानक पराक्रमी भीमसेन के सम्मुख गये इसके अनन्तर उस भयानक भीमसेन ने उस महायुद्ध में दूसरे दो भल्लों से १४ आपके दो पुत्रों के प्राणों का हरणकिया हे राजन्! हवा से टूटेहुए वृक्षों के समान देवकुमारों के समान वह विकट और सहनाम दोनोंभाई भी मरकर पृथ्वी पर गिरपड़े इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेन ने क्राथ को भी यमलोक में पहुँचाया १५। १६ अत्यन्त तीक्ष्ण नाराच का मारा हुआ वह क्राथ पृथ्वीपर गिरपड़ा तब तो महाकठिन हाहाकार उत्पन्न हुआ १७ आपके धनुषधारी वीर पुत्रों के मरने और उनकी सेनाके चलायमान होनेपर फिर महाबली भीमसेन ने १८ युद्ध में नन्द उपनन्द को यमलोकमें पहुँचाया उसके पीछे वह आपके पुत्र भयभीत और व्याकुल १९ युद्धमें कालरूप भीमसेनको देखकर भागे फिर बड़े दुःखी कर्ण ने आपके पुत्रों को मराहुआ देखकर २० फिर हंसवर्ण घोड़ों को वहांहीं चलाया जहांपर पाण्डव भीमसेनथा हे महाराज! राजामद्रके चलाये हुए वह वेगवान् घोड़े २१ भीमसेन के रथ को पाकर अच्छीरीति से भिड़े हे राजन्, धृतराष्ट्र! युद्ध में कर्ण और पाण्डव भीमसेन का वह युद्ध महाकठिन घोररूप रुधिरका उत्पन्न करनेवाला हुआ फिर उन भिड़े हुए महारथियों को देख

कर २२ । २३ मैंने विचार किया कि यह युद्ध कैसे होगा इसके पीछे युद्ध में प्रशंसनीय भीमसेन ने बाणों से २४ कर्ण को आपके पुत्रों के देखतेहुए ढक दिया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अस्त्रों के जाननेवाले कर्णने भी भीमसेनको २५ टेढ़े पर्ववाले नौभल्लों से पीड्यमान किया तब उस घायल महाबाहु भयानक पराक्रमी भीमसेन ने २६ कानतक खैंचे हुए सात विशिखों से कर्णको पीड्यमान किया हे महाराज ! इसके पीछे विषैले सर्प की समान श्वास लेनेवाले कर्ण ने २७ बाणों की बड़ी वर्षा से भीमसेन को ढकदिया फिर महाबली भीमसेन ने भी अपने बाणों की वृष्टि से उस कर्णको ढक दिया २८ और कौरवों के देखतेहुए गर्जा इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने दृढ़ धनुषको लेकर तीक्ष्ण धारवाले दशबाणोंसे भीमसेन को पीड्यमान करके तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उस के धनुष को काटा इसके पीछे बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्ण के मारने की इच्छा से गर्जना करतेहुए भीमसेन ने सुवर्णवस्त्रों से अलंकृत कालदण्ड के समान घोर परिघ को लेकर फेंका कर्ण ने उस वज्र और बिजली के समान आते हुए परिघ को २६ ।, ३२ विषैले सर्पों की समान बाणोंसे टुकड़े २ कर दिया तब तो शत्रुसन्तापी भीमसेनने बहुत बड़े दृढ़ धनुषको लेकर ३३ कर्णको मारे बाणों के आच्छादित करदिया उसके पीछे कर्ण और भीमसेन का ऐसा घोरयुद्ध हुआ ३४ जैसे कि परस्पर मारने की इच्छा करनेवाले महाबली बन्दरों के राजाओं का युद्ध कटकटकर वारंवार होताहै हे महाराज ! इसके पीछे कर्णने दृढ़ धनुष को चढ़ाकर तीनबाणसे ३५ भीमसेनको कर्णमूल पर घायलकिया कर्ण के हाथ से अत्यन्त घायल महाबली भीमसेन ने कर्ण के शरीर को छेदनेवाले घोर विशिख को हाथ में लेकर फेंका वह बाण उस कर्णके कवच में घुस शरीर को छेदकर ३६ । ३७ पृथ्वीमें ऐसा समागया जैसे कि सर्प बामीमें समाजाता है उस कठिनघात से महापीड़ित व्याकुल और अचेत के समान ३८ वह कर्ण रथपर ऐसा कम्पितहुआ जैसे कि पृथ्वीके भूकम्पमें पर्वत हिलताहै हे महाराज ! इसके पीछे क्रोध और व्याकुलता से कर्ण ने ३९ भीमसेनको पच्चीस नाराचोंसे घायलकिया और अनेक बाणों से देह को घायल करके एक बाणसे ध्वजाको काटा ४० और भल्लसे उसके सारथीको कालके वशकिया और शीघ्रही तीक्ष्ण बाणों से उसके धनुप को काटकर ४१ हँसतेहुए कर्णने एकमुहूर्त्त में सावधानी

से भयकारी कर्म करनेवाले भीमसेनको रथसे विरथ करदिया ४२ हे भरतर्षभ ! वह वायु के समान रथ से विहीन हँसताहुआ महाबाहु भीमसेन गदाको लेकर उस उत्तम रथसे कूदा ४३ और बड़े वेगसे दौड़कर भीमसेनने आपकी सेनाको उसगदासे ऐसा तिर्रबिर्र करदिया जैसे कि बादलों को वायु छिन्नभिन्न करदेता है ४४ फिर उस भयानकरूप शत्रुसन्तापी सर्वज्ञ भीमसेनने ईर्षाके समान दाँत रखनेवाले घातक सातसौ हाथियों को भी छिन्नभिन्न करके ४५ बड़े पराक्रम से उन हाथियों के जाबड़े आंख मस्तक कमर और मर्मस्थलोंको घायलकिया ४६ इसके पीछे सब हाथी भयभीत होकरभागे और फिर शत्रुओं की ओर से भेजे हुए अन्य सवारों समेत हाथियोंने उसको ऐसा घेरलिया जैसे कि सूर्य को बादल घेरलेता है ४७ फिर उस पृथ्वीपर नियत ने उन सातसौ हाथियों को भी सवार शस्त्र और ध्वजाओं समेत ऐसा मारा जैसे कि इन्द्र वज्र से पहाड़ों को मारता है ४८ इसके पीछे शत्रुओंके विजयी भीमसेनने शकुनीके बड़े पराक्रमी बावन हाथियों को फिर मारा ४९ इसी प्रकार आपकी सेना को कम्पायमान करतेहुए पाण्डव भीमसेन ने एक सौ से अधिक रथ और हजारों पत्तियों को मारा ५० तब आपकी सेना महात्मा भीमसेनरूपी सूर्यसे सन्तप्त होकर छिन्न भिन्न होगई ५१ हे भरतर्षभ ! भीमसेन के भय से आपके शूरवीर भयभीत हो कर युद्धमें भीमसेन को छोड़कर दशों दिशाओंको भागे ५२ तब शब्द करने वाले चर्म के कवचधारी अन्य पांचसौ रथ रथियों समेत भीमसेनपर चारों ओर से बाणों की वर्षाकरतेहुए सम्मुख आये ५३ भीमसेनने उन पांच सौ रथसमेत वीरों को भी ध्वजा पताकाओं समेत अपनी गदासे ऐसा मारा जैसे कि असुरों को विष्णु भगवान् मारते हैं ५४ इसके पीछे शकुनी के आज्ञावर्त्ती शूरों के अङ्गीकृत शक्ति दुधारे खड्ग और प्रासों के हाथ में रखनेवाले तीनहज़ार अश्वसवार भीमसेन के सम्मुखगये ५५ तब शत्रुहन्ता भीमसेन ने नाना प्रकार के मार्गों में घूम २ कर शीघ्रही सम्मुख जाकर बड़े वेगपूर्वक गदा से उन अश्वसवारों को भी मारा ५६ हे भरतवंशिन् ! तब तो उन सब घायलों के ऐसे शब्द प्रकट हुए जैसे कि पत्थरों से घायलहुए हाथियों के शब्द होते हैं ५७ इस रीति से शकुनी के तीनोंहज़ार अश्वारूढ़ों को मारकर दूसरे रथ में सवार हो क्रोधयुक्त भीमसेन कर्ण के सम्मुख गया ५८ वहां उस कर्णने भी शत्रुविजयी धर्मपुत्र

युधिष्ठिरको बाणों से ढककर सारथीको रथसे गिराया ५९ इसके पीछे वह महारथी युद्ध में सारथीसे रहित रथको देखकर भागा और कर्ण कङ्कपक्षों से जटित सीधे बाणों को मारताहुआ उसके पीछे चला ६० वायुके पुत्र भीमसेनने राजा की ओर जानेवाले कर्ण को देखकर अपने बाणजालों मे ढक दिया फिर बाणों से पृथ्वी आकाशको ढककर शत्रुओं का विजय करनेवाला कर्ण बहुत शीघ्र लौटा और तीक्ष्णबाणों से भीमसेन को सब ओर से ढक दिया ६१ । ६२ इसके पीछे हे राजन् ! बड़े धनुषधारी सात्यकी ने पीछे होने के कारण भीमसेन के रथ से व्याकुल कर्ण को पीड्यमान किया ६३ बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित कर्ण भी उस के सम्मुख वर्तमान हुआ फिर सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ वह दोनों वीर सम्मुख हो कर युद्ध करनेलगे और हरएक ने परस्पर में चौंसठ २ बाण छोड़े उन बाणोंके छोड़ते में वह दोनों वीर अत्यन्त शोभितहुए हे राजन् ! उन दोनोंका फैलाया हुआ भयकारी मर्दन करनेवाला ६४ । ६५ रुद्रबाणजाल क्रौञ्च की पुच्छ के समान रक्त वर्ण दिखाई दिया फिर छोड़ेहुए हज़ारों बाणों के कारण से हम ने और उन सबलोगोंने न सूर्यको देखा और न दिशाओंको ऐसे नहीं पहिचाना जैसे कि मध्याह्न के समय तेजस्वी सूर्यके कारण दिशाओं का ज्ञान नहीं होता है ६६ । ६७ उस समय कर्ण और भीमसेनके बाणसमूहों से हटायेहुए शकुनी अश्वत्थामा कृतवर्मा और अधिरथी कृपाचार्य ६८ यह सब कर्ण को पाण्डवों से भिड़ाहुआ देखकर फिर लौटे हे राजन् ! उन आनेवाले वीरोंके ऐसे बड़े कठोर शब्दहुए ६९ जैसे कि चन्द्र के उदयसे उठेहुए महासमुद्रोंके शब्द होते हैं वह दोनों सेना उस महायुद्ध में परस्पर अच्छेप्रकार से देखकर खूब लड़ीं ७० और परस्पर में एक एक को घेरकर बड़ी प्रसन्न हुईं इसके पीछे मध्याह्न के समय सूर्य के वर्तमान होनेपर युद्ध जारी हुआ ७१ ऐसा युद्ध पूर्व में कभी न देखा था न सुना था फिर सेना के समूह दूसरी सेना के समूहों को पाकर ७२ तीव्रता से ऐसे सम्मुख गये जैसे कि जलों के समूह समुद्र के सम्मुख होते हैं उस समय परस्पर बाणों की वर्षा के ऐसे बड़े २ शब्द हुए जैसे कि गर्जनेवाले समुद्रों के जल के वेग की बड़ी ध्वनि होतीहै फिर उन दोनों वेगवान् सेनाओंने परस्पर में एक एक को पाकर ७३ । ७४ एकता को ऐसे पाया जैसे कि दो नदियां परस्पर मिलकर एक होजाती हैं हे राजन् ! इसके पीछे यशके चाहनेवाले कौरव

और पाण्डवों का घोररूप युद्ध जारी हुआ उस समय वहां गर्जनेवाले शूरवीरों की वार्तालाप जोकि निरन्तर नाना प्रकार की थीं ७५ । ७६ और नामों को ले लेकर होरही थीं सुनीगईं जिस २ के पिता माता के अवगुण स्वाभाविक दोष थे वह युद्ध में परस्पर एक एक को सुनाते थे हे राजन् ! युद्ध में परस्पर घुड़कनेवाले उन शूरों को देखकर ७७ । ७८ मैंने समझा कि अब इनका जीवन नहीं है और उन क्रोधयुक्त बड़े तेजस्वियों के शरीरों को देखकर ७९ मुझ को अत्यन्त भय हुआ कि यह कैसे होगा इसके पीछे उन महारथी पाण्डव और कौरवों ने परस्पर में मारते २ प्रत्येक को अपने २ तीक्ष्ण शायकों से घायल किया ॥ ८० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! परस्पर में मारने के अभिलाषी और शत्रुता करनेवाले उन क्षत्रियों ने परस्पर में घायल किया और रथ घोड़े और मनुष्यों समेत राजाओं के समूह चारोंओर से आपस में खूब जुटे १ । २ फेंकेहुए परिघ, गदा, कुणप, प्रास, भिन्दिपाल और भुशुण्डियों के सब प्रकार के प्रहारों को २ युद्ध में महाभयकारी देखा और बाणों की वर्षा टीड़ी के समान हज़ारों प्रकार से होने लगी ४ हाथियों ने हाथियों को परस्पर में पाकर छिन्नभिन्न किया तब घोड़ों ने घोड़ों को रथियों ने रथियों को ५ पत्तियों ने पत्तियों के समूहों को वा घोड़ों के यूथों को अथवा रथ और हाथियों और रथ वा हाथियों ने घोड़ों को ६ और शीघ्रगामी हाथियों ने सेना को अङ्गों से विहीन करके छिन्नभिन्न कर दिया ७ वहां शूरवीरों के समूह परस्पर में घायल होते और पुकारते थे इस हेतु से युद्धभूमि ऐसी अत्यन्त भयानक होगई जैसी कि पशुओं को संहारस्थान की भूमि होती है ८ हे भरतवंशिन् ! उस समय रुधिर से भरीहुई पृथ्वी ऐसी दिखाई देती थी जैसे कि वर्षाऋतु में वीरबहूटियों के समूहों से पृथ्वी रक्त दिखाई देती है अथवा जैसे कुसुम के रङ्गेहुए श्वेतवस्त्रों को श्यामा स्त्री धारणकरे वह पृथ्वी ऐसे प्रकार की होगई मानों मांस रुधिर से व्याप्त स्वर्णमयी कुम्भों सेही व्याप्त है ९ । १० हे राजन् ! कटे वा टूटेहुए शिर जङ्घा भुजा बहुत बड़े कुण्डल आभूषण ढाल पताकाओं के समूह विशिख और धनुषधारी शूरों के शरीर

पृथ्वीपर गिरपड़े ११। १२ हे राजन्! हाथियोंने हाथियों को पाकर दाँतों से पीड्यमान किया उससमय दाँतों से कटे रुधिर से भरेहुए हाथी ऐसे शोभायमान हुए १३ जैसे कि सुवर्ण केसे रङ्गवाले झिरनों के गिरानेवाले और पहाड़ी धातुओं से शोभित जलों के गेरनेवाले पर्वत शोभित होते हैं १४ फिर वह हाथी भ्रमण करनेवाले हुए और इसी प्रकार अन्य हाथियों ने भुजा से छोड़े हुए तोमरों समेत सम्मुख खड़ेहुए अनेक शत्रुओं को विध्वंस किया १५ फिर नाराचों से घायल टूटे कवचवाले उत्तमहाथी ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि मार्गशिर और पौष के महीने में बादलों से रहित पर्वत होते हैं १६ सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से छिदेहुए हाथी ऐसे शोभितहुए जैसे कि उल्काओं से पर्वतों के शिखर प्रकाशमान होते हैं १७ कितनेही पर्वताकार हाथी अन्य हाथियों से घायल और पक्षधारी पर्वतों के समान उस युद्ध में नाश को प्राप्तहुए १८ और बहुत से शल्यों से पीड़ित घावों से खेदित हाथी युद्ध में भागगये और घोर युद्ध में अपने कुम्भों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े १९ और बहुतेरे सिंहों के समान शब्दों को गर्जे बहुतसे घूमने लगे २० और बहुतसे हाथी पुकारे और सुनहरी सामानों से अलंकृत घोड़े बाणों से मारेहुए बैठगये और मृतकप्राय होकर दशों दिशाओं में घूमने लगे २१ बाण वा तोमरों से घायल चेष्टाओं को करतेहुए बहुत से हाथी घूमने लगे और अनेक हाथियों ने नाना प्रकार की चेष्टाओं को किया २२ हे श्रेष्ठ भरतवंशिन्! वहां मनुष्य घायल हो २ कर पृथ्वीपर शब्द करनेलगे और बहुत से लोग भाई, बन्धु, पिता और पितामहादिकों को देखकर २३ किसीने दौड़तेहुए शत्रुओं को देखकर गोत्रनामों समेत अपनी जातों को वर्णन किया २४ हे महाराज! उन लोगों के स्वर्णमयी भूषणों से अलंकृत भुजदण्ड टूटेहुए हाथ पैरों में चेष्टा करकर लिपटते थे और उछलते थे इसी प्रकार बहुत सी भुजा उछल २ कर अनेक चेष्टा करती थीं और हज़ारों ऊपर नीचे होकर अपूर्व चेष्टा करती थीं और किसी २ भुजाओं ने पांचमुख रखनेवाले सर्प की समान युद्ध में बहुत सा वेगाकिया २५। २६ हे राजन्! सर्पों के फणों के समान चन्दनसे लिप्त रुधिरसे भरीहुई वह सब भुजा स्वर्णमयी ध्वजाके समान बहुत शोभायमान हुई २७ इस रीति से दशोंदिशाओं में घोषसंकुलनाम घोर युद्ध होनेपर अज्ञातरूप परस्पर में युद्ध करनेवाले हुए २८ और धूलिसे संयुक्त

शस्त्रों के आघातों से व्याकुल युद्ध में अँधेरे होने के कारण अपने और पराये नहीं जानेगये २६ इस रीतिसे वह युद्ध महाघोररूप और भयानक हुआ वहां पर रुधिररूप जल रखनेवाली बड़ी२ नदियां बहनिकलीं ३० वह नदियां बाण रूप पत्थरोंसेयुक्त केशरूप शैवल और शाद्वलरखनेवाली अस्थिरूप मछलियों से पूर्ण धनुषबाण और गदारूपी नौका रखनेवाली ३१ मांस रुधिररूपी कीच से भरी हुई घोररूप बड़ी भयानक रुधिररूप जल के वेगकी बढ़ानेवाली होकर बहने लगीं ३२ भयभीतों के भयकी बढ़ानेवाली शूरवीरों की प्रसन्नता बढ़ाने-वाली घोररूप वह नदियां यमलोक को पहुँचानेवाली होगईं ३३ हे नरोत्तम ! वह नदियां भीतर जानेवालों को डुबानेवाली क्षत्रियों का भय बढ़ानेवाली हुईं जहां तहां मांसभक्षी जीवोंकी गर्जना करने से ३४ वह युद्धभूमि घोररूप यम-राजपुरी के समान होगई और चारोंओर से असंख्यों रुण्ड उठ खड़ेहुए ३५ मांस और रुधिर से तृप्त हो होकर जीवों के समूह नाचते थे हे भरतवंशिन् ! वहां रुधिर और मज्जा का भोजन करके ३६ मांस मज्जा और भेजों के खाने से मतवाले सिंह, काक, गृध्र और बगले भी दौड़तेहुए दिखाई दिये ३७ शूरवीरों ने त्यागने के अयोग्य भयको भी त्यागकरके युद्धाभिलाषी होकर निर्भयलोगों के समान युद्धमें कर्मोंको किया ३८ उस युद्धमें वह शूरलोग अपनी वीरताको प्रसिद्ध करतेहुए भ्रमण करनेलगे जोकि बाण और शक्तियोंसेयुक्त होकर मांस भक्षियों से व्याकुल थे ३९ हे समर्थ, भरतवंशिन् ! उनलोगोंने परस्पर में गोत्र नामों समेत अपने २ पिताओं का भी नाम लिया ४० हज़ारों ने तौ अपने गोत्रादि और नामोंको सुनाया और बहुत से युद्धकर्ता ४१ इधर उधरसे तोमर शक्ति और पट्टिशों के द्वारा परस्पर में मर्दन करने लगे इस रीति से घोररूप महाभयानक युद्ध जारी होनेपर कौरवीय सेना ऐसी पीड़ितहुई जैसे कि समुद्र में टूटीहुई नौका डामाडोल होकर पीड़ित होती है ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे श्रेष्ठ ! इसरीति से क्षत्रियों के नाशकारी युद्ध के जारी होनेपर युद्ध में गाण्डीव धनुष के बड़े शब्द सुनाई दिये हे राजन् ! जहांपर कि पाण्डव अर्जुन ने संशप्तकों का वा कोशिल देशियों का और नारायण नाम

सेना का नाश किया वहां क्रोधयुक्त संसप्तकों ने युद्ध में चारोंओरसे अर्जुन के शिरपर बाणों की वर्षा करी हे राजन् ! रथियों में श्रेष्ठ वेग से अकस्मात् उन बाणवर्षा को सहते और मारतेहुए प्रभु अर्जुनने सेनाको विलोडन किया १।४ और अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों के द्वारा उस रथवाली सेना के पार होकर उत्तम शस्त्रधारी सुशर्मा को सम्मुख पाया ५ तब उस श्रेष्ठरथीने बाणों की वर्षा से उसको आच्छादित किया और संसप्तकों ने भी बाणों की वर्षा से अर्जुन को ढका ६ इसके पीछे सुशर्मा ने शीघ्रगामी दश बाणों से अर्जुन को और तीन उत्तम बाणों से श्रीकृष्णचन्द्रजी को दाहिनी भुजापर छेदकर ७ दूसरे भल्ल से ध्वजा को भी विदीर्ण किया हे राजन् ! विश्वकर्माजी का उत्पन्न कियाहुआ वानरों में श्रेष्ठ वह बड़ा वानर ८ सबको भयभीत करके बड़ा शब्द करके गर्जा इस हनुमान्‌जी के शब्द को सुनकर आपकी सेना महाभयभीत हुई ९ और अत्यन्त भयभीत होकर चेष्टारहित होगई इसके पीछे हे राजन् ! वह सेना निश्चेष्ट होकर ऐसी शोभायमानहुई १० जैसे कि नानाप्रकारके फूलोंसेयुक्त चैत्ररथ वन होता है हे कौरव्य ! इसके पीछे उन युद्धकर्ताओंने सावधान होकर ११ अर्जुन को बाणों से ऐसा आच्छादित करदिया जैसे कि पर्वत को बादल आच्छादित कर लेते हैं इसके पीछे सबों ने अर्जुनके बड़े रथको घेरलिया १२ उसको घेरके तीक्ष्ण बाणों से घायल करके पुकारनेलगे हे श्रेष्ठ ! इसके पीछे वह सब क्रोधयुक्त रथ के चारों ओर होकर रथ के चक्र और ईशा के भी पकड़ने को पासगये वह हज़ारों शूरवीर उसके उस रथ को पकड़कर १३ । १४ और बड़े बल से उसके सब साथियों को पकड़कर सिंहनाद करनेलगे और कितनोहीं ने केशवजी की भी भुजा को पकड़ लिया १५ और बहुतों ने रथ में सवार अर्जुन को पकड़ लिया इसके पीछे दोनों भुजाओं को कम्पायमान करतेहुए केशवजी ने उन सबको ऐसे गिरादिया जैसे कि मतवालाहाथी हाथी के सवारों को गिरादेताहै इसके पीछे उन महारथियों से घिरेहुए क्रोधयुक्त अर्जुनने युद्धमें १६ । १७ उस पकड़ेहुए रथ को देख और श्रीकृष्णजी को भी गिराहुआ जानकर बहुत से रथ सवारों समेत पदातियों को गिराया उसी प्रकार समीप वर्तमान शूरवीरों को समीपही से मारे बाणों के ढकदिया और केशवजी से कहनेलगा १८ । १९ हे महाराज, श्रीकृष्णजी ! भयकारी कर्म करनेवाले शरीर से घायल हज़ारों संसप्तकों

को देखो २० यह रथों की बँधावट महाघोर है और पृथ्वीपर मेरे सिवाय ऐसा कोई नहीं है जो नरलोक में इस बन्धन को सहै अर्जुन ने ऐसा कहकर अपने देवदत्त शङ्ख को बजाया और पृथ्वी आकाशादि को व्याप्त करके श्रीकृष्णजी ने भी पाञ्चजन्य शङ्ख को बजाया २१ । २२ हे महाराज ! उस शङ्ख के शब्द को सुनकर संसप्तकों की सेना महाकम्पितहुई और भयभीत होकर भागी २३ इसके पीछे शत्रुविजयी अर्जुन ने वारंवार नागास्त्र को प्रकट करके उनके चरणों को बाँध दिया २४ हे राजन् ! महात्मा अर्जुन के बन्धन से चरणों में बँधेहुए वह लोग लोहे की मूर्ति के समान निश्चेष्ट खड़े रहगये २५ इसके पीछे उन निश्चेष्ट मनुष्यों को पाण्डुनन्दन ने ऐसे मारा जैसे कि पूर्वसमय में तारक असुर के मारनेवाले युद्ध में इन्द्र ने दैत्यों को मारा था २६ युद्ध में घायल होकर उनलोगों ने अर्जुन के उत्तम रथ को छोड़दिया और शस्त्रों का मारना प्रारम्भकिया २७ हे राजन् ! चरणबन्धन के कारणसे वह लोग हिलचल भी न सके इसके पीछे अर्जुन ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से उनको मारा २८ युद्ध में वह सब शूरवीरलोग सर्पों से बँधेहुए खड़ेरहगये जिनको कि अर्जुनने लक्ष्य करके चरणों का बन्धनकिया २९ हे राजन् ! इसके पीछे महारथी सुशर्मा ने बँधीहुई सेना को देखकर शीघ्रही गरुड़ास्त्र को प्रकटकिया ३० तब तो बहुत से गरुड़ सर्पों को भक्षण करने को दौड़े और वह सर्प उन गरुड़ों को देखकर भागे ३१ फिर चरणबन्धनों से छूटीहुई वह सेना ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि सब सृष्टि के सन्तप्त करनेवाले सूर्य बादलोंसे रहित होकर शोभित होते हैं ३२ इसके पीछे उन बन्धनों से छूटेहुए शूरवीरोंने अर्जुनके रथपर बाण और शस्त्रोंके समूहोंको छोड़ा ३३ और सब ने नाना प्रकार के अस्त्रोंको चलाया तब तो इन्द्र के पुत्र महावीर अर्जुन ने उनलोगों को बाणोंकी वर्षा से ढककर ३४ युद्धकर्ताओंको मारा इसके पीछे सुशर्माने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे अर्जुनको हृदयमें घायलकरके दूसरे तीन बाणोंसे पीड़ित किया तब वह अत्यन्त घायल और पीड्यमान होकर रथ के बैठने के स्थानपर बैठगया ३५ । ३६ इसके पीछे सबों ने पुकारकरी कि अर्जुन मारागया इसके पीछे शङ्ख भेरी आदि बाजोंके शब्द ३७ और सिंहनाद उत्पन्नहुए फिर श्वेतघोड़ोंसे युक्त श्रीकृष्णजीको सारथी रखनेवाले बड़े साहसी शीघ्रतासे युक्त अर्जुनने सचेत होकर ३८ ऐन्द्रास्त्र को प्रकट किया हे श्रेष्ठ ! उस

ऐन्द्रास्त्र से हज़ारों बाण उत्पन्न हुए ३६ और सब दिशाओं में दिखाईदिये और युद्ध में आपके हज़ारों रथ घोड़े और हाथियों को शस्त्रों से मारा ४० हे भरतवंशिन्! इसके पीछे सेना के मरनेपर संसप्तक और गोपालों के समूहों को बड़ा भय उत्पन्नहुआ ४१ ऐसा कोई मनुष्य न था और न रहा जो अर्जुनको मारता सब वीरों के देखतेहुए आपकी सेना मारीगई ४२ वहां पाण्डव अर्जुन सेना को घायल और पराक्रम से थकित देखता हुआ युद्ध में दशहज़ार शूरवीरों को मारकर ४३ निर्द्धूम अग्नि के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुआ हे भरतवंशिन्, महाराज! परीक्षा करीहुई चौदह सहस्र सेना और तीन हज़ार हाथियों समेत दश हज़ार रथों से संसप्तकों ने फिर अर्जुन को आ घेरा और यह विचार ठानलिया कि चाहै विजय होय वा पराजय होय युद्ध में लड़कर मरना योग्य है ऐसा विचारकर आपके शूरवीरों का और अर्जुन का महाघोर युद्ध हुआ॥ ४४। ४७॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेचतुष्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५४॥

पचपनवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! कृतवर्मा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनी और अपने निजभाइयों समेत राजा दुर्योधन ने १ अर्जुन के भय से पीड्यमान सेना को देखकर बड़े वेग से उनको ऐसे छुटाया जैसे समुद्र में से टूटीहुई नौका को निकालते हैं २ हे भरतवंशिन्! इसके अनन्तर एक मुहूर्ततक वह कठिन युद्ध रहा जो भयभीतोंको भय और शूरवीरों की प्रसन्नता का बढ़ानेवाला था ३ युद्ध में कृपाचार्यके छोड़ेहुए टीड़ियों के समूहों के समान बाणों ने सृञ्जयों को ढकदिया ४ इसके पीछे बहुत शीघ्रता से शिखण्डी कृपाचार्य के सम्मुखगया और चारोंओरसे उन श्रेष्ठ ब्राह्मण कृपाचार्य के ऊपर बाणों को बरसाया ५ फिर महाअस्त्रों के ज्ञाता कृपाचार्य ने क्रोधयुक्त होकर उन बाणों के समूहों को हटाकर युद्ध में शिखण्डी को दशबाणों से पीड़ित किया ६ फिर शिखण्डी ने भी क्रोधयुक्त होकर कङ्कपक्ष से जड़ित शीघ्रगामी सातबाणों से उन क्रोधरूप कृपाचार्य को पीड्यमान किया ७ उसके पीछे उन महारथी कृपाचार्यजीने तीक्ष्णबाणों से शिखण्डी को घोड़े रथ और सारथी से रहित कर दिया ८ इसके पीछे महारथी शिखण्डी मृतक घोड़ों के रथसे कूदकर अच्छे

प्रकार से ढाल तलवार को लेकर शीघ्र आचार्यजी के सम्मुख गया ६ तब आचार्यजीने उस आतेहुएको टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे ढकदिया यह देखकर सबको आश्चर्यसा हुआ १० वहां हमने शस्त्रों के अपूर्व आघातों को ऐसा देखा जैसे कि शिलाओंका उछलना होताहै जब हे राजन्! शिखण्डी निश्चेष्ट होकर युद्ध में नियतहुआ ११ तब श्रेष्ठ महारथी धृष्टद्युम्न उस कृपाचार्य के बाणों से ढकेहुए शिखण्डी को देखकर शीघ्रही कृपाचार्य के सम्मुख गया १२ इसके पीछे महारथी कृतवर्मा ने कृपाचार्य के रथ की ओर जानेवाले धृष्टद्युम्न को बड़े वेग से रोका १३ पीछे से कृपाचार्य के रथ की ओर पुत्र और सेना समेत आनेवाले युधिष्ठिरको अश्वत्थामाने रोका १४ और बाणोंकी वर्षा करनेवाले आपके पुत्रों ने शीघ्रता करनेवाले महारथी नकुल और सहदेवको रोका १५ हे भरतवंशिन्! सूर्य के पुत्र कर्ण ने युद्ध में भीमसेन, कारुष्य, कैकेय और सृञ्जयदेशियों को रोका इसके पीछे शीघ्रता से युक्त भस्म करने के अभिलाषी सारद्वत कृपाचार्य ने युद्ध में शिखण्डी के ऊपर बाणों को चलाया १६।१७ फिर वारंवार खड्ग को फिराते हुए शिखण्डी ने उन कृपाचार्य के स्वर्णमयी चारों ओर से फेंके हुए बाणों को काटा १८ हे भरतवंशिन्! फिर गौतम कृपाचार्यजी ने उसकी सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढाल को बड़ी शीघ्रतापूर्वक शायकों से तोड़ा इस हेतु से सब मनुष्य पुकारे १६ फिर वह ढाल से रहित हाथ में खड्ग लिये जैसे कि मृत्यु के मुखपर रोगी वर्तमान होता है वैसेही कृपाचार्य के स्वाधीनता में वर्तमान शिखण्डी उनके पास गया हे राजन्! चित्रकेतु का पुत्र बड़ा पराक्रमी सुकेतु कृपाचार्य के बाणों से ढकेहुए महादुःखी शिखण्डी को देखकर शीघ्रही सम्मुख गया २०।२१ युद्ध में बड़े तीक्ष्ण बाणों से ढकता हुआ महासाहसी सुकेतु कृपाचार्य के रथ के समीप पहुँचा २२ हे राजाओं में श्रेष्ठ! इसके पीछे शिखण्डी युद्ध में प्रवृत्त उस व्रत करनेवाले ब्राह्मण को देखकर शीघ्रही हटगया तदनन्तर सुकेतु ने कृपाचार्य को नौ बाणों से व्यथितकर सत्तरबाणों से पीड्यमान किया फिर दूसरीबार भी तीनबाणों से घायल किया २३।२४ और उनके धनुष को बाण समेत काटकर एक बाण से उनके सारथी को भी मर्मस्थल में कठिन घायल किया २५ इसके पीछे क्रोधयुक्त कृपाचार्य ने दृढ़ नवीन धनुष लेकर तीस बाणों से सुकेतु के सब मर्मस्थलों को घायल किया २६ तब वह अत्यन्त कम्पा-

यमान और व्याकुल सुकेतु अपने उत्तम रथपर ऐसे चेष्टा करनेवाला हुआ जैसे कि भूकम्प होने में वृक्ष काँपता है २७ तब उस कम्पायमान के शरीर से प्रकाशित कुण्डलों समेत शिर को पगड़ी समेत क्षुरप्र से गिराया उस समय उसका शिर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बाज पक्षी का लाया हुआ मांसपिण्ड गिरपड़ताहै शिर कटतेही उसका शरीर भी पृथ्वी पर गिरपड़ा २८। २९ इसके मरने के पीछे उसके अग्रगामी लोग क्रोधयुक्त हुए और युद्ध में कृपाचार्य को त्यागकरके दशो दिशाओं में भागगये ३० हे भरतवंशिन्! प्रसन्नचित्त महारथी कृतवर्मा युद्धमें धृष्टद्युम्नको रोककर बोला कि खड़ा हो यह कहकर कृतवर्मा और धृष्टद्युम्न का वह महाभयकारी युद्ध हुआ जैसे कि मांस के निमित्त लड़नेवाले दो बाज पक्षियों का अत्यन्त युद्ध होता है ३१। ३२ हार्दिक्य के पुत्र कृतवर्मा को पीड़ित करनेवाले क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने युद्ध में नौ बाणों से कृतवर्मा को छाती पर घायल किया ३३ फिर धृष्टद्युम्न के हाथ से अत्यन्त घायल कृतवर्मा ने युद्ध में बाणों से धृष्टद्युम्न को रथ और घोड़ों समेत ढकदिया ३४ हे राजन्! रथ समेत ढकाहुआ धृष्टद्युम्न ऐसा दिखाई दिया जैसे कि जलधारावाले बादलों से ढकाहुआ सूर्य होता है ३५ अर्थात् वह घायल हुआ धृष्टद्युम्न युद्ध में स्वर्णमयी बाणों से उन बाणसमूहों को हटाकर महाशोभायमान हुआ इसके पीछे क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्न ने कृतवर्मा पर बड़ी बाणों की वर्षा करी ३६। ३७ कृतवर्मा ने भी उस एकाएकी गिरनेवाले बाणसमूहोंको हज़ारों बाणोंसे हटाया ३८ फिर उस असह्य हटाये हुए बाणसमूहों को देखकर युद्ध में कृतवर्माको रोका ३९ और तीक्ष्णधारवाले भल्ल से उसके सारथी को बड़े वेग से यमलोक को भेजा और वह मृतक होकर रथ पर गिरपड़ा ४० फिर पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने बड़े बली शत्रु को विजय करके युद्ध में सायकों के द्वारा कौरवों को शीघ्रता से रोका ४१ उसके पीछे आपके शूरवीर सिंहनादों को करके शीघ्रही धृष्टद्युम्न के सम्मुखगये और युद्ध जारी हुआ॥ ४२॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५५॥

छप्पनवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, सात्यकी और शूरवीर द्रौपदी के पुत्रों से रक्षित युधिष्ठिर को देखकर अश्वत्थामाजी प्रसन्नचित्त के समान सम्मुख वर्तमान हुए १ अर्थात्

हस्तलाघवता के समान सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण घोर बाणों को फेंकते और नाना प्रकार के मार्गों समेत अपने अभ्यासों को दिखलाते हुए सम्मुख आये २ उसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने युद्ध में युधिष्ठिर को घेरकर दिव्य अस्त्रों से अभिमन्त्रित बाणोंकी वर्षा के द्वारा आकाशको व्याप्तकिया ३ अश्वत्थामा के बाणों से आच्छादित आकाश में कुछ नहीं जाना गया और बड़ी युद्ध-भूमि का शिर बाणरूप होगया ४ हे भरतर्षभ ! आकाश में सुवर्णजालों से अलंकृत और ढकाहुआ बाणजाल ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि नियत हुआ यज्ञ शोभित होता है ५ उन प्रकाशित बाणजालों से जब आकाश ढक गया और बाणों के युद्ध में आकाश मण्डल में बादलों की छाया होगई ६ ऐसे बाणरूप जालों के होने पर हमने एक आश्चर्य को देखा कि अन्तरिक्ष का उड़नेवाला कोई जीव नहीं उड़ा ७ उपाय करनेवाले सात्यकी और पाण्डव धर्मराज समेत अन्य सेनाके शूरवीरलोग पराक्रम नहीं करसके ८ हे महाराज ! वहां महारथी अश्वत्थामा की हस्तलाघवता को देखकर आश्चर्ययुक्त होकर वह सब राजालोग उसके सम्मुख देखने को भी ऐसे समर्थ न हुए ९ जैसे कि सन्तप्त करनेवाले सूर्य को कोई नहीं देखसक्ता है इसके पीछे सेना के घायल होने पर महारथी द्रौपदी के पुत्र १० सात्यकी धर्मराज और सब पाञ्चालदेशीय इकट्ठे हुए और घोर मृत्यु के भय को त्यागकर अश्वत्थामा के सम्मुख गये ११ सात्यकीने शिलीमुखनाम सत्ताईस बाणों से अश्वत्थामा को छेदकर सुवर्ण से अलंकृत सातनाराचों से पीड्यमान किया १२ युधिष्ठिर ने तिहत्तर बाणों से प्रतिविन्ध्यने सातबाणों से श्रुतकर्मा ने तीनबाणों से श्रुतिकीर्ति ने सातबाणों से १३ सुतसोम ने नौ बाणों से शतानीक ने सातबाणों से और अन्य २ शूरों ने भी चारों ओरसे घायलकिया १४ हे राजन् ! इसके पीछे उस क्रोधयुक्त विषैले सर्पके समान श्वास लेनेवाले अश्वत्थामा ने शिलीमुखनाम पच्चीसबाणों से सात्यकी को घायल किया १५ श्रुतिकीर्ति को नौबाणों से सुतसोम को पांचबाणों से श्रुतकर्मा को आठबाणों से प्रतिविन्ध्य को तीनबाणों से १६ शतानीक को नौबाणों से युधिष्ठिर को पांचबाणों से और इसी प्रकार अन्य शूरों को भी दो २ बाणों से घायलकिया १७ और तीक्ष्णधारवाले बाण से श्रुतिकीर्ति के धनुषको काटा इसके पीछे महारथी श्रुतिकीर्ति ने दूसरे धनुषको लेकर १८ अश्वत्थामा

को तीनबाणों से छेदकर दूसरे तीक्ष्णबाणों से पीड्यमान किया हे भरतर्षभ, महाराज, धृतराष्ट्र! इसके पीछे अश्वत्थामा ने बाणों की वर्षा से १९ उस सेना को चारोंओर से ढक दिया तब तो महासाहसी हँसते हुए अश्वत्थामा ने धर्मराज के धनुष को फिर काटा २० और तीनबाणों से पीड्यमान किया हे राजन्। उसके पीछे धर्मपुत्र ने दूसरे बड़े धनुष को लेकर २१ अश्वत्थामा को सत्तरबाणों से पीड़ित किया और छाती समेत भुजाओं को घायलकिया तब सात्यकी युद्ध में प्रहारकरनेवाले अश्वत्थामा के २२ धनुष को अपने तीक्ष्ण अर्धचन्द्र बाण से काटकर महाध्वनि से गर्जा इसके पीछे उस टूटे धनुषधारी शक्ति रखनेवाले अश्वत्थामा ने शक्ति से सात्यकी के रथ से बड़ी शीघ्रतापूर्वक सारथीको गिराया २३।२४ तदनन्तर प्रतापवान् अश्वत्थामा ने दूसरे धनुषको लेकर सात्यकी को बाणों की वर्षा से ढकदिया रथ से सारथी के गिरनेपर युद्ध में उसके घोड़े भागने लगे और जहां तहां भागतेहुए दिखाईदिये २५।२६ फिर युधिष्ठिर के साथी शूरवीर तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते वेग से उस महाशस्त्रधारी अश्वत्थामा के ऊपर बाणोंकी वृष्टि करनेलगे उन क्रोधरूप आनेवालों को देख कर शत्रुसन्तापी २७ हँसते हुए द्रोणपुत्र ने उस महायुद्ध में उनको रोका इस के पीछे सैकड़ों बाणरूप ज्वाला रखनेवाले महारथी २८ अश्वत्थामा ने युद्ध में सेनारूपी सूखे वन को ऐसे भस्म कर दिया जैसे कि वन में सूखे तृणों को अग्नि भस्म करदेताहै हे भरतवंशिन्! अश्वत्थामा से सन्तप्त करीहुई वह पाण्डवीय सेना २९ ऐसे व्याकुल होगई जैसे कि तिमिनामक जीव करके नदी का मुख व्याकुल कियाजाता है हे महाराज! अश्वत्थामा के ऐसे पराक्रम को देख कर ३० उसके हाथ से सब पाण्डवों को मृतकरूप माना फिर क्रोध और शीघ्रता से युक्त द्रोणाचार्य का शिष्य महारथी युधिष्ठिर ३१ अश्वत्थामा से कहनेलगा कि ठीक २ तुम में न तो स्नेह है और न उपकार को स्मरण करते हो ३२ हे पुरुषोत्तम! तुम मुझी को मारना चाहते हो तुम ब्राह्मण होकर तपस्या दान और वेदपाठ करने के योग्य हो ३३ क्योंकि लिखा है कि ब्राह्मण तप दान और वेदपाठ के योग्य हैं क्षत्रिय धनुष नवाने के योग्य हैं सो आप नाममात्र केही ब्राह्मण हैं हे महाबाहो! तेरे देखतेही देखते कौरवोंको युद्ध में विजय करूंगा ३४ तुम युद्ध में कर्म करो निश्चय करके ब्राह्मणबन्धु हो हे महाराज! इस प्रकार के

वचनों को सुनकर हँसते और मन्द मुसकान करतेहुए अश्वत्थामा ने ३५ योग्य और मुख्य बात को विचारकर कुछ उत्तर नहीं दिया और उत्तर न देकर बाणों की वर्षा से पाण्डवों को ऐसे ढकदिया ३६ जैसे कि क्रोधरूप मृत्यु सब संसार को व्याप्त करदेती है हे श्रेष्ठ! तब अश्वत्थामा के हाथ से ढकाहुआ पाण्डव युधिष्ठिर ३७ शीघ्रही अपनी बड़ी सेना को छोड़कर दूर हटगया हे राजन्! उस युधिष्ठिर के हटजाने पर ३८ बड़े साहसी अश्वत्थामाजी पश्चिममुख हुए और युधिष्ठिर युद्ध में अश्वत्थामा को छोड़कर कठोर कर्म में चित्त को करके आप की सेना के सम्मुख गया ॥ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिपार्थापयानेषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि चन्देरी और कैकेय देशियों से युक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेन को आप कर्ण ने रोककर शायकों से हटाया १ इसके पीछे कर्ण ने भीमसेन के देखते हुए युद्ध में चन्देरी कारुष्य और सृञ्जय देशीय महारथियों को मारा २ तब भीमसेन रथियों में श्रेष्ठ कर्ण को छोड़कर कौरवीय सेनाके सम्मुख गया ३ कर्णने भी युद्धमें हज़ारों पाञ्चाल कैकेय और बड़े धनुषधारी सृञ्जयोंको मारा ४ अर्जुन ने संसप्तकों में भीमसेन ने कौरवों में और कर्ण ने महारथी पाञ्चालों में प्रलयकरदी ५ हे राजन्! आपके कुविचारमें अग्नि के समान उन तीनों वीरों के हाथ से युद्ध में मरनेवाले असंख्य क्षत्रियों ने नाश को पाया ६ हे भरतर्षभ! और क्रोधयुक्त दुर्योधनने नौबाणोंसे चारों घोड़ोंसमेत नकुलको घायलकिया ७ इसके पीछे बड़े साहसी आपके पुत्र ने क्षुरप्रसे सहदेव की स्वर्णमयी ध्वजा को काटा ८ फिर क्रोधयुक्त नकुल ने सातबाणों से सहदेवने पांचबाणों से आपके पुत्र को घायलकिया ९ उस समय अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधनने पांच २ बाणों से उन भरतवंशियों में और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ नकुल सहदेव को घायल करके दूसरे दो भल्लों से उन दोनों के धनुषों को भी अकस्मात् काटडाला और इकीस बाणोंसे घायलकिया १०। ११ युद्धमें देवकुमारों के समान वह शूरवीर दूसरे इन्द्रधनुष के समान शुभधनुषों को लेकर शोभायमान हुए १२ इसके पीछे युद्धमें वेगवान् वह दोनों भाई युद्ध में घोरबाणों की वर्षा भाई दुर्योधन के ऊपर ऐसे करनेलगे जैसे कि दो बादल पर्वतपर वर्षाकरते हैं १३ हे महाराज!

तब तौ आपके क्रोधयुक्त पुत्रने बड़े धनुषधारी दोनों पाण्डवोंको अपने बाणोंसे रोका १४ उस समय दुर्योधन का धनुष युद्ध में मण्डलाकार दिखलाई देता था और चारोंओरसे दौड़तेहुए शायक दृष्टपड़ते थे १५ सब दिशाओं को ऐसे ढक दिया जैसे कि सूर्य की किरणें संसारको व्याप्त कर देती हैं इसके अनन्तर आकाशमण्डल को बाणरूपी जालों से ढकजाने पर १६ नकुल और सहदेव के निमित्त उसका रूप काल और मृत्युरूप यमराज के समान दिखाई पड़ा महारथियों ने आप के पुत्र के उस पराक्रम को देखकर १७ नकुल और सहदेव को मृत्यु के गाल में फँसाहुआ माना इसके पीछे पाण्डवों का महारथी सेनापति धृष्टद्युम्न १८ वहां गया जहांपर कि राजा दुर्योधन था वहां जाकर महारथी शूरवीर नकुल और सहदेव को उल्लङ्घनकर धृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र को शायकों से रोका तब आपके साहसी क्रोधयुक्त पुत्रने हँसकर १९। २० धृष्टद्युम्नको पचीस बाणों से छेदकर पैंसठबाणों से घायलकरके बड़े शब्दसे गर्जना करी और फिर उसके बाण और हस्तत्राण समेत धनुप को २१। २२ अपने तीक्ष्णक्षुरप्र से काटडाला तब शत्रुविजयी धृष्टद्युम्न ने उस टूटे धनुप को डालकर २३ बड़े वेग से बड़े भारवाहक नवीन धनुप को हाथ में लिया और वेग से लालनेत्र क्रोधयुक्त २४ घायलहुआ धृष्टद्युम्न महाशोभायमान हुआ फिर सर्पों के समान श्वास लेनेवाले पन्द्रह नाराचों को मारने के इच्छावान् धृष्टद्युम्न ने राजा दुर्योधन के ऊपर छोड़े २५ वह तीक्ष्णधार कङ्क और मोरपक्षी के परोंसे जटित बाण राजाके स्वर्णमयी कवच को काटकर पृथ्वी में २६ बड़े वेग से समागये फिर वह आप का पुत्र अत्यन्त घायलहोकर ऐसा शोभायमानहुआ २७ जैसे कि वसन्तऋतु में अच्छा प्रफुल्लित किंशुक वृक्ष होता है नाराचों से टूटा कवच और प्रहारों से घायलशरीर २८ क्रोधयुक्त दुर्योधन ने भल्ल से धृष्टद्युम्न के धनुपको काटा और बड़ी शीघ्रता से टूटे धनुपवाले धृष्टद्युम्नको २९ दश शायकों से दोनों भृकुटियों में घायल किया बड़े कारीगर के स्वच्छ किये हुए उन बाणों ने उसके मुख को ऐसा शोभायमान किया ३० जैसे कि मधुके लोभी भ्रमर अच्छे फूलेहुए कमल को शोभित करते हैं फिर उस महासाहसी धृष्टद्युम्नने उस टूटेहुए धनुपको डालकर ३१ बड़े वेग से सोलह भल्लों समेत दूसरे धनुष को लिया इसके पीछे पांच बाणों से दुर्योधन के सारथी समेत घोड़ों को मारकर ३२ एक भल्ल से सुनहरी

धनुष को काटा फिर धृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र के रथ, उपस्कर, छत्र, शक्ति, खड्ग, गदा और ध्वजाको दश भल्लोंसे काटा ३३ सब राजाओंने दुर्योधनकी उस टूटी हुई ध्वजाको जोकि सुवर्णके बाजूबन्द रखनेवाली अपूर्व मणियोंसे जटित नाग चिह्नवाली अति शुभरूप की थी देखा हे भरतर्षभ ! फिर उस रथ से विहीन टूटे कवच और ध्वजावाले दुर्योधनको ३४।३५ उसके निज भाइयोंने चारोंओरसे रक्षित किया हे राजन् ! भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित राजा दण्ड-धारी दुर्योधन को रथपर बैठाकर ३६ धृष्टद्युम्न के देखतेहुए दूरलेगया फिर राज्य का लोभी महाबली कर्ण सात्यकीको विजयकरके ३७ युद्धमें द्रोणाचार्यके मा-रनेवाले उग्रबाणधारी धृष्टद्युम्नके सम्मुखगया फिर बाणोंको मारताहुआ सात्यकी उसके पीछे ऐसा शीघ्र चला ३८ जैसे कि हाथीको हाथी दाँतोंसे जङ्घास्थान में पीड्यमान करताहुआ जाताहै ३९ हे भरतवंशिन् ! बड़ेमहात्मा आपके शूरवीरों का वह महाघोर युद्ध कर्ण और धृष्टद्युम्न के मध्य में ऐसा उत्तम युद्ध हुआ कि जिसमें पाण्डवों के और हमारी ओरके किसी पुरुषने भी मुख को न मोड़ा ४० इसके पीछे बड़ी शीघ्रता से कर्ण पाञ्चालों से युद्ध करनेलगा हे नरोत्तम, राजन्, धृतराष्ट्र ! मध्याह्न के समय घोड़े हाथी और मनुष्यों का विध्वंसन दोनों ओर में हुआ फिर विजयाभिलाषी वह सब पाञ्चाल ४१।४२ शीघ्रता से कर्ण के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि वृक्षकी ओर पक्षी जाते हैं इसरीति से क्रोधयुक्त बाण-समूहों से रोकतेहुए अधिरथी कर्ण ने उन उपाय करनेवाले साहसी सेनापति से मिले हुए ४३ व्याघ्रकेतु सुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्ल, रोचमान, सिंह-सेन और दुर्जय को सम्मुख पाया उनवीरों ने उस नरोत्तम को रथमार्ग से घेर लिया ४४।४५ जोकि बाणोंका छोड़नेवाला क्रोधयुक्त होकर युद्धमें शोभा देने वाला था उस प्रतापी कर्णने उन दूरसे युद्धकरनेवाले ४६ आठोंवीरोंको तीक्ष्ण धारवाले आठ बाणों से पीड्यमानकिया हे महाराज ! उनको पीड़ितकरके महाप्र-तापी कर्णने ४७ उन अन्य हज़ारों शूरवीरोंको भी जोकि युद्धमें बड़े कुशल थे मारा इसके पीछे उस अत्यन्त क्रोधयुक्तने जिष्णु, जिष्णुकर्मा, देवापी, भद्र ४८ दण्ड, चित्र, चित्रायुध, हरि, व्याघ्रकेतु, रोचमान, महारथी शलभ ४९ इन चन्देरी देशों के महारथियों को मारा उस समय उनके प्राण हरनेवाले कर्ण का शरीर ऐसा होगया ५० जैसे कि रुधिर से लिप्त शिवजी का बड़ा शरीर होता

है हे भरतवंशिन् ! इसके सिवाय युद्ध में कर्ण के बाणों से अनेक हाथी भी घायलहुए ५१ बड़ी व्याकुलता उत्पन्न करनेवाले भयकारी वह हाथी युद्ध में कर्ण के बाणों से चारों ओर को भाग २ कर पृथ्वीपर गिरपड़े ५२ वज्र से ताड़ित पर्वतों के समान घोर शब्द करतेहुए गिरनेवाले हाथी घोड़े मनुष्य और रथों से कर्ण के मार्ग की पृथ्वी आच्छादित होगई ५३ युद्ध में भीष्म, द्रोणाचार्य और अन्य आपके वीरों ने भी ऐसा कर्म नहीं किया जैसा कि युद्धभूमि में कर्ण ने किया ५४ । ५५ हे महाराज ! हाथी घोड़े रथ और मनुष्यों का कर्ण के हाथ से नाशहुआ जैसे कि मृगों के मध्य में घूमनेवाला निर्भय सिंह पशुओं का नाशकरता है ५६ उसी प्रकार कर्ण भी भयभीत मृगों के समान पाञ्चालों में निर्भयतापूर्वक विचरता हुआ नाश करता था जैसे कि सिंह भयभीत मृगों को दिशाओं में भगादेता है ५७ उसी प्रकार कर्ण ने पाञ्चालों के रथसमूहों को भगादिया जैसे कि सिंह के मुख को पाकर कोई पशु नहीं जीता है ५८ उसी प्रकार महारथी कर्ण को पाकर कोई जीवता नहींरहा निश्चय करके जिस प्रकार सब जीवमात्र वैश्वानर अग्नि को पाकर भस्म होते हैं ५६ उसीप्रकार हे भरतवंशिन् ! सृञ्जयरूपी वन भी कर्णरूपी अग्नि से भस्म होगये हे भारत ! कर्ण ने चन्देरी कैकेय और पाञ्चाल देशियों के मध्य में नामों को सुना २ करवीरों के अङ्गीकृत अनेक युद्धकर्त्ताओं को मारा इस कर्ण के पराक्रम को देखकर मैंने विचार किया ६० । ६१ कि कर्ण के हाथ से एक भी पाञ्चालदेशीय जीवता न बचेगा कर्ण ने युद्ध में पाञ्चालों को बारंबार छिन्नभिन्न करदिया ६२ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त धर्मराज युधिष्ठिर उस महायुद्ध में पाञ्चालों के मारनेवाले कर्ण को देखकर सम्मुख दौड़े ६३ हे श्रेष्ठ ! धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पुत्र, और अन्य हज़ारों मनुष्यों ने शत्रु के मारनेवाले कर्ण को घेरलिया ६४ शिखण्डी, सहदेव, नकुल, नकुल का पुत्र, जन्मेजय, सात्यकी, बहव, प्रभद्रक ६५ और धृष्टद्युम्न, यह सब बड़े तेजस्वी युद्ध में सम्मुख होकर धनुषधारी बाण फेंकनेवाले कर्ण के सम्मुख होकर बाण और अस्त्रों समेत शोभायमान हुए ६६ वहां अकेला कर्ण युद्ध में उन चन्देरी पाञ्चालदेशीय और अन्य शूरवीरोंसमेत पाण्डवों के सम्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सर्पों के सम्मुख अकेला गरुड़ होता है ६७ हे राजन् ! उन सबके साथ कर्ण के ऐसे घोररूप युद्ध हुए जैसे कि पूर्व समय में देवताओं का

युद्ध दानवों से हुआ था ६८ फिर उस क्रोधरूप ने यमदण्ड के समान अपने बाणों से वाहीक, कैकेय, मत्स्य वा सत्य, मद्र, सिन्धु इन देशियों को सबओर से मारा ६९ वह बड़ा धनुषधारी अकेलाही युद्ध में लड़ताहुआ बहुत शोभित हुआ और भीमसेन के नाराचों से हाथी मर्मस्थलों में घायलहुए ७० जिनके सवार मारेगये उन गिरतेहुए हाथी घोड़े और निर्जीव पत्तियों ने पृथ्वी को कम्पायमान करदिया ७१ युद्ध में घायल रुधिर को वमन करतेहुए और जिन के कि शस्त्र गिरपड़े वह हज़ारों रथी मारेगये ७२ रथी अश्वसवार सारथी पदाती घोड़े यह सब हाथियों समेत घायल होकर भीमसेन से भयभीत और मरे हुए दृष्टिपड़े ७३ भीमसेन के तोड़ेहुए अस्त्र शस्त्रादिकों से पृथ्वी भरगई दुर्योधन की वह सब सेना भीमसेन के भय से पीड़ित अचेष्टितों के समान नियत थी ७४ उत्साह से रहित घायल और अङ्गचेष्टा विना अत्यन्त दुःखीरूप युद्ध में दिखाईपड़ी ७५ हे राजन्! जैसे कि प्रसन्नकाल में स्वच्छ जलवाला समुद्र स्थिर नियत होताहै उसीप्रकार आपकी सेना भी निश्चल होगई ७६ अर्थात् क्रोध पराक्रम से युक्त आपके पुत्र की वह सेना अहङ्कार से पराजित होकर शोभा से रहित होगई ७७ हे भरतर्षभ ! वह सेना परस्पर घायल होकर रुधिरों से लिप्त होकर भागी ७८ फिर युद्ध में क्रोधयुक्त पराक्रमी कर्ण पाण्डवों समेत सेना को ७९ और भीमसेन भी कौरवों समेत कौरवीयसेना को भगाते हुए शोभायमान हुए इस रीति से महाघोर भयङ्कर युद्ध जारी होनेपर ८० महाविजयी अर्जुन सेना में संसप्तकों के बहुत से समूहों को मारकर फिर वासुदेवजी से बोला ८१ कि हे जनार्दनजी ! यह युद्धाभिलाषी सेना छिन्न भिन्न होकर पराजित हुई यह संसप्तक महारथी अपने समूहों समेत मेरे बाणों से ऐसे भागते हैं ८२ जैसे कि सिंह के शब्द को सुनकर मृग भागते हैं और बड़े युद्ध में सृञ्जयों की बड़ी सेना पृथक् २ हुई जाती है ८३ हे श्रीकृष्णजी ! राजाओं की सेना के मध्य में प्रसन्नतापूर्वक घूमनेवाले बुद्धिमान् कर्ण की यह ध्वजा दिखाई देती है जिसमें कि हाथी की कक्षा का चिह्न है ८४ और कोई महारथी कर्ण के विजय करनेको समर्थ नहीं है आप भी कर्णको बड़ा पराक्रमी जानते हैं ८५ अब आप वहां चलिये जहांपर कि वह कर्ण हमारी सेना को भगारहा है आप इन सबको त्यागकर युद्धमें महारथी कर्णके सम्मुख चलिये ८६ हे श्रीकृष्णजी !

मुझको यह उचित मालूम होता है अथवा जैसी आप की इच्छा हो वही करना योग्य है उसके इस वचन को सुनकर गोविन्दजी हँसकर बोले ८७ हे पाण्डव ! तुम शीघ्रही कौरवों को मारो इसके पीछे गोविन्दजी की आज्ञानुसार अपने सारथीरूप श्रीकृष्णजी समेत श्वेत हंसवर्ण घोड़ों की सवारी से अर्जुन आपकी सेना में आ पहुँचा केशवजी का आज्ञाकारी सुवर्ण के भूषणों से युक्त ८८।८९ श्वेत घोड़ों के रथ के पहुँचतेही आपकी सेना चारों दिशाओं में हटगई बादल के समान शब्दायमान हनुमान्जीकी ध्वजासे संयुक्त चेष्टावान् पताकावाला ९० वह रथ उस सेना में ऐसे पहुँचा जैसे कि स्वर्ग में विमान पहुँचता है वहां वह अर्जुन और केशवजी दोनों सेना को चीरते हुए प्रविष्ट हुए ९१ और क्रोध से भरे लालनेत्र कियेहुए वह दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन शोभायमान हुए युद्ध में कुशल और बुलायेहुए वह दोनों युद्धरूपी यज्ञभूमि में ऐसे आ पहुँचे ९२ जिस प्रकार विधिपूर्वक यज्ञ करनेवालों से आह्वान किये हुए अश्विनीकुमार होते हैं फिर क्रोधयुक्त वह दोनों नरोत्तम ऐसे युद्ध में प्रवृत्त हुए ९३ जैसे कि महावन में तल शब्द से क्रोधित महाबली हाथी होते हैं फिर अर्जुन रथों की सेना और घोड़ों के समूहों को मझाकर ९४ पाशधारी यमराज के समान सेना में घूमने लगा हे भरतवंशिन् ! युद्ध में आपकी सेना के मध्य में पराक्रम करनेवाले उस अर्जुन को देखकर ९५ आपके पुत्र ने संसप्तकों के समूहों को फिर प्रेरणाकरी तब हजार रथ तीनसौ हाथी ९६ चौदहहजार घोड़े और दोलाख धनुषधारी ९७ शूरवीर लक्षों के बेधनेवाले चारोंओर से घिरेहुए पदातियों समेत महारथी अर्जुन को बाणों से आच्छादित करतेहुए सम्मुख वर्तमान हुए ९८ हे महाराज ! उन सब लोगों ने चारोंओर से बाणों की वर्षा करके अर्जुन को ढकदिया फिर शत्रु की सेना का पीड्यमान करनेवाला युद्ध में बाणोंसे ढकाहुआ वह अर्जुन पाशधारी यमराज के समान अपना रुद्ररूप दिखलाता हुआ और संसप्तकों को मारताहुआ अपूर्व दर्शन के योग्य हुआ ९९।१०० इसके पीछे बिजली के समान प्रकाशमान सुवर्ण से अलंकृत अर्जुन के चलाये हुए बाणों से सब आकाश ढक गया १०१ वहां अर्जुन के छोड़े हुए बड़े २ बाणों के गिरने से सब आकाश आच्छादित होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि कद्रू के बेटे सर्पों से व्याप्त होकर शोभित होता है १०२ बड़े साहसी पाण्डव ने सुनहरीपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण

नोक कैसे टेढ़े पर्ववाले बाणों को सब दिशाओं में छोड़ा १०३ मनुष्यों ने अर्जुनकी प्रत्यञ्चा के शब्द से यह अनुमान किया कि पृथ्वी आकाश सब दिशा समुद्र और पर्वत टूटते हैं १०४ महारथी अर्जुन दशहज़ार क्षत्रिय महारथियोंको मारकर शीघ्रही संसप्तकों के सम्मुख गया १०५ वहां अर्जुन ने काम्बोज के राजा से रक्षित सेनाको नेत्रों के सम्मुख पाकर अपने बाणों के बल से उसको ऐसे मारा जैसे कि दानवलोगों को इन्द्र मारताहै और बड़ी शीघ्रतासे मारने के इच्छावान् शत्रु लोगोंके शस्त्र भुजा हाथ और शिरों को भी काटा १०६।१०७ वह शस्त्रोंसे रहित टूटेअङ्ग होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि संसारी वायुसे टूटे बहुत शाखावाले वृक्ष गिरते हैं १०८ हाथी घोड़े रथ वा पत्तियों के समूहोंके मारनेवाले अर्जुनके ऊपर सुदक्षिणके छोटे भाईने बाणोंकी वर्षा करी १०९ तब अर्जुन ने उस बाणवर्षा करनेवाले की परिघ के समान दोनों भुजाओं को दो अर्धचन्द्रोंसे और पूर्णचन्द्रमाकेसमान मुखवाले शिरको क्षुरप्रसे जुदाकिया११० उसके पीछे बड़े रुधिर को गिरानेवाला वह राजा रथ से ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे फटाहुआ मनशिल पर्वतका शिखर गिरताहै सुदक्षिणके छोटे भाई काम्बोजदेशीय कमलपत्र के समान नेत्रधारी उन्नत बड़े तेजस्वी अपूर्वदर्शनको इस रीतिसे मारा १११ । ११२ वह काञ्चनके स्तम्भसमान टूटे हेमगिरि के समान वर्तमान था इसके अनन्तर फिर महाघोर युद्ध जारीहुआ ११३ उसयुद्धमें लड़नेवाले शूरवीरों की नाना प्रकार की अपूर्वदशा वर्तमानहुई अर्थात् एक बाणसे मरेहुए काम्बोजदेशीय यवनदेशीय और शकदेशीय घोड़ों से ११४ और रुधिर से लिप्त शूरवीरों से सब रुधिरमयी भूमि होगई मृतक घोड़े और सारथीवाले रथ वा मृतक सवारोंके घोड़े वा मृतक हाथीवान् और सवारोंवाले हाथियोंसे परस्पर में मनुष्यों का बड़ा नाश हुआ ११५ । ११६ अर्जुन के हाथसे उस पक्ष और प्रपक्ष के मरनेपर बड़ी शीघ्रतापूर्वक अश्वत्थामाजी उस महाविजयी अर्जुन के सम्मुख गये ११७ सुवर्णजटित बड़े धनुषको कम्पायमान करता सूर्यकी किरणों के समान घोरबाणों को लेता ११८ क्रोध और अशान्ति से फैलाहुआ मुख रक्तनेत्र वह पराक्रमी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रलयकाल में किङ्करनाम दण्डधारी क्रोधरूप अग्नि होता है ११९ इसके पीछे उग्रबाणों की वर्षाओं को वर्षाया हे महाराज ! उन छोड़े हुए बाणोंसे पाण्डवीय सेनाको भगाया १२०

हे श्रेष्ठ, राजन् ! उसने रथपर सवार श्रीकृष्णजी को देखतेही फिर उदग्र बाणों की वर्षा करी १२१ तब हे महाराज ! अश्वत्थामा के छोड़े हुए और चारोंओर से गिरते हुए उनबाणों से वह रथपर चढ़े हुए दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ढक गये १२२ इसके पीछे प्रतापी अश्वत्थामा ने युद्ध में हज़ारों तीक्ष्ण बाणों से उन श्रीकृष्ण अर्जुनको स्तब्ध कर दिया १२३ इसरीतिसे युद्धके रक्षक उनदोनों को बाणों से आच्छादित देखकर सब जड़ चैतन्य हाहाकार करने लगे १२४ सिद्ध चारणों के वह समूह चारों ओर से यह चिन्ता करते हुए दौड़े कि अब लोकोंकी कुशल होगी वा न होगी १२५ हे राजन् ! ऐसा युद्ध और पराक्रम हम ने प्रथम कभी न देखा था जैसा कि दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन को बाणों से ढकनेवाले अश्वत्थामाने किया १२६ वहां मैंने शत्रुओं के भयकारी अश्वत्थामा के धनुष का शब्द वारंवार सुना १२७ इस युद्धमें वाम दक्षिण दोनों ओर को घूमनेवाले सव्यसाची अश्वत्थामा की प्रत्यञ्चा ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि बादलों के मध्य में बिजली चमकती है १२८ फिर शीघ्रकर्मी दृढ़हस्तवाले अर्जुनने अश्वत्थामाको देख बड़े मोहको प्राप्तहोकर १२९ अपने बल पराक्रम को हत माना और युद्ध में दोनों का शरीर दुर्दर्शहुआ १३० हे राजेन्द्र ! इस प्रकार से अश्वत्थामा और अर्जुन के महाघोर युद्ध होने और पराक्रमी अश्वत्थामा के प्रबल होने १३१ और अर्जुन के निर्बल होनेपर श्रीकृष्णजीमें महाक्रोध उत्पन्न हुआ क्रोधसे श्वासलेते और नेत्रोंसे भस्म करतेहुए उन श्रीकृष्णजीने १३२ युद्ध में अश्वत्थामा और अर्जुन को वारंवार देखा और क्रोधरूप होकर श्रीकृष्णजी अर्जुन से प्रीतिपूर्वक बोले १३३ हे भरतवंशिन्, अर्जुन ! युद्ध में इस तेरे कर्मको अपूर्व मानता हूं कि जहां अश्वत्थामा सरीखा तुझ को उल्लङ्घन करके वर्तमान है १३४ क्या तेरा पराक्रम और भुजबल पूर्व के समान है क्या तेरा गाण्डीवधनुष रथ में हस्तगत नियत है १३५ क्या तेरे दोनोंभुज कुशल हैं और मुट्ठी तो निर्बल नहीं होगई हैं हे अर्जुन ! मैं युद्धमें अश्वत्थामा को ही प्रबल विजयी देखता हूं १३६ हे भरतर्षभ, अर्जुन ! यह गुरु का पुत्र है ऐसा मानकर छोड़ना न चाहिये यह समय त्यागनेके योग्य नहीं है १३७ इस रीति के श्रीकृष्णजी के वचनों को सुनकर शीघ्रता करनेवाले अर्जुनने चौदह भल्लोंको लेकर बड़ी शीघ्रतासे अश्वत्थामा के धनुष को काटा १३८ इसी प्रकार

से ध्वजा, पताका, रथ, छत्र, शक्ति और गदाको तोड़कर वत्सदन्त नाम बाणों से ठोढ़ी के स्थानपर अत्यन्त घायल किया १३९ तब तो अश्वत्थामा बड़ा मूर्च्छित होकर ध्वजा की यष्टी के आश्रय हुआ हे राजन् ! फिर अर्जुन से बचाता हुआ उसका सारथी उस शत्रुओं के भयभीत करनेवाले अचेतरूप अश्वत्थामा को युद्ध से दूरलेगया फिर उस समय शत्रुसन्तापी अर्जुनने १४० । १४१ आप की हज़ारों सेना को मारा यह सब कर्म अर्जुनने उस आपके वीर पुत्रके देखते हुए किया १४२ इस रीति से आपके कुमन्त्रों के कारण शत्रुओंके साथ आपके शूरवीरों का यह महाघोर नाश वर्तमान हुआ १४३ अर्जुन ने संसप्तकों को भीमसेन ने कौरवों को वा सुषेण ने पाञ्चालों को क्षणमात्र में ही युद्धभूमि में छिन्न भिन्न करदिया १४४ हे राजन् ! इस रीति से उत्तम वीरों के सम्मुख नाशकारी युद्ध के होने पर चारोंओर से असंख्य रुण्ड उठ खड़े हुए १४५ हे भरतर्षभ ! आघातों से कठिन पीड्यमान युधिष्ठिर भी युद्ध में एक कोस हट कर नियत हुआ ॥ १४६ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ ! इसके पीछे दुर्योधन ने शल्य आदि अन्य राजाओं समेत कर्ण से कहा कि १ दैवइच्छा से यह स्वर्ग का द्वार खुलाहुआ है ऐसे युद्ध को स्वर्ग और मोक्ष के पानेवाले क्षत्रियलोग पाते हैं २ हे कर्ण ! तू युद्ध में अपने समान युद्ध करनेवाले शूरवीर क्षत्रियों के चित्त का जो प्यारा होता है वह दिन आज वर्तमान होकर नियत हुआ है ३ युद्ध में पाण्डवों को मारकर वृद्धियुक्त पृथ्वी को पावोगे अथवा युद्ध में शत्रुओं के हाथ से मरकर वीरों के लोकों को पावोगे ४ वह सब श्रेष्ठ क्षत्रियलोग दुर्योधन के इस वचन को सुनकर बड़े प्रसन्न होकर अत्यन्त उच्चस्वर से गर्जे और बाजों को बजाया ५ इसके पीछे दुर्योधन की उस सेना के अति प्रसन्न होने पर अश्वत्थामाजी आप के शूरवीरों को प्रसन्न करतेहुए यह वचन बोले कि सब सेना के मनुष्यों के समक्षमें शस्त्रों का त्यागनेवाला मेरा पिता इस धृष्टद्युम्न के हाथ से मारागया ६ । ७ हे राजालोगो ! इस हेतु से मैं उस क्रोध से मित्र के लिये भी तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करता हूं उसको आप सब समझो ८ मैं धृष्टद्युम्न को जब तक न मारलूंगा तब

तक कवच को नहीं उतारूंगा जो मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होगी तो स्वर्ग को भी मैं नहीं पासक्ता ९ युद्ध में भीमसेन अर्जुन को आदि ले जो कोई शूरवीर धृष्टद्युम्न का रक्षक होगा उसको भी मैं युद्ध में बाणों से मारूंगा १० इस वचन के सुनते ही भरतवंशियों की सब सेना एक साथही पाण्डवों के सम्मुख गई और इसी प्रकार वह पाण्डवलोग भी कौरवों के सम्मुख दौड़े ११ हे राजन्! वह महारथियों का संग्राम बड़ा भयकारी हुआ और कौरव वा सृञ्जयों के आगे मनुष्यों का नाश कुछ कम प्रलयही के समान हुआ १२ इसके पीछे युद्ध में उन कठिन प्रहारोंके वर्तमान होनेपर अप्सराओं समेत देवता और सब जीवमात्र उन नरवीरों के देखने के अभिलाषी इकट्ठे हुए १३ अत्यन्त प्रसन्नचित्त अप्सराओं ने युद्ध में अपने कर्म से स्वर्ग में पहुँचने के योग्य बड़े २ नरोत्तम वीरों को दिव्य माला वा नाना प्रकार की गन्धि और रत्नजटित उत्तम २ अद्भुत भूषणों से वर्षा करके ढकदिया १४ फिर वायु ने उन सब गन्धादिकों को लेकर उन सब श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले शूरवीरों को सेवन किया वायु से सेवित होकर परस्पर में मारे हुए शूरवीर पृथ्वीपर गिरपड़े १५ दिव्यमाला वा सुनहरी पुङ्खवाले विचित्र बाणों से व्याप्त उत्तम शूरवीरों से विचित्र वह पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नक्षत्रमण्डल से अलंकृत आकाश होता है १६ इसके पीछे वह युद्धभूमि अन्तरिक्ष के प्रशंसायुक्त वचन बाजों के शब्दों से शब्दायमान धनुष और रथचक्रों के अपूर्व शब्दों से अद्भुतरूप होकर व्याकुलरूप होगई॥ १७॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिभूमिअद्भुतरूपवर्णनेऽष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५८॥

उनसठवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, अर्जुन कर्ण और भीमसेन के क्रोधयुक्त होनेपर इस रीति से राजाओं का यह अद्भुत युद्ध हुआ १ हे राजन्! अर्जुन अश्वत्थामा को पराजित करके और दूसरे महारथियों को भी विजय करके वासुदेवजी से यह वचन बोला २ हे महाबाहो, श्रीकृष्णजी! भागती हुई पाण्डवीय सेना को और युद्ध में महारथियों को भगातेहुए कर्ण को देखो ३ हे श्रीकृष्णजी! मैं धर्मराज युधिष्ठिर को नहीं देखताहूं हे बड़े शूरवीर! मुझको युधिष्ठिर की बड़ी ध्वजा भी नहीं दिखाई देती ४ हे जनार्दनजी! जिनका तीसरा भाग शेष है उन धृतराष्ट्र के पुत्रों में से युद्ध में मेरे सम्मुख कोई नहीं आता है ५ इस हेतु से आप मेरे हित

को करते हुए वहां चलो जहां पर युधिष्ठिर है हे माधवजी ! मैं युद्ध में अपने छोटे भाइयों समेत युधिष्ठिर को कुशल देखकर फिर आनकर शत्रुओं से लड़ूंगा यह सुनकर श्रीकृष्णजी शीघ्रही रथ के द्वारा चले ६ । ७ जहां राजा युधिष्ठिर और महारथी सृञ्जय अपनी २ सेना समेत मृत्यु को हाथ में लिये परस्पर में युद्ध करते थे इसके पीछे मनुष्यों के नाशकाल वर्तमान होनेपर युद्धभूमि को देखते हुए गोविन्दजी अर्जुन से बोले ८ । ९ हे अर्जुन ! देखो कि दुर्योधन के कारण से पृथ्वीपर क्षत्रियों का और भरतवंशियों का महाघोर रुद्ररूप नाश वर्तमान है १० हे धनुषधारिन् ! मरेहुए धनुषधारियों के सुवर्णपृष्ठवाले धनुष और बहुमूल्य टूटेहुए तूणीरों को देखो ११ और सुनहरीपुङ्खयुक्त टेढ़े पर्ववाले बाणों को तेलसे सफा कियेहुए कांचलीसे रहित सर्पों की समान नाराचोंको देखो १२ हाथीदाँत का बेंटा रखनेवाले सुवर्णजटित खड्गों को और टूटेहुए स्वर्णमयी कवचों को देखो १३ सुवर्णजटित प्रास और सुवर्णभूषणों से अलंकृत शक्ति अथवा स्वर्णसूत्रों से खचित बड़ी २ गदाओं को देखो १४ सुवर्ण से जटित दुधारे खड्ग और पट्टिश और फरसोंको देखो १५ गिरेहुए भारी २ मुसल चित्रित शतघ्नी और बड़े २ परिघों को देखो १६ इस महायुद्ध में टूटे चक्र और तोमरोंको देखो विजयाभिलाषी वेगवान् युद्धकर्तालोग नाना प्रकार के शस्त्रों समेत मरेहुए भी जीवतेहुएसे विदित होते हैं गदाओंसे अङ्ग भङ्ग मुसलोंसे टूटेमस्तक १७।१८ हाथी घोड़े और रथों से घायल हजारों शूरवीरों को देखो हे शत्रुहन्तः, अर्जुन ! मनुष्य घोड़े और हाथियों के शरीर बाण, शक्ति, दुधारा, खड्ग, पट्टिश १९ घोररूप लोहे की परिघ, असिकान्त, फरसा आदि शस्त्रों से छिन्नरूप और बहुत से मृतकरूप शरीरों से २० आच्छादित होकर चन्दन से लिप्त सुवर्ण के बाजुओं से अलंकृत २१ हस्तत्राण वा केयूर रखनेवाली भुजाओं से पृथ्वी प्रकाशमान हुई हे भरतवंशिन् ! हस्तत्राण रखनेवाले अत्यन्त अलंकृत और छिदीहुई उत्तम भुजा २२ और हाथी की सूंड़ के समान महावेगवानों की टूटीजङ्घा और उत्तम चूड़ामणिसमेत कुण्डलधारी २३ उत्तम नेत्रवाले वीरोंसमेत पड़ेहुए शिरों से पृथ्वी महाशोभायमान होगई है हे भरतर्षभ ! रुधिर से लिप्त अङ्ग जिनकी ग्रीवा टूटीहुई २४ इन सब नाना अङ्गों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशित हुई जैसे कि शान्त ज्योतिवाली अग्नियों से वन शोभित होता है और सुनहरी घण्टे रखनेवाले

कर ४३ बड़ी धैर्यता से अर्जुन से यह वचन कहा कि हे अर्जुन ! राजा युधिष्ठिर को और सम्मुख जानेवाले राजाओं को देखो ४४ और महायुद्ध में अग्नि के समान क्रोधरूप कर्ण को भी देखो यह बड़ाधनुषधारी भीमसेन युद्ध में लौटा है ४५ पाञ्चाल सृञ्जय और जो २ पाण्डवों के उत्तम गिनेजाते हैं जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न है वह सब उस भीमसेन के सङ्ग में लड़ते हैं ४६ और उस लौटनेवाले पाण्डव भीमसेन से शत्रुओं की बड़ी सेना फिर पराजय हुई हे अर्जुन ! यह कर्ण भागनेवाले कौरवों को रोकता है ४७ हे कौरव्य ! वेग में यमराज के समान और इन्द्र के सदृश पराक्रमी शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ यह अश्वत्थामा भी जाता है ४८ महारथी धृष्टद्युम्न युद्ध में उस भागनेवाले के पीछे जाता है और युद्ध में मरे हुए सृञ्जयों को देखो ४९ महा अजेय वासुदेवजी ने इस रीति से इस सब वृत्तान्त को अर्जुन से कहा हे राजन् ! इसके पीछे महाघोर युद्ध जारीहुआ ५० तब मृत्यु को निवृत्त करके दोनों सेनाओं के समागम होने में दोनोंओर को सिंहनादों के महान् शब्द होनेलगे ५१ हे पृथ्वीपते, राजन्, धृतराष्ट्र ! आपके दुर्मन्त्रों से पृथ्वीपर आपके और अन्यों के शूरवीरों का इस रीति से नाश जारी हुआ ॥ ५२ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिमहायुद्धेनवपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसके पीछे निर्भय कौरव सृञ्जय और युधिष्ठिर को अग्रगामी करनेवाले पाण्डव और कर्णको अग्रगामी करनेवाले हमलोग फिर भिड़गये १ उस समय कर्ण और पाण्डवों का वह युद्ध फिर जारीहुआ जो भयकारी रोमहर्षण करनेवाला यमराज के देश की वृद्धि करनेवाला था २ हे भरतवंशिन् ! उस कठिन रुधिररूप जल रखनेवाले युद्ध के जारी होने पर और शूरवीर संसप्तकों के कुछ बाकी रहने पर ३ धृष्टद्युम्न और महारथी पाण्डव सब राजाओं समेत कर्ण के सम्मुख गये तब अकेले कर्ण ने युद्ध में आनेवाले प्रसन्नचित्त विजयाभिलाषी उन वीरों को ऐसे धारणकिया जैसे कि जलके समूहोंको पर्वत धारण करता है ४ । ५ वह सब महारथी कर्ण को पाकर ऐसे भिन्न २ होगये जैसे कि जल के समूह पर्वत को पाकर इधर उधर दिशाओं को चलेजाते हैं ६ हे महाराज ! इसके पीछे रोमहर्षण करनेवाला युद्ध होनेलगा तब धृष्टद्युम्न ने

कर्ण को टेढ़ेपर्ववाले बाणों से ७ घायल किया उससमय तिष्ठ२ कहकर विजय नाम उत्तम धनुष को खैंच कर महारथी कर्ण ने ८ धृष्टद्युम्न के धनुष को और विषैले सर्पों के समान बाणों को काटकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर नौ बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया ९ हे निष्पाप! वह कर्ण के बाण उस महात्मा के सुनहरी कवच को छेदकर रुधिर में भरे हुए बीरबहूटी के समान शोभायमान हुए १० महारथी धृष्टद्युम्नने उस टूटेहुए धनुषको डालकर दूसरे धनुष और विषैले सर्प की समान बाणोंको लेकर ११ टेढ़े पर्ववाले सत्तर बाणोंसे कर्ण को पीड्यमान किया और उसीप्रकार कर्ण ने भी युद्ध में शत्रुसन्तापी धृष्टद्युम्न को १२ विषैले सर्प के समान बाणों से ढक दिया फिर द्रोणाचार्य के शत्रु बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्नने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे पीड्यमान किया १३ हे राजन्! फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने सुनहरी भूषणयुक्त द्वितीय यमदण्ड के समान बाणको उसके ऊपर फेंका १४ हस्तलाघवकरनेवाले सात्यकी ने उस अकस्मात् आनेवाले घोररूप बाण को सौ प्रकार से काटा १५ तब कर्णने बाणको कटाहुआ देखकर सात्यकी को बाणों की वर्षा करके चारोंओर से ढकदिया १६ और सात नाराचों से पीड्यमान भी किया इसके पीछे सात्यकी ने भी सुवर्णजटित बाणों से उसको छेदा १७ हे महाराज! इसके पीछे घोरयुद्ध हुआ वह युद्ध नेत्र और कर्णोंको भयभीत करनेवाला महाअद्भुत चारों ओर से देखने के ही योग्य था १८ हे राजन्! वहां कर्ण और सात्यकी के उस कर्म को देखकर सब जीवों के रोमाञ्च खड़े होगये १९ इसी अन्तर में अश्वत्थामाजी बड़े पराक्रमी उस धृष्टद्युम्न के सम्मुख गये जोकि शत्रुओं का विजय करनेवाला और पराक्रमसमेत प्राणोंका हरनेवाला था २० शत्रु के पुर के विजय करनेवाले और अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी बोले कि हे ब्राह्मण के मारनेवाले! ठहरो २ अब मुझसे बचकर जीता नहीं बचसक्ता २१ यह कहकर शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा ने तीक्ष्ण धार घोररूप सुन्दर बेंतवाले बाणों से वीर धृष्टद्युम्न को अत्यन्त वेग से ढक दिया २२ हे श्रेष्ठ! जैसे कि महारथी द्रोणाचार्यजी युद्धमें उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्न को देखकर बड़े परिश्रम से उपाय करनेवालेहुए २३ उसीप्रकार शत्रुओंके वीरों के मारनेवाले धृष्टद्युम्न युद्ध में अश्वत्थामाको देखकर कुछ अप्रसन्न होकर अपनी मृत्यु को माना २४ फिर वह युद्ध में अपनेको शस्त्रसे अवध्य जानकर

कर ४३ बड़ी धैर्यता से अर्जुन से यह वचन कहा कि हे अर्जुन ! राजा युधिष्ठिर को और सम्मुख जानेवाले राजाओं को देखो ४४ और महायुद्ध में अग्नि के समान क्रोधरूप कर्ण को भी देखो यह बड़ाधनुषधारी भीमसेन युद्ध में लौटा है ४५ पाञ्चाल सृञ्जय और जो २ पाण्डवों के उत्तम गिनेजाते हैं जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न है वह सब उस भीमसेन के सङ्ग में लड़ते हैं ४६ और उस लौटनेवाले पाण्डव भीमसेन से शत्रुओं की बड़ी सेना फिर पराजय हुई हे अर्जुन ! यह कर्ण भागनेवाले कौरवों को रोकता है ४७ हे कौरव्य ! वेग में यमराज के समान और इन्द्र के सदृश पराक्रमी शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ यह अश्वत्थामा भी जाता है ४८ महारथी धृष्टद्युम्न युद्ध में उस भागनेवाले के पीछे जाता है और युद्ध में मरे हुए सृञ्जयों को देखो ४९ महा अजेय वासुदेवजी ने इस रीति से इस सब वृत्तान्त को अर्जुन से कहा हे राजन् ! इसके पीछे महाघोर युद्ध जारीहुआ ५० तब मृत्यु को निवृत्त करके दोनों सेनाओं के समागम होने में दोनोंओर को सिंहनादों के महान् शब्द होनेलगे ५१ हे पृथ्वीपते, राजन्, धृतराष्ट्र ! आपके दुर्मन्त्रों से पृथ्वीपर आपके और अन्यों के शूरवीरों का इस रीति से नाश जारी हुआ ॥ ५२ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिमहायुद्धेनवपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसके पीछे निर्भय कौरव सृञ्जय और युधिष्ठिर को अग्रगामी करनेवाले पाण्डव और कर्णको अग्रगामी करनेवाले हमलोग फिर भिड़गये १ उस समय कर्ण और पाण्डवों का वह युद्ध फिर जारीहुआ जो भयकारी रोमहर्षण करनेवाला यमराज के देश की वृद्धि करनेवाला था २ हे भरतवंशिन् ! उस कठिन रुधिररूप जल रखनेवाले युद्ध के जारी होने पर और शूरवीर संसप्तकों के कुछ बाकी रहने पर ३ धृष्टद्युम्न और महारथी पाण्डव सब राजाओं समेत कर्ण के सम्मुख गये तब अकेले कर्ण ने युद्ध में आनेवाले प्रसन्नचित्त विजयाभिलाषी उन वीरों को ऐसे धारणकिया जैसे कि जलके समूहोंको पर्वत धारण करता है ४ । ५ वह सब महारथी कर्ण को पाकर ऐसे भिन्न २ होगये जैसे कि जल के समूह पर्वत को पाकर इधर उधर दिशाओं को चलेजाते हैं ६ हे महाराज ! इसके पीछे रोमहर्षण करनेवाला युद्ध होनेलगा तब धृष्टद्युम्न ने

कर्ण को टेढ़ेपर्ववाले बाणों से ७ घायल किया उससमय तिष्ठ२ कहकर विजय नाम उत्तम धनुष को खैंच कर महारथी कर्ण ने ८ धृष्टद्युम्न के धनुप को और विषैले सर्पों के समान बाणों को काटकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर नौ बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया ९ हे निष्पाप! वह कर्ण के बाण उस महात्मा के सुनहरी कवच को छेदकर रुधिर में भरे हुए वीरवहूटी के समान शोभायमान हुए १० महारथी धृष्टद्युम्नने उस टूटेहुए धनुपको डालकर दूसरे धनुप और विषैले सर्प की समान बाणोंको लेकर ११ टेढ़े पर्ववाले सत्तर बाणोंसे कर्ण को पीड्यमान किया और उसीप्रकार कर्ण ने भी युद्ध में शत्रुसन्तापी धृष्टद्युम्न को १२ विषैले सर्प के समान बाणों से ढक दिया फिर द्रोणाचार्य के शत्रु बड़े धनुपधारी धृष्टद्युम्नने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे पीड्यमान किया १३ हे राजन्! फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने सुनहरी भूषणयुक्त द्वितीय यमदण्ड के समान बाणको उसके ऊपर फेंका १४ हस्तलाघवकरनेवाले सात्यकी ने उस अकस्मात् आनेवाले घोररूप बाण को सौ प्रकार से काटा १५ तब कर्णने बाणको कटाहुआ देखकर सात्यकी को बाणों की वर्षा करके चारोंओर से ढकदिया १६ और सात नाराचों से पीड्यमान भी किया इसके पीछे सात्यकी ने भी सुवर्णजटित बाणों से उसको छेदा १७ हे महाराज! इसके पीछे घोरयुद्ध हुआ वह युद्ध नेत्र और कर्णोंको भयभीत करनेवाला महाअद्भुत चारों ओर से देखने के ही योग्य था १८ हे राजन्! वहां कर्ण और सात्यकी के उस कर्म को देखकर सब जीवों के रोमाञ्च खड़े होगये १९ इसी अन्तर में अश्वत्थामाजी बड़े पराक्रमी उस धृष्टद्युम्न के सम्मुख गये जोकि शत्रुओं का विजय करनेवाला और पराक्रमसमेत प्राणोंका हरनेवाला था २० शत्रु के पुर के विजय करनेवाले और अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी बोले कि हे ब्राह्मण के मारनेवाले! ठहरो २ अब मुझसे बचकर जीता नहीं बचसक्ता २१ यह कहकर शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामाने तीक्ष्ण धार घोररूप सुन्दर बेंतवाले बाणों से वीर धृष्टद्युम्न को अत्यन्त वेग से ढक दिया २२ हे श्रेष्ठ! जैसे कि महारथी द्रोणाचार्यजी युद्धमें उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्न को देखकर बड़े परिश्रम से उपाय करनेवालेहुए २३ उसीप्रकार शत्रुओंके वीरों के मारनेवाले धृष्टद्युम्न युद्ध में अश्वत्थामाको देखकर कुछ अप्रसन्न होकर अपनी मृत्यु को माना २४ फिर वह युद्ध में अपनेको शस्त्रसे अवध्य जानकर

बहुत प्रकार से टूटेहुए शुभरथों से व्याप्त २५ बाणों से घायल मृतक वा व्याकुल पड़ेहुए आनर्तवाले घोड़ों को देखो अनुकर्ष उपासङ्ग पताका और नाना प्रकार की ध्वजाओं को देखो २६ रथी लोगों के बड़े २ शङ्ख श्वेतचामर और जिनकी जिह्वा बाहर निकल पड़ीं उन पर्वताकार सोतेहुए हाथियों को देखो २७ वैजयन्तीमाला वा रथ के विचित्र मृतक घोड़े वा हाथियों के परिस्तोम मृगचर्म और कम्बलों को देखो २८ फैलने से विचित्र चांदी से जड़े हुए अंकुश और बड़े २ हाथियों समेत गिरकर टूटे घण्टों को देखो २६ वैदूर्य मणियों से जटित सुन्दर दण्डयुक्त गिरेहुए शुभ अंकुश और सवारोंकी भुजाओं में बँधेहुए सुवर्ण-जटित चाबुकों को देखो ३० विचित्र मणियों से जटित सुवर्ण से अलंकृत रांकवान् मृगचर्म से बनेहुए पृथ्वी पर पड़ेहुए घोड़ों के स्तर परिस्तोमों को देखो ३१ राजाओं की चूड़ामणि वा विचित्र स्वर्णमयी माला वा टूटेहुए छत्र चामर और व्यजनों को देखो ३२ चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान प्रकाशमान सुन्दर कुण्डलधारी डाढ़ी मूछोंसे अलंकृत भयसंयुक्त वीरों के मुखों से ३३ ढकी हुई रुधिररूप कीचवाली पृथ्वी को देखो और चारोंओरसे शब्द करनेवाले अन्य सजीव जीवों को देखो ३४ हे राजन्! शस्त्रों को त्यागकर वारंवार रोनेवाले जातवालों से घिरे हुए बहुत से मनुष्यों को देखो ३५ वेगवान् वा विजयाभि-लाषी क्रोधभरे शूरवीर दूसरे मृतक शूरवीरों को ढककर फिर युद्ध के लिये जाते हैं ३६ इसी प्रकार पड़े हुए शूरवीरों ने जिन जातवालों से जल को माँगा वह मनुष्य जहां तहां दौड़रहे हैं ३७ हे अर्जुन! कोई तो जलके निमित्त गये और अनेक मृतक हुए वह शूर उनको अचेत देखकर लौटे ३८ जलको त्यागकर परस्पर पुकारतेहुए दौड़ते हैं हे श्रेष्ठ! जल पी पीकर मरनेवालों को वा जलके पीनेवालों को भी देखो ३९ कितनेही बान्धवों के प्यारे मनुष्य अपने प्रिय बान्धवों को त्यागकर जहां तहां इस महायुद्ध में युद्ध करतेहुए दृष्टपड़ते हैं ४० हे नरोत्तम! इसी प्रकार दोनों ओष्ठों को काटनेवाले टेढ़ी भृकुटीवाले मुखों से चारोंओर को देखनेवाले अन्य मनुष्यों को देखो ४१ तब इस रीति से बातें करतेहुए श्रीकृष्णजी वहांगये जहांपर कि युधिष्ठिर थे और अर्जुन ने भी राजा के देखने के निमित्त ४२ वारंवार गोविन्दजी को प्रेरणाकरी कि शीघ्र चलो २ ऐसी शीघ्रता करनेवाले माधव श्रीकृष्णजी ने वह युद्धभूमि अर्जुन को दिखा

बड़ी तीव्रतासे अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि प्रलयकाल में काल कालके सम्मुख जाताहै २५ हे महाराजेन्द्र! फिर वीर अश्वत्थामा अपने सम्मुख धृष्टद्युम्न को देखकर क्रोध से श्वास लेताहुआ उसके सम्मुखगया २६ और उन दोनों ने परस्पर देखकर बड़ा क्रोध किया हे महाराजराज, धृतराष्ट्र! इस के पीछे शीघ्रता करनेवाला प्रतापवान् अश्वत्थामा २७ सम्मुख होनेवाले धृष्टद्युम्न से बोले हे पाञ्चालदेशियों में नीच! अब मैं तुझको मृत्युके समीप भेजूंगा २८ जोकि पूर्वसमय में तुमने द्रोणाचार्य को मारकर पापकर्म कियाहै अब वह पाप का फल तुझको ऐसा मिलैगा जिसमें तेरा कल्याण न होगा २९ हे अज्ञान! जो तू अर्जुन से अरक्षित होकर युद्ध में नियत होताहै या नहीं हटताहै इसी से सत्य २ तेरा कल्याण नहीं है ३० यह वचन सुनकर प्रतापवान् धृष्टद्युम्न ने उत्तर दिया कि मेरा वही खड्ग तेरे उत्तरको देगा ३१ जिसने कि युद्ध में उपाय करने वाले तेरे पिताको उत्तर दियाथा नाममात्र अपने को ब्राह्मण कहनेवाले द्रोणाचार्यजी मेरे हाथसे मारेगये ३२ अब युद्ध में अपने पराक्रमसे तुझको भी क्यों न मारूंगा हे महाराज! क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्न ने ऐसा कहकर ३३ अत्यन्त तीक्ष्णबाण से अश्वत्थामा को घायलकिया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से युद्ध में धृष्टद्युम्न की दिशाओं को ढकदिया ३४ उस समय चारों ओर से बाणों से ढकेहुए न शूरवीर दिखाई दिये न दिशा विदिशा समेत अन्तरिक्ष दिखाई दिया हे राजन्! इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने भी युद्ध में शोभा देनेवाले अश्वत्थामा को ३५। ३६ कर्ण के देखतेहुए बाणों से ढकदिया फिर चारों ओर से देखने के योग्य अकेले कर्णने भी पाञ्चाल पाण्डव ३७ द्रौपदी के पुत्र युधामन्यु और महारथी सात्यकीको रोका ३८ फिर धृष्टद्युम्नने युद्ध में अश्वत्थामाके धनुषको काटा तब वेगवान् अश्वत्थामाने उसको डाल दूसरे धनुष को लेकर घोरजङ्ग में विषैले सर्पों की समान बाणों को फेंका फिर उसने धृष्टद्युम्न की गदा, शक्ति, धनुष, ध्वजा ३९।४० रथ, सारथी और घोड़ोंको बाणोंसे एक क्षणमात्र में मारा तब उस धनुष, रथ, गदा, शक्ति, रथ, ध्वजा टूटेहुए धृष्टद्युम्न ने ४१ बड़े खड्ग और सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढाल को लिया हे राजेन्द्र! तब हस्तलाघवीय वीर अश्वत्थामा ने शीघ्रही अपने भल्लों से रथ से न उतरनेवाले धृष्टद्युम्न के उस खड्ग को भी काटा यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ ४२। ४३ हे भरतर्षभ!

फिर उपाय करनेवाला महारथी उस रथ, गदा, शक्ति, खड्ग आदि से रहित बाणों से अत्यन्त घायल धृष्टद्युम्न को न मारसका हे राजन् ! जब अश्वत्थामा बाणों से उसको न मारसका ४४ । ४५ तब वह वीर धनुष को त्यागकर धृष्टद्युम्न की ओर को चला और उस समय हे महाराज ! उस महात्मा भ्रमरहित अश्वत्थामा का वेग इस प्रकार का हुआ ४६ जैसे कि उत्तम सर्प के भक्षण करनेवाले गरुड़ का वेग होता है उसी समय श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले ४७ हे अर्जुन ! देखो जैसे कि अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न के रथपर बड़े उपायों को करता है वह निस्सन्देह इसको मारेगा ४८ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले महाबाहो ! जैसे होसके वैसे अश्वत्थामारूप मृत्यु के मुख में फँसेहुए धृष्टद्युम्न को निश्चय करके छुटाओ ४६ हे महाराज ! ऐसा कहकर प्रतापवान् वासुदेवजी ने घोड़ों को वहां पहुँचाया जहां कि अश्वत्थामा नियत थे ५० केशवजी के हांके हुए वह चन्द्रवर्ण घोड़े आकाशगामी होकर अश्वत्थामा के रथपर पहुँचे ५१ हे राजन् ! महापराक्रमी अश्वत्थामा ने उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर धृष्टद्युम्न के मारने में उपाय किया ५२ तब बड़े पराक्रमी अर्जुन ने खिंचेहुए धृष्टद्युम्न को देखकर बाणों को अश्वत्थामाके ऊपर फेंका ५३ गाण्डीवधनुपसे चलायेहुए वह स्वर्णमयी बाण अश्वत्थामा को पाकर उसके शरीर में ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि सर्प बामी में घुसते हैं हे राजन् ! उन बाणोंसे घायल और पीड्यमान वीर अश्वत्थामा युद्ध में बड़े तेजस्वी धृष्टद्युम्न को छोड़कर रथपर सवार हुए ५४।५५ और अर्जुन के बाण से पीड़ित होकर उत्तम धनुष को लेकर शायकों से अर्जुन को घायल किया ५६ इसी अन्तर में वीर सहदेव युद्धभूमि में शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न को रथ में बैठाकर दूर लेगया ५७ हे महाराज ! फिर तो अर्जुन ने भी अश्वत्थामा को बाणों से पीड़ित किया फिर बड़े क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने अर्जुन को दोनों भुजा और छातीपर घायल किया ५८ फिर क्रोधयुक्त अर्जुन ने युद्ध में काल के समान दूसरे कालदण्ड के समान नाराचनाम बाण को अश्वत्थामा के ऊपर फेंका ५६ वह बड़ा तेजस्वी बाण उस ब्राह्मण अश्वत्थामा के कन्धेपर गिरा तब बाण के वेग से व्याकुल होकर अश्वत्थामा रथ के बैठने के स्थानपर बैठगये और महाव्याकुलता को पाया हे महाराज ! इसके पीछे कर्ण ने अपने विजयनाम धनुष को टंकारा ६० । ६१ युद्ध में क्रोधयुक्त होकर वारंवार अर्जुन को देखने

वाले और अर्जुन से युद्ध में द्वैरथ युद्ध करने के अभिलाषी कर्ण ने धनुष को टंकार कर ६२ युद्धभूमि में शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा को व्याकुल देख के रथ के द्वारा युद्धभूमि से दूर लेगया ६३ हे महाराज ! धृष्टद्युम्न को छूटाहुआ और अश्वत्थामा को अचेततापूर्वक व्याकुल देखकर विजय से शोभायमान पाञ्चालोंने बड़े शब्दकिये ६४ हज़ारों दिव्य बाजे बजे और युद्ध में उस अद्भुत-पने को देखकर शूरवीरों ने सिंहनाद किये ६५ पाण्डव अर्जुन ऐसा कर्मकरके वासुदेवजी से बोला कि हे श्रीकृष्णजी ! आप संसप्तकों के सम्मुख चलो यह मेरा बड़ा काम है ६६ अर्जुन के वचन को सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी पताकावाले मन और वायु के समान शीघ्रगामी रथ की सवारी से चलदिये ॥ ६७ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वण्यश्वत्थामाअचेतोनामषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

इकसठिवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसी अन्तर में कुन्ती के पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर को दिखाते हुए श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से यह वचन कहा हे पाण्डव ! बड़े पराक्रमी मारने के इच्छावान् महाधनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों से यह तेरा भाई राजा युधिष्ठिर बड़ी शीघ्रता से पीछा कियाजाता है १।२ वहां महादुर्मद क्रोधयुक्त पाञ्चाल महात्मा युधिष्ठिर को चाहतेहुए पीछे चलेजाते हैं ३ और पृथ्वी का राजा रथसमेत से-नाओंसे अलंकृत दुर्योधन राजायुधिष्ठिर के पीछे दौड़ताहै ४ हे पुरुषोत्तम ! यह पराक्रमी विषैले सर्प के समान स्पर्शवाले सब युद्धों में कुशल भाइयों समेत मारने का अभिलाषी है ५ युधिष्ठिर के पकड़ने की इच्छा करनेवाले यह धृतराष्ट्र के पुत्र हाथी घोड़े रथ और पत्तियों समेत ऐसे जाते हैं कि जैसे इच्छा-वान् पुरुष उत्तम मनुष्य के पास जाते हैं ६ यादव सात्यकी वा भीमसेन से रोके हुए युधिष्ठिर को पकड़ने के इच्छावान् यह लोग फिर ऐसे नियत हैं जैसे कि इन्द्र और अग्नि से वारंवार रुकेहुए अमृत के चाहनेवाले दैत्य होते हैं ७ यह शीघ्रता करनेवाले महारथी बहुत होने के कारण पाण्डव युधिष्ठिर की ओर फिर ऐसे जाते हैं जैसे कि वर्षाऋतु में जल के प्रवाह समुद्र की ओर जाते हैं ८ बड़े २ पराक्रमी बड़े धनुषधारी सिंहनादों को करते शङ्खों को बजाते और श-त्रुओं को चलायमान करते हुए चले जाते हैं ९ मैं कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को मृत्यु के मुख में वर्तमान मानता हूं और उस कुन्ती के पुत्र को दुर्योधन की

आधीनता में वर्तमान होकर अग्निमें होमा हुआ विचार करता हूं १० हे अर्जुन! फिर दुर्योधन की सेना इस प्रकार की है कि इसके बाण लक्ष्य में वर्तमान होकर समर्थ भी नहीं बचसक्ता है ११ युद्ध में बाणों के समूहों को शीघ्र छोड़नेवाले यमराज के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वीर दुर्योधन के वेग को कौन सहसक्ता है १२ वीर दुर्योधन अश्वत्थामा कृपाचार्य और कर्ण के बाणों का वेग पर्वतों का भी तोड़नेवाला है १३ शत्रुओं का सन्तप्त करनेवाला पराक्रमी हस्तलाघवीय कर्मकर्ता युद्ध में कुशल राजायुधिष्ठिर कर्ण के हाथ से मुखमोड़नेवाला होचुका है और बड़े शूरवीर धृतराष्ट्र के पुत्रों समेत कर्ण युद्ध में युधिष्ठिर को पीड्यमान करने को समर्थ है १४। १५ युद्ध में लड़नेवाले प्रशंसनीय बुद्धि उस युधिष्ठिर के पराजय होने का गुमान इन और अन्य महारथियों को भी प्राप्त हैं १६ क्योंकि यह भरतवंशियों में श्रेष्ठ व्रत करनेवाला समर्थ राजायुधिष्ठिर ब्राह्मणों के क्षमा आदि पराक्रमों में नियत है यह क्षत्रिय धर्मरूप पराक्रम में अर्थात् कठोरप्रकृति आदि में नियत नहीं है १७ निश्चय करके कर्ण के साथ भिड़ेहुए शत्रुहन्ता युधिष्ठिर बड़े संशय में प्राप्तहुआ है १८ हे अर्जुन! जोकि असहनशील भीमसेन शत्रुओं के सिंहनादों को सहरहा है इससे मैं अनुमान करता हूं कि महाराज युधिष्ठिर जीवतेहुए नहीं हैं १९ हे भरतर्षभ! युद्ध में विजय से शोभायमान वारंवार गर्जते और शङ्खों को बजातेहुए २० यह कर्ण बड़े पराक्रमी उन धृतराष्ट्र के पुत्रों को प्रेरणा करता है कि तुम पाण्डव युधिष्ठिर को मारो २१ हे अर्जुन! महारथीलोग इन्द्रजालरूप स्थूणा कर्ण नाम गान्धर्वअस्त्र वा पाशुपतअस्त्र और बाणों के जालों से राजा को ढकरहे हैं २२ हे भरतवंशिन्, अर्जुन! राजायुधिष्ठिर ऐसा व्याकुल करदिया है जैसा कि यह पाञ्चालदेशीय अश्वत्थामा ने किया था पाण्डवों समेत सब शूरवीर इसके पीछे हुए हैं इसी प्रकार तुमसे भी यह राजा रक्षा करने के योग्य है २३ सबशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ पराक्रमी शीघ्रता के समय शीघ्रता करनेवाले शूरवीर उस पाताल में डूबेहुए के समान युधिष्ठिर को निकालने की इच्छा कररहे हैं २४ राजा की ध्वजा नहीं दिखाई देती है हे अर्जुन! वह राजा नकुल, सहदेव, सात्यकी और शिखण्डी के देखते हुए कर्ण के बाणों से मारागया २५ हे भरतवंशिन्! समर्थ अर्जुन वह राजा धृष्टद्युम्न भीमसेन, शतानीक और सब पाञ्चाल वा चन्देरीदे-

शियों के देखतेहुए मारागया २६ हे अर्जुन! यह कर्ण बाणों से पाण्डवोंकी सेना को ऐसे माररहा है जैसे कि कमल के वनों को हाथी मारता है २७ हे पाण्डुनन्दन! यह आपके रथी भागते हैं हे अर्जुन! देखो २ यह महारथी जाते हैं २८ हे भरतवंशिन्! यह हाथी कर्ण के बाणों से घायल और पीड़ित होकर शब्दों को करतेहुए दशों दिशाओं को भागते हैं २९ हे अर्जुन! शत्रुओं के पराजय करनेवाले कर्ण से युद्ध में भगायेहुए यह रथों के समूह चारों ओर से भागते चलेजाते हैं ३० हे ध्वजाधारियों में श्रेष्ठ, अर्जुन! कर्ण के रथपर नियत हाथी की कक्षा का चिह्न रखनेवाली और जहां तहां युद्ध में घूमनेवाली ध्वजा को देखो ३१ यह कर्ण हज़ारों बाणों को वर्षाता तुम्हारी सेना को मारता हुआ भीमसेनके रथपर दौड़ताहै ३२ इन भगायेहुए महारथी पाञ्चालोंको ऐसा देखो जैसे कि महायुद्ध में इन्द्र से भगायेहुए दैत्य होते हैं ३३ यह कर्ण युद्ध में पाञ्चाल पाण्डव और सृञ्जयों को विजय करके तेरे निमित्त सब दिशाओं को देखता है यह मेरा पक्का अनुमान है ३४ हे अर्जुन! यह कर्ण उत्तम धनुष को खैंचता हुआ ऐसा शोभायमान है जैसे कि देवगणों से व्याप्त शत्रुओं को विजय करके इन्द्र शोभायमान होता है ३५ यह सब कौरव कर्ण के पराक्रम को देखकर गर्जते हुए शब्दों को करते हैं और युद्ध में चारोंओर से पाण्डव और सृञ्जयों को डरते हैं ३६ हे प्रशंसा देनेवाले! यह कर्ण युद्ध में सब आत्मा से पाण्डवोंको भयभीतकरके सब सेनाके मनुष्योंसे बोला ३७ हे कौरव्य! तुम्हारा कल्याण हो तुम शीघ्र चलकर सम्मुखता करो जिससे कि कोई सृञ्जय युद्ध में तुम्हारे हाथसे जीवता बचकर न जावे तुम शस्त्रों को धारण किये सावधानी से युद्ध करो और हम पीछे की ओरसे चलते हैं यह कर्ण इस रीति से कहकर पीछे की ओर से बाणों को मारता हुआ चलागया ३८।३९ हे अर्जुन! श्वेतछत्र से शोभायमान कर्णको देखो वह ऐसा मालूम होताहै जैसे कि चन्द्रमा से शोभायमान उदयाचल पर्वत होता है ४० हे भरतवंशिन्, अर्जुन! पूर्णचन्द्रमा के समान शोभायमान सौ शलाका रखनेवाले मस्तकपर धारण किये हुए छत्र समेत ४१ यह कर्ण तुझको सकटाक्ष देखताहै निश्चय करके यह बड़ी तीव्रतामें नियतहोकर युद्धमें आवेगा ४२ हे महाबाहो! बड़े युद्ध में बृहत् धनुषको चढ़ाने वाले विषैले सर्पोंके समान बाणों के छोड़नेवाले इस कर्णको देखो ४३ हे शत्रु-

सन्तापिन्, अर्जुन ! यह कर्ण तुझसे युद्ध करने की इच्छा करताहुआ तेरी वानरी ध्वजा को देखकर लौटा ४४ यह अपने मरने के लिये ऐसे आताहै जैसे कि शलभनाम पक्षी प्रकाशमान अग्नि के मुख में जाताहै हे भरतवंशिन् ! रथ की सेनासमेत रक्षा करनेका अभिलाषी दुर्योधन अकेले कर्ण कोही देखकर लड़ताहै इन सबसमेत इस दुष्ट अन्तःकरणवाले दुर्योधन को बड़े विचारपूर्वक उपायों से मारना चाहिये ४५।४६ हे उच्चाभिलापिन् ! शस्त्रोंको अच्छीरीतिसे जाननेवाले युद्धाभिलाषी यश राज्य और उत्तमसुख को चाहनेवाले तेरे हाथ से मारने के योग्य है ४७ हे राजन् ! जैसे कि देवासुरों के युद्ध में देवता और दानवों के युद्ध होते हैं इसी प्रकार हे भरतर्षभ ! अत्यन्त क्रोधयुक्त तुझको और कर्ण को देखकर ४८ यह क्रोधयुक्त दुर्योधन अपने को बुद्धिमान् विचारकर उत्तरको नहीं पाता है ४९ हे कुन्ती के पुत्र ! तुम धर्मात्मा युधिष्ठिर के साथ अपराध करनेवाले आसन्नमृत्यु कर्ण के सम्मुख शीघ्रही जाओ ५० और बुद्धि को प्रबल करके इस महारथी के सम्मुख चलो हे रथियों में श्रेष्ठ ! यह पांच महापराक्रमी और तेजस्वी उत्तमरथी ५१ पांचहज़ार हाथी और दशहज़ार घोड़ों समेत हज़ारों शूरवीरों को साथ लिये ५२ प्रयुतों पदातियों से युक्त होकर आते हैं हे वीर ! परस्पर में रक्षित सेना तेरे सम्मुख आती है ५३ हे भरतर्षभ ! तुम आप चलकर इस बड़े धनुषधारी कर्ण को दर्शन दो और बड़ी तीव्रता में नियत होकर सम्मुख जाओ ५४ यह अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर कर्ण पाञ्चालों के सम्मुख दौड़ताहै मैं इसकी ध्वजा को धृष्टद्युम्न के रथपर देखताहूं ५५ हे शत्रुसन्तापिन् ! मैं मानता हूं अर्थात् अनुमान करताहूं कि यह पाञ्चालों के सम्मुख जाता है हे अर्जुन ! अब मैं उस तेरी अभीष्ट प्रियवार्ता को कहताहूं ५६ कि यह श्रीमान् धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर आनन्दपूर्वक कुशलसे है और यह महाबाहु भीमसेन सेनाके मुख से निवृत्त हुआ लौटा है ५७ और वह भरतवंशी सृञ्जयों की सेना सात्यकी से युक्त है यह कौरव युद्ध में तीक्ष्णधार बाणों से मररहे हैं ५८ हे अर्जुन ! महात्मा पाञ्चालोंसे और भीमसेनके हाथसे दुर्योधनकी सेना युद्धमें मुखोंको मोड़ मोड़ कर ५९ भीमसेन के बाणों से घायल होकर बड़ी शीघ्रता से भागती है और टूटे कवच रुधिर से लिप्त शरीरवाली ६० महादुःखी भरतवंशियों की सेना दिखाई देती है हे भरतर्षभ, अर्जुन ! इस शूरवीरों के स्वामी फैलेहुए भीमसेन को देखो

कि यह विषैले सर्प की समान क्रोधयुक्त सेना का भगानेवाला है हे राजन् ! यह लाल पीले काले और श्वेत सूर्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से शोभायमान ६१।६२ अलंकृत पताका और छत्र गिरते हैं मुख न मोड़नेवाले और नानाप्रकारके वर्ण वाले पाञ्चालों के बाणों से घायल और निर्जीव होकर यह रथी अपने २ रथों से गिरते हैं ६३।६४ हे अर्जुन ! वेगवान् पाञ्चाल, मनुष्य, हाथी, घोड़े और रथोंसेजुदे धृतराष्ट्रके पुत्रोंके सम्मुख जाते हैं और नरोत्तम भीमसेन से रक्षित होकर ६५।६६ वह अजेय पाञ्चाललोग अपने २ प्राणों की आशा छोड़ २ शत्रुओं को मर्दन करते हैं हे शत्रुविजयिन् ! यह सब पाञ्चाल प्रसन्न हो होकर शङ्खों को बजाते हैं ६७ और युद्ध में बाणों से शत्रुओं को मर्दन करतेहुए दौड़ते हैं इन अपने शूरवीरों के साहस को देखो कि पाञ्चालदेशीय शूर अपने पराक्रमों से धृतराष्ट्र के पुत्रों को ऐसे मारते हैं ६८ जैसे कि क्रोधयुक्त सिंह हाथियों को मारते हैं शस्त्रों से रहित शूरवीर शस्त्रधारी शत्रुओं के शस्त्र को काटकर ६९ उसीसे इन फलयुक्त शस्त्रधारियों को मारतेहुए गर्जनाओं को करते हैं शत्रुओं के शिर और भुजा भी गिराईजाती हैं ७० रथ हाथी घोड़े और युद्ध के सब वीरलोग शूरता के उत्पन्न करनेवाले शब्दों को कररहे हैं और यह दुर्योधन की बड़ी सेना सब ओर को पाञ्चालों के सम्मुख ऐसे वर्तमान है ७१ जैसे कि वेगवान् हंसोंसे चारों ओर को व्याप्त श्रीगङ्गाजी होती हैं श्रेष्ठों में भी अतिश्रेष्ठ वीर कृपाचार्य और कर्ण आदि यह सब पाञ्चालों के रोकने में कठिन पराक्रम करनेवाले हुए और भीमसेन के अस्त्रों से पराजित महारथी धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखो ७२ । ७३ और शत्रुओंके हाथसे पाञ्चालों के पराजय होनेपर निर्भयहोकर गर्जनेवाले धृष्टद्युम्न आदि वीर हज़ारों शत्रुओं को मारते हैं ७४ वायु का पुत्र भीमसेन शत्रुओं के पक्षों को मँझाकर बाणों की वर्षा करताहै और धृतराष्ट्र की बड़ी सेना महाव्याकुलहै ७५ और यह रथी भी भीमसेन के भय से अत्यन्त पीड्यमान होकर भयभीत हैं देखो भीमसेन के नाराचों से घायल होकर यह हाथी ऐसे गिरते हैं ७६ जैसे कि इन्द्र के वज्र से टूटेहुए पर्वतों के शिखर गिरते हैं भीमसेन के गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से घायल यह बड़े २ हाथी अपनी सेनाओं को कुचलते दबातेहुए इधर उधर को भागते हैं भीमसेन का सिंहनाद बड़े दुःख से सहने के योग्य जानो ७७। ७८ हे राजन् ! दण्डधारी यमराज के समान क्रोधयुक्त तोमरों से

भीमसेन के मारने की इच्छा से यह निषादका पुत्र इस युद्ध में गर्जनेवाले और विजय से शोभायमान वीर भीमसेन के सम्मुख आता है इसकी दोनों भुजाओं को उस गर्जनेवाले भीमसेन ने तोमर से काटडाला ७९ । ८० और देदीप्यमान अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशित दशबाणों से मारडाला इसको मार कर अब प्रहार करनेवाले दूसरे हाथियों के सम्मुख आता है ८१ सवारों समेत सवारियों को और नीले बादलों के समान हाथियों को शक्ति और तोमरों से मारनेवाले भीमसेन को देखो ८२ हे राजन् ! तीक्ष्णधारवाले बाणों से उन सात २ हाथियों की वैजयन्ती ध्वजाओं को काटकर तेरे बड़े भाई भीमसेन ने मारडाला ८३ दश २ नाराचों से एक २ हाथी मारागया इसी से धृतराष्ट्र के पुत्रों के शब्द नहीं सुनेजाते हैं हे भरतर्षभ ! इसी प्रकार युद्ध में इन्द्र के समान भीमसेन के लौटने पर क्रोधयुक्त नरोत्तम भीमसेन के हाथ से दुर्योधन की तीन अक्षौहिणी सेना घायल और रोकीगई सञ्जय बोले कि भीमसेन के उन कठिन कर्मोंको देखकर ८४ । ८६ अर्जुन ने शेष बचेहुए शत्रुओं को तीक्ष्णधार बाणों से छिन्न भिन्न करदिया हे प्रभो ! वह संसप्तकों के समूह युद्ध में घायल और भयभीत होकर दशों दिशाओं में विभागित होकर भागे और इन्द्र के आतिथ्य को पाकर शोक से रहित हुए ८७ । ८८ पुरुषोत्तम अर्जुन ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से दुर्योधन की चतुरङ्गिणी सेना को मारा ॥ ८९ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धयेकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि पाण्डव भीमसेन और युधिष्ठिर के लौटने और पाण्डव वा सृञ्जयों के हाथ से मेरी सेना के मरने १ अथवा अप्रसन्नतापूर्वक सेना के समूहों के वारंवार भागनेपर हे सञ्जय ! मुझको समझाकर कहो कि कौरवों ने क्या २ किया सञ्जय बोले कि हे राजन् ! क्रोध से रक्तनेत्रवाला प्रतापवान् कर्ण महाबाहु भीमसेन को देखकर उसके सम्मुखगया ३ और उस पराक्रमी भीमसेन से मुख फेरीहुई आपके पुत्र की सेना को देखकर बड़ीयुक्ति और उपाय से नियत किया ४ वह महाबाहु कर्ण आपके पुत्र की सेना को नियत करके युद्ध में दुर्मद पाण्डवों के सम्मुख गया ५ फिर युद्धभूमि में धनुषों को चढ़ाकर शायकों को छोड़ते पाण्डवों के महारथी लोग कर्ण के सम्मुख गये ६ उनके नाम यह

हैं भीमसेन, सात्यकी, शिखण्डी, जनमेजय, पराक्रमी धृष्टद्युम्न और सब प्रभद्रक नाम नरोत्तम क्षत्रिय ७ मारने की इच्छा से अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्ध के शोभा देनेवाले आपकी सेना के सम्मुख गये ८ हे राजन्! इसी प्रकार मारने के इच्छावान् शीघ्रता करनेवाले आपके भी महारथी पाण्डवों की सेना के सम्मुख गये ९ हे पुरुषोत्तम! रथ, हाथी, घोड़े, पत्ति और ध्वजाओं से युक्त वह सेना अपूर्व देखने में आई १० हे महाराज! शिखण्डी कर्ण के सम्मुख गया धृष्टद्युम्न उस आपके पुत्र दुश्शासन के सम्मुख गया जोकि बड़ी सेना को साथ लिये हुए था ११ हे राजन्! नकुल वृषसेनके युधिष्ठिर चित्रसेनके और सहदेव उलूक के सम्मुख गया १२ सात्यकी शकुनी के द्रौपदी के पुत्र कौरवों के और युद्ध में कुशल अश्वत्थामा अर्जुन के सम्मुख गया १३ कृपाचार्य युद्ध में बड़े धनुष-धारी सुधामन्यु के और पराक्रमी कृतवर्मा उत्तमौजा के सम्मुख गया १४ हे श्रेष्ठ! फिर महाबाहु अकेले भीमसेन ने सब कौरवों समेत सेना को साथ रखने वाले आपके पुत्रों को रोका १५ हे महाराज! इसके अनन्तर भीष्मजी के मारनेवाले शिखण्डी ने उस निर्भय के समान घूमनेवाले कर्ण को रोका १६ उसके पीछे रुकेहुए और क्रोध से चलायमान ओष्ठवाले कर्ण ने शिखण्डी को तीन बाणों से दोनों भृकुटियों के मध्य में घायलकिया वह शिखण्डी उन बाणों को धारण कियेहुए ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखरों से उठे हुए सुवर्ण के पर्वत होते हैं १७ । १८ युद्ध में कर्ण के हाथ से अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी शिखण्डी ने तीक्ष्ण धारवाले नब्बे बाणों से कर्ण को पीड्यमान किया १९ फिर महारथी कर्ण ने तीनबाणों से सारथी को मारकर क्षुरप्र से उस की ध्वजा को काटा २० शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले महारथी शिखण्डी ने मृतक घोड़ों के रथ से उतरकर अपनी शक्ति को कर्ण के ऊपर फेंका २१ हे भ-रतवंशिन्! फिर कर्ण ने तीनशायकों से उस शक्ति को काटकर तीक्ष्ण बाणों से शिखण्डी को घायल किया २२ इसके पीछे अत्यन्त व्याकुल शिखण्डी कर्ण के धनुष से निकलेहुए बाणों को रोकताहुआ शीघ्रही हटगया २३ हे महा-राज! इसके पीछे कर्ण ने पाण्डवीय सेना को ऐसा भिन्न २ करदिया जैसे कि बड़ा पराक्रमी वायु रुई के ढेरों को तिर्र बिर्र करदेता है २४ फिर आपके पुत्र के हाथ से पीड्यमान धृष्टद्युम्न ने तीनबाणों से दुश्शासन को छाती पर छेदा २५

फिर दुश्शासन ने उसकी बाईंभुजा को छेदा हे भरतवंशिन्! सुनहरी पुङ्ख टेढ़े पर्ववाले भल्ल से घायल २६ क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने घोरबाण को दुश्शासन के ऊपर फेंका २७ हे राजन्! आप के पुत्र ने धृष्टद्युम्न के चलायेहुए बड़े वेगवान् बाण को तीनबाणों से काटकर २८ सुनहरे अङ्गवाले सत्रह भल्लों से धृष्टद्युम्न को दोनों भुजा और छातीपर घायलकिया २९ इसके पीछे उस क्रोधभरे धृष्टद्युम्न ने अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र से दुश्शासन के धनुष को काटा तब तो मनुष्य पुकारे ३० इसके पीछे हँसते हुए आपके पुत्र ने दूसरे धनुष को लेकर बाणों के समूहों से धृष्टद्युम्न को चारों ओर से रोका ३१ वह सब शूरवीर और सिद्धों समेत अप्सराओं के समूह आपके पुत्र के पराक्रमको देखकर युद्ध में आश्चर्यसा करनेलगे ३२ उपाय करनेवाले बड़े पराक्रमी दुश्शासन से रुकेहुए धृष्टद्युम्न को ऐसे नहीं देखा जैसे कि सिंह से रुकेहुए बड़े हाथी को नहीं देखते ३३ हे पाण्डु के बड़ेभाई! इसके पीछे सेनापति के चाहनेवाले पाञ्चालों ने रथ हाथी और घोड़ों समेत आपके पुत्र को रोका ३४ हे शत्रुसन्तापिन्! इसके पीछे आप के शूरवीरों का युद्ध दूसरों के साथ होनेलगा वह युद्ध महाघोर भयानकरूप और समयपर प्राणों का हरनेवाला था ३५ पिता के सम्मुख नियत वृषसेन ने पांच लोहे के बाणों से और तीन अन्य बाणों से नकुल को छेदा ३६ इसके पीछे हँसतेहुए शूरवीर नकुल ने अत्यन्त तीक्ष्ण नाराच से वृषसेन को हृदय पर कठिन पीड्यमान किया ३७ पराक्रमी शत्रु के हाथ से अत्यन्त घायल उस शत्रुओं के पराजय करनेवाले ने बीसबाणों से शत्रु को पीड्यमान किया और उसने भी उसको पांचबाणों से व्यथित किया ३८ उसके पीछे उनदोनों पुरुषोत्तमों ने हज़ारों बाणों से परस्पर ढक दिया तदनन्तर सेना छिन्न भिन्न होगई ३९ हे राजन्! कर्ण ने दुर्योधन की भागी हुई सेना को देखकर उनको पीछे से जाकर रोका ४० इसके पीछे कर्ण के लौटने पर नकुल कौरवों की ओर चला फिर कर्ण के पुत्र ने युद्ध में नकुल को छोड़कर ४१ फिर शीघ्रता से कर्ण कीही सेना को रक्षित किया वहां क्रोधयुक्त उलूक को युद्ध में प्रतापवान् सहदेव ने रोककर ४२ उसके चारों घोड़ों को मार सारथी को यमलोक में पहुँचाया हे राजन्! इसके पीछे पिता को प्रसन्नकरनेवाला उलूक रथ से उतरकर शीघ्रही त्रिगर्त्तदेशियों की सेना में गया ४३ और हँसतेहुए सात्यकी ने तेज

धारवाले बीसबाणों से शकुनीको छेदकर एकबाणसे उसकी ध्वजाको काटा ४४ हे राजन् ! फिर क्रोधयुक्त प्रतापवान् शकुनी ने युद्ध में उसके कवच को चीरकर उसकी सुनहरी ध्वजा को काटा ४५ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले सात्यकी ने बाणों से उसके घोड़ों को यमलोक में पहुँचाया हे भरतर्षभ ! फिर शकुनी अकस्मात् रथ से कूदकर शीघ्रही ४६ । ४७ महात्मा उलूक के रथपर सवारहुआ तब युद्ध को शोभा देनेवाले सात्यकी ने उसको शीघ्रही हटाया ४८ हे राजन् ! फिर सात्यकी आपकी सेना के सम्मुखगया और सेना भिन्न २ होगई ४९ सात्यकी के बाणों से ढकीहुई आपकी सेनाके लोग शीघ्रही दशों दिशाओं में भागकर निर्जीवों के समान गिरपड़े ५० फिर आपके पुत्रने युद्धमें भीमसेनको रोका तब भीमसेन ने एकमुहूर्त्त भर मेंही वहां उस पृथ्वी के राजा दुर्योधन को घोड़े, रथ, सारथी और ध्वजासे रहित करदिया ५१ उस कर्म से सब मनुष्य प्रसन्न हुए इसके पीछे राजा दुर्योधन भीमसेनके आगे हटगया ५२ फिर सब कौरवीय सेनाने भीमसेन को घेरा वहां भीमसेन के मारने के इच्छावान् शूरवीरों के बड़े शब्दहुए ५३ युधामन्यु ने कृपाचार्य को छेदकर शीघ्रही उनके धनुषको काटा इसके पीछे शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्यने दूसरे धनुषको लेकर ५४ युधामन्युकी ध्वजा सारथी और छत्रको पृथ्वीपर गिराया इसके पीछे महारथी युधामन्यु रथ की सवारी से हटगया ५५ उत्तमौजा ने भयानकरूप और भयानक पराक्रमवाले कृतवर्मा को बाणों से अकस्मात् ऐसा ढक दिया जैसे कि बादल पानी की वर्षा से पर्वत को ढकदेता है ५६ हे शत्रुसन्तापिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! वह महाघोर युद्ध ऐसा बहुत बढ़ाहुआ जैसा कि मैंने पहले कभी न देखा था ५७ इसके पीछे कृतवर्मा ने युद्ध में उत्तमौजा को हृदयपर पीडयमान किया तब वह अकस्मात् रथ के अङ्गपर बैठगया ५८ फिर सारथी रथके द्वारा उस महारथी को दूरलेगया इसके पीछे सब कौरवीय सेना भीमसेन के ऊपर चढ़आई ५९ दुश्शासन और शकुनी ने हाथियों की बड़ीसेना समेत भीमसेन को घेरकर क्षुरप्रनाम बाणों से घायल किया ६० तब क्रोधयुक्त भीमसेन सैकड़ों बाणों से क्रोधयुक्त दुर्योधन को विमुख करके बड़ी तीव्रता से हाथियों की सेनापर आटूटा ६१ वहां अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने उस अकस्मात् आनेवाली हाथियों की सेनाको देखकर दिव्यअस्त्र को प्रकट किया ६२ हाथियों को हाथियों से ऐसे मारा जैसे कि वज्र

से इन्द्र असुरों को मारता है ६३ इसके पीछे युद्ध के बीच हाथियों को मारतेहुए भीमसेन ने बाणों के समूहों से आकाश को ऐसा ढकदिया जैसे कि टीड़ियों से वृक्ष ढकजाता है इसके पीछे भीमसेन ने मिले हुए हाथियों के हज़ारों झुण्डों को बड़े वेग से ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसे कि बादलों के समूहों को वायु तिर्र बिर्र करदेताहै सुवर्ण और मणियों के जालों से ढकेहुए हाथी ६४। ६५ युद्ध में ऐसे अधिक शोभायमान हुए जैसे कि बिजली रखनेवाले बादल हे राजन्! भीमसेन के हाथसे घायल होकर सब हाथी शब्द करतेहुए भागे ६६ कितनेही हाथी हृदय में घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े उन गिरेहुए सुवर्ण भूषणोंसे अलंकृत हाथियों से ६७ वहां पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि फैलेहुए पर्वतों से प्रकाशित मुखवाले रत्नों से अलंकृत गिरनेवाले हाथियों के सवारों से होती है ६८ अथवा पृथ्वी ऐसी मालूमदेती थी जैसे कि क्षीणपुण्यवाले ग्रहोंके गिरनेसे शोभायमान होती है इसके पीछे मदझाड़नेवाले टूटेहुए मुखवाले सैकड़ों हाथी भीमसेन के बाणों से घायल होकर युद्ध से भागे भय से पीड़ित बाणोंसे घायल अङ्ग रुधिरको वमनकरनेवाले पर्वताकार अनेकहाथी ६९।७० धातुयुक्त पर्वतोंके समान भागे हमने भीमसेनकी दोनों धनुष खैंचनेवाली भुजाओं को बड़ेसर्प की समान चन्दन अगर से अलंकृत देखा और उसके वज्र के समान शब्दवाले ज्या शब्द को सुनकर ७१।७२ मूत्र विष्ठाको करतेहुए हाथी बड़े कठिनशब्दों को करतेहुए भागे हे राजन्! उस अकेले बुद्धिमान् भीमसेनका वह कर्म ७३ इसरीति का शोभित हुआ जैसे कि सब जीवों के मारनेवाले रुद्रजीका होताहै॥ ७४ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेद्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके अनन्तर श्वेत घोड़ों से युक्त और श्रीनारायणजी के थांभेहुए उत्तम रथपर नियत श्रीमान् अर्जुन आकर सम्मुखहुआ १ हे भरतर्षभ! अर्जुन ने युद्ध में आपकी उस बड़ी घोड़ोंवाली सेना को ऐसे छिन्न भिन्न कर दिया जैसे कि वायु बड़े समुद्र को उथल पुथल करदेता है २ अर्जुन के प्रमत्त होनेपर आधी सेना को साथ लियेहुए आपके पुत्र दुर्योधन ने अकस्मात् सम्मुख आकर ३ आतेहुए क्रोधयुक्त युधिष्ठिर को रोककर तिहत्तरबाणों से घायल किया ४ तब तो कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर बड़े क्रोधयुक्तहुए और शीघ्रही उसने

बीस भल्लों को आप के पुत्र के शरीर में प्रविष्ट किया ५ इसके पीछे युधिष्ठिर के पकड़ने की इच्छा से कौरव दौड़े तब महारथीलोग शत्रुओं का दुष्ट विचार जानकर ६ उस कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिरको चाहतेहुए सब आनकर इकट्ठे होगये नकुल सहदेव और पर्पत का पौत्र धृष्टद्युम्न एक अक्षौहिणी सेना समेत युधिष्ठिर के पास दौड़े ७ और युद्ध में आपके महारथियों को मर्दन करताहुआ भीमसेन भी शत्रुओं से घिराहुआ ८ राजा को चाहताहुआ दौड़ा हे राजन् ! सूर्य के पुत्र कर्ण ने उन आनेवाले सब बड़े धनुषधारियों को ६ बाणों की वर्षा से रोका और बाणों की वर्षाकरते तोमरों को चलाते १० वह उपाय करनेवाले लोग भी कर्ण की ओर देखने को समर्थ नहीं हुए फिर कर्ण ने उन सब शस्त्रकुशल बड़े २ धनुषधारियों को ११ बाणों की बड़ी वर्षा करके रोका और शीघ्र अस्त्र के प्रकट करनेवाले प्रतापी सहदेव ने दुर्योधन के सम्मुख होकर शीघ्रही बीसबाणों से छेदा सहदेव के हाथ से घायल पर्वत के समान राजा दुर्योधन १२ । १३ मदोन्मत्त हाथी के समान रुधिर से लिप्तहुआ फिर वहां बाणों से घायलहुए आपके पुत्रको देखकर १४ रथियों में श्रेष्ठ कर्ण क्रोधित होकर दौड़ा तब दुर्योधन को देखकर शीघ्रही अस्त्र को प्रकटकिया १५ उस अस्त्र से युधिष्ठिरकी सेनासमेत धृष्टद्युम्न को घायल किया इसके पीछे महात्मा कर्ण के हाथ से घायल और पीड्यमान युधिष्ठिर की सेना अकस्मात् भागी १६ हे राजन् ! वहां नाना प्रकारके बाण परस्पर में फेंकेगये १७ कर्ण के धनुषसे निकले हुए बाणोंने भल्लों से पुङ्खों को काटा हे राजन् ! अन्तरिक्षमें परस्पर गिरनेवाले बाण समूहों की १८ घिसावट से अग्नि उत्पन्न हुई इसके पीछे कर्ण ने चलनेवाली टीड़ियों के समान शत्रुके शरीर में प्रवेश कर जानेवाले बाणों से बड़े वेगयुक्त होकर दशों दिशाओं को आच्छादित करदिया लालचन्दन से चर्चित सुवर्ण और मणियों से अलंकृत १६ । २० भुजाओं को उत्तम अस्त्र के दिखानेवाले कर्ण ने चेष्टावान् किया इसके अनन्तर अपने शायकोंसे सब दिशाओंको व्याप्त करके २१ कर्ण ने धर्मराज युधिष्ठिरको बहुत पीड़ित किया इसके पीछे क्रोधयुक्त धर्म के पुत्र युधिष्ठिर ने २२ तीक्ष्ण पचास बाणों से कर्ण को घायल किया वह युद्धभूमि बाणों से अन्धकारयुक्त होकर महाभयकारी दिखाई दी २३ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र ! तब धर्मपुत्र के हाथ से सेना के घायल होजाने पर आपके शूरवीरों

ने बड़ा हाहाकार किया २४ फिर कङ्कपक्षवाले अनेक शायक तीक्ष्ण धारवाले बहुत से भल्ल नानाशक्ति दुधारे खड्ग और मुसलों से उस धर्मात्मा ने जहां २ अपने क्रोध को प्रकटकिया हे भरतर्षभ! तहां २ आपके शूरवीर छिन्न भिन्न हो गये २५। २६ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने भी धर्मराज युधिष्ठिर को नाराच अर्द्धचन्द्र और वत्सदन्तनाम बाणों से घायल किया २७ वह अशान्तचित्त क्रोधयुक्त महासाहसी कर्ण क्रोध से ओठों को चबाताहुआ शायकों को लेकर युधिष्ठिर के पास गया २८ तब युधिष्ठिर ने उसको सुनहरी पुङ्खवाले सौ बाणों से घायल किया फिर हँसतेहुए कर्ण ने तीक्ष्ण कङ्कपक्ष से जटित २९ तीनभल्लों से उस युधिष्ठिर को छातीपर घायलकिया उससे अत्यन्त पीड्यमान राजा युधिष्ठिर ३० रथ के अङ्गपर बैठकर सारथीसे कहनेलगा कि चल तदनन्तर सब धृतराष्ट्र के पुत्र और राजा लोग पुकारे ३१ कि राजा को पकड़ो यह कहकर सब दौड़े उसके पीछे प्रहार करनेवाले केकयदेशियों के एक हजार सातसौ रथियोंने ३२ पाञ्चालों समेत धृतराष्ट्र के पुत्रों को रोका और ३३ मनुष्यों के नाशकारी उस कठिन युद्ध के जारीहोने पर बड़े पराक्रमी भीमसेन और दुर्योधन परस्पर में सम्मुख हुए ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, कर्ण ने आगे नियत होनेवाले महारथी केकयदेशियों को अपने बाणजालों से छिन्न भिन्न करदिया रोकनेमेंही उन केकयदेशियोंके पांच सौ रथों को कर्ण ने यमलोक को भेजा १। २ इसके पीछे शूरवीरलोग नियत हुए कर्ण को रोकने को समर्थ होकर उसके बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर भीमसेन के पासगये ३ फिर कर्ण एकही रथ के द्वारा बाणों के बल से रथ की सेनाओं को चीरता हुआ युधिष्ठिर के पासगया ४ अपने डेरे को जानेवाले बाणों से घायल शरीर धीरे २ चलनेवाले अचेतहुए नकुल और सहदेव के मध्यवर्ती वीर ५ राजाको पाकर दुर्योधन की प्रसन्नता की इच्छासे कर्णने तीक्ष्ण धारवाले तीन उत्तम बाणों से पीड्यमान किया और इसी प्रकार युधिष्ठिरने भी कर्ण को छातीपर घायलकरके तीन बाणोंसे सारथीको और चारबाणों से घोड़ोंको पीड्यमान किया ६। ७ फिर शत्रुसन्तापी नकुल सहदेव और जो लोग कि अर्जुन

की सेना के रक्षक थे वह सब कर्ण की ओर इस निमित्त दौड़े कि यह कहीं राजा को न मारे ८ उन दोनों नकुल और सहदेव ने कर्ण के ऊपर बाणों की वर्षाकरी और बड़े उपाय में प्रवृत्तहुए ९ इसीप्रकार प्रतापवान् कर्ण ने भी उन शत्रुओं के विजयी महात्मा दोनों नकुल और सहदेव को बड़े तीक्ष्ण भल्लों से घायल किया १० फिर कर्ण ने धर्मराज के दन्तवर्ण कालेबाल और चित्त के समान शीघ्रगामी घोड़ों को भी मारा ११ इसके पीछे बड़े धनुषधारी हँसतेहुए कर्ण ने दूसरे भल्लसे युधिष्ठिर के छत्र को गिराया १२ इसी प्रकार प्रतापी बुद्धिमान् कर्ण ने नकुलके भी घोड़ों को मारकर उसके रथके ईशा और धनुषको काटा १३ तब मृतक घोड़े और टूटे रथवाले अत्यन्त घायल वह दोनों भाई सहदेव के रथपर सवार हुए वहां शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला मामा शल्य उनदोनों को विरथ देखकर १४ करुणा करके कर्ण से बोला कि हे कर्ण! तुझको पाण्डव अर्जुन से लड़ना चाहिये १५ तू अत्यन्त क्रोधरूप होकर धर्मराज के साथ क्यों लड़ता है शस्त्र, अस्त्र, कवच, बाण और तूणीर से रहित १६ रथके सारथी और घोड़ेवाला होकर यह शत्रुओं के अस्त्रों से टूटे अङ्ग हैं तुम अर्जुन को पाकर हास्य के योग्य होगे १७ इसरीति के शल्य के वचन को सुनकर क्रोधयुक्त कर्ण ने वैसी दशा में भी युधिष्ठिर को घायल किया १८ और पाण्डव नकुल और सहदेव को तीक्ष्णबाणों से छेदा फिर कर्ण ने हँसकर बाणों से उनका मुख फेर दिया १९ इसके पीछे उस क्रोधयुक्त युधिष्ठिर के मारने में प्रवृत्त कर्ण को शल्य ने हँसकर फिर यह वचन कहा कि हे कर्ण! आपको दुर्योधन ने जिस प्रयोजन के लिये प्रतिष्ठित किया है २० उस अर्जुन को मारो युधिष्ठिर के मारने से तेरा क्या लाभ होगा २१ श्रीकृष्ण और अर्जुन के बड़े शङ्खों के यह बड़े शब्द और धनुष का यह शब्द ऐसा सुना जाता है जैसे कि वर्षाऋतु में बादलों के शब्द होते हैं २२ यह अर्जुन बाणोंकी वर्षा से महारथियों को मारता हुआ हमारी सब सेनाको निगले जाताहै हे कर्ण! इसको तुम युद्धमें देखो २३ उस शूर के पृष्ठ के रक्षक युधामन्यु और उत्तमौजा हैं और इसकी उत्तरीय सेना का सात्यकी रक्षक है २४ इसी प्रकार धृष्टद्युम्न उसकी दक्षिणी सेना का रक्षक है और भीमसेन धृतराष्ट्र के पुत्रों से युद्ध करता है २५ सो अब हम सबके देखतेहुए वह भीमसेन जैसे उस दुर्योधन को नहीं मारे और जिस प्रकार

से वह छूटजाय हे कर्ण ! उसी प्रकार तुमको करना चाहिये २६ युद्धको शोभा देनेवाले और भीमसेनसे निगलेहुए इस दुर्योधनको देखो जो कदाचित् तुमको पाकर यह छूटजाय तो बड़ा आश्चर्य होय २७ इस बड़े संशय में पड़ेहुए दुर्योधन को बचाओ माद्री के पुत्र नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर के मारने से क्या लाभ है २८ हे राजन् ! कर्ण ने शल्य के इन वचनों को सुनकर और महायुद्ध में भीमसेन से पराजित दुर्योधन को देखकर २९ राजा का अत्यन्त चाहनेवाला और शल्य के वचन से चलायमान बड़ा पराक्रमी कर्ण अजातशत्रु युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव को छोड़कर ३० आपके पुत्र की रक्षा करनेको दौड़ा हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! राजा मद्र की प्रेरणासे और मानों आकाशगामी घोड़ों के द्वारा ३१ कर्ण के चलेजाने पर कुन्ती का पुत्र युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा दूर चलेगये ३२ वह लज्जायुक्त राजा युधिष्ठिर बाणोंसे घायल उन दोनों भाइयोंसमेत शीघ्रही डेरेको पाकर ३३ बहुत शीघ्र रथ से उतरा वहां जिसके भल्ल निकाले गये वह राजा युधिष्ठिर हृदयके भालोंसे महापीड्यमान होकर अपने शुभ शयनपर जाकर लेटगया ३४ और लेटकर अपने महारथी दोनों भाई नकुल और सहदेवसे बोला हे पाण्डव ! तुम दोनों बहुत शीघ्र भीमसेन की सेना में जाओ ३५ वह भीमसेन बादलके समान गर्जता हुआ लड़ताहै इसके अनन्तर बड़ेभाई की आज्ञा पाकर शत्रुओं के पीड़ा देनेवाले महातेजस्वी रथियों में श्रेष्ठ पराक्रमी दोनों भाई नकुल और सहदेव दूसरे रथपर सवार होकर उत्तम वेगवाले घोड़ों के द्वारा भीमसेनकी सेना को पाकर ३६।३७ दोनों भाई अपनी सेनाओं समेत वहां नियत हुए॥ ३८॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेचतुष्षष्टितमोऽध्यायः॥ ६४॥

पैंसठवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! इसके पीछे रथ की सेनाके बड़े समूहों समेत अश्वत्थामाजी अकस्मात् वहां पहुँचे जहांपर अर्जुन नियत था १ श्रीकृष्णजी को साथ रखनेवाले शूरवीर अर्जुन ने अकस्मात् आनेवाले अश्वत्थामा को तत्क्षण ऐसे रोका जैसे कि मर्यादा समुद्रको रोकती है २ हे महाराज ! इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामा ने शायकों से श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को ढकदिया ३ इसके पीछे वहांपर महारथी कौरवों ने श्रीकृष्ण अर्जुन को ढका

हुआ देखकर बड़ा आश्चर्य किया ४ इसके अनन्तर हे भरतर्षभ ! हँसते हुए अर्जुन ने दिव्य अस्त्रों को प्रकटकिया तब अश्वत्थामा ने उस अस्त्र को रोका ५ फिर अर्जुन ने मारने की इच्छा से जिस २ अस्त्र को चलाया उस २ अस्त्र को बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा ने नाशकरदिया ६ इसके पीछे बड़े भयकारी अस्त्रों को युद्ध वर्तमान होने पर युद्ध में हमने अश्वत्थामा को मुख फाड़ेहुए कालके समान देखा ७ उसने बाणों से दिशा विदिशाओं को आच्छादित करके तीन बाणों से वासुदेवजी को दाहिनी भुजापर छेदा ८ इसके पीछे अर्जुन ने उस महात्मा के सब घोड़ों को मारकर युद्धभूमि पर रुधिरों के प्रवाहवाली नदी को बहाया ९ वह भयानक नदी सबलोकों को परलोकमें प्राप्त करनेवाली महाघोर-रूपा थी युद्ध में अर्जुन के धनुष से निकलेहुए बाणों से रथों समेत सब रथियों को १० और अश्वत्थामा के घोड़ों को मृतक देखा और उस महाघोर शत्रुओं को परलोक में पहुँचानेवाली नदी को इस रीति से जारी किया ११ कि उन दोनों अश्वत्थामा और अर्जुन के महाघोर संग्राम होने पर अमर्यादा से युद्ध करनेवाले शूरवीर पीछेकी ओर से दौड़े १२ हे राजन् ! अर्जुनने युद्ध में घोड़े सारथी समेत रथ वा मृतक सवारवाले घोड़े और हाथियों के हज़ारों यूथों को मारकर मनुष्यों का घोर नाश करदिया अर्जुन के धनुष से निकले हुए बाणों से हज़ारों रथी मरकर गिरपड़े १३ । १४ और जिन घोड़ों के योक्त्र छूटगये वह घोड़े जहां तहां चारोंओर को दौड़े युद्ध में शोभायमान पराक्रमी अश्वत्थामा अर्जुन के उस कर्म को देखकर १५ उस विजयी अर्जुनके पास शीघ्रही जाकर स्वर्णमयी बड़े धनुष को टङ्कारता हुआ १६ तीक्ष्ण बाणोंसे उसको चारोंओर से ढकने लगा हे महाराज ! अश्वत्थामाने बाणों से अर्जुन को फिर आच्छादित करके १७ बड़ी निर्दयतापूर्वक उसको छातीपर अत्यन्त घायल किया हे भरतवं-शिन् ! उस अश्वत्थामाके हाथसे युद्धमें अत्यन्तघायल १८ गाण्डीव धनुषधारी बड़े बुद्धिमान् अर्जुन ने बाणों की वर्षासे अश्वत्थामा को ढककर उसके धनुष को काटा १९ तब उस टूटे धनुखवाले अश्वत्थामा ने युद्ध में वज्र के समान स्पर्शवाली परिघको लेकर अर्जुन के ऊपर फेंका २० हे राजन् ! उस स्वर्णमयी आतेहुए परिघ को हँसतेहुए पाण्डुनन्दन अर्जुन ने अकस्मात् काटडाला २१ फिर अर्जुन के शायकों से वह टूटा हुआ परिघ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे

कि वज्र से घायल टूटेहुए पहाड़ गिरते हैं २२ हे महाराज! इसके पीछे क्रोध-युक्त महारथी अश्वत्थामा ने इन्द्रास्त्र के वेगसे अर्जुन को ढकदिया २३ तब उस वेगवान् पाण्डव अर्जुन ने उसके फैलेहुए इन्द्रजाल को देखकर अपने गाण्डीव धनुष को लिया २४ और महेन्द्र के उत्पन्न कियेहुए उत्तम अस्त्रको लेकर इन्द्र-जाल को दूर करके अर्जुन ने महेन्द्र की शक्ति से युक्त उस जाल को फाड़कर एक क्षणभर मेंही अश्वत्थामा के रथको ढकदिया इसके अनन्तर अर्जुनके बाणों से दबेहुए अश्वत्थामा ने समीपमें आकर २५ अर्जुनकी उस बाणवृष्टिको सहके और अपने बाणों से शत्रु को दृष्टि के सम्मुख करके सौ बाणोंसे अकस्मात् श्री कृष्णजी को घायल करता हुआ तीन क्षुद्रक नाम बाणों से अर्जुन को घायल किया २६ इसके पीछे अर्जुन ने सौ शायकों से गुरु के पुत्र को मर्मस्थलों पर छेदा और आपके शूरवीरों के देखते हुए घोड़े सारथी कवच और धनुष को काटा २७ फिर उस शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुनने मर्मस्थलोंमें छेदकर भल्ल से उसके सारथी को रथ की नीड़ से गिरादिया २८ फिर उसने आप घोड़ों को थांभकर बाणोंसे श्रीकृष्ण और अर्जुन को ढकदिया वहां हमने अश्वत्थामा के इस शीघ्र पराक्रमको देखा २६ कि जिसने घोड़ोंको भी थांभा और अर्जुन सेभी युद्धकिया हे राजन्! युद्ध में सब शूरवीरों ने उसके उस कर्मकी बड़ी प्रशंसा करी ३० इसके पीछे अर्जुन ने हँसकर अपने क्षुरप्रनाम बाणोंसे शीघ्रही अश्व-त्थामा के घोड़ों की बाग को काटा ३१ फिर बाण के वेग से पीड्यमान होकर वह घोड़े भागे हे भरतवंशिन्! इसकेपीछे आपकी सेना का घोर शब्दहुआ ३२ फिर चारोंओर से तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते विजयाभिलाषी पाण्डव विजय को पाकर आपकी सेनापर दौड़े ३३ हे महाराज! युद्ध में विजय से शोभायमान वीर पाण्डवों के हाथसे दुर्योधन की बड़ी सेना वारंवार छिन्न भिन्न हुई ३४ तब अपूर्व युद्ध करनेवाले आपके पुत्र और सौबल के पुत्र शकुनी और कर्ण के देखतेहुए सब भागे ३५ उस समय चारोंओर से पीड्यमान आपके पुत्रोंसे रोकी हुई बड़ी सेना युद्ध में नियतहुई ३६ हे महाराज! उसके पीछे आपके पुत्रोंकी बड़ी सेना चारों ओर से भागनेवाले शूरवीरों के कारण व्याकुल और भयभीत होगई ३७ तदनन्तर ठहरो २ इस प्रकार से कर्ण के कहने पर भी महात्माओंके हाथ से घायल हुई वह सेना नियत नहीं हुई ३८ हे महाराज! इसके पीछे

दुर्योधन की सेना को चारों ओर से भागी हुई देखकर विजय से शोभायमान पाण्डवों ने बड़े शब्द किये ३६ तब दुर्योधन बड़ी नम्रतापूर्वक कर्ण से बोला हे कर्ण! देखो पाञ्चालों के हाथ से बड़ी सेना अत्यन्त पीड़ित होगई है ४० तेरे नियत होनेपर भी भागी हे शत्रुविजयी, महाबाहो! इस बात को समझकर उचित कर्म करो ४१ हे पुरुषोत्तम वीर! पाण्डवों के हाथ से भगाये हुए हज़ारों शूरवीर युद्ध में तुझी को पुकारते हैं ४२ दुर्योधनके इस बड़े वचन को सुनकर हँसताहुआ कर्ण भी मद्रदेश के राजा से यह वचनबोला ४३ हे राजन्! अस्त्रों समेत मेरी दोनों भुजाओं के पराक्रम को देखो अब मैं युद्ध में पाण्डवों समेत सब पाञ्चालों को मारताहूं ४४ हे नरोत्तम! अब तुम कल्याणके निमित्त घोड़ों को निस्सन्देह चलाओ हे महाराज! प्रतापी कर्णने इस वचन को कहकर ४५ विजयनाम उत्तम और प्राचीन धनुष को लेकर प्रत्यंचा समेत बड़ी दृढ़ता से पकड़कर ४६ सबप्रकारसे शूरवीरों को रोककर उस शूर पराक्रमी और साहसी ने भार्गव अस्त्र को धनुषपर चढ़ाया इसके पीछे उस महायुद्ध में लाखों प्रयुतों और अर्बुदों तीक्ष्णबाण धनुषसे निकले ४७।४८ उन अग्निरूप घोरकंक और मोर के पंखों से जटित बाणों से पाण्डवी सेना ऐसी ढकगई कि कुछ भी नहीं जानपड़ता था ४६ हे राजन्! युद्ध में भार्गवअस्त्र से पीड्यमान पराक्रमी पाञ्चालों का बड़ा हाहाकार हुआ ५० हे नरोत्तम, राजन्, धृतराष्ट्र! चारोंओर से गिरतेहुए हज़ारों हाथी घोड़े रथ और चारोंओर से मृतक हुए मनुष्यों से पृथ्वी कम्पायमान हुई और सब पाण्डवीय सेना व्याकुलहुई ५१।५२ हे नरोत्तम! शत्रुओं का तपानेवाला अकेला कर्ण शत्रुओं को भस्म करता हुआ निर्धूम अग्नि के समान शोभायमान हुआ ५३ कर्ण के हाथ से घायल वह पाञ्चाल चन्देरी देशियों समेत जहां तहां ऐसे अचेत होगये जैसे कि वन के भस्म होने में हाथी अचेत होजाते हैं ५४ हे नरोत्तम! वह उत्तम पुरुष व्याघ्रों के समान पुकारे इसके पीछे युद्ध में उन भयभीत पुकारनेवाले ५५ और चारोंओर से दौड़नेवालों के ऐसे बड़े शब्द उत्पन्नहुए जैसे कि महाप्रलयमें जीवों के शब्द होते हैं ५६ हे श्रेष्ठ! फिर कर्ण के हाथ से घायल उन जीवों को देखकर पशु पक्षी जीवभी भयभीत होगये ५७ युद्धमें कर्णके हाथसे घायल वह सृञ्जय अर्जुन और वासुदेवजी को वारंवार ऐसे पुकारते थे ५८ जैसे कि यमपुरी में दुःखी जीव

यमराज को पुकारते हैं कर्ण के शायकों से घायल होनेवालों के शब्दों को सुनकर ५९ कुन्ती का पुत्र अर्जुन वहांपर छोड़ेहुए भार्गवास्त्र को देखकर वासुदेवजी से बोला ६० हे महाबाहो श्रीकृष्णजी ! भार्गवास्त्र के पराक्रम को देखो यह अस्त्र युद्ध में कैसे नाश करने के योग्य नहीं है ६१ हे श्रीकृष्णजी ! युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले पराक्रममें यमराज के समान क्रोधरूप कर्ण को देखो ६२ यह कर्ण घोड़ों को चलाचलाकर प्रतिपद वारंवार मुझको देखताहै मैं युद्ध में कर्ण से भागनेवाला नहीं हूं ६३ मनुष्य युद्ध में विजय और पराजय दोनों पाता है हे शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी ! मृतक मनुष्य की तो पराजय ही होती है विजय कैसे होसक्ती है ६४ अर्जुन के इस वचन को सुनकर श्रीकृष्ण जीने बुद्धिमानों में श्रेष्ठ अर्जुन से समय के अनुसार यह वचन कहा ६५ कि कर्ण के हाथ से राजा युधिष्ठिर अत्यन्त घायल हुआ है हे अर्जुन ! तुम उसको देखकर और भरोसा देकर फिर कर्ण को मारोगे ६६ हे राजन् ! ऐसा कहकर युधिष्ठिर को देखना चाहते और युद्ध में कर्ण को थकावट में पकड़ना चाहते श्रीकृष्णजी चले ६७ इसके पीछे केशवजी की आज्ञा से अर्जुन बाणों से पीड्यमान राजा युधिष्ठिर के देखने को रथ की सवारी के द्वारा युद्धभूमि से शीघ्रही अपने डेरों को गया ६८ तब चलतेहुए अर्जुन ने धर्मराज के दर्शन की अभिलाषा से सेना को देखा और उसमें अपने बड़ेभाई को नहीं देखा ६९ हे भरतवंशिन् ! वह अर्जुन अश्वत्थामा से युद्ध करके और उस वज्रधारी इन्द्र से भी न रुकनेवाले अपने गुरु के पुत्र को पराजय करके चल दिया ॥ ७० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥

छासठवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसके पीछे उग्रधनुषधारी शत्रुओं से अजेय अर्जुन ने अश्वत्थामा को पराजय कर बड़े कठिन शूरों के कर्मों को करके फिर अपनी सेना को देखा १ महात्मा अर्जुन शूरों के साथ युद्ध न करनेवाली सेना के मुखपर नियत शूरवीरों को प्रसन्नकरता और पहले प्रहारों से घायल और नियतहुए बहुत रथियों की प्रशंसा करताहुआ २ और अजमीढ़ वंशीय अपने भाई युधिष्ठिर को न देखकर भीमसेन के पास जाकर यह वचन बोला कि राजा कहां हैं और किस रीति से उसने युद्धकिया ३ भीमसेन ने कहा कि कर्ण के बाणों से पीड्य·

मान धर्मपुत्र युधिष्ठिर यहां से हटगया है और किसी प्रकार से जीवता है ४ अर्जुन ने कहा कि हे भीमसेन! आप शीघ्रता से उस कौरवों में श्रेष्ठ राजा की खबर लेने को यहां से चलो निश्चय करके वह राजा युधिष्ठिर कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल होकर अपने डेरे को गया है ५ द्रोणाचार्य के तीक्ष्णधार बाणों के प्रहारों से अत्यन्त घायल होकर भी वेगवान् राजा युधिष्ठिर विजयकी अभिलाषा करके जबतक वहां नियत नहीं हुआ था तबतक द्रोणाचार्यजी भी नहीं मरे थे ६ वह महानुभाव बड़ा पाण्डव अब युद्ध में कर्ण के हाथ से संशय संयुक्त हुआ है हे भीमसेन! अब तुम बड़ी शीघ्रता से उनके निश्चय करनेको जाओ और मैं शत्रुओं को रोककर नियत हूंगा ७ भीमसेन बोले हे महानुभाव! तुम भी उस भरतर्षभ युधिष्ठिर के वृत्तान्त को जानते हो और हे अर्जुन! जो मैं यहां से चलाजाऊंगा तो बड़े शूरवीर शत्रु मुझको अपने से भयभीत हुआ कहेंगे ८ तब अर्जुन ने भीमसेन से कहा कि संसप्तक मेरी सेना के सम्मुख नियत हैं अब उनको विना मारे इन शत्रुसमूहों के स्थान से जाना योग्य नहीं है ९ हे कौरवों में बड़े वीर! तब भीमसेन अपने पराक्रम को पाकर अर्जुन से बोले कि मैं संसप्तकों के सम्मुख युद्ध करने को जाऊंगा हे अर्जुन! तुम चले जाओ १० शत्रुओं के मध्य में भाई भीमसेन के कठिनता से होने के योग्य इस वचन को कि हे अर्जुन! मैं अकेला बड़ी कठिनता से विजय होनेवाले महा असहनशील संसप्तकों की सेना को रोकूंगा सुनकर ११ महापराक्रमी सत्यवक्ता वानरध्वज अर्जुन महात्मा कौरवों में श्रेष्ठ सत्यपराक्रमी भाई युधिष्ठिर के देखने को चलनेवाला होकर उन वृष्णिवंशियों में श्रेष्ठ श्रीनारायणजी से बोला कि हे इन्द्रियों के स्वामिन्! इस समुद्ररूप सेना को त्यागकर घोड़ों को चलाइये हे केशवजी! अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर को मैं देखना चाहता हूं १२ । १३ सञ्जय बोला कि तदनन्तर घोड़ों को चलायमान करतेहुए सब यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी भीमसेन से यह बात बोले कि हे भीमसेन! अब यह तेरा कर्म कुछ अपूर्व नहीं है मैं जाता हूं तुम बाणों के समूहों से शत्रुओं के समूहों को मारो १४ हे राजन्! इसके पीछे श्रीकृष्णजी गरुड़ के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा बड़ी शीघ्रता से जहां राजा युधिष्ठिर था १५ वहां गये हे राजेन्द्र! उस शत्रुविजयी भीमसेन को युद्ध के विषय में समझाकर सेना के

सम्मुख नियतकरके १६ फिर पुरुषों में बड़ेवीर दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन युधिष्ठिरके समीप गये और वहां अकेलेही सोतेहुए राजा को पाकर दोनों ने रथ से उतर कर धर्मराजके चरणोंको नमस्कार किया श्रीकृष्ण और अर्जुन उस पुरुषोत्तमको कुशलपूर्वक देखकर ऐसे प्रसन्न हुए जैसे कि इन्द्र को देखकर अश्विनीकुमार प्रसन्नहोते हैं १७। १८ फिर राजाने भी उनको ऐसा प्रसन्न किया जैसे कि इन्द्र अश्विनीकुमारों को और जैसे महाअसुर जम्भ के मरने पर बृहस्पतिजी ने इन्द्र और विष्णु को किया था १९ सञ्जय बोले कि इसके पीछे शत्रुसन्तापी राजा युधिष्ठिर कर्णको मृतक मानताहुआ बड़ीप्रसन्नतापूर्वक बाणों से भिदेहुए रुधिर से लिप्त शरीर महाप्रतापी लालनेत्रवाले उन बड़े पराक्रमी साथ आनेवाले अर्जुन और केशवजी को देखकर युद्ध में गाण्डीवधनुषधारी के हाथसे कर्ण को मृतक माना २०। २२ हे भरतर्षभ! मन्द मुसकान पूर्वक दोनों की प्रशंसा करते युधिष्ठिर ने उन शत्रुसंहारी श्रीकृष्ण अर्जुन को बड़ी मृदुता और मिष्टवाणी से प्रसन्न किया ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेपद्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

सड़सठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि, हे श्रीकृष्णजी ! आप का आगमन शुभकारी हो तुम दोनों श्रीकृष्णजी और अर्जुन का दर्शन मुझ को अत्यन्त अपूर्व है १ अक्षत और निर्विघ्न आप दोनोंके हाथोंसे वह महारथी कर्ण मारागयाही जानो जो युद्ध में विषधर सर्प की समान सब शास्त्रों में कुशल २ धृतराष्ट्रके पुत्रों का सहायक और सब कौरवीय सेना का रक्षक और वृद्धिकर्ता धनुषधारी वृषेण वा सुषेणसे रक्षित श्रीपरशुरामजी से अस्त्रों का सीखनेवाला बड़ा पराक्रमी दुर्जय संसार में अद्वितीय महारथी धृतराष्ट्र के पुत्रों का रक्षक सेनाके मुखपर जानेवाले शत्रुओं का मारनेवाला वा मर्दन करनेवाला है ३ । ५ दुर्योधन के हित में युक्त हमारे पीड़ादेने के निमित्त युद्ध में देवताओं समेत इन्द्रसे भी अजेय तेजबल में अग्नि वायु के समान पाताल के समान गम्भीर मित्रों की प्रसन्नता का बढ़ाने वाला है ६ । ७ उस मेरे मित्रों के मारनेवाले कर्ण को युद्धमें मारकर प्रारब्ध से तुम दोनों ऐसे आये हो जैसे कि असुर को मारकर दो देवता आते हैं ८ सब सृष्टि के मारने के अभिलाषी यमराज के समान अपने को बड़ामाननेवाले उस

कर्ण ने हे श्रीकृष्ण ! और अर्जुन ! मेरे साथ बड़ा घोरयुद्ध किया ६ उसने मेरी ध्वजा काटकर दोनों आगे पीछेवाले सारथियों को भी मारा तदनन्तर मैं सात्यकी के देखतेहुए मृतक घोड़ेवाला होगया १० धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव वीर शिखण्डी वा द्रौपदी के पुत्र और सब पाञ्चालों के देखतेहुए उसने ऐसा कर्मकिया ११ हे महाबाहो ! उसउपाय करनेवाले महापराक्रमी कर्ण ने शत्रुओं के बहुतसे समूहों को मारकर मुझको विजयकिया १२ हे शूरों में श्रेष्ठ अर्जुन ! उस कर्ण ने जहां तहां मुझको पराजय को करके निस्सन्देहपूर्वक बहुत कठोर असभ्य वचन कहे १३ हे अर्जुन ! मैं भीमसेन के प्रभाव से अबतक जीवता हूं बहुत सी बातों के कहनेसे क्या प्रयोजन है मैं उस कर्ण को अब नहीं सहसक्ता हूं १४ हे अर्जुन ! मैंने तेरह वर्षतक जिससे भयभीत होकर न रात्रि को निद्रा ली न दिनको कहीं सुखचैन पाया १५ हे अर्जुन ! उसकी शत्रुता से युक्त होकर भस्म होरहा हूं और अपने मरणको प्राप्त होकर वाध्रीनस मेढ़े के समान भागा हूं १६ बहुतकाल से मुझ चिन्ता से युक्त होनेवाले का अब यह समय वर्तमान हुआ है वह कर्ण युद्ध में मेरे हाथ से कैसे पराजय होने को योग्य होय १७ हे अर्जुन ! मैं जागते सोते उठते बैठते चलते फिरते जहां तहां हरसमय कर्णही को देखताहूं अर्थात् सब संसार मुझ को कर्णहीरूप दीखता है १८ हे अर्जुन ! मैं कर्ण से ऐसा भयभीत होरहाहूं कि जहां२ जाता हूं वहां २ कर्ण कोही नियत देखता हूं १६ हे श्रीकृष्ण ! और अर्जुन ! उस युद्धसे कभी न हटनेवाले वीर कर्ण ने मुझको घोड़े और रथसमेत विजय करके जीवता त्याग कियाहै २० अब मुझ कर्ण के हाथ से पराजय पानेवाले का इस संसार में जीवना व्यर्थ है २१ पूर्व में भीष्मजी द्रोणाचार्य वा कृपाचार्य से भी ऐसा दुःख मैंने नहीं पाया था जैसा कि अब युद्ध में इस महारथी कर्ण से पायाहै २२ हे अर्जुन ! अब मैं तुझसे यह पूछता हूं कि किसरीति से निर्विघ्नतापूर्वक तेरे हाथ से कर्ण मारागया उस सब वृत्तान्त को यथावस्थित ब्योरेसमेत मुझसे वर्णन करो २३ पराक्रम में यमराज और पुरुषार्थ में इन्द्रके समान और अस्त्रों में परशुरामजी के समान वह कर्ण युद्धमें कैसे मारागया २४ महारथी और सब युद्धों में कुशल धनुर्धारियों में अत्यन्तश्रेष्ठ और सबमें अकेला पुरुषार्थी २५ वह कर्ण तेरेही निमित्त पुत्रोंसमेत धृतराष्ट्र से स्तुति कियागया था वह तेरे हाथ से कैसे मारागया २६ हे पुरुषोत्तम

अर्जुन! वह दुर्योधन सदैव सब शूरों के मध्य में कर्णही को तेरा मारनेवाला मानताथा वह कर्ण तेरे हाथसे कैसे मारागया २७।२८ और तुमने उसके शुभ-चिन्तकों के देखतेहुए उस युद्ध करनेवाले का शिर ऐसे काटडाला जैसे कि रुरु नाम मृगका शिर सिंह काटताहै २६ छः हाथी दानकरने का इच्छावान् युद्धमें तुझको चाहनेवाले जिस कर्ण ने दिशा और विदिशाओं को सेवन किया वह दुरात्मा कर्ण क्या अब तेरे अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से ३० युद्ध में मरा हुआ पृथ्वी पर सोता है युद्ध में तैंने कर्ण को मारकर मेरा बड़ा भारी अभीष्ट किया ३१ जो कर्ण सदैव पूजित और अहङ्कारयुक्त होकर तेरे निमित्त सब ओर को दौड़ा वह अपने को शूर माननेवाला तुझको युद्ध में पाकर अब क्या मारागया ३२ हे तात! जोकि तेरे निमित्त हाथी घोड़ों समेत उत्तम सुनहरी रथोंको दूसरे लोगों को देने की इच्छा कररहा था और सदैव युद्ध में ईर्षा करनेवाला था वह पापात्मा क्या युद्ध में तेरे हाथ से मारागया ३३ जो बल पुरुषार्थ में दुर्मद सदैव कौरवों की सभा में निरर्थक वार्तालाप करता था और उस दुर्योधन का अत्यन्त प्रिय था अब वह दुष्टात्मा क्या तेरे हाथ से मारागया ३४ सम्मुख होकर तेरे चलाये हुए रक्ताङ्गवाले आकाशचारी बाणों से शरीर में अत्यन्त घायल था वह पापी कर्ण क्या अब सोता है दुर्योधन की भुजा ढीली और निर्बल हुई ३५ जो यह कर्ण अपने अज्ञान से राजाओं के मध्य में दुर्योधन को प्रसन्न करता हुआ अहङ्कार में भराहुआ सदैव अपनी यह प्रशंसा करता था कि मैं अर्जुन का मारनेवाला हूं क्या उसका वह वचन ठीक नहीं हुआ ३६ कि मैं तबतक कभी पदातीरूप से नहीं दौडूंगा जबतक कि अर्जुन नियत होकर वर्तमान है उस निर्बुद्धि का सदैव यही व्रत था हे इन्द्रके पुत्र, अर्जुन! वह कर्ण क्या अब तेरे हाथ से मारागया ३७ जिस दुष्टबुद्धि कर्ण ने सभा में कौरवीयवीरों के मध्य में द्रौपदी से यह कहा था कि हे कृष्णे! तू इन अत्यन्त निर्बल और नाशयुक्त पुरुषार्थरहित पाण्डवों को क्यों नहीं त्यागकरती है ३८ और उसी कर्ण ने तेरे विषय में प्रतिज्ञा करी थी कि मैं श्रीकृष्णसमेत अर्जुन को विना मारेहुए यहां नहीं आऊंगा वह पापबुद्धि तेरे बाणों से घायलहुआ अब क्या सो रहा है ३६ सृञ्जयों और कौरवों के इस युद्धको क्या तुम जानते हो जिस में कि मेरी यह दशा होगई है अब वह दुरात्मा क्या तेरे हाथ से मारागया ४० हे अर्जुन!

तुमने युद्ध में अपने गाण्डीवधनुष से छोड़ेहुए अग्निरूप बाणों से उस अत्यन्त निर्बुद्धि कर्ण का कुण्डलों समेत देदीप्यमान शिर क्या शरीर से काटडाला है ४१ हे वीर ! जो मुझ बाणों से घायल ने तुम को कर्ण के मारने के निमित्त ध्यान कियाहै अब तुमने कर्ण के मारने से क्या वह मेरा ध्यान सफल किया ४२ जो दुर्योधन कर्ण के आश्रित होकर हमको देखता है अब तुमने उस दुर्योधन के रक्षक को क्या पराजय किया ४३ पूर्व समय में जिसने सभा के मध्यवर्ती होकर कौरवों के सम्मुख हमको थोथेतिल और नपुंसक कहा वह दुर्बुद्धि और क्रोध से भरा हुआ कर्ण सम्मुख होकर क्या युद्ध में तेरे हाथसे मारागया ४४ पूर्वकाल में जिस हँसते हुए दुरात्मा कर्णने शकुनी से जीतीहुई द्रौपदीको बड़ी हठता से कहा था कि इस द्रौपदीको यहां लावो वह कर्ण क्या अब तेरे हाथ से मारागया ४५ और जिस निर्बुद्धि ने विख्यात शस्त्रधारी महात्मा पितामह की निन्दा करी हे अर्जुन ! वह अर्धरथी क्या तेरे हाथ से अब मारा गया ४६ हे अर्जुन ! अब तुम इस बातको कहकर कि वह कर्ण युद्ध में मेरे हाथ से मारागया है मेरे हृदय की जलतीहुई अग्नि को बुझावो क्योंकि वह अग्नि अमर्ष जनित वायुसे प्रेरित मेरे हृदय में प्रदीप्त होकर सदैव नियत रहती है ४७ सो हे अर्जुन ! तेरे हाथ से कर्ण कैसे मारागया है उस मेरे दुष्प्राप्य मनोरथ को वर्णन करो हे बड़े वीर ! मैं तुझको सदैव ऐसे ध्यान करता हूं जैसे कि वृत्रासुर के मरने पर भगवान् इन्द्र ध्यान किये गये थे ॥ ४८ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणियुधिष्ठिरवाक्येसप्तषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

अड़सठवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि वह अत्यन्त पराक्रमी महात्मा अतिरथी अर्जुन उस क्रोध-युक्त धर्म के अभ्यासी राजा के उस वचन को सुनकर उस निर्भय और महा-पराक्रमी युधिष्ठिर से बोला १ हे राजन् ! अब कौरवीय सेना में आगे चलनेवाला अश्वत्थामा विषैले सर्परूप बाणों को छोड़ता मुझ संसप्तकों से भिड़े हुए के सम्मुख आकर अकस्मात् नियत हुआ २ हे श्रेष्ठ ! वह अश्वत्थामा बादल के स-मान शब्दायमान मेरे रथको देखकर सबसेना के मध्यमें आकर नियतहुआ तब मैंने उसके पांच सौ वीरों को मारकर फिर अश्वत्थामा को पाया हे महाराज ! वह बड़ा सावधान मुझको पाकर ऐसे मेरे सम्मुख हुआ जैसे कि सिंह के सम्मुख

गजराज आता है हे महाराज ! उसने मरनेवाले कौरवीय रथों के बचाने का उपाय किया ३।४ तदनन्तर दुःखसे कम्पायमान कौरवों के अत्यन्त श्रेष्ठ शूर-वीर उस आचार्य के पुत्र ने युद्ध में श्वेतरङ्गवाले कुछ कम विष और अग्निके समान बाणों से श्रीकृष्णजी समेत मुझको अत्यन्त पीड्यमान किया ५ उस मुझसे लड़नेवाले अश्वत्थामा के बाणों को आठ बैल रखनेवाले आठ सौ छकड़े लेचलते हैं मैंने उसके छोड़ेहुए उन बाणोंको अपने बाणों सेही ऐसे नाश करदिया जैसे कि बादलों के जालसमूहों को वायु नाश करदेती है इसके पीछे सुशिक्षित अस्त्रोंके बल से बड़े प्रयास से कर्णपर्यन्त खैंचेहुए अनेक बाणसमूहों को ऐसे छोड़ताहुआ जैसे कि वर्षाऋतु में कालमेघ नाम बादल जलको बरसाता है ६।७ हमने उस बाण लेते और चढ़ातेहुए को नहीं जाना कि वह बायें हाथ से वा दक्षिण हाथ से बाणों को फेंकता है वह अश्वत्थामा युद्ध में सम्मुख वर्तमान हुआ ८ जिस अश्वत्थामाका प्रत्यञ्चा से युक्त धनुषमण्डल के समान दिखाई देता था उस अश्वत्थामाने पांच बाणों से मुझको और पांचही बाणों से वासुदेवजीको छेदा ९ तब तो मैंने एक पलमात्र मेंही वज्रके समान तीसबाणों से उसको पीड्यमान किया फिर मेरे पृषत्क नाम बाणों से पीड़ित होकर वह अश्वत्थामा क्षण मेंही श्वाविध् (साही) के समान रूपवाला होगया १० सब अङ्गोंसे रुधिरको डालता हुआ वह अश्वत्थामा मुझसे पराजित होकर सेना के बड़े २ श्रेष्ठ मनुष्यों को अपने रुधिर भरेहुए शरीर से देखताहुआ कर्णके रथोंकी सेनामें चलागया ११ उसके पीछे मारनेवाला कर्ण युद्धमें अपनी सेनाको भयभीत और हाथी घोड़े और रथों को भगाताहुआ देखकर पचास उत्तम रथियोंको साथ में लियेहुए बड़ी शीघ्रता करता हुआ मेरे सम्मुख आया १२ मैं उनको मारकर युद्ध का भार भीमसेन के सिपुर्द कर और कर्ण को छोड़ करके आपके देखने को बड़े वेग से शीघ्रता करके आया हूं सब पाञ्चाललोग कर्ण को देखकर ऐसे भयभीत हुए जैसे कि केशरी सिंह को देखकर गौवें भयभीत होती हैं १३ हे राजन् ! प्रभद्रकनाम क्षत्रिय मृत्यु के फैलेहुए मुखको प्राप्त करके और कर्ण को पाकर युद्ध करनेवालेहुए तब कर्ण ने मृत्युरूपी नदी में डूबेहुए उन सातसौ रथियों को मृत्युलोक में भेजा १४ हे राजन् ! वह कर्णभी तबतक चित्त से पीड्यमान और क्लान्तचित्तही रहा जबतक कि उसने हमलोगों को नहीं देखा

फिर तुमको उससे भिड़ाहुआ और अश्वत्थामासे पहिले बहुत घायलहुआ सुन कर १५ मैं कर्ण से हटजाने का आपका समय मानता हूं हे ध्यान से वीरों के कर्म करनेवाले, राजन्, युधिष्ठिर! मैंने पूर्वही कर्णका यह अपूर्वरूपवाला अस्त्र देखा १६ सृञ्जयों में कोई ऐसा शूरवीर नहीं वर्त्तमान है जो अब उस महारथी कर्ण का सामना करसके हे राजन्! मेरी सेना का रक्षक धृष्टद्युम्न, सात्यकी १७ और युधामन्यु, उत्तमौजा यह दोनों राजकुमारभी पीछेकी ओरसे मेरी रक्षा करें हे महानुभाव! मैं कठिनता से पारहोने के योग्य महावीर और रक्षापूर्वक शत्रुकी सेनामें वर्त्तमान उस सूतपुत्र कर्णसे अपने सहायकों समेत सम्मुख होकर युद्ध में ऐसे युद्ध करूँगा जैसे कि वज्रधारी अपने वज्र से युद्ध करताहै हे राजाओं में श्रेष्ठ, भरतवंशिन्! अब जो वह इस युद्धमें दिखाई देताहै १८।१६ उस सूतपुत्र का और मेरा युद्ध जयके निमित्त आप ऐसे देखोगे जैसे कि नन्दी के मुखके आश्रयी प्रभद्रक कर्ण के सम्मुख जाते हैं २० हे भरतवंशिन्! वह राजकुमार बाँधे मारे और युद्ध में सब लोकके अर्थ डूबे इससे हे राजन्! अब जो मैं हठ करके बान्धवों सहित उस लड़नेवाले कर्णको नहीं मारूं तो प्रतिज्ञाके न करनेवालेकी जो घोर गति है उसको मैं पाऊँ मैं आपसे पूछता हूँ आप युद्ध में मेरी विजय को कहिये और मेरे आगे २ भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रों को ग्रसे २१।२२ तब हे राजाओंमें श्रेष्ठ! मैं कर्ण समेत सेना को और शत्रुओंके सब समूहों को मारूंगा ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वण्यर्जुनप्रतिज्ञायामष्टषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, बड़ातेजस्वी कर्ण के बाणों से पीड्यमान युधिष्ठिर कर्ण को समर्थ और बड़ापराक्रमी सुनकर अर्जुन से महाक्रोधयुक्त होकर यह वचन कहने लगा १ कि हे भाई! तेरी सेना भागी और जैसी रीति से अब पराजित हुई वह श्रेष्ठ नहीं है तुम कर्णके मारनेको समर्थ नहीं होसके हो इसी हेतुसे तुम भीमसेन को वहां छोड़कर भयभीत होकर यहां चले आये हो २ हे अर्जुन! तुमने कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न होकर जैसी प्रीतिकरी वह श्रेष्ठ नहीं है कि कर्ण के मारने में समर्थ न होकर भीमसेन को त्याग करके हट आया ३ द्वैतवन में जो तुमने सत्यप्रतिज्ञा करी थी कि मैं एकरथ से कर्ण को मारूँगा उस वचनको कहकर अब कैसे कर्ण से भयभीत होकर भीमसेनको छोड़कर हट आयाहै ४ जो तू द्वैतवनही में यह कहदेता

कि हे राजन्! मैं कर्ण से लड़ने को समर्थ न होऊँगा तो हे अर्जुन! हम अपने समय के अनुसार सब कामोंको करते ५ हे वीर! तैंने मेरे साम्हने उसके मारने की प्रतिज्ञा करके उस प्रतिज्ञा को पूरा नहीं किया उसी प्रतिज्ञा ने हम सब को शत्रुओं के मध्य में लाकर युद्धभूमिरूपी शिलापर छोड़कर किस हेतु से पीसा है ६ इसके विशेष हे अर्जुन! वन जानेके अभिलाषी हमलोगों ने तेरे विषय में विश्वास करके बहुत से अपने अभिमत कल्याणोंकी आशाकरीथी हे राजपुत्र! हम सब फल चाहनेवालों की वह सब आशा ऐसे निष्फल होगई जैसे कि बहुत से फल रखनेवाला वृक्ष निष्फल होय ७ अथवा जैसे कि मांस से ढकीहुई बंशी और भोजन से ढकाहुआ विष होता है इसी प्रकार तुम ने भी मुझ राज्याभिलाषी के नाश के अर्थ राज्यरूपी अनर्थ को दिखलाया है ८ हे अर्जुन! हम उन तेरह वर्षों तक सदैव आशा करके तेरेही पीछे ऐसे जीवते रहे जैसे कि बोया हुआ बीज समयपर देवता इन्द्रकी कृपा से वर्षाकी आशाकरताहै सो तुमने हम सबको नरकमें डुबाया ९ तुझ निर्बुद्धिके उत्पन्न होनेके सातदिन पीछे अन्तरिक्ष से यह आकाशवाणी हुई थी कि यह पुत्र इन्द्र के समान पराक्रमी उत्पन्नहुआ है यह शत्रुरूप शूरवीर मनुष्यों को विजय करेगा १० और मद्र कलिङ्ग और केकयदेशियोंकोभी विजय करके राजाओं के मध्य में सब कौरवोंको मारेगा ११ इससे उत्तम कोई धनुषधारी नहीं होगा कोई जीवधारी इसको कभी विजय नहीं करसकेगा यह जितेन्द्रिय और सब विद्याओं में पूर्ण होकर अपनी इच्छा से सब जीवमात्रों को अपने आधीन करेगा १२ हे कुन्ती! यह तेरा पुत्र कान्ति और शोभामें चन्द्रमाके समान तीव्रता और शीघ्रतामें वायुके सदृश और स्थिरतामें मेरुपर्वत के समान क्षमा करने में पृथ्वी के तुल्य तेज में सूर्य के समान लक्ष्मी में कुबेर के शूरता में इन्द्र के पराक्रम में विष्णु के समान यह महात्मा ऐसा उत्पन्न हुआहै १३ जैसे कि शत्रुओंके मारनेवाले दिति के पुत्र विष्णुजी अपने लोगों के विजय और शत्रुओं के मारने के निमित्त सब जगत् में विख्यात महातेजस्वी धनुष चलानेवाले उत्पन्नहुए हैं १४ शतशृङ्ग के मस्तकपर अन्तरिक्ष में यह सब तपस्वीलोगों के सुनते हुए आकाशवाणी ने कहा है सो वह जैसा कहा था वैसा नहीं हुआ इससे निश्चय करके देवता भी मिथ्या बोलते हैं १५ और इसी प्रकार सदैव तेरी प्रशंसा करनेवाले अन्य २ उत्तम ऋषियों के वचनों को

सुनकर दुर्योधन के शिष्टाचार को अङ्गीकार नहीं करता हूं और कर्ण के भय से पीड्यमान तुझको नहीं जानता हूं १६ हे अर्जुन ! त्वष्टा देवता के बनाये हुए निश्शब्द पहियेवाले हनुमान्जी की ध्वजा रखनेवाले उस शुभरथ पर सवार होकर और स्वर्णमयी वेष्टन से अलंकृत खड्ग को और तालवृक्ष के समान इस गाण्डीव धनुष को लेकर १७ केशवजी के साथ रथपर सवार होकर तुम कर्ण से भयभीत होकर कैसे हटआये अब उस धनुष को केशवजी को दो और तुम युद्ध में केशवजी के सारथी बनो १८ तब केशवजी उस उग्र कर्ण को ऐसे मारेंगे जैसे कि वज्रधारी इन्द्र ने वृत्रासुर को मारा है जो तू अब इस घूमनेवाले उग्र कर्ण के मारने में समर्थ नहीं है १९ तो जो राजा अस्त्रविद्या में तुझसे अधिक हो उसको यह गाण्डीव धनुष देदो हे पाण्डव ! अब यह लोक पुत्र स्त्रियों से रहित और राज्य के नाशकरने के हेतु से आनन्द और कुशलता से रहित हमलोगों को २० उस पापियों से सेवित अगाध और घोर नरक में पड़ाहुआ देखेगा जो तू कुन्ती के गर्भ में न पैदा होता तो इस दुःख में काहे को पड़ता २१ हे राजपुत्र, निर्बुद्धे ! वहीं तेरा कल्याण होजाता जो तू युद्ध से हटकर न आता गाण्डीव धनुष को और तेरे भुजबल को २२ धिक्कार है और तेरे असंख्य बाणों को भी धिक्कार है और हनुमान्रूप धारण करनेवाली तेरी ध्वजा को भी धिक्कार और अग्नि के दियेहुए तेरे रथ को धिक्कार है ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णप्रतियुधिष्ठिरक्रोधवाक्यएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे भरतर्षभ ! युधिष्ठिर के इन बाणरूप निन्दित वाक्यों को सुनकर महाक्रोधरूप होकर कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने मारने की इच्छा करके हाथ में खड्ग को लिया १ तब अन्तर्यामी सब के मनके जाननेवाले श्रीकृष्णजी ने उसके क्रोध को देखकर कहा कि हे अर्जुन ! यह क्या बात है जो तैंने खड्ग को हाथ में लिया २ हे अर्जुन ! तुझसे लड़ने के योग्य मैं किसी को नहीं देखता हूं बुद्धिमान् भीमसेन ने उन धृतराष्ट्र के पुत्रों को घेरलियाहै ३ वह राजा देखने के योग्य है इस हेतु से हटआया है हे अर्जुन ! उस राजा को तुम ने कुशलपूर्वक देखा ४ सो तुम उस राजाओं में श्रेष्ठ शार्दूल के समान पराक्रमी अपने भाई राजा युधिष्ठिर को देखकर और प्रसन्नता का समय वर्तमान होनेपर जो भूल से

यह कर्म होगया तो क्या हुआ ५ हे कुन्ती के पुत्र ! मैं ऐसा किसी को नहीं देखता हूं जो तुझको मारने के योग्य होय किस हेतु से तू प्रहारकरना चाहता है तेरे चित की भ्रान्ति क्या है ६ तुम किस कारण शीघ्रता से बड़े खड्ग को पकड़ते हो हे कुन्ती के पुत्र ! अब मैं तुझसे पूछता हूं कि तेरी कौन से कर्म करने की इच्छा है ७ जो महाक्रोधित होकर इस बड़े भारी खड्ग को पकड़ता है फिर श्रीकृष्णजी के वचनों को सुनकर युधिष्ठिर को देखताहुआ ८ सर्प के समान श्वासलेता क्रोधयुक्त होकर अर्जुन श्रीगोविन्दजी से बोला कि आप इस गाण्डीवधनुष को किसी दूसरे को देदो जो मुझको इस रीति से प्रेरणा करे मैं उस के शिर को काटूंगा ९ यह मेरा उपांशुव्रत है अर्थात् गुप्तव्रत है हे अतुलबल पराक्रमवाले, गोविन्दजी ! जैसा कि इस राजा ने आपके सम्मुख मुझसे कहा १० उसके सहने को मैं उत्साह नहीं करसक्ता हूं इस हेतु से उस धर्म से भयभीत राजा को मारूंगा ११ इस नरोत्तम को मारकर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा हे यदुनन्दन ! मैंने इसी निमित्त खड्ग को पकड़ाहै १२ हे जनार्दनजी ! सो मैं युधिष्ठिरको मारकर सत्यसङ्कल्पहोकर शोक और ज्वरसे निवृत्त होऊंगा १३ अथवा ऐसे समय के वर्त्तमान होनेपर आप क्या उचित आज्ञा देते हैं जिसको मैं योग्य समझ कर करूं १४ मैं आपकी जो आज्ञा होगी उसी को करूंगा सञ्जय बोले कि इस बात को सुनकर गोविन्दजी ने बड़ी धिक्कारियां देकर अर्जुन से कहा १५ हे अर्जुन ! मैं निश्चय जानता हूं कि तुमने वृद्धलोगों का सेवन नहीं किया हे पुरुषोत्तम ! जो तुमको क्रोध हुआ है यह क्रोध समय के समान नहीं है १६ हे अर्जुन ! धर्म के प्रकारों का ज्ञाता पुरुष ऐसा नहीं करसक्ता है जैसे कि अब यहां तुम धर्म से भयभीत होकर निर्बुद्धि से होरहे हो १७ जो मनुष्य करने के अयोग्य कर्मों को और योग्य कर्मों को एक करता है हे अर्जुन ! वह अधम पुरुष कहाजाता है १८ पण्डितलोग जिस धर्मपर आरूढ़ होकर ईश्वर का उपस्थान करते हैं उसी के अनुसार इतरलोग भी आचरण करते हैं १९ हे अर्जुन ! योग्यायोग्य कर्मों के निश्चय में दृढ़ता रखनेवाला मनुष्य विवश होकर ऐसाही अज्ञानी होजाता है जैसे कि तुम होगये हो २० उचित और अनुचित कर्म किसी प्रकार से भी आनन्दपूर्वक जानने के अयोग्य नहीं है यह सब शास्त्र कहते हैं तुम उसका विचार नहीं करते हो २१ तुम पूरे बुद्धिमान

नहीं हो जिस बुद्धि के द्वारा धर्मज्ञ होकर धर्म की रक्षा करता है हे अर्जुन ! जो धर्म के अभ्यासी होकर भी पापपुण्यकारी कर्म नहीं जानते हो २२ हे तात ! जीवों का न मारनाही उत्तम धर्म है यह मेरा मत है चाहै मिथ्या वचन किसी समय कहदे परन्तु हिंसा कभी न करे २३ सो हे नरोत्तम ! तुम इस धर्म में पण्डित होकर अपने बड़े भाई राजा युधिष्ठिर को कैसे मारने को प्रवृत्त हो जैसे कि कोई साधारण मनुष्य होता है २४ हे प्रशंसा देनेवाले ! सुन कि युद्ध न करनेवाले वा युद्ध से मुख मोड़नेवाले वा भागनेवाले और घर में आश्रय लेनेवाले शत्रु अथवा हाथ जोड़नेवाले वा शरणागत और मदोन्मत्तों के मारने को उत्तम लोग नहीं प्रशंसा करते हैं वह सब गुण तेरे गुरुरूप बड़े भाई युधिष्ठिर में हैं २५ । २६ हे अर्जुन ! पूर्व समय में तुमने बाल्यावस्था से ऐसा व्रत किया था इसी हेतु से अपनी अज्ञानता करके अधर्मयुक्त कर्म को निश्चय करते हो २७ हे अर्जुन ! धर्मों की कठिनता से मिलनेवाली सूक्ष्मगति को अच्छे प्रकार से धारण न करके तू किस हेतु से अपने गुरुरूप बड़े के मारने की इच्छा से दौड़ता है २८ हे पाण्डव ! धर्म की इस गुप्तवार्त्ता को भीष्मजी के अथवा पाण्डव युधिष्ठिर के द्वारा मैं तुमसे कहूंगा २९ वा विदुरजी और यशस्विनी कुन्ती तुमसे कहैंगी हे अर्जुन ! इसको मैं मूलसमेत कहूंगा तुम चित्त से सुनना सत्य बोलनेवाला साधु है ३० गृहस्थाश्रमी से कोई आश्रमी श्रेष्ठ नहीं है बड़े दुःख से जानने के योग्य अभ्यास करी हुई सत्यता को मूल समेत देखो ३१ सत्यता कहने के योग्य नहीं होती है अर्थात् सत्यता में कोई दोष नहीं कहसक्ता परन्तु जब सत्यता में मिथ्यापन होता है तब वह सत्यता भी मिथ्या कहने के योग्य होती है ३२ अर्थात् किसी २ स्थानपर सत्यता से अधर्म भी होताहै जैसे कि विवाह के समय वा विषयभोग करने के समय वा प्राणों के नाश में वा सब धन के चोरी होने में और ब्राह्मण के मनोरथ सिद्ध होने में मिथ्या बोलना इन पांचों स्थानों में मिथ्या बोलने का कोई पाप नहीं होता है ३३ सब धन के चुराये जाने में मिथ्या बोलना योग्य होता है ऐसे स्थान में सत्य भी मिथ्या होता है ३४ बुद्धिमान् सावधान पुरुष इस रीति से देखता है अभ्यास करीहुई सत्यता को देखो कि सत्यता दोष लगाने के योग्य नहीं है और अभ्यास करी हुई कहने के योग्य नहीं प्रथम सत्य और मिथ्या को अच्छीरीति से जानकर निश्चय

धर्म का ज्ञाता होता है ३५ क्या अद्भुत कर्म देखने में आता है कि बड़ाज्ञानी वा बड़ा भयकारी मनुष्य भी बहुत बड़े पुण्य को ऐसे प्राप्त करता है ३६ जैसे कि बलाक नाम वधिक ने व्याघ्र के मारडालने से पुण्य प्राप्त किया फिर क्या आश्चर्य्य है कि अज्ञानी और मूर्ख धर्मका अभिलाषी पुरुष बहुत बड़े पाप को प्राप्तकरे जैसे कि नदियों के समीप कौशिक ने प्राप्त किया था ३७ अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी ! इस बलाकनदी और कौशिकसम्बन्धी कथा को ऐसे विचार से कहिये जिसमें मैं समझूं ३८ वासुदेवजी बोले हे भरतवंशिन् ! पूर्व समय में बलाकनाम एक वधिक हुआ वह सदैव अपने स्त्री पुत्रादिकों को पोषणके अर्थ मृगों को माराकरता था अपनी इच्छा से नहीं मारता था अपने वृद्ध माता पिता और अन्य आश्रितलोगों की पालना करता था ३९ और अपने धर्म में प्रीतिमान् होकर सत्यवक्ता और किसी के गुण में दोष नहीं लगाता था एक समय उस मृगाकांक्षी को कोई मृग नहीं मिला तब बहुत खोज करते २ एक जल पीताहुआ नाकही जिसकी नेत्ररूप थी ४० ऐसे व्यापद व्याघ्र को उसने देखा ऐसे रूप का जीव उसने पहले नहीं देखा था इसी हेतुसे उसको भी अपूर्वदर्शन जानकर मारा उस अन्धे स्वापद के मारने पर आकाशसे पुष्पोंकी वर्षा हुई ४१ और उत्तम गीत वाद्योंसमेत अप्सरा नाचीं और उस वधिक के ले जाने के लिये स्वर्गसे विमान आया ४२ हे अर्जुन ! निश्चयकरके उस स्वापद जीव ने सब जीवोंके नाशके लिये तपस्या करके वरदान पाया था इसीसे ब्रह्मा जी ने उसको अन्धा करदिया ४३ सब जीवोंके नाशमें निश्चय करनेवाले उस जीव को मारकर पीछे से वह बलाक स्वर्ग को गया इस रीति से धर्म की बड़ी सूक्ष्मगति है बड़ी कठिनतासे जानने के योग्य है ४४ और कौशिक ब्राह्मण भी एक बड़ा तपस्वी और शास्त्रों का जाननेवाला था वह गाँव से दूर नदियों के सङ्गमपर निवास करता था ४५ सत्यबोलने का सदैव व्रत रखता था इसी से हे अर्जुन ! वह सत्यवक्ता विख्यात हुआ ४६ इसके पीछे कितनेही मनुष्य चोरों के भय से उस वन में रहनेलगे वहां भी क्रोधयुक्त चोरोंने बड़े उपायों से उनको ढूंढ़ा ४७ । ४८ इसके अनन्तर उन्होंने सत्यबोलनेवाले कौशिक के पास आकर कहा कि, हे भगवन् ! बहुत से मनुष्यों का समूह किस मार्गसे गया है हम सत्य २ पूछते हैं जो आप जानते होयँ तो कहिये सत्यता से पूछे हुए उस

कौशिक ने उनसे कहा ४६ कि बहुत वृक्ष लता बल्लीवाले उस वनमें रहतेहैं उस कौशिक ने उनको प्रकट करके मूल वृत्तान्त कोभी प्रकटकिया ५० इसके पीछे उन्हों ने उन क्रूर मनुष्यों को पाकर मारडाला यह सुनाजाता है सूक्ष्मधर्मों से अनभिज्ञ वह कौशिक उन बड़े अधर्मरूप कहेहुए दुष्ट वचन से महादुःखरूप नरकको ऐसे गया जैसे कि थोड़े शास्त्रका जाननेवाला अज्ञानी धर्मों के प्रकारों को न जानकर जाता है ५१ । ५२ अपने सन्देहों को वृद्धलोगों से न पूछने-वाला बड़े नरक के योग्य होता है उस धर्म और अधर्म का मूल निश्चय करने के लिये तेरा योग्यता का कोई तो वचन होगा ५३ कठिनता से प्राप्त करने के योग्य उत्तम ज्ञान को तर्क से निश्चय करते हैं और बहुत से लोग कहते हैं कि धर्म वेदसे होताहै ५४ इस हेतु से तुझको दोष नहीं लगाताहूं सब नहीं किया जाताहै क्योंकि जीवधारियोंकी उत्पत्तिके लिये धर्मका वर्णन किया गया ५५ जो अहिंसा से युक्त होता है वही धर्म है और धर्मरूप वचन भी हिंसा न करने-वालों की अहिंसाके निमित्त वर्णन कियागया है ५६ धारण करनेसे धर्म कहा गया है क्योंकि वह सृष्टि को धारणकरता है अर्थात् उत्पत्ति और पोषण करता है जिस हेतु से कि वह धारणनाम गुण से युक्त है इसी कारण से वह निश्चय करके धर्म कहाजाता है ५७ जो किसी समय पर अन्यायसे चोरी करतेहुए धर्म को चाहते हैं अथवा वेद के विरुद्ध मोक्षपद को चाहते हैं उनके साथ कभी वा-र्तालाप भी न करना चाहिये ५८ अथवा आवश्यक बोलने के समयपर भी वेद वा लौकिक वचन का संदेह होय अर्थात् इसविषय के विचार करनेके समय कि यह ब्राह्मण चोर है वा नहीं ऐसे समय में वहां मौनहोना अवश्य है और जो कदाचित् मौन होनेसेभी काम न होसके तो वहां मिथ्या बोलनाभी योग्य गिना जाता है वह विना विचारे से भी सत्यही के तुल्य है ५९ जो किसी काम के विषय में व्रत करके कर्म से उसको पूरा न करे अर्थात् विरुद्धकर्म करे उसके वि-षय में बुद्धिमान्लोगों का वचन है कि वह उसके फल को नहीं पाता है ६० किसी के प्राण जानेमें विवाहमें सबजातिके नाशमें और जारी होनेवाले कर्म में कहाहुआ वचन मिथ्या नहीं कहलाता है ६१ धर्मतत्त्व के जाननेवाले वा देखनेवाले इस बात में अधर्म को न देखते हैं न जानते हैं जो शपथों के खाने में भी चोरों से मिलाहुआ नहीं है ६२ वहां मिथ्या कहनाही श्रेष्ठ होताहै वहभी

विना विचार के सत्य है और समर्थ होनेपर उनको किसी दशा में भी धन देने के योग्य नहीं है ६३ पापियों को दिया हुआ धन दाताको भी पीड़ित करता है अर्थात् नरक में डालता है इसी कारण धर्मके निमित्त मिथ्या कहने से मिथ्या के फलको भोगनेवाला नहीं होताहै मैंने बुद्धिके अनुसार यह लक्षणो- देश तुझ से विधिपूर्वक कहा ६४ यह सब मुझ शुभचिन्तक ने धर्म और बुद्धि के अनुसार कहा है हे अर्जुन ! इसको सुनकर अब तुम कहो कि यह युधिष्ठिर तेरे मारनेके योग्यहै वा नहीं ६५ अर्जुन बोले बड़ा ज्ञानी और बुद्धिमान् जिस रीति से कहै और जिस रीति से हमारा भला होय उसी प्रकार का यह आपका वचन है ६६ हे श्रीकृष्णजी ! आप हमारे माता और पिता के समान होकर परमगति और परमस्थान हो ६७ तीनों लोकों में आपसे कोई बात छिपी नहीं है इसीसे आप सबप्रकार के उत्तम धर्मों को ठीक २ जानते हो ६८ मैं धर्मराज पाण्डव युधिष्ठिर को अवध्य अर्थात् मारने के अयोग्य मानता हूं आप इस मेरे सङ्कल्प में प्रतिज्ञाके रक्षा का कोई उपाय वर्णन कीजिये ६९ अथवा इस स्थान पर मेरे हृदय में वर्तमान कहने के योग्य उत्तमबातोंको सुनिये हे श्रीकृष्णजी ! आप मेरे व्रत को जानते हैं जो कोई मनुष्य सब मनुष्यों के आगे मुझसे ऐसा वचन कहै कि ७० हे अर्जुन ! तुम इस गाण्डीवधनुष को ऐसे मनुष्यको देदो जो बलपराक्रम और शस्त्रविद्या में तुमसे अधिक हो हे श्रीकृष्णजी ! मैं ऐसे कहनेवाले मनुष्य को हठ करके ऐसे मारूं जैसे कि मिथ्या शब्द के कहने से भीमसेन मारताहै ७१ हे वृष्णियों में वीर, श्रीकृष्णजी ! आपके सम्मुख राजा युधिष्ठिर ने इसी शब्द को वारंवार मुझ से कहा कि धनुष को दूसरे को दे हे केशवजी ! जो मैं उसको मारडालूं तो मैं थोड़े समयतक भी इस जीवलोक में नियत नहीं रहूंगा ७२ इससे निश्चयकरके मैं निष्पाप राजाके मारने को ध्यान करके पराक्रमसे हीन अचेत होकर अपने शरीरको त्याग करूंगा हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ ! जिससे कि मेरी प्रतिज्ञा संसार की बुद्धि में सत्य समझी जाय ७३ और जिस प्रकार पाण्डव युधिष्ठिर और मैं जीवतारहूं हे श्रीकृष्णजी ! वैसेही आपभी अपना सम्मत मुझको दीजिये वासुदेवजी बोले हे वीर ! युद्धमें कर्ण के तीक्ष्ण धारवाले बाणों के समूहों से राजा युधिष्ठिर महाघायल दुःखी थकावट से युक्त वारंवार युद्ध करने में कर्ण के बाणों से विदीर्ण होगया है ७४ इस हेतुसे इसने

महादुःखी होकर ऐसे अयोग्य वचन तुमसे कहे जिससे कि तुम क्रोधयुक्त हो-कर युद्ध में कर्ण को मारो इसी कारण से वारंवार तुझमें क्रोध बढ़ाने के लिये कहा है कि तू युद्ध में क्रोधरूप होकर कर्ण को मारे ७५ यह युधिष्ठिर भी इस लोकमें उस पापी कर्णकेसमान अथवा उससे सम्मुखता करनेवाला तेरेसिवाय किसी दूसरे को नहीं समझता है हे अर्जुन! इसी हेतु से मेरे सम्मुख अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजा ने तुमसे यह कठोर वचन कहे हैं ७६ युद्ध में सदैव स-न्नद्ध दूसरे के सहने को अयोग्य कर्ण मेंही अब युद्धरूपी द्यूत बाँधागया है उसी के मरने पर कौरवलोग विजय होंगे ऐसी बुद्धि राजा युधिष्ठिर में है ७७ इस कारण से धर्मपुत्र युधिष्ठिर मारने के योग्य नहीं है हे अर्जुन! तुझको अपने प्रण को पूरा करना योग्य है और अपने योग्य उस बात को तू मुझसे समझ जिस से कि यह जीवता हुआ भी मृतक के समान होजाय ७८ जब प्रतिष्ठा के योग्य मनुष्य को प्रतिष्ठा प्राप्त होतीहै तभी वह इस जीवलोक में जीवता रहता है और जब प्रतिष्ठित पुरुष अपमान को पाताहै तब वह जीवता हुआ भी मृतक के समान कहाजाताहै ७९ यह राजा युधिष्ठिर सदैव से भीमसेन नकुल सहदेव और तुझसे अच्छी रीति से प्रतिष्ठा कियागया है और लोक में वृद्ध वा शूर-वीर लोगों ने भी इसकी प्रतिष्ठा की है इसी प्रकार तुम भी बातों केही द्वारा इस का अपमान करो ८० हे कुन्ती के पुत्र! उसके साथ ऐसा कर्म करके अधर्मयुक्त कर्म को कर ८१ । ८२ यह अथर्वाङ्गिरसी नाम श्रुति है कल्याण के चाहनेवाले पुरुषों को सदैव इस श्रुति को काम में लाना योग्य है ८३ यही विना मारेहुए मारना कहाजाता है और यही समर्थ गुरुतम कहाजाता है हे धर्मज्ञ! तुम इस मेरे कहेहुए वचन को धर्मराजसे कहौ ८४ हे पाण्डव! यह धर्मराज तेरे हाथ से इस रीति पर मरनेको अयोग्य जानता है इसके पीछे इसके चरणोंको दण्डवत् करके बड़े मीठे वचनोंसे इससे शुभचिन्तकता की बातें कहौ ८५ बुद्धिमान् तेरा भाई राजा युधिष्ठिर भी धर्म को विचारकर फिर कभी तुझपर क्रोध न करेगा हे अर्जुन! भाई के मिथ्या मारनेसे अलग होकर तुम बड़े हर्ष से युक्त होके इस सूत के पुत्र कर्ण को मारो ॥ ८६ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेसप्ततितमोऽध्यायः ॥७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि श्रीकृष्णजी के इस रीति के वचन को सुनकर अपने मित्र श्रीकृष्णजीकी प्रशंसा करनेलगा और बड़े हठको करके धर्मराज से ऐसे कठोर वचन बोला जैसे पूर्व कभी नहीं बोला था १ हे राजन्! तुम तो युद्धसे एक कोस दूर नियत हो तुम ऐसा मुझसे कभी मत कहो जो चाहै तो भीमसेन मेरी निन्दा करने को योग्यहै कि सबलोक के शूरवीरों से लड़ताहै २ वह कालरूप भीमसेन युद्ध में शत्रुओं को पीड्यमान करके बड़े २ शूरवीर राजाओं को उत्तम रथों को श्रेष्ठतर हाथियों को उत्तम अश्वारूढ़ों को और असंख्य वीरों को ३ हाथियों समेत मारकर बड़े कठोर सिंहनाद को गर्जना करता है और जैसे कि मृगों को सिंह मारता है उसी प्रकार युद्धभूमि में दशहज़ार काम्बोजदेशीय और पहाड़ी शूरवीरों को मारकर वह वीर बड़े २ ऐसे कठिन कर्मों को करता है जिनको तुम कभी करने को समर्थ नहीं होसक्के और रथ से कूद गदा को हाथ में लेकर उसके प्रहारों से युद्ध में घोड़े रथ और हाथियों को मारकर सिंह के समान दहाड़ता है ४ । ५ इसके विशेष खड्ग से भी घोड़े रथ और हाथियों को अथवा रथाङ्ग और धनुष से शत्रुओं को मारकर फिर बड़े क्रोध और पराक्रम का रखनेवाला दोनों भुजाओं से पकड़कर चरणों सेही शत्रुओं को मारडालता है ६ वह कुबेर और यमराज के समान महापराक्रमी बड़े हठ करके शत्रुओं की सेना का मारनेवाला है वह भीमसेन मेरी निन्दा करने के योग्य है न कि तुम जोकि सदैव शुभचिन्तकों से रक्षा किये जाते हो ७ अकेला भीमसेनही बड़े २ रथ, हाथी, घोड़े और असंख्यों पदातियोंको मथकर धृतराष्ट्र के पुत्रों में मग्न है वह शत्रुओं का विजयी मेरी निन्दा करने के योग्य है ८ जोकि कलिङ्ग, वङ्ग, अङ्ग, निषाद और मगधदेशियों को और नीले बादल के समान मतवाले हाथियों को और शत्रुओंके मनुष्यों को सदैव मारता है वह शत्रुसंहारी भीम मेरी निन्दा करने के योग्य है ९ वह बड़ावीर महायुद्ध में समयपर उचित रथपर सवार होकर धनुष को चलायमान करताहुआ बाणों से पूर्ण ऐसी बाणों की वर्षा करता है जैसे जलधाराओं की वर्षा बादल करता है १० जिस भीमसेन ने अभी मुख की नोंक सूंड़ और अङ्गों समेत घायल करके आठ सौ बड़े २ हाथी युद्धभूमि में मारडाले

वह शत्रुओंका मारनेवाला मुझसे कठोर वचन कहने के योग्यहै ११ बुद्धिमान् मनुष्य उत्तम ब्राह्मणों के वचन में पराक्रम को और बहुत से क्षत्रियों में पराक्रम को कहते हैं हे भरतवंशिन् ! तुम वचन में बली और कठोर हो और तुम्हीं मुझ को जानते हो जैसा कि मैं पराक्रमी हूं १२ जोकि मैं स्त्री पुत्र जीवन और आत्मा के साथ तेरे चित्त का प्रिय करने को सदैव प्रवृत्त रहता हूं इसपर भी जो तू मुझको वचनरूपी बाणों से भेदकर मारता है हम तुझसे उस सुख को नहीं जानते १३ तू द्रौपदीकी शय्यापर नियत होकर मेरा अपमान मत कर मैं तेरेही निमित्त महारथियों को मारता हूं हे भरतवंशिन् ! इस हेतु से तुम शङ्का करनेवाले होकर महानिष्ठुर प्रकृति हो मैंने तुझसे कभी सुख को नहीं पाया १४ हे नरदेव ! युद्ध में सत्यसङ्कल्प भीष्मजी ने अपने आप तेरेही अभीष्ट के लिये अपनी मृत्यु को तुझसे कहा द्रुपद का पुत्र शिखण्डी वीर महात्मा है उसी ने मेरे आश्रय में होकर उनको मारा १५ जोकि तुम पाँशों की बाजी में कार्यों के बिगाड़ने में प्रवृत्त हुए इस हेतु से मैं तेरे राज्य की प्रशंसा नहीं करता हूं तुम नीचों से सेवित अपने आप पापोंको करके हमारे द्वारा शत्रुओंको विजय करना चाहते हो १६ तुमने पाँशों की बाज़ी में धर्म के विपरीत बहुत से दोषों को जिनको कि सहदेव ने वर्णन किया तुम नीचों से सेवित उन दोषों के त्याग करने की इच्छा नहीं करते हो इसी कारण से हम सब दुःखों में पड़ेहुए हैं १७ किसी प्रकार का भी सुख तुमसे हमको नहीं हुआ क्योंकि तुम पाँशों के खेल में बड़े मतवाले हो हे पाण्डव ! तुम आप दुःख को उत्पन्न करके अब हमको कठोर वचन सुनाते हो १८ हमारे हाथसे अङ्गभङ्ग मारी हुई शत्रुओं की सेना पृथ्वी पर सोतीहुई पुकारती है तुमने ऐसा निर्दयकर्म किया जिसके दोष से कौरवों का मरण उत्पन्न हुआ १९ उत्तर के रहनेवाले मारे पश्चिमीय लोगों का नाश किया और पूर्वीय वा दक्षिणीय मारे गये युद्ध में हमारे और उनके शूरवीरों ने वह अपूर्व और अद्भुत कर्म किया २० तुम द्यूत के खेलनेवाले हो तुम्हारे ही कारण से राज्य का नाश हुआ हे नरेन्द्र ! हमारा दुःख तुझसे पैदा होनेवाला है हे राजन् ! हमलोगों को वचनरूपी चाबुकों से पीड़ा देनेवाले तुम दुर्भागी फिर हमको क्रोधयुक्त मत करना २१ सञ्जय बोले कि वह स्थिरबुद्धि धर्म से भयभीत महाज्ञानी अर्जुन इन कठोर अप्रतिष्ठित वचनों को सुनाकर कुछ

पाप किया हुआ समझ कर उदास होगया अर्थात् वह इन्द्र का पुत्र वारंवार श्वास लेताहुआ पीछेसे महादुःखी हुआ और फिर खड्ग को निकाल लिया तब श्रीकृष्णजीबोले आप इसआकाशरूप खड्गको फिर किस निमित्त म्यानसे अलग करते हो २२। २३ इसका हमको उत्तर दोगे तब मैं तुम्हारे कल्याण और प्रयोजन के सिद्ध होने को कुछ कहूंगा पुरुषोत्तमजी के इस वचन को सुनकर अर्जुन बड़ा दुःखी होकर केशवजी से बोला कि जो मैंने अप्रियरूपी पापकर्म किया है इससे अपने शरीर को नाश करूंगा धर्मधारियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुन के इस वचन को सुनकर यह वचन बोले कि २४। २५ हे अर्जुन! तुम इस राजा से ऐसे वचन कहकर घोर दुःखमें क्यों प्रवृत्तहुए हे शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन! जो तुम अपघात करना चाहते हो यह कर्म सत्पुरुषोंका नहीं है २६ हे नरवीर! जो तुम अब इस धर्मात्मा बड़े भाई को खड्ग से मारोगे तो तुझ धर्म से डरनेवाले की कीर्त्ति किस प्रकार की होगी इसका तुम क्या उत्तर दोगे २७ हे अर्जुन! धर्म बड़ा सूक्ष्म होकर कठिनता से जानने के योग्यहै तुम बड़े २ बुद्धिमानों के कहेहुए धर्म को समझो तुम आप अपना अपघात करके वा भाई के मारने से महाघोर नरकमें पड़ोगे २८ हे अर्जुन! अब तुम यहां अपने वचन से अपनेही गुणोंको वर्णन न करो जिससे कि तुम हतात्मा होजाओ इस वचनको इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने पसन्द किया कि हे श्रीकृष्णजी! ऐसाही हो २९ फिर धनुषको लवाकर धर्मधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर से बोला कि हे राजन्! सुनो कि महादेव जी के सिवाय मुझसा धनुषधारी कोई नहीं है ३० मैं तुझ महात्माकी आज्ञा से एक क्षणभर मेंही सब स्थावर जङ्गम जीवों समेत संसारभरे को मारसक्ता हूं हे राजन्! मैंने दिक्पालों समेत सब दिशाओं को विजय करके तेरे अधीन कर दीन्हीं ३१ वह पूर्ण दक्षिणायुक्त राजसूययज्ञ और आपकी वह दिव्यसभा मेरे ही पराक्रम से हुई और मेरे हाथों में तीक्ष्णधारवाले बाण हैं और बाणों से युक्त प्रत्यञ्चावाला लम्बायमान धनुष है ३२ और मेरे चरण रथ और ध्वजा समेत हैं और युद्ध में वर्तमान होकर मुझको कोई शूरवीर विजय नहीं करसक्ता है मैंने पूर्वीय, पाश्चमीय, उत्तरीय और दक्षिणीय राजालोगों को मारा ३३ संसप्तकों का कुछ शेष बाकी है इस रीति से सब सेनाका आधाभाग मारडाला हे राजन्! देवसेना के समान यह भरतवंशियों की सेना मेरे हाथ सेही मारी हुई पृथ्वीपर

सोरही है ३४ जो अस्त्रों के जाननेवाले हैं उनको मैं अस्त्रोंही से मारताहूं इसी हेतु से यह अस्त्र लोकों के भस्म करनेवाले हैं हे श्रीकृष्णजी ! भय के उत्पन्न करनेवाले इस विजयी रथपर सवार होकर कर्ण के मारने को चलें ३५ अब यह राजा युधिष्ठिर सुखी होजाय मैं युद्धमें अपने बाणोंसे कर्णको मारूंगा ऐसा कहकर अर्जुनने धर्मधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिरसे यह वचन कहा ३६ कि अब कर्ण की माता अपने पुत्रसेरहित होगी अथवा कुन्ती मुझसे पृथक् होगी मैं सत्य२ कहता हूं कि अब युद्धभूमि में कर्ण को बाणों से मारे विना मैं अपने कवचको नहीं उतारूंगा ३७ सञ्जय बोले कि अर्जुनने युधिष्ठिर से ऐसा कहकर फिर भी शस्त्रों को उतार धनुष छोड़ बड़ी शीघ्रता से खड्ग को म्यान में रखकर ३८ बड़ी लज्जा से नीचा शिर किये हाथ जोड़कर युधिष्ठिर से कहा कि हे राजन् ! प्रसन्न हूजिये और मेरे कहेहुए को क्षमा करिये आप समय पाकर जानेंगे अब आप को नमस्कार है ३९ इस रीति से अप्रसन्न राजा को प्रसन्न करके फिर यह वचन बोला कि इस कार्यमें विलम्ब न होगी बड़ी शीघ्रतापूर्वक यह कार्य होगा मैं इस लौटते हुए के सम्मुख जाता हूं ४० अब मैं सर्वात्मभाव से भीमसेन को युद्ध से छुटाने और कर्ण को मारने को जाता हूं मेरा जीवन केवल आपके अभीष्ट के ही निमित्त है हे राजन् ! मैं आप से सत्य २ कहता हूं आप मुझको आज्ञा दीजिये ४१ यह कहकर बड़ा तेजस्वी अर्जुन चलने के समय भाई के चरणोंको पकड़कर उठा फिर पाण्डव धर्मराजने अपने भाई अर्जुनके इस कठोर वचन को सुनकर ४२ महादुःखी हो अपने उस शयनस्थान से उठकर अर्जुन से कहा हे अर्जुन ! मैंने वह महादुष्टकर्म किया जिसके कारण तुमको ऐसा महाघोर दुःख प्राप्त हुआ ४३ इस कारण से मुझ कुलकेनाशक महापापी दुःखों सेयुक्त अज्ञान-बुद्धि आलसी भयभीत वृद्धों के अपमान करनेवाले इस नीच पुरुष के शिरको काटडालो तेरे रूखे २ वचनों के सुनने से मेरा कोई प्रयोजन नहीं है अब मैं महापापी वन केही जाने के योग्य हूं मैं अवश्य वनही को जाऊंगा और आप मुझ से पृथक् होकर सुख से राज्य को करो ४४ । ४५ महात्मा भीमसेन राजा होने के योग्य है मुझ नपुंसक का राज्य में क्या काम है और तुझ क्रोधयुक्तके इन कठोरवचनों के सहने को भी मैं समर्थ नहीं हूं ४६ हे वीर ! मुझ अपमान वाले के जीवन के कारण से फिर भीमसेन राजा करने के योग्य न होगा इस

रीति के वचनों को कहकर राजा युधिष्ठिर अपने शयनस्थान को छोड़कर उछला ४७ और वन के जाने की इच्छा करी तब तो वासुदेवजीने बड़े नम्र होकर युधिष्ठिर से कहा हे राजन्! यह आप समझिये ४८ कि जैसे सत्यप्रतिज्ञ गाण्डीवधनुषधारी की प्रतिज्ञा सुनीगई अर्थात् जो कोई ऐसा कहै कि गाण्डीव धनुष दूसरे के देने के योग्य है वह पुरुष लोक में उसके हाथ से मारने के योग्य है और यह तुमने उससे कहा इस हेतु से अर्जुन ने उस अपनी सत्य प्रतिज्ञा की रक्षा करी है ४९ । ५० हे राजन्! यह तेरा अपमान मेरी इच्छा से कियागया क्योंकि गुरुओंका अपमान ही मारने के समान कहाजाता है ५१ हे महाबाहो, राजन्, युधिष्ठिर! इस हेतु से सत्य की रक्षा के निमित्त मेरी और अर्जुन की अनम्रताको आप क्षमा करिये ५२ हे महाराज! हम दोनों आपकी शरण में वर्तमान हैं हे राजन्! मुझ प्रणतरूप प्रार्थना करनेवाले का अपराध क्षमा करिये ५३ अब यह पृथ्वी उस पापात्मा कर्ण के रुधिर को पानकरेगी यह मैं तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं कि अब तुम कर्णको मराहुआही जानो ५४ जिसका तू मरना चाहताहै अब उसकी अवस्था जीवन कीभी समाप्त हुई तब श्रीकृष्णजी के वचनको सुनकर धर्मराज युधिष्ठिर ने ५५ भ्रान्तिसेयुक्त झुकेहुए श्रीकृष्णजी को उठाकर हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजीसे यह वचन कहा ५६ कि हे श्रीकृष्णजी! जैसा आपने कहाहै वैसाही है कि इसमें मेरी अमर्य्यादा होय हे माधव, गोविन्द जी! मैं आपके समझाने से समझगया हूं ५७ हे अविनाशिन्! अब हम तुम्हारे कारण से घोर दुःख से छूटे और अपनी अज्ञानता से अचेत हम दोनों आपरूप स्वामी को पाकर इस घोररूप दुःखसमुद्रसे पारहुए ५८ हम सब अपने मन्त्रियों समेत आपकी बुद्धिरूपी नौका को पाकर दुःख और शोकरूपी नदी से पारहुए हे अविनाशिन्! हम तुम से सनाथ हैं ॥ ५९ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणियुधिष्ठिरप्रबोधनयेकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसके पीछे धर्मात्मा यदुनन्दन गोविन्दजी धर्मराज के इस प्रीतियुक्त वचनोंको सुनकर अर्जुनसे बोले १ और अर्जुन इसरीति से श्रीकृष्ण जी के वचन से युधिष्ठिर को कठोर वचन कहकर उदास हुआ जैसे कि कुछ पाप को करके उदास होते हैं २ तब हँसतेहुए वासुदेवजी उस पाण्डव से बोले

कि हे अर्जुन ! यह कैसे होसक्ता है जो उस धर्मनिष्ठ धर्म के पुत्र को तीक्ष्णधार-वाले खड्ग से मार तुम राजा से यह कहकर एक पाप में पड़े ३ । ४ हे अर्जुन ! राजा को मारकर पीछे से तुम क्या करते इस रीति से अल्पबुद्धियों से बड़ी क-ठिनतापूर्वक धर्म जानने के योग्य है ५ सो आप धर्म के भयसे बड़े भाई के मारने के द्वारा बहुत बड़े घोर नरक में अवश्य पड़े ६ सो तुम धर्मधारियों में श्रेष्ठ धर्म के समूह कौरवों में श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिर को प्रसन्न करो यही मेरा मत है ७ अपनी भक्ति से राजा को प्रसन्न करो फिर उस युधिष्ठिर के प्रसन्न होनेपर शीघ्रही युद्ध के निमित्त कर्ण के रथ के समीप चलेंगे ८ हे बड़ाई देनेवाले ! अब तुम युद्ध में अपने तीक्ष्णधारवाले बाणों से कर्ण को मारकर धर्मराज की बड़ी प्रसन्नता को प्राप्त करो ९ हे महाबाहो ! यहां पर यह वार्त्ता समय के अनुसार है यह मेरा मत है ऐसा करनेपर तेरा किया हुआ कार्य सिद्ध होगा १० हे महाराज ! इसके पीछे लज्जायुक्त अर्जुन धर्मराज के दोनों चरणों को पकड़कर शिर से झुकगया ११ और उस भरतर्षभसे वारंवार विनय करने लगा कि हे राजन् ! जो मुझ सब कामों से डरेहुए ने आपके सम्मुख असभ्य वचन कहे उनको आप क्षमा करिये १२ हे भरतर्षभ, धृतराष्ट्र ! तब तो धर्मराज युधिष्ठिर ने उस शत्रुसंहारी रोतेहुए और गिरेहुए अर्जुन को देखकर १३ उस संसार की लक्ष्मी के विजय करनेवाले भाई को उठाकर बड़ी प्रीति से हृदय से लगाकर अति रोदन किया १४ हे महाराज ! वह महातेजस्वी शुद्ध अन्तःकरणवाले दोनों भाई बहुत विलम्बतक रोदन करके प्रसन्न हुए १५ फिर पाण्डव धर्मराज बड़े प्रेम से मिलकर उसके मस्तक को सूंघके बड़ी प्रीतियुक्त मन्दमुसकान करतेहुए उस बड़े धनुषधारी से बोले १६ हे महाबाहो ! बड़े धनुषधारी कर्णने युद्ध में सब सेना के देखतेहुए मुझ उपाय करनेवाले को कवच, ध्वजा, धनुष, शक्ति घोड़े और बाणों को १७ अपने बाणों से काटकर पराजय किया हे अर्जुन ! सो मैं युद्ध में उसको जानके और उसके कर्म को देखकर १८ महादुःखी होता हूं और जो तू युद्ध में उस वीर शत्रु को नहीं मारेगा तो मुझको जीवन प्यारा न होगा १९ अर्थात् अपने प्राणों को त्यागकरूंगा फिर जीने से मेरा कोई प्रयोजन नहीं है हे भरतर्षभ ! इस प्रकार के युधिष्ठिर के वचनोंको सुनकर अर्जुनने उत्तर दिया २० हे नरोत्तम, महाराज ! मैं आपकी सत्यता वा प्रसन्नता वा भीमसेन नकुल और सहदेव की शपथ

करता हूं २१ मैं जिसप्रकार से अब कर्ण को मारूंगा वा आप मरकर पृथ्वीपर गिरूंगा मैं सत्यता से उस शस्त्र को प्राप्त करता हूं २२ ऐसा राजा से कहकर फिर माधवजी से बोला कि हे श्रीकृष्णजी! अब मैं निस्सन्देह युद्ध में कर्णको मारूंगा २३ आपका कल्याण होय यह सब आपही के विचारसे है उस दुरात्मा का मरण होगा हे राजाओं में श्रेष्ठ! यह वचन सुनकर केशवजी अर्जुन से बोले २४ हे भरतर्षभ! तुम बड़े पराक्रमी होकर कर्ण के मारने को समर्थ हो हे महारथिन्! मेरी भी सदैव से यही इच्छा है २५ तुम युद्ध में कैसे कर्ण को मारोगे यह कहकर वह श्रेष्ठ पुरुषोत्तम माधवजी फिर युधिष्ठिर से बोले कि २६ हे युधिष्ठिर! तुम अब दुरात्मा कर्ण के मारने के निमित्त अर्जुनको विश्वासपूर्वक आज्ञा देने को योग्य हो २७ हे पाण्डुनन्दन! आपको कर्ण के बाणों से पीड्यमान सुनकर मैं और अर्जुन वृत्तान्त निश्चय करने को यहां आयेथे सो २८ हे राजन्! आप प्रारब्ध से जीवतेहुए और उसके पकड़ने से बचेहुए हो हे निष्पाप! अब तुम इस अर्जुन को विश्वासपूर्वक विजय का आशीर्वाद दो २९ युधिष्ठिर बोले कि हे पाण्डव, अर्जुन! आओ २ मुझ से मिलो कहने के योग्य और चित्त के अभीष्ट को प्राप्त करनेवाला वचन कहागया है जो तुम ने मुझसे कहा वह मैंने सब क्षमा किया ३० हे अर्जुन! अब मैं तुझको आज्ञा देता हूं कि तुम कर्ण को मारो हे अर्जुन! और जो२ मैंने कठोर वचन कहे हैं उनसे क्रोधयुक्त मत हो ३१ सञ्जय बोले कि हे श्रेष्ठ,राजन्,धृतराष्ट्र! तब तो कमरसे झुकेहुए अर्जुनने हाथोंसे अपने बड़े भाई के दोनों चरणों को पकड़ लिया ३२ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उसको उठाके अच्छी रीतिसे मिलकर मस्तकको सूंघ फिर उससे कहनेलगे ३३ हे महाबाहो, अर्जुन! मेरी तैंने बड़ी प्रतिष्ठा करी है तुम फिर महत्त्वता और अविनाशी विजय को प्राप्त करोगे ३४ अर्जुन बोले कि अब मैं उस पापी और बल से अहङ्कारी कर्णको युद्धमें पाकर बाणों से उसके भाई पुत्रों समेत मारूंगा ३५ जिसके खिंचेहुए धनुष के बाणों से तुम महापीड्यमान हुए हो वह कर्ण अब बहुत शीघ्रही उसके फल को पावेगा ३६ हे राजन्! अब मैं कर्ण को मारकरही आपको सेवन करने के निमित्त देखूंगा मैं उच्चस्वर से यह तुमसे सत्य २ कहता हूं ३७ हे पृथ्वीपते, स्वामिन्! अब मैं कर्ण को मारे विना युद्धभूमि से नहीं लौटूंगा सत्यता से आपके दोनों चरणोंको छूता हूं ३८ सञ्जय बोले कि तब तो

प्रसन्नचित्त युधिष्ठिर ने इस प्रकार की बातें करनेवाले अर्जुन से बहुत बड़ा यह वचन कहा कि तेरी अविनाशी कीर्त्ति वा मनोभीष्ट जीवन वा विजय वा सदैव पराक्रम वा शत्रुओंका नाश ३९ और वृद्धिको देवतालोग कृपा करके दें और जैसा मैं चाहताहूं वैसाही तेरा अभीष्ट सिद्ध होय शीघ्र जाओ और युद्धमें कर्णको ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने अपनी वृद्धि के निमित्त वृत्रासुरको मारा था ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणियुधिष्ठिरवरप्रदानेद्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि कर्ण के मारने को उपस्थित अर्जुन अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर धर्मराज को प्रसन्न करके गोविन्दजी से बोला १ कि मेरा रथ फिर तैयार करिये और उत्तम घोड़ों को पूजो और उसी मेरे कल्याणरूपी रथपर सब अस्त्र शस्त्रों को धरो २ अश्वसवारों से शिक्षित और पृथ्वी के लोटने से गत परिश्रम और रथ के सब सामानोंसे अलंकृत शीघ्रतायुक्त चञ्चल घोड़े बहुत शीघ्र सम्मुख लायेजायँ ३ हे गोविन्दजी ! कर्ण के मारने की इच्छासे अब शीघ्र चलो हे महाराज ! महात्मा अर्जुन के इस वचन को सुनकर ४ श्रीकृष्णजी दारुक सारथी से बोले कि वह सब करो जिस प्रकार इस भरतर्षभ और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने कहा है ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ ! इसके पीछे श्रीकृष्णजी की आज्ञा पातेही उस दारुक ने शत्रुसन्तापी व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुए उत्तम रथ को जोड़ा और ६ रथ को तैयार करके महात्मा पाण्डव अर्जुन के आगे निवेदन किया कि रथ तैयार है तब महात्मा दारुक के तैयार किये हुए रथको देखकर ७ धर्मराज से आज्ञा ले ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराके बड़े मङ्गल और स्वस्त्ययन के साथ रथपर सवार हुआ उस समय बड़े ज्ञानी धर्मराज राजा युधिष्ठिर ने उसको आशीर्वाद दिया इसके पीछे वह कर्ण के रथ के पीछे चला ८।९ हे भरतवंशिन् ! सब जीवों ने उस बड़े धनुषधारी अर्जुन को आता देखकर महात्मा पाण्डव के हाथसे कर्ण को मराहुआ माना १० हे राजन् ! सब दिशा चारोंओर से निर्मल हुईं उस समय चाष शतपत्र और क्रौञ्च नाम पक्षियों ने ११ । १२ पाण्डुनन्दन अर्जुन को दक्षिण किया हे राजन् ! मङ्गल वा कल्याणरूप और प्रसन्नरूप अर्जुन को युद्ध में प्रेरणा करते बहुत से नर पक्षी भी शब्द करने लगे १३ और हे राजन् ! भयानकरूप कङ्क, गिद्ध, बक, बाज और काक यह सब मांस खाने के लिये उसके आगे २ चले

उन्होंने अर्जुन के मङ्गलकारी शकुनों को इस रीति से वर्णन किया १४ कि शत्रुओं की सेना का और कर्ण का नाश होगा इसके पीछे यात्रा करनेवाले अर्जुन को बड़ा खेद उत्पन्नहुआ १५ और बड़ीचिन्ता उत्पन्नहुई कि यह कैसे होगा इसके अनन्तर मधुसूदनजी गाण्डीव धनुषधारी से बोले १६ हे गाण्डीव धनुषधारिन्! युद्धमें जो २ तेरे धनुषसे विजय कियेगये उनका विजय करनेवाला दूसरा मनुष्य इस पृथ्वी पर नहीं है १७ इन्द्रके समान भी अनेक पराक्रमी देखे उन शूरों ने भी तुझको पाकर युद्ध में परमगतिको प्राप्त किया १८ इन द्रोणाचार्य भीष्म, भगदत्त, बिन्द, अनुबिन्द, अवन्तिदेश के राजालोग, काम्बोज, सुदक्षिण १९ बड़े पराक्रमी श्रुतायुष और अश्रुतायुष के सम्मुख जाकर जो तेरे पास दिव्य अस्त्र वा हस्तलाघवता वा पराक्रम वा युद्धों में मोहन होता वा विज्ञानरूपी नम्रता न होती तो तेरे सिवाय किस दूसरेकी सामर्थ्य थी जो इनके आगे कुशल रहता २०।२१ और वेधचिह्नयुक्त योग भी तुझ को प्राप्त है आप गन्धर्व और संसार के जड़ चैतन्यों समेत देवताओं को भी मारसक्के हो हे अर्जुन! इस पृथ्वी पर तेरे समान कोई शूरवीर पुरुष नहींहै और जो कोई क्षत्रिय युद्धमें दुर्मद बड़े धनुषधारी हैं २२।२३ उनके मध्य में तेरे समान देवताओं तक में किसी को नहीं देखताहूं न सुनता हूं ब्रह्माजी ने सृष्टि की उत्पत्ति करके गाण्डीव धनुष को उत्पन्न कियाहै २४ हे अर्जुन! जोकि तुम उस धनुष के द्वारा लड़ते हो इसी कारण से तुम्हारे समान कोई नहीं है हे पाण्डव! मैं उस बात को अवश्य कहूंगा जिसमें तेरा कल्याण होगा २५ हे महाबाहो! युद्ध के शोभा देनेवाले कर्ण को तू मत अपमानकर यह महारथी कर्ण पराक्रमी अहङ्कारी अस्त्रज्ञ २६ कर्मकर्त्ता वा अपूर्व युद्धकर्त्ता होकर देशकाल का जाननेवाला है यहां अब बहुत कहने से क्या लाभ है हे पाण्डव! अब इसका संक्षेप सुनो २७ मैं महारथी कर्ण को तेरे समान वा तुझ से अधिक मानता हूं वह तुझ से बड़े उपायपूर्वक युद्ध में स्थिर होकर मरने के योग्य है २८ तेज में अग्नि के सदृश वेग में वायु के समान क्रोध में यमराज की सूरत सिंह के समान दृढ़ शरीर महापराक्रमी २९ और शरीर की लम्बाई में आठहाथ बड़ी भुजाओं से युक्त बृहद्वक्षस्स्थलवाला बड़ी कठिनता से विजय होनेवाला महाअभिमानी शूर और बड़ावीर है अपूर्वदर्शन ३० सब शूरवीरों के समूहों से युक्त मित्रों को निर्भय करनेवाला सदैव पाण्डवों का शत्रु दुर्योधन के

मनोरथ सिद्ध करने में तत्पर ३१ तेरे सिवाय इन्द्रसमेत सब देवताओं से भी मारने के अयोग्य है यह मेरा मतहै कि तुम उस सूतपुत्रको मारो ३२ सावधान रुधिर मांसके धारण करनेवाले मनुष्यों समेत युद्धाभिलाषी सब देवताओंसे भी वह महारथी कर्ण विजय करने के योग्य नहीं है ३३ उस दुरात्मा पाप से अहङ्कारी निर्दयी सदैव पाण्डवों से दुष्टबुद्धि रखनेवाले और पाण्डवों से निरर्थक विरोध करनेवाले कर्ण को मारकर अब तुम अपने अभीष्ट को सिद्ध करो ३४ अर्थात् अब तुम उस रथियों में श्रेष्ठ अजेय सूतपुत्रको काल के वशमें करो और रथियों में श्रेष्ठ सूतपुत्र को मारकर धर्मराज में प्रीति करो ३५ हे अर्जुन! देवता और असुरोंसे अजेय तेरे पराक्रमको मैं ठीक २ जानता हूं यह दुरात्मा सूतपुत्र अहङ्कारसे सदैव पाण्डवों का अपमान करता चला आता है ३६ और जिसके द्वारा पापी दुर्योधन अपनेको वीर मानताहै हे अर्जुन! अब उस पापोंके मूलरूप सूतपुत्र को मारो ३७ हे अर्जुन! खड्ग के समान जिह्वा धनुष के समान मुख और बाणरूप डाढ़ रखनेवाले उस वेगवान् अहङ्कारी पुरुषोत्तम कर्णको मारो ३८ मैं तुझको आज्ञा देताहूं कि युद्ध में उस शूरवीर कर्ण को ऐसे मारो जिस प्रकार केसरी सिंह हाथी को मारताहै ३९ दुर्योधन जिसके पराक्रमसे तेरे पराक्रम को अपमान करताहै हे अर्जुन! उस कवच और कुण्डल के उखाड़ देनेवाले कर्ण को अब युद्ध में मारो ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णवधार्थार्जुनगमनेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

हे भरतवंशिन्! इसके पीछे बड़े बुद्धिमान् केशवजी कर्णके मारनेमें सङ्कल्प करके यात्रा करनेवाले अर्जुनसे फिर बोले १ हे भरतवंशिन्! अब मनुष्य घोड़े हाथी आदि के घोर नाशके होने को सत्रह दिन व्यतीत हुए २ हे राजन्! शत्रुओं के समूहोंसे आपके शूरवीरोंकी सेना बड़ी होकर परस्पर युद्ध करतीहुई कुछ बाकी रहगई है ३ हे अर्जुन! निश्चय करके कौरवलोग बहुत हाथी घोड़े वाले होकर तुझ शत्रु को पाकर सेना के मुखपर नाशवान् होगये ४ वह राजा लोग और सृञ्जय इकट्ठे हैं और सब पाण्डवलोग भी तुझ अजेय को पाकर वर्तमान हैं ५ तुझसे रक्षित शत्रुओं के मारनेवाले पाञ्चाल, पाण्डव, मत्स्य और कारुष्यदेशियोंने चन्देरीदेशियों समेत शत्रुओं के समूहों का नाश किया ६

हे तात ! युद्ध में तुझसे रक्षित महारथी पाण्डवों के सिवाय कौन मनुष्य युद्धमें कौरवों के विजय करने को समर्थ होसक्ता है ७ तुम युद्ध में देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्ध में तत्पर होकर तीनोंलोकों के विजय करने को समर्थ हो फिर कौरवीय सेनाके विजय करने को क्यों न होगे ८ हे पुरुषोत्तम ! तेरे बिना दूसरा कौन मनुष्य इन्द्रके समान बलपराक्रमी भी राजाभगदत्तके विजय करने को समर्थ है ९ हे निष्पाप, अर्जुन ! इसी प्रकार सब राजालोग भी तुझ से रक्षित इस बड़ी सेना के देखने को भी समर्थ नहीं हैं १० हे अर्जुन ! इसी प्रकार युद्ध में तुझ से सदैव रक्षित धृष्टद्युम्न और शिखण्डी के हाथों से द्रोणाचार्य और भीष्म मारेगये ११ हे अर्जुन ! कौन मनुष्य युद्धमें इन्द्रके समान पराक्रमी और भरतवंशियों के महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य को लड़ाई में विजय करने को समर्थ था १२ हे पुरुषोत्तम ! इस लोक में तेरे सिवाय कौन पुरुष युद्ध में मुख न मोड़नेवाले महाअस्त्रज्ञ अक्षौहिणी सेनाओंके स्वामी अतिउग्र परस्पर मिले हुए युद्ध में दुर्मद इन भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, सोमदत्त, अश्वत्थामा, कृत-वर्मा, जयद्रथ, शल्य और राजा दुर्योधन के विजय करने को समर्थहै १३।१५ बहुत से सेनाओं के समूह तो नाशहुए घोड़े रथ वा हाथी पराजित और मारेगये हे भरतवंशिन् ! क्रोधयुक्त नानादेशों के क्षत्रिय और गोपालदास, मीयान, व-शाती पूर्वीय राजालोग, बाढ़धान, अभिमानी भोजवंशीय और ब्राह्मण क्षत्रियों की बड़ी सेना घोड़े हाथी और नाना देशों के वासी यह सब महाउग्ररूप तुम को और भीमसेनको पाकर नाश होगये १६।१८ महाउग्र भयकारी कर्म करने-वाले तुषार, यवन, खश, दार्व, अभिसार, दरद, बड़ेसमर्थ मोठर तङ्गण, आन्धक, पुलिन्द और उग्रपराक्रमी किरात म्लेच्छ, पहाड़ी, सागर और अनूप देश के रहनेवाले १९।२० यह सब वेगवान् युद्ध में कुशल पराक्रमी हाथमें दण्ड रखने-वाले कौरवों समेत दुर्योधन के साथ क्रोधयुक्त २१ युद्ध में तेरे सिवाय दूसरे से विजय करने के योग्य नहीं हे शत्रुओं के तपानेवाले ! जिसके तुम रक्षक न हो वैसा कौनसा मनुष्य दुर्योधन की उस बड़ी अलंकृत सेनाको देखकर सम्मुख होसक्ता है २२ हे समर्थ ! वह समुद्र के समान उठीहुई धूलि से युक्त सेना २३ तुझ से रक्षित क्रोधयुक्त पाण्डवों से चीरकर मारीगई अब,सात दिन हुए कि मगधदेशियों का राजा बड़ापराक्रमी जयत्सेन २४ युद्ध में अभिमन्यु के हाथसे

मारागया उसके पीछे भीमसेन ने भयभीत कर्म करनेवाले दश हज़ार हाथियों को अपनी गदा सेही मारडाला २५ और जो कुछ राजा के घोड़े आदि थे उन को भी मारडाला इसके पीछे अपने पराक्रम सेही अन्य सैकड़ोंहाथी और रथियों को मारा २६ हे पाण्डव अर्जुन ! इसरीतिसे उस बड़े भयकारी युद्धके वर्तमान होने पर कौरवलोग भीमसेन और तुझको पाकर २७ घोड़े रथ और हाथियों समेत यहां से मर २ कर यमपुर को गये हे अर्जुन ! इसी प्रकार वहां पाण्डवके हाथ से सेनामुख के मरनेपर २८ परम अस्त्रज्ञ ने बाणों से ढककर सबका नाश करदिया उसके धनुष से निकलेहुए शत्रुओं के शरीरों के चीरनेवाले २९ । ३० सुनहरीपुङ्खयुक्त सीधेजानेवाले बाणों से आकाश व्याप्त होगया वह भीमसेन एक २ घूंसे से हज़ारों रथियों को मारता था ३१ उसने बड़े पराक्रमी इकट्ठेहुए एकलाख मनुष्य और हाथियों को मारकर दशवीं गतिसे उन हाथी घोड़े और रथों को पाकर मारा ३२ दोषों से पूर्ण नव गतियों को त्यागकरते उसने युद्ध में बाणों को छोड़ा और आपकी सेना को मारते हुए भीष्मजी ने दशदिन तक ३३ । ३४ रथके आसन खाली करके घोड़े वा हाथियोंको मारा इसने युद्ध में रुद्र और विष्णु के समान अपने रूपको दिखाकर और पाण्डवोंकी सेना को आधीन करके मारा फिर चन्देरी पाञ्चाल और कैकयदेशीय राजाओं को मारते हुए ३५ विना नौका के नदी में डूबनेवाले अभागे दुर्योधन के निकालने के इच्छावान् भीष्म ने रथ हाथी और घोड़ों से व्याकुल पाण्डवीय सेना को भस्म किया ३६ युद्धमें उत्तम शस्त्र रखनेवाले हज़ारोंकोटि पदाती वा सृञ्जय वा अन्य राजालोग चलते हुए सूर्य के समान घूमनेवाले युद्ध में विजयसे शोभायमान जिस भीष्मजी के देखने को भी समर्थ नहीं हुए ३७ । ३८ ऐसा प्रतापी भीष्म भी बड़े उपाय से पाण्डवों के सम्मुख गया वहां अकेले भीष्म ने पाण्डव और सृञ्जयों को भगाकर ३९ सब वीरों में प्रतिष्ठा को पाया फिर तुझसे रक्षित शिखण्डी ने उस महाव्रतनाम भीष्म को पाकर ४० गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से मारा वह भीष्मपितामह तुझ पुरुषोत्तमको पाकर गिराहुआ शरशय्यापर ऐसे सोता है जैसे कि इन्द्र को पाकर वृत्रासुर सोयाथा उग्ररूप भारद्वाज द्रोणाचार्यने पांच दिन तक शत्रुओं की सेना को छिन्न भिन्न करके ४१ । ४२ अभेद्यव्यूह को अलंकृत करके बड़े२ महारथियोंको गिरातेहुए युद्धमें जयद्रथकी रक्षा करके उस

उग्ररूप ने यमराज के समान रूप धारण करके रात्रि के युद्ध में प्रजा का नाश करदिया फिर शूरवीरों को बाणों से मारकर ४३ । ४४ धृष्टद्युम्न को पाकर परम गति को पाया अब जो तुम कर्णआदि रथियों को ४५ न हटाते तो द्रोणाचार्य युद्ध में न मारेजाते तुमने दुर्योधन की सब सेना रोकी उस कारण से द्रोणाचार्य युद्ध में धृष्टद्युम्न के हाथ से मारेगये हे अर्जुन ! तेरे सिवाय दूसरा कौन सा क्षत्रिय ऐसे कर्म को करसक्ता है ४६ । ४७ जैसा कि तुम ने जयद्रथ के मारने में किया था अर्थात् बड़ीभारी सेना को रोककर बड़े २ शूरवीरों को मारके ४८ राजा जयद्रथ को तैंने अपने तेज और बल से मारा सब राजालोग जयद्रथ के मारनेको आश्चर्य और अद्भुत मानते हैं ४९ हे अर्जुन ! तुम महारथी हो इससे उसका मरना आश्चर्ययुक्त नहीं है हे भरतवंशिन् ! मैं तुझको युद्ध में पाकर एकही दिन में क्षत्रियों के समूहों का नाश होना मानता हूं ५० यह मेरा पूर्ण विश्वासहै सो हे अर्जुन ! यह दुर्योधनकी घोरसेना युद्ध में ५१ सब शूरवीरोंसमेत मृतकरूपहै जब कि भीष्म और द्रोणाचार्य सरीखे मारेगये वह भरतवंशियों की सेना जिसके अत्यन्त शूरवीर मारेगये और घोड़े रथ और हाथी भी मारेगये ५२ अब ऐसी दिखाई देती है जैसे कि सूर्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से रहित आकाश होता है हे भयानक पराक्रमी अर्जुन ! यह सेना युद्ध में ऐसे नष्ट होगई ५३ जैसे कि पूर्वसमय में इन्द्र के पराक्रम से असुरों की सेना नाश होगई थी इस सेना में मरने से बाकी बचेहुए पांच महारथी हैं ५४ अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कर्ण, शल्य, कृपाचार्य हे नरोत्तम ! अब तुम इन पांचों महारथियों को मारकर ५५ शत्रुओं से रहित जानकर द्वीप, नगर, आकाशतल, पाताल, पर्वत और महावनों समेत पृथ्वी को अपनी करके राजा को सुपुर्द करो ५६ अब असंख्यलक्ष्मी और पराक्रम का रखनेवाला युधिष्ठिर इस पृथ्वी को पावे जैसे कि पूर्वसमय में विष्णुजी ने दैत्य और दानवों को मारकर पृथ्वी को इन्द्र के अर्थ दी थी उसी प्रकार तुम भी इन सब कौरवादि क्षत्रियों को मारकर राजा को दो ५७ अब तेरे हाथ से शत्रुओं को मारने से पाञ्चालदेशीय ऐसे प्रसन्न होयँ जैसे कि विष्णुजी के हाथ से दैत्यों के मरनेपर देवतालोग प्रसन्नहुए थे ५८ अथवा जो गुरु की महत्त्वता से द्विपादों में श्रेष्ठ गुरु द्रोणाचार्य के तुझ मारनेवाले की दया और करुणा अश्वत्थामा और कृपाचार्य पर है ५९ वह अत्यन्त पूजित भाई माता के बान्धवों को

मानता हुआ कृतवर्मा को पाकर यमलोक में नहीं पहुँचावेगा ६० और हे कमल नयन ! अब जो तुम दया करके माता के भाई मद्रदेशियों के राजा शल्य को मारना नहीं चाहते हो ६१ तो हे नरोत्तम ! अब पाण्डवों के ऊपर पापबुद्धि रखनेवाले अत्यन्तनीच इस कर्ण को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से मारो ६२ यह तेरा श्रेष्ठ और शुभकर्म है इसमें किसी प्रकार का तुझ को दोष नहीं होसक्ता है, और हम भी ठीक २ जानते हैं कि इसमें कोई दोष नहीं है ६३ हे निष्पाप! रात्रि के समय पुत्रोंसमेत तेरी माताके शोककरने में और द्यूतके निमित्त दुर्योधन ने तुमलोगों को जो २ कष्ट दिये ६४ इन सब बातों का मूलरूप यह दुष्टात्मा कर्णही है दुर्योधन सदैव सेही कर्ण से अपनी रक्षा मानता है ६५ और इसी कर्ण के कारण से उसने मेरे भी पकड़ने का विचारकिया हे बड़ाई देनेवाले ! इस राजा दुर्योधन को बुद्धि से दृढ़विश्वास है कि ६६ कर्णही युद्ध में निस्सन्देह सब पाण्डवों को विजय करेगा हे अर्जुन ! तेरे पराक्रम के जाननेवाले दुर्योधन ने कर्ण का आश्रय लेकर तुमलोगों से शत्रुता अङ्गीकार करी वह कर्ण सदैव यही कहता है कि मैं सम्मुख आनेवाले पाण्डवों को ६७।६८ और महारथी यादव वासुदेव को विजयकरूंगा वह अत्यन्त दुष्टात्मा दुर्योधन को उत्साह दिला २ कर यह कहा करता है ६९ वह कर्ण जो युद्ध में गर्जरहा है हे भरतवंशिन् ! अब उसको मारो निश्चय करके दुर्योधन ने जो २ तुम्हारे साथ पाप किये ७० उन सब में यही दुष्टात्मा कर्णही कारण था और जो उस दुर्योधन के रखतेहुए उस के निर्दयी इन छः महारथियों ने ७१ अधर्म युद्ध करके अभिमन्यु को मारडाला द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा इन तीनों ने नरोत्तम वीरों के पीड्यमान करनेवाले हाथियों को मनुष्यों से रहित करनेवाले और महारथियों को रथसे विरथ करनेवाले घोड़ोंको उनके सवारोंसे रहित करनेवाले पत्तियोंको शस्त्र और जीवन से रहित करनेवाले ७२ कौरव वृष्णियों के यश के बढ़ानेवाले सेनाओं के छिन्न भिन्न करनेवाले महारथियों को पीड्यमान करनेवाले ७३।७४ मनुष्य घोड़े और हाथियों को यमलोक में पहुँचानेवाले बाणों से सेना को भस्मकरनेवाले आतेहुए अभिमन्यु को जो मारा ७५ वह दुःख मेरे अङ्गोंको भस्म कियेडालता है हे मित्र! मैं तेरी सत्यता की शपथ खाता हूं हे प्रभो ! जो दुष्टात्मा कर्ण ने वहां भी शत्रुता करी ७६ वह कर्ण युद्ध में अभिमन्यु के आगे सम्मुखता करने को असमर्थ

अभिमन्यु के बाणों से छिदाहुआ अचेत रुधिर में डूबा शरीर ७७ क्रोध से प्रकाशित श्वासलेता मुख फिरा शायकों से पीड्यमान भागने को चाहता जीवन से निराश ७८ अत्यन्त व्याकुल युद्ध में प्रहारों से थकाहुआ नियतहुआ तदनन्तर समय के अनुसार युद्ध में द्रोणाचार्य के ७९ निर्दय वचन को सुनकर फिर कर्ण ने धनुष को काटा इसके पीछे उसके हाथ से टूटेशस्त्रवाले अभिमन्यु को छली बुद्धिवाले पांच महारथियों ने ८० युद्ध में बाणों की वर्षा से घायल किया उस वीर के मरनेपर सब लोगों में दुःख प्रवृत्त हुआ अर्थात सबको तो बड़ा खेदहुआ परन्तु वह दुष्टात्मा कर्ण और दुर्योधन बहुत हँसे कर्ण ने निर्दय मनुष्य के समान पाण्डव और कौरवों के सम्मुख सभा के मध्य में द्रौपदी से जो यह कठोर शब्द कहे कि हे कृष्णे ! पाण्डव नाशवान् होकर सनातन नरक को गये ८१ । ८२ हे पृथुश्रोणि, मृदुभाषिणि, द्रौपदि ! तुम दूसरे पति को वरो अथवा दासीरूप होकर दुर्योधन के महल में ८४ प्रवेश करो तेरे पति नहीं हैं हे भरतवंशिन् ! उस समय महादुर्बुद्धि पापात्मा कर्ण ने तेरे सुनतेहुए धर्मराज से यह पाप वचन कहा है अब पापी के उस वचन को सुवर्ण से जटित दश ८५ । ८६ महातीक्ष्ण मृत्युकारी तेरे चलायेहुए बाण शान्त करेंगे उस दुष्टात्मा ने जो २ और पाप तुझपर किये अब उसके कियेहुए पाप और तेरे चलायेहुए बाण उसके जीवन को नाश करेंगे अब वह दुष्टात्मा कर्ण गाण्डीव से निकलेहुए घोर बाणों को अपने अङ्गों से स्पर्श करेगा और द्रोणाचार्य और भीष्मजी के वचनों को स्मरण करते सुनहरीपुङ्ख शत्रुओं के मारनेवाले बिजली से प्रकाशित ८७ । ८८ तेरे चलायेहुए बाण उसके कवच को काटकर रुधिर को पानकरेंगे अब तेरी भुजाओं से छोड़ेहुए महाउग्र वेगवान् बाण उसके बड़े कवच को काटकर ९० कर्ण को यमलोक में पहुँचावेंगे अब हाहाकार करनेवाले महादुःखी तेरे बाणों से पीड़ित होकर राजालोग रथ से गिरतेहुए कर्ण को देखेंगे और दुःखीहुए बान्धव रुधिर में भरे पृथ्वीपर पड़े सोतेहुए ९१ । ९२ टूटे शस्त्रवाले कर्ण को देखेंगे तेरे भल्ल से घायल हाथी की कक्षा का चिह्न रखनेवाली इसके रथ की बड़ी लम्बी ध्वजा महाकम्पित होकर पृथ्वीपर गिरे ९३ और भयभीत शल्य तेरे असंख्यों बाणों से टूटा सुवर्णसे जटित मृतक रथीवाले रथको छोड़कर भागेगा ९४ इसके पीछे तेरा शत्रु दुर्योधन तेरे हाथसे कर्ण को माराहुआ देखकर अपने जीवन और पृथ्वी के

राज्य से निराश होजावेगा ९५ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! कर्ण के तीक्ष्णबाणों से घायल पाण्डवोंकी रक्षा चाहनेवाले यह पाञ्चालदेशीय जाते हैं ९६ सब पाञ्चाल और द्रौपदी के पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी धृष्टद्युम्न के पुत्र, शतानीक नकुल के पुत्र ९७ नकुल, सहदेव, दुर्मुख, जनमेजय, सुधर्मा और सात्यकी को कर्ण के स्वाधीनही वर्त्तमान जानो ९८ हे शत्रुओं के तपानेवाले ! युद्ध में कर्ण के हाथ से घायल तेरे बान्धव पाञ्चालों के यह घोर शब्द सुने जाते हैं ९९ बड़े धनुष-धारी पाञ्चालदेशीय किसी दशा में भी भयभीत होकर पीठ नहीं मोड़ते और बड़े युद्ध में मृत्यु को भी नहीं गिनते हैं १०० जिस अकेले ने बाणों के समूहों से पाण्डवीय सेना को ढकदिया ऐसे भीष्मजी को भी पाकर वह पाञ्चालदेशीय नहीं मुड़े १०१ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले ! इसी प्रकार युद्ध में सदैव अग्नि के समान प्रकाशित अस्त्ररूपी अग्नि रखनेवाले सब धनुषधारियों के गुरु युद्ध में अपने तेजसेही भस्म करनेवाले अजेय द्रोणाचार्य को १०२ और सब शत्रुओं के विजय करने में प्रवृत्तहुए पाञ्चालदेशीय कभी कर्ण से भयभीत और मुख मोड़नेवाले नहीं हुए हैं १०३ उन शूरवीर पाञ्चालों के प्राणों को कर्ण ने बाणों के द्वारा ऐसे हरलिया जैसे कि पतङ्गों के प्राणों को अग्नि हरलेताहै १०४ युद्ध में इस रीति से सम्मुख अपने मित्र के निमित्त जीवन का त्यागनेवाला कर्ण उन हज़ारों शूरवीर पाञ्चालों को नाश कररहा है १०५ सो तुम हे भरत-वंशिन् ! नौकारूप होकर उस कर्णरूपी नौकारहित अथाह समुद्र में डूबतेहुए बड़े धनुषधारी पाञ्चालों की रक्षा करने के योग्य हो १०६ कर्ण ने जो महाघोर अस्त्र महात्मा भार्गव परशुरामजी से लिया है उसका रूप वृद्धियुक्त है १०७ वह सब सेनाओं का तपानेवाला घोररूप बड़ा भयानक बड़ी सेना को ढककर अपने तेज से प्रकाशमान है १०८ कर्ण के धनुष से निकलेहुए यह बाण युद्ध में घूमते हैं और भ्रमरों के समूहों के समान उन बाणों ने आप के पुत्रों को तपाया है १०९ हे भरतवंशिन् ! यह पाञ्चाल युद्ध में अज्ञानी मनुष्यों से कष्ट से हटने के योग्य कर्ण के अस्त्र को पाकर सब दिशाओं को भागते हैं ११० हे अर्जुन! कठिन क्रोध में भरा चारों ओर को राजा और सृञ्जयों से घिराहुआ यह भीमसेन कर्ण से युद्ध करताहुआ उसके तीक्ष्णधारवाले बाणों से पीड्यमान होताहै १११ हे भरतवंशिन् ! विचार न कियाहुआ कर्ण पाण्डव सृञ्जय और पाञ्चालों को ऐसे

माररहा है जैसे कि उत्पन्नहुआ रोग शरीर को मारडालता है ११२ मैं युधिष्ठिर की सेना भरे में तेरे सिवाय किसी दूसरे शूरवीर को नहीं देखता हूं जो कर्ण के सम्मुख होकर जीताहुआ अपने घरको आवे ११३ हे नरोत्तम, अर्जुन! अब तुम अपने तीक्ष्णबाणों से उसको मारकर अपनी प्रतिज्ञा के समान कर्म को करके कीर्ति को पावो ११४ हे शूरवीरों में श्रेष्ठ! तुमहीं युद्ध में कर्ण समेत कौरवों के विजय करने को समर्थ हो दूसरा कोई नहीं है यह तुझ से मैं सत्य २ कहता हूं ११५ हे नरोत्तम, अर्जुन! उस बड़े कर्म को करके और उस महारथी कर्ण को मारकर सफल अस्त्रयुक्त होकर प्रसन्न हो॥ ११६॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणियज्र्जुनउपदेशेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७४॥

पचहत्तरवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन्! केशवजी के वचन सुनकर वह अर्जुन एक क्षणमात्रमें ही शोक से रहित होकर प्रसन्न हुआ १ इसके पीछे प्रत्यञ्चा को चढ़ाकर गाण्डीव धनुषको टङ्कारा और कर्णके मारने में चित्तको लगाकर केशव जी से बोला २ हे गोविन्दजी! तुझ नाथ के द्वारा मेरी अवश्य विजय होगी अब सब भूत, भविष्य, वर्तमान के उत्पन्न होनेवाले सब जीव मुझपर प्रसन्न होजावो हे कृष्णजी! आपके सङ्ग होकर मैं सम्मुख आनेवाले तीनों लोकों को भी परलोक में पहुँचा सक्ता हूं फिर इस बड़े युद्ध में कर्ण को क्यों नहीं यम-पुर पहुँचाऊंगा ३। ४ हे जनार्दनजी! पाञ्चालों की सेना को भगाहुआ देखता हूं और कर्ण को युद्ध में निर्भय के समान देखता हूं ५ हे वार्ष्णेय, श्रीकृष्णजी! कर्ण के छोड़ेहुए सब प्रकार से प्रकाशमान भार्गवास्त्र को ऐसे देखता हूं जैसे कि इन्द्र का छोड़ाहुआ अशनि होता है ६ निश्चय करके यह वह युद्ध है जिस में मेरे हाथ से मारेहुए कर्ण को सब संसार के लोग तबतक कहेंगे जबतक कि यह पृथ्वी रहैगी ७ हे श्रीकृष्णजी! अब गाण्डीव धनुष से छोड़े हुए मेरे हाथ से प्रेरित नाशकारी विकर्णनाम बाण कर्ण को मृत्यु के समीप पहुँचावेंगे ८ अब राजा धृतराष्ट्र अपनी बुद्धि की निन्दा करेगा और दुर्योधनको राज्य के अयोग्य जानेगा हे महाबाहो! अब राजा धृतराष्ट्र राज्य, सुख, लक्ष्मी, देश, पुर और पुत्रों से पृथक् होगा ९। १० हे श्रीकृष्णजी! अब कर्ण के मरने पर दुर्योधन राज्य और जीवन से निराश होगा यह आपसे सत्य २ कहता हूं ११ अब

राजा धृतराष्ट्र मेरे बाणों से कर्ण को खण्ड २ हुआ देखकर सन्धिसम्बन्धी आप के वचनों को स्मरण करेगा १२ हे श्रीकृष्णजी ! अब यह बाणों के और गाण्डीवधनुष के दाँवघात से मेरे रथ को मण्डलाकार जानो १३ हे गोविन्दजी ! अब मैं तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को मारकर राजा युधिष्ठिर के कठिन जागरण को दूरकरूंगा १४ अब मेरे हाथ से कर्ण के मरने पर राजा युधिष्ठिर प्रसन्नचित्त होकर बहुत कालतक आनन्दों को पावेगा १५ हे केशवजी ! अब मैं ऐसे अजेय और अनुपम बाणों को छोड़ूंगा जोकि कर्ण को जीवन से नष्ट करके गिरावेंगे १६ निश्चय करके जिस दुरात्मा का यह व्रत मेरे मारने में है कि जबतक अर्जुनको न मारलूंगा तबतक अपने चरणोंको भी न धोऊंगा १७ हे मधुसूदनजी ! उस पापी के व्रत को मिथ्या करके गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से उसको रथ से गिराऊंगा १८ जो यह पृथ्वीपर अपने समान दूसरे को नहीं मानता है इसी से इस सूतपुत्र के रुधिर को पृथ्वी पान करेगी १९ हे कृष्णे ! तू विना पति की है इस प्रकार से अपनी प्रशंसा करते हुए कर्ण ने जो धृतराष्ट्र के मत से कहा है उसको विषैलेसर्प की समान तीक्ष्णधारवाले मेरे बाण मिथ्या करके उसके रुधिर को पियेंगे २० । २१ मुझ हस्तलाघवीय से छोड़े गाण्डीव धनुष से निकलेहुए बिजली के समान प्रकाशमान नाराच कर्ण को परमगति देंगे २२ अब वह कर्ण महादुःखी होगा जिसने पाण्डवों के निन्दक कुत्सित वचनों को कौरवों की सभा में कहा है २३ निश्चय करके जो वहां मिथ्यावादी और हास्य करनेवाले थे वह सब लोग भी अब इस सूतपुत्र के मरनेपर शोकयुक्त होंगे अपनी प्रशंसा करनेवाले कर्ण ने धृतराष्ट्र के पुत्रों से जो यह वचन कहा है कि मैं तुमको पाण्डवों से बचाऊंगा २४।२५ उसके उस वचन को भी मेरे तीक्ष्णधारवाले बाण मिथ्या करेंगे और जिसने यह भी कहा है कि मैं पुत्रों समेत सब पाण्डवों को मारूंगा २६ उस कर्ण को अब मैं सब धनुषधारियों के देखतेहुएही मारूंगा बड़े साहसी दुरात्मा २७ दुर्बुद्धि दुर्योधन ने जिसके पराक्रम का आश्रय लेकर सदैव हमारा अपमान किया हे श्रीकृष्णजी ! अब कर्ण के मरनेपर भयभीत धृतराष्ट्र के पुत्र राजाओं समेत दिशाओं को ऐसे भागेंगे जैसे कि सिंह से भयभीत होकर मृग भागते हैं २८ अब युद्ध में मेरे हाथ से पुत्र मित्र आदि समेत कर्ण के मरनेपर राजा दुर्योधन अपने को शोचेगा २९ हे श्रीकृष्णजी ! अब अत्यन्त

क्रोधयुक्त दुर्योधन कर्ण को मृतक देखकर ३० मुझको सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ जानेगा मैं राजाधृतराष्ट्र को पुत्र, पौत्र, सुहृद, मन्त्री और सेवकों से निराश करके राज्यपर युधिष्ठिर को नियतकरूंगा हे केशवजी ! अब अनेक प्रकार के मांसभक्षी चक्राङ्गनाम जीव मेरे बाणोंसे टूटेहुए कर्णके ३१।३२ अङ्गोंको भक्षण करेंगे हे मधुसूदनजी ! अब मैं युद्ध में राधा के पुत्र कर्ण के ३३ शिर को सब धनुषधारियोंके देखतेहुएही काटूंगा और अब तीक्ष्ण विपाट क्षुरप्रनाम बाणों से ३४ दुरात्मा राधेय के गात्रों को रण में छेदूंगा तब राजा युधिष्ठिर बड़े दुःख को त्यागकरेगा ३५ अर्थात् बड़ावीर युधिष्ठिर बहुत कालसे धारणकियेहुए अपने चित्त के शोक को दूरकरेगा हे केशव ! अब मैं बान्धवोंसमेत राधा के पुत्र को मारकर ३६ धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर को अत्यन्त प्रसन्न करूंगा और कर्णके दुःखी सब सहायकों को अग्नि के समान प्रकाशमान सर्प के समान बाणोंसे मारकर सुवर्णजटित गृध्रपक्षयुक्त सीधेचलनेवाले बाणों से ३७। ३८ पृथ्वी को राजाओं समेत तरूंगा और अभिमन्यु के सब शत्रुओं के ३९ अङ्गों और शिरों को अपने तीक्ष्णबाणों से मथन करूंगा और धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे रहित इस पृथ्वी को अपने बड़े भाई को दूंगा ४० अथवा हे केशवजी ! आप अर्जुन से रहित पृथ्वी पर घूमोगे हे यदुनाथ ! अब मैं धनुषधारियों का ४१ वा कौरवों के क्रोध वा गाण्डीवधनुष के बाणों से अनृण हूंगा अब मैं तेरहवर्ष के इकट्ठे कियेहुए दुःखों को त्यागूंगा ४२ युद्ध में कर्ण को मारकर जैसे कि इन्द्र ने सम्बर दैत्य को मारा था उसी प्रकार हे केशवजी ! अब युद्ध में कर्ण के मरनेपर युद्ध में अभीष्ट चाहनेवाले मित्र सोमकों के महारथीकार को प्राप्तहुआ मानो हे माधवजी ! अब मेरी और सात्यकी की कैसी प्रीति ४३ । ४४ होगी और कर्ण के मरने वा मेरी विजय होनेपर कैसी प्रसन्नता होगी मैं युद्धमें उसके महारथी पुत्रसमेत कर्णको मारकर ४५ भीमसेन, नकुल, सहदेव और सात्यकीको प्रसन्नकरूंगा हे माधवजी ! अब मैं युद्ध में कर्णको मारकर धृष्टद्युम्न शिखण्डी और पाञ्चालों की अनृणता को पाऊंगा ४६ । ४७ अब युद्ध में क्रोधयुक्त कौरवों से युद्ध करनेवाले और युद्ध में कर्ण के मारनेवाले अर्जुन को देखो इसके पीछे मैं अपनी प्रशंसा आपके सम्मुख करूंगा ४८ इस पृथ्वीपर धनुर्वेदविद्या में आज मेरे समान कोई नहीं है और पराक्रममें भी मेरे समान कौन होसक्ताहै न मेरे समान कोई क्षमावान् है

और इसी प्रकार क्रोध में भी मेरे समान मैंहीं हूं ४६ मैं धनुषधारी अपने भुजाओं के बलसे इकट्ठे होनेवाले देवता असुर और मनुष्यआदि जीवों को पराजय करसक्ता हूं मेरे पराक्रम और पुरुषार्थको अद्वितीय जानो ५० मैं अकेलाही बाणरूप अग्नि रखनेवाले गाण्डीव धनुषसे सब कौरव और बाह्लीकोंको विजयकरके बड़े हठ से समूहोंसमेत इसरीति से भस्म करसक्ताहूं जैसे कि हिमऋतु के अन्त होनेपर सूखे वनको अग्नि भस्म करदेताहै ५१ मेरे हाथ से पृषत्क नाम बाण वर्तमान हैं और अब यह धनुष भी बाणों समेत मण्डलाकार है और मेरे दोनों चरण रथ और ध्वजा से युक्त हैं ऐसी दशा में मुझ युद्ध में वर्तमान से युद्ध करके कौन विजय पासक्ताहै ५२ वह शत्रुओंका मारनेवाला रक्तनेत्र अद्वितीय वीर अर्जुन ऐसा कहकर भीमसेन के छुटाने का अभिलाषी और कर्ण के शरीर से उसके शिर के काटने का उत्सुक शीघ्रही युद्धभूमि में गया ॥ ५३ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वण्यर्जुनयुद्धोत्सुकेपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे तात ! इसके पीछे युद्ध के निमित्त अर्जुन के जानेपर वहां पाण्डव सृञ्जय और मेरे शूरवीरों का महाभयकारी कर्ण के सम्मुख होनेवाला वह युद्ध कैसा हुआ १ सञ्जय बोले कि बड़े ध्वजाधारी बहुमूल्य सामानों से अलंकृत भेरी के शब्द से ऊंचामुख रखनेवाली सम्मुख आईहुई उनकी सेना ऐसी गर्जी कि जैसे वर्षाऋतु में बादलों के समूह गर्जनाकरते हैं बड़े हाथीरूप बादलों से व्याप्त अस्त्ररूपी जल से पूर्ण बाजे वा रथ की नेमी और क्षुद्रघण्टिकाओं से शब्दायमान सुवर्णजटित अस्त्ररूप बिजली रखनेवाला बाण खड्ग नाराच आदि अस्त्रों की धाराओं से युक्त २ । ३ भयानक वेगवान् रुधिरप्रवाह से बहनेवाला खड्गों से व्याकुल क्षत्रियों का मारनेवाला निर्दय और ऋतु के विनाही अप्रियवर्षाका करनेवाला प्रजानाशक बादल उत्पन्नहुआ ४ फिर बहुत से मिले हुए रथ उस अकेले रथीको घेरकर मृत्यु के पास पहुँचातेथे उसी प्रकार एक उत्तमरथी एक २ अकेले रथी को और कोई २ अकेला रथी भी बहुत से रथियों को मारता था ५ और किसी रथी ने कितनेही सारथी घोड़ोंसमेत रथों को मृत्युवश किया और कितनेही ने एक २ हाथी के द्वारा बहुत से रथ और घोड़ों को मृत्यु के मुख में डाला ६ अर्जुन ने बाणों के समूहों से सब शत्रुओं को घोड़े

रथ और सारथियों समेत यमपुर को भेजा और सवारों समेत घोड़े और पदातियों के समूहों को भी मारा ७ कृपाचार्य और शिखण्डी युद्ध में सम्मुख हुए सात्यकी दुर्योधन के सम्मुख गया श्रुत अश्वत्थामा के साथ और युधामन्यु चित्रसेन के साथ में युद्ध करनेलगा ८ फिर रथी सञ्जय और उत्तमौजा कर्ण के पुत्र सुषेणके सम्मुख हुआ और सहदेव राजागान्धार के सम्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि क्षुधा से पीड़ित सिंह बड़े बैल की ओर दौड़ता है नकुल के पुत्र शतानीक ने कर्ण के पुत्रको सात्यकी ने वृषसेन को बाणों के समूहों से घायलकिया और बड़े शूरवीर कर्ण के पुत्र ने बाणों की अतिवर्षा से पाञ्चालदेशीय को घायल किया ९।१० रथियों में श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले माद्रीनन्दन नकुल ने कृतवर्मा को मोहितकिया और पाञ्चाल देशियों के राजा सेनापति धृष्टद्युम्न ने सब सेना समेत कर्ण को घायल किया हे भरतवंशिन् ! दुश्शासन और भरतवंशियों की सेना और संसप्तकोंकी वृद्धिमान् सेनाने युद्धमें शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ असह्य वेगवाले भयकारी रूपवाले भीमसेनको मोहित किया ११। १२ वहां इस प्रकारसे घायल शूरवीर उत्तमौजा ने बड़े हठ करके कर्ण के पुत्र को मारा और उसका शिर पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करता पृथ्वीपर गिरपड़ा १३ तब पीड्यमानरूप कर्ण ने सुषेण के शिर को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर क्रोधयुक्त हो पृथ्वीपर उसके घोड़े रथ और ध्वजा को अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से काटा १४ फिर उस उत्तमौजाने भी अपने प्रकाशित खड्ग से कर्ण को पीड्यमान किया तदनन्तर वह कृपाचार्य के पीछे चलनेवालोंको मारकर शिखण्डीके रथपर सवारहुआ १५ फिर रथारूढ़ शिखण्डीने रथसेरहित कृपाचार्यको देखकर बाणों से घायल करना नहीं चाहा फिर अश्वत्थामाने कृपाचार्य को चारों ओर से आड़ में करके ऐसे छुटाया जैसे कि कीचमें फँसीहुई गौं को निकालते हैं १६ वायु के पुत्र सुवर्णमयी कवचवाले भीमसेनने आपके पुत्रों की सब सेना को अपने तीक्ष्ण बाणों से ऐसे सन्तप्त किया जैसे कि उष्णऋतु में आकाश में वर्तमान सूर्य सबको सन्तप्त करदेता है ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणि संकुलयुद्धेषट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे कठिन युद्ध में बहुत से शत्रुओं से घिराहुआ

अकेला भीमसेन उस युद्ध में अपने सारथी से यह वचन बोला कि अब तुम दुर्योधन की सेना में चलो १ हे सारथे! तुम घोड़ोंके द्वारा बड़ीशीघ्रता से चलो मैं इन धृतराष्ट्र के पुत्रों को यमपुर पहुँचाऊंगा उसकी आज्ञा पातेही वह बड़ा वेगवान् सारथी आपके पुत्र की सेनामें भीमसेनको ले पहुँचा २ जिधर से कि भीमसेनने उस सेनामें जाना चाहा वहां दूसरे कौरव रथ, हाथी, घोड़े और पत्तियों समेत उसके सम्मुखगये ३ और चारोंओर से भीमसेन के बड़े दृढ़रथ को अपने बाणों के समूहोंसे घायलकिया तब भीमसेनने अपने सुनहरी पुङ्खवाले बाणोंसे उन सबके छोड़ेहुए आतेहुए बाणोंको काटा ४ भीमसेन के बाणोंसे टूटेहुए वह सुनहरी पुङ्खवाले बाण दो२ चार२ खण्ड होकर गिरपड़े हे राजन्! इसके पीछे उत्तम २ राजाओं के मध्य में भीमसेन के हाथ से मारेहुए हाथी, घोड़े, रथ और शूरलोगों के ५ घोर शब्द ऐसे प्रकटहुए जैसे कि वज्र से टूटेहुए पर्वतोंके शब्द होते हैं भीमसेन के उत्तम बाणजालों से घायलहुए उत्तम २ राजाओंने ६ युद्ध में भीमसेन के ऊपर चारोंओर से ऐसे चढ़ाईकरी जैसे कि फूलके निमित्त पक्षी लोग वृक्षपर चढ़ाई करते हैं इसके पीछे आप की सेना के सम्मुख जानेपर उस अत्यन्त वेगवान् भीमसेन ने अपने वेगको ऐसा प्रकट किया ७ जैसे कि प्रलय-काल में सबके मारने का अभिलाषी दण्डधारी जीवों का नाशक काल जीवों को मारता है तब आपके सब शूरवीर युद्ध में उस वेगवान् के वेगके सहनेको ऐसे समर्थ नहीं हुए ८ जैसे कि समय पर सबके भक्षण करनेवाले कालके वेग को सब सृष्टि के जीव नहीं सहसक्ते हैं हे भरतवंशिन्! इसके पीछे भरतवंशियों की सेना युद्ध में उस महात्मा भीमसेन के हाथ से भस्मीभूत ९ भयभीत और महाघायल होकर चारों दिशाओं में ऐसे विह्वल होकर भागी जैसे कि वायु से बादलों के समूह पलायमान होते हैं इसके पीछे बुद्धिमान् भीमसेन प्रसन्न होकर सारथी से फिर बोले १० हे सारथे! तुम अपने और दूसरों के शूरवीरों के भिड़े और गिरते हुए रथ और ध्वजाओं को जानो मैं युद्ध करताहुआ कुछ भी नहीं जानता हूं क्योंकि मैं भ्रान्ति से कहीं अपनी सेना कोही पृषत्क नाम बाणों से नहीं छांटूं ११ हे विशोक! सब ओर से शत्रुओं को देखकर मेरा रथ ध्वजा की नोक को अधिक कम्पायमान करता है विदित होता है कि राजा रोग में ग्रसित होगयाहै जो अबतक अर्जुन नहीं आया हे सूत! मैंने बड़े २ कष्टों को पाया है

हे सारथे ! यह बड़ा दुःख है जो धर्मराज मुझ को शत्रुओं के मध्य में छोड़कर चलागया अब मैं उसको वा अर्जुन को जीवता नहीं जानता हूं मुझको यही बड़ाकष्ट है १२ । १३ सो मैं प्रसन्नचित्त उस बड़ी साहसी शत्रुओं की सेना को नाश करूंगा इससे अब मैं युद्धभूमि में सम्मुख आनेवाली सेनाको मारकर तुम समेत प्रसन्न होऊंगा १४ हे सूत ! रथमें शायकों के सब तूणीरों को देखकर और यह जानकर कहो कि शायक कितने बचे हैं और जो२ शायक बचे हैं वह किस२ प्रकारके और संख्या में कितने २ हैं १५ विशोक बोला हे वीर ! मार्गण नाम बाणों की संख्या तो साठहज़ार है और क्षुर वा भल्लोंकी संख्या दशहज़ारहै और हे वीर, पाण्डव ! नाराचों की संख्या दो हज़ार है और प्रदर नाम बाणों की संख्या तीनहज़ारहै १६ इतने शस्त्र वर्तमानहैं जिनको छः बैलों से युक्त छकड़ा भी न लेचले हे बुद्धिमन् ! शस्त्रोंको छोड़ो और हज़ारों गदा खड्ग वा भुजारूपी धन आप के पास वर्तमान हैं १७ प्रास, मुद्गर, शक्ति और तोमर भी हैं तुम शस्त्रोंकी न्यूनता और खर्चहोने का भय मत करो १८ फिर भीमसेन के चलाये हुए राजाओं के छेदनेवाले बड़े वेगवान् बाणों से गुप्त होनेवाले युद्ध में घोर रूप छिपीहुई सूर्यवाली संसारकी मृत्यु के समान इस युद्धभूमि को देखो १९ हे सूत ! अब राजाओं के बालकों तकको भी यह मालूम होगा कि अकेला भीम-सेन युद्ध में डूबगया या उसने कौरवों को विजय किया २० अब सब कौरव लोग मेरे ऊपर चढ़ाई करें और वृद्धों से बालक पर्यन्त सबलोग मेरा यश बखान करें मैं अकेलाही उन सबको मारूंगा अथवा वह सब मिलकर मुझ भीमसेन को पीड़ित करें २१ जो देवता कि मेरे उत्तम कर्म के उपदेश करनेवाले हैं वह सब केवल मेरी इतनी साधना करें कि वह शत्रुओं का मारनेवाला अर्जुन मेरे ध्यान से शीघ्र ऐसे आजाय जैसे कि यज्ञ में बुलायाहुआ इन्द्र आता है २२ भरतवंशियों की इस सेना को छिन्न भिन्न देखो यह राजालोग किस हेतु से भागते हैं मुझे विदित होता है कि वह बुद्धिमान् नरोत्तम अर्जुन शीघ्रता से इस सेना को ढकता चलाआता है २३ हे विशोक ! युद्धमें ध्वजाओं को और भागतेहुए हाथी घोड़े और पत्तियों के समूहों को देखो हे सूत ! बाण और शक्ति से घायल उन रथियों को और फैलेहुए रथों को देखो २४ यह कौरवीय सेना भी महाघायल और वज्र के समान वेगयुक्त सुनहरी परवाले अर्जुन के बाणों से

बराबर गुप्त २५ यह रथ घोड़े और हाथी पदातियों के समूहों को मर्दन करतेहुए भागते हैं और सब कौरवलोग भी महामोहितहुए ऐसे भागे जाते हैं जैसे कि वन-दाह से भयभीत होकर हाथी भागते हैं २६ हे विशोक! युद्ध में हाहाकार करने-वाले गजराज बड़े २ भयानक शब्दों को करते हैं २७ विशोक बोला कि हे भीमसेन! क्रोधयुक्त अर्जुन के हाथ से खैंचेहुए गाण्डीव धनुष के घोरशब्दों को क्या आप नहीं सुनते हो क्या आप के दोनों कर्णों में बधिरता तो नहीं आ-गई २८ हे पाण्डव! अब आप के सब मनोरथ वृद्धियुक्त हैं यह वानर हनुमान्जी हाथियों की सेना में दिखाई देते हैं और धनुष की प्रत्यञ्चा को ऐसे चेष्टाकरती देखो जैसे कि नीले बादल से निकलतीहुई प्रकाशमान बिजली चमकती है २९ यह वानर अर्जुन की ध्वजा के नोकपर चढ़ाहुआ शत्रुओं के समूहोंको भयभीत करताहुआ सब ओर से दीखता है मैं आप उसको युद्ध में देखकर भयभीत होता हूं ३० और यह अर्जुन का विचित्र मुकुट भी अत्यन्त शोभा दे रहा है ३१ उसके पार्श्व में महाभयानक श्वेत बादल के रूप महाशब्दायमान देवदत्तनाम शङ्ख को देखो और हे वीर! बागडोर हाथ में लिये ३२ उन श्रीकृष्णजी के पार्श्ववर्ती सूर्यके समान प्रकाशमान वज्रनाभ चारोंओर छुराओं से जटित बड़े यश के बढ़ाने-वाले सदैव यादवों से पूजित केशवजी के चक्र को देखो ३३ सीधे वृक्षों के समान बड़े २ हाथियों की यह सूंड़ें क्षुरों से कटीहुई पृथ्वीपर गिरती हैं और उस अर्जुन के हाथ के बाणों से सवारों समेत हाथी ऐसे मारेगये जैसे कि वज्रों से पर्वत चूर्ण कियेजाते हैं ३४ इसी प्रकार श्रीकृष्णजी के उस महा उत्तम चन्द्रमा के समान वर्णवाले बड़ों के योग्य पाञ्चजन्य शङ्ख को देखो और हृदय में शोभा-यमान कौस्तुभमणि और वैजयन्तीमाला को भी देखो ३५ निश्चय करके रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन शत्रुओं की सेना को भगाता श्वेत बादलों के रङ्ग श्रीकृष्णजी से युक्त बड़ों के योग्य घोड़ोंके द्वारा सम्मुख आताहै ३६ देवराजके समान तेजस्वी आपके छोटे भाईके शायकों से फटेहुए रथ घोड़े और पत्तियों के समूहोंको देखो कि यह ऐसे गिररहे हैं जैसे कि गरुड़जी के परोंकी वायुसे महावन गिरते हैं ३७ युद्ध में अर्जुनके हाथ से घोड़े और सारथियों समेत मारेहुए इन चार सौ रथों को देखो और बड़े बाणों से मरेहुए इन सात सौ हाथी पदाती अश्व सवार और अनेक रथियों को देखो ३८ यह महाबली अर्जुन कौरवों को मारता हुआ तेरे

समक्ष में ऐसे आताहै जैसे कि बड़ा चित्रग्रह आताहै तुम अभीष्टसिद्ध हो आपके सब शत्रु मारेगये आप का बल पराक्रम और आयुर्दा चिरकाल पर्यन्त वृद्धि को पावे ३६ भीमसेन बोले हे विशोक,सारथे! मैं अत्यन्त प्रसन्न होकर तुझको चौदह गांव सौ दासी और बीस रथ देताहूं जो अर्जुन के विषयकी प्रसन्नतावाली बातें मुझ से कहता है ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिभीमसेनाविशोकसंवादेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि युद्धमें सिंहनाद और रथके शब्दको सुनकर अर्जुन गोविन्द जीसे बोला कि हे गोविन्दजी! शीघ्रही आप घोड़ों को हांकिये १ गोविन्दजी अर्जुन के वचन को सुनकर कहनेलगे कि अब मैं वहींपर शीघ्र पहुँचाता हूं जहां पर कि भीमसेन नियत है २ तुषार और शङ्ख के रङ्गवाले सुवर्ण मोती और मणि-जटित जालों से अलंकृत घोड़ों के द्वारा जम्भ के मारने के इच्छावान् वज्रधारी क्रोधयुक्त इन्द्र जैसे जाता है उसीप्रकार जानेवाले उस अर्जुनको ३ रथ घोड़े हाथी पदातियों के समूह और बाणनेमी व। घोड़ों के शब्दों से पृथ्वी और दिशाओं को शब्दायमान करतेहुए क्रोधरूप नरोत्तम ने सम्मुख पाया ४ हे श्रेष्ठ! उन्हों का और अर्जुन का युद्ध शरीर और प्राणों के पापों का हरनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि त्रिलोकी के निमित्त महाविजयी विष्णुजी और असुरों का हुआ था ५ अकेले अर्जुन ने उन्हों के चलायेहुए सब छोटे बड़े शस्त्रों को काटकर क्षुर अर्द्धचन्द्र और तीक्ष्ण भल्लों से उनके शिर और भुजाओं को अनेक प्रकारसे काटा ६ चित्र विचित्रवाले व्यजन, ध्वजा,घोड़े, रथ,हाथी और पत्तियों के समूहों को भी काटा इसके पीछे वह अनेक प्रकार के रूपान्तर होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायु के वेग से वन गिरपड़ते हैं ७ फिर सुनहरी जालयुक्त वैजयन्ती ध्वजाओं समेत शूरवीरों से अलंकृत बड़े हाथी सुनहरी पुङ्ख बाणों से चित्रित प्रकाशमान पर्वतों के समान प्रकाशमान हुए ८ अर्जुन इन्द्र के वज्रकी समान उत्तम बाणों से हाथी घोड़े और रथोंको मारकर कर्ण के मारने की इच्छा से इसरीति से शीघ्र चला जैसे कि पूर्व समय में राजा बलिके मारने में इन्द्र चलाथा ६ हे शत्रुसंहारी! उसके पीछे वह महाबाहु पुरुषोत्तम ऐसे आपहुँचा जैसे कि समुद्र में मगर घुस आता है १० हे राजन्! रथ और पत्तियों से संयुक्त अनेक हाथी घोड़े और सवारों

समेत बड़े प्रसन्नचित्त आपके शूरवीर इस पाण्डव के सम्मुख गये अर्जुनकी ओर दौड़नेवाले उन लोगों के ऐसे बड़े शब्द हुए जैसे कि अपनी उन्मत्तता में आनेवाले समुद्र के शब्द होते हैं ११। १२ फिर व्याघ्रों के समान वह सब महारथी युद्धमें अपने प्राणोंकी आशाको त्यागकर उस पुरुषोत्तमके सम्मुखगये वहां अर्जुन ने उन बाणोंकी वर्षा करतेहुए आनेवाले शूरवीरों की सेना को ऐसा छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि बड़ा वायु बादलोंको तिर्र बिर्र करदेता है १३।१४ उन प्रहार करनेवाले बड़े धनुषधारियों ने रथसमूहों समेत उसके सम्मुख जाकर तीक्ष्णबाणों से अर्जुनको घायल किया १५ इसके पीछे अर्जुन ने विशिखोंसे हज़ारों रथ हाथी और घोड़ों को यमलोक में भेजा १६ युद्धमें अर्जुन के धनुष के निकलेहुए बाणों से घायल वह महारथी भय के उत्पन्नहोनेपर जहां तहां छिपगये १७ अर्जुनने उनके मध्यमें उपाय करनेवाले चार सौ बड़े २ महारथी शूरवीरोंको बाणोंके द्वारा यमलोक में पहुँचाया १८ नानाप्रकारके रूपवाले युद्ध में तीक्ष्णबाणों से घायल होकर वह शूरवीर अर्जुन के सम्मुख जाकर दशोंदिशाओं को भागे १९ युद्ध में से भागनेवाले उनलोगोंके ऐसे महाशब्द हुए जैसे कि पर्वतको पाकर फटनेवाले बड़े नदी के प्रवाह के शब्द होते हैं २० हे श्रेष्ठ! फिर अर्जुन बाणों से उस सेना को खूब छेदकर और भगाकर कर्ण के सम्मुखगया २१ वहां उस शत्रुजेता अर्जुन का ऐसा महाशब्द हुआ जैसे कि पूर्वसमयमें सर्पके खानेको आनेवाले गरुड़का शब्द होता है २२ अर्जुन के देखनेका अभिलाषी महाबली भीमसेन उस अर्जुन के शब्द को सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ २३ हे महाराज! उस प्रतापवान् भीमसेन ने आतेहुए अर्जुन को सुनकर अपने प्राणों की आशा छोड़कर आप की सेना का मर्दन किया २४ पराक्रम में वायु के समान शीघ्रचलने में वायु की तीव्रता के सदृश वायु का पुत्र प्रतापी भीमसेन वायुके समान घूमने लगा २५ हे महाराज, राजन्, धृतराष्ट्र! उससे घायल और पीड़ित होकर आपकी सेना ऐसे गिरपड़ी जैसे कि टूटीहुई नौका सागर में गिरती है २६ फिर अपनी हस्तलाघवता को दिखाते सब को यमलोक में पहुँचाते हुए उस भीमसेन ने वारंवार उग्र बाणों की वर्षा करके उस सेना को काटा २७ हे भरतवंशिन्! उस युद्ध में महाबली भीमसेन के अद्भुत आश्चर्यकारी पराक्रम को देखकर सबलोग ऐसे चक्कर मारने लगे जैसे कि प्रलयकाल में काल के पराक्रम को देखकर सब भय-

भीत होकर फिरते हैं २८ हे भरतवंशिन्! इस प्रकार भीमसेन के हाथ से पीड्यमान भयानक पराक्रमवाले बड़े २ शूरवीरों को देखकर राजा दुर्योधन इस वचन को बोला २९ कि हे महाबली, शूरवीरलोगो! तुम भीमसेन को मारो ३० इसी भीमसेन के मरनेपर मैं सब पाण्डवों की सेना को भी मृतकरूप ही मानता हूं तब तो सब राजाओं ने आपके पुत्र की आज्ञा को अङ्गीकार किया ३१ और भीमसेन को चारोंओर से बाणों की वर्षा से आच्छादित करदिया हे राजन्! बहुत से हाथी घोड़े और विजयाभिलाषी रथारूढ़ मनुष्यों ने ३२ भीमसेन को घेरलिया तब उन शूरों से चारोंओर को घिराहुआ वह पराक्रमी भीमसेन ३३ महाशोभायमान हुआ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! जैसे कि नक्षत्रों में शोभायमान चन्द्रमा पूर्णमासी के दिन अपने मण्डल से युक्तहोकर शोभित होता है ३४ उसी प्रकार वह दर्शनीय नरोत्तम भीमसेन भी युद्ध में शोभायमानहुआ हे महाराज! जैसा अर्जुन है वैसाही यह भी है इस में भेद नहीं है ३५ क्रोध से रक्तनेत्र भीमसेन के मारने के उत्सुक उन सब शूरवीर राजाओं ने बाणोंकी वर्षा उसके ऊपरकरी ३६ भीमसेन टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे उस बड़ी सेनाको चीरकर युद्धभूमि से ऐसे निकलगया जैसे कि जल की मछली जल के जाल में से निकल जाती है ३७। ३८ हे भरतवंशिन्! भीमसेन ने मुख न मोड़नेवाले दशहज़ार हाथी दो लाख दो सौ मनुष्य पांचहज़ार घोड़े और सौ रथियों को मारकर रुधिर के प्रवाहवाली नदी को जारी किया ३९ जिसमें रुधिररूप जल रथरूप भ्रमर चक्र हाथीरूप ग्राहोंसे भयानक मनुष्यरूप मछली घोड़ेरूप नक्र और बालरूप शैवल और शाद्वलथे ४० और बहुतरत्नोंकी हरनेवाली सूंड़कटे हाथियोंसे व्याप्त जङ्घारूप ग्राहोंसे भयानक मज्जारूपी पङ्क और शिररूप पत्थरोंसे संयुक्तथी ४१ धनुष, चाबुक, तूणीर, गदा, परिघ, ध्वजा, छत्ररूपी हंसों से युक्त और उष्णीष अर्थात् पगड़ीरूप झागवाली ४२ हाररूपी कमलों के वन रखनेवाली और पृथ्वी की धूलिरूप तरङ्गों की रखनेवाली युद्ध में उत्तम पुरुषों के चलन रखनेवाले पुरुषोंसे सुगमता से पार होनेके योग्य भयभीतों को दुर्गम ४३ शूरवीररूप ग्राहों से पूर्ण युद्ध में पितृलोक की ओर को बहनेवाली थी ऐसी उग्र अद्भुत नदी को इस पुरुषोत्तम भीमसेन नें एक क्षणमात्रही में जारी करदिया ४४ जैसे कि अशुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों से महादुस्तररूप वैतरणी कहाती है उसी प्रकार इसको भी

महाघोर दुःख और भय की करनेवाली कहा ४५ वह रथियोंमें श्रेष्ठ पाण्डव जिस२ ओर होकर निकला उस २ ओर के लाखोंही शूरवीरों को मारा ४६ हे महाराज ! इसरीति से युद्धमें भीमसेन के कियेहुए कर्मको देखकर दुर्योधन शकुनी से यह वचन बोला ४७ कि हे मामाजी ! इस बड़े पराक्रमी भीमसेनको युद्धमें तुम विजयकरो इसके विजय होजाने पर मैं सब पाण्डवीय सेना को विजय किया हुआही मानताहूं ४८ हे महाराज ! इसके अनन्तर भाइयोंसमेत बड़ेभारी युद्ध करने को उत्सुक प्रतापवान् शकुनी चला ४९ उस वीरने युद्ध में भयानक पराक्रमी भीमसेन को पाकर उसको ऐसे रोका जैसे कि समुद्रकी मर्यादा समुद्र को रोकलेती है ५० तीक्ष्णबाणों से रोकाहुआ भीमसेन उसकी ओरको लौटा और शकुनी ने उसके हाथ और छातीपर ५१ सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्णधार नाराचों को चलाया फिर वह कङ्कपक्षसे जटित घोरबाण महात्मा पाण्डव भीमसेन के कवचको काटकर ५२ शरीर में घुसगये फिर युद्धमें अत्यन्त घायल उस भीमसेन ने क्रोधयुक्तहोकर सुवर्ण जटित बाणको ५३ शकुनीके ऊपर चलाया हे राजन् ! शत्रुसन्तापी हस्तलाघवीय महाबली शकुनीने उस आतेहुए घोरबाणको सात खण्ड करदिया ५४ हे राजन् ! उस बाणके पृथ्वी में गिरनेपर क्रोधयुक्त हँसतेहुए भीमसेन ने भल्लसे शकुनीके धनुषको काटा फिर प्रतापवान् शकुनीने उस धनुष को डालकर ५५।५६ वेगसे दूसरे धनुष और सोलह भल्लोंको लेकर उन टेढ़े भल्लों में से दो भल्लों से उसके सारथी को और सात भल्लों से भीमसेन को घायल किया फिर एक से ध्वजा को और दो भल्लों से छत्र को काटकर ५७।५८ सौबल के पुत्र शकुनी ने चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेन ने युद्ध में सुनहरी दण्डवाली शक्ति को फेंका ५९ भीमसेन की भुजा से छोड़ीहुई वह सर्प की जिह्वा के समान चञ्चल शक्ति युद्धमें शीघ्रही महात्मा शकुनी के ऊपर गिरी ६० इसके पीछे क्रोधरूप शकुनी ने उस सुवर्ण से अलंकृत शक्ति को लेकर ६१ भीमसेन के ऊपर फेंका तब वह महात्मा पाण्डव की वामभुजा को छेदकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ी ६२ जैसे कि आकाश से गिरी हुई बिजली होती है इसके पीछे धृतराष्ट्र के लड़कों ने चारों ओर से बड़ा शब्द किया ६३ फिर उन वीरों के सिंहनाद को न सहकर बड़े भारी अलंकृत धनुष को लेकर ६४ अपने जीवन की आशा को त्याग करके युद्ध में

एक मुहूर्त मेंही शकुनी की सेनाको शायकों से ढक दिया ६५ हे राजन्! फिर शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी भीमसेन ने उसको चारों घोड़ों समेत सारथी को मारकर भल्ल से उसकी ध्वजा को भी काटा ६६ फिर यह नरोत्तम भी शीघ्रता करके मृतक घोड़ों के रथको त्यागकर धनुषको टङ्कार क्रोध से लालनेत्र करके सम्मुख नियत हुआ ६७ और भीमसेन को चारोंओर से बाणों के द्वारा मोहित किया फिर अत्यन्त प्रतापवान् भीमसेनने बड़ेवेगसे उनको निष्फलकरके ६८ धनुषको काटकर तीक्ष्णधारवाले बाणों से महापीड़ित किया पराक्रमी शत्रुसे अत्यन्त घायलहुआ वह शत्रुविजयी शकुनी ६९ कुछ प्राणशेषहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा हे राजन्! इसके पीछे से आपका पुत्र उसको अचेत जानकर ७० भीमसेन के देखतेहुए युद्धभूमि से रथकी सवारी में बैठाकर हटालेगया फिर उस नरोत्तम के रथपर सवार होने और भीमसेन को बड़ाभय उत्पन्न होनेपर और धनुषधारी भीमसेनके हाथसे शकुनीके विजय होनेपर धृतराष्ट्रके पुत्र मुख मोड़ २ कर भयभीतहोकर दशों दिशाओंको भागे ७१।७२ बड़ेभयसे पूर्ण अपने मामा का चाहनेवाला आपका पुत्र दुर्योधन शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा हटगया ७३ हे भरतवंशिन्! सेना के सबलोग राजाको मुख फेरकर हटाहुआ देखकर चारों ओर से द्वैरथियोंको छोड़कर भागे ७४ तब भीमसेन उन घायल भयभीत मुख मोड़कर भागनेवाले धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखकर सैकड़ों बाणोंकी वर्षा करता हुआ वेगसे उन सबके सम्मुख दौड़ा ७५ हे राजन्! भीमसेनके हाथसे घायल चारोंओर से मुख मोड़नेवाले वह धृतराष्ट्रके पुत्र कर्णको पाकर युद्ध में नियत हुए ७६ वह बड़ा पराक्रमी बलवान् कर्ण उनका ऐसे रक्षकहुआ जैसे कि टूटीहुई नौका टापू को पाकर नियत होजाती है ७७ हे पुरुषोत्तम! समय के लौट पौट होनेपर जैसी दशावाली पतवारहोतीहै वैसेही आपके शूरवीर लोगभी पुरुषोत्तम कर्ण को पाकर उसी दशावालेहुए ७८ हे राजन्! वह परस्परमें विश्वासयुक्त अत्यन्तप्रसन्न नियतहुए और मृत्युको हथेलीपर रखकर युद्धके निमित्त गये॥७९॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिभीमसेनयुद्धेऽष्टसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७८॥

उन्नासीवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! तब युद्ध में भीमसेन के हाथ से सेना के पराजय होने पर दुर्योधन ने वा शकुनी ने क्या कहा १ विजय करनेवालों में श्रेष्ठ

कर्ण वा मेरे शूरवीर कृपाचार्य कृतवर्मा अश्वत्थामा और दुश्शासन इन सबने युद्ध में क्या २ कहा २ मैं पाण्डव भीमसेन के पराक्रम को अत्यन्त अद्भुत और अपूर्व मानता हूं कि उस अकेले नेही युद्ध में मेरे सब शूरवीरों से युद्ध किया ३ और राधा के पुत्र शत्रुहन्ता कर्ण ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सब शूरवीरों समेत कौरवों को कल्याण रक्षास्थिरता वा जीवन की आशा को नियत किया ४ हे सञ्जय ! बड़े तेजस्वी भीमसेन के हाथ से छिन्नभिन्न होजानेवाली उस सेना को देखकर ५ अधिरथी कर्ण मेरे पराजित पुत्र और बड़े महारथी राजाओं ने युद्ध में क्या २ किया यह सब मुझ से कहो क्योंकि तुम बड़े चतुर और सावधान हो ६ सञ्जय बोले कि हे महाराज ! प्रतापवान् कर्ण ने तीसरे पाश में भीमसेन के देखतेहुए सब सोमकों को मारा ७ और भीमसेन ने भी दुर्योधन की बड़ी पराक्रमी सेना को सब के देखतेहुए मारा इसके पीछे कर्ण ने शल्य से कहा कि मुझ को पाञ्चालों के समीप पहुँचाओ ८ अर्थात् बुद्धिमान् पराक्रमी भीमसेनके हाथ से सेना को भागाहुआ देखकर कर्ण ने अपने सारथी शल्य से कहा कि मुझ को पाञ्चालों के सम्मुख ले चलो ९ इसके पीछे बड़े बलवान् मद्रदेश के राजा शल्य ने बड़े शीघ्रगामी श्वेतघोड़ों को चन्देरी पाञ्चाल और कारुष्य देशियों के सम्मुख पहुँचाया १० शत्रु की सेना के मर्दन करनेवाले शल्य ने उस बड़ी सेना में प्रवेश करके घोड़ों को वहां २ पर चलाया जहां २ उस सेनापति कर्ण ने चाहा था ११ हे राजन् ! पाण्डव और पाञ्चाल उस बादल के रूप व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुए रथ को देखकर भयभीत हुए १२ इसके अनन्तर उस बड़े युद्ध में उस रथ का शब्द बादल के गर्जने के समान ऐसा प्रकट हुआ जैसे कि फटतेहुए पर्वत का शब्द होता है १३ इसके पीछे कर्ण ने कानतक खैंचेहुए धनुषके छोड़ेहुए बाण समूहों से पाण्डवीय सेनाके हज़ारों मनुष्योंको मारा १४ पाण्डवों के महारथी बड़े २ धनुषधारियों ने युद्ध में ऐसे कर्म करनेवाले उस अजेय कर्ण को घेरलिया १५ शिखण्डी, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव द्रौपदी के पुत्र और सात्यकी १६ बाणों की वर्षा से कर्ण के मारने के अभिलाषी इन सब शूरवीरों ने जब कर्ण को घेरलिया तब नरोत्तम शूर सात्यकी ने तीक्ष्णधारवाले बीस बाणोंसे कर्णको युद्ध में जत्रुस्थानपर घायल किया १७।१८ शिखण्डी ने पचीस बाणों से धृष्टद्युम्न ने सात बाणों से द्रौपदी के पुत्रों ने

चौंसठ बाणों से सहदेव ने सात बाणों से नकुल ने सौ बाणों से उस कर्ण को पीड्यमान किया १९ और बड़े पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने युद्ध में टेढ़े पर्व-वाले नब्बे बाणों से कर्ण को जत्रुआदि अङ्गों पर पीड़ित किया २० इसके पीछे बड़े बली कर्ण ने बहुत हँसकर अपने धनुष को टङ्कारकर बाणों को छोड़ा २१ हे भरतर्षभ ! कर्ण ने उन सबको पांच २ बाणों से व्यथित किया २२ और सात्यकी के धनुष ध्वजा को काटकर नौ बाणों से उसको छातीपर घायल किया फिर उस क्रोधयुक्त ने तीनसौ बाणों से भीमसेन को पीड्यमान किया २३ और भल्ल से सहदेव की ध्वजा को काट उस शत्रुसन्तापी ने तीन बाणों से उसके सारथी को मारा २४ और एक पलमात्र में ही द्रौपदी के पुत्रों को विरथ करदिया यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ २५ टेढ़े पर्ववाले बाणों से उन सबका मुख मोड़कर पाञ्चाल और चन्देरीदेशके बड़े २ महारथी शूरवीरोंको मारा २६ हे राजन् ! युद्धमें घायल उन चन्देरीदेशियों ने अकेले कर्ण के सम्मुख जाकर उसको बाणों के समूहोंसे घायल किया २७ हे महाराज ! जो अकेले प्रतापी कर्णने युद्ध में बड़ी सामर्थ्य से उपाय करनेवाले धनुषधारी शूर युद्धकर्ता पाण्डवों को बाणों से रोका वहां महात्मा कर्ण की हस्तलाघवता से २८ । २९ सिद्ध चारणों समेत सब देवता प्रसन्न हुए और बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों ने उस महारथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ कर्ण की प्रशंसा करी हे महाराज ! इसके पीछे कर्ण ने शत्रुओं की सेना का ऐसा नाश करदिया ३० । ३१ जैसे कि उष्ण ऋतु में बड़ा वृद्धिमान् प्रचण्डअग्नि वन को जलाता है उस प्रचण्डअग्नि के समान कर्ण से घायल हुए वह सब पाण्डव महारथी कर्ण को देखकर इधर उधर भयभीत होकर भागे ३२ । ३३ वहां उस बड़े युद्ध में कर्ण के उत्तम धनुष से निकले हुए तीक्ष्ण शायकों से घायल पाञ्चाललोगों के बड़े भारी शब्द हुए उन शब्दों से पाण्डवों की बड़ी सेना अत्यन्त भयभीत हुई ३४ । ३५ वहां शत्रुओं के मनुष्यों ने युद्ध में अकेले कर्ण कोही शूरवीर युद्धकर्ता माना तब शत्रुओं के पीड़ा करनेवाले कर्ण ने फिर भी अद्भुत कर्म किया कि ३६ कोई पाण्डव उसकी ओर देखने को भी समर्थ नहीं हुआ जैसे कि जल का प्रवाह उत्तम पर्व को पाकर रुकजाता है ३७ उसी प्रकार वह पाण्डवीय सेना कर्ण को पाकर छिन्नभिन्न होगई हे राजन् ! युद्ध में महाबाहु कर्ण भी निर्धूम अग्नि के

समान प्रकाशमान ३८ पाण्डवों की बड़ी सेना को भस्म करता हुआ नियत होकर उस शूरवीर ने युद्ध करनेवाले वीरों के कुण्डल धारण कियेहुए ३९ शिरों को और भुजाओं को बड़ी तीव्रता से अपने बाणों के द्वारा काटडाला हे राजन्! युद्ध व्रतधारी कर्ण ने हाथीदाँत के कब्जा रखनेवाले खड्ग ध्वजा और शक्तियों को घोड़े हाथी ४० वा अनेक प्रकार के रथ, पताका, व्यजन अक्षयुग, योक्त और बहुत रूप के चक्रों को ४१ बहुत प्रकारों से काटा हे भरतवंशिन्! वहां कर्ण के हाथ से मारेहुए हाथी घोड़ों के कारण से ४२ वह पृथ्वी रुधिर मांस की पङ्कवाली होकर महाअगम्य होगई मृतक घोड़े पदाती रथ और हाथियों के हेतु से पृथ्वी की समता और असमता नहीं जानीगई अपने और दूसरों के शूरवीर भी परस्पर में नहीं जानेगये ४३। ४४ हे महाराज! कर्ण के अस्त्र और बाणों से घोर अन्धकार होजानेपर उसके धनुष से छूटेहुए सुवर्णजटित बाणों से ४५ पाण्डवों के महारथी ढकगये और वह सब कर्ण से लड़नेवाले पाण्डवों के महारथी वारंवार कर्ण से पराजित हुए और जैसे कि वन में मृगों के समूहों को सिंह भगाताहै ४६।४७ उसी प्रकार पाञ्चालों के उत्तमरथी और शत्रुओं के मनुष्यों को भगाते और युद्ध में शूरवीरों को डराते बड़े यशस्वी कर्ण ने ४८ उस सेना को ऐसे भगाया जैसे कि भेड़िया पशुओं के समूहों को भगाता है फिर बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्र पाण्डवीय सेना को मुख मुड़ाहुआ देखकर ४९ भयानक शब्दों को करतेहुए वहां आये और अत्यन्त प्रसन्नचित्त दुर्योधनने ५० अनेकप्रकार के सब बाजों को बजवाया वहांपर पराजितहुए नरोत्तम पाञ्चालदेशीय भी ५१ शरीर की आशा छोड़कर शूरों के समान लौटे हे महाराज! फिर कर्ण ने उन लौटेहुए शूरवीरोंको ५२ बहुत प्रकार से पराजय किया उस युद्ध में क्रोधयुक्त कर्ण के बाणों से पाञ्चालों के बीस रथी ५३ और सैकड़ों चन्देरी के वासी मारेगये फिर वह शत्रुसन्तापी कर्ण रथों को रथ की बैठक और उत्तम घोड़ों से रहित करके ५४ हाथियों के कन्धों को सवारों से रहित कर पदातियों को भगाता मध्याह्न के सूर्य के समान कठिनता से दर्शन के योग्य ५५ मृत्यु वा काल के समान शरीर को धारणकिये शोभायमान हुआ हे महाराज! इस रीति से शत्रुओं के समूहों को मारनेवाला बड़ा धनुषधारी कर्ण मनुष्य, घोड़े, रथ और हाथियोंको मारकर ऐसे नियत हुआ जैसे कि बड़ा पराक्रमी काल जीवों

के समूहों को मारकर नियत होता है ५६। ५७ इसी प्रकार वह अकेला महारथी सोमकों को मारकर नियतहुआ वहांपर हमने पाञ्चालों के अद्भुत पराक्रम को देखा ५८ कि सेना मुखपर घायल होनेवालों ने भी कर्ण से मुख न मोड़ कर सम्मुखता करी राजा दुर्योधन दुश्शासन वा शार्दूल कृपाचार्य ५९ अश्वत्थामा कृतवर्मा और महाबली शकुनी ने पाण्डवों के हज़ारों मनुष्यों को मारा ६० हे राजेन्द्र! फिर सत्यपराक्रमी और क्रोधयुक्त दोनों भाई कर्णके पुत्रों ने इधर उधर से पाण्डवों की सेना को मारा ६१ वहां बड़ा भारी नाशकारी घोर युद्ध हुआ इसी प्रकार शूरवीर पाण्डव, धृष्टद्युम्न ६२ और अत्यन्त रोपभरे द्रौपदी के पुत्रों ने आपकी सेना को मारा इस प्रकार से जहां तहां स्थानों में पाण्डवी सेना का बहुत नाश हुआ ६३ और युद्ध में बड़े पराक्रमी भीमसेन को पाकर आपके भी शूरों का नाश हुआ ॥ ६४ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेयेकोनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे महाराज! फिर अर्जुन ने चारों प्रकार की सेना को मारके युद्ध में महाक्रोधरूप कर्ण को देखकर १ पृथ्वी को मांस रुधिर मज्जा हाड़ से व्याप्त कर नदी के रूप बनाया जिसमें रुधिर जल वा मांस मज्जा हाड़रूप कीच और मनुष्यों के शिररूप पत्थर और हाथी और घोड़ेरूप किनारे २ शूरवीरों के अस्थिसमूहों से पूर्ण काक और गृध्रों से शब्दायमान छत्ररूप धनुप और नौका से युक्त वीररूप वृक्षों की बहानेवाली ३ धाररूप कमलिनी वा हस्तत्राणरूप उत्तम फेनों की रखनेवाली धनुषबाण और ध्वजा से संयुक्त मनुष्यों के घुटेहुए कपालों से व्याप्त ४ ढाल वा कवचरूप भ्रमणों से युक्त रथरूप नौका से व्याकुल विजयाभिलाषी शूरवीरलोगों को सुखपूर्वक तरने के योग्य और भयभीतों को अत्यन्त अगम्य ५ ऐसी नदी को जारी करके फिर शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अर्जुन ने वासुदेवजी से यह वचन कहा ६ कि हे श्रीकृष्णजी! युद्ध में यह कर्ण की ध्वजा दिखाई देती है और यह भीमसेन आदि महारथी कर्ण से लड़रहे हैं ७ हे जनार्दनजी! कर्ण से भयभीत हो होकर यह पाञ्चाललोग भागते हैं और श्वेतछत्रधारी यह राजा दुर्योधन ८ कर्ण से पराजित हुए पाञ्चालों को भगाता हुआ बड़ा शोभित होरहा है महारथी अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कृपाचार्य ९ यह

सब भी कर्ण से रक्षित होकर राजाकी रक्षा करते हैं वह हम सबसे अवध्य सोमकों को मारेंगे १० और हे श्रीकृष्णजी ! रथवानों में कुशल यह शल्य रथ के ऊपर बैठाहुआ कर्ण के रथ को अत्यन्त शोभित कररहा है ११ वहां मैं चाहता हूं कि आप मेरे रथ को लेचलो मैं युद्ध में कर्ण को मारे विना किसी प्रकार से नहीं लौटूंगा १२ हे जनार्दनजी ! दूसरी दशा में यह कर्ण हमारे देखतेहुए महारथी पाण्डव और सृञ्जयोंका नाश करेगा १३ इसके पीछे केशवजी अर्जुन समेत रथ की सवारी के द्वारा १४ शीघ्रही द्वैरथ युद्ध में बड़े धनुषधारी कर्ण और आपकी सेना के सम्मुख गये महाबाहु श्रीकृष्णजी अर्जुन के कहने से सब पाण्डवीय सेना को रथपर सेही विश्वासयुक्त करतेहुए चले १५ उस शुभकारी युद्ध में अर्जुन के रथ का शब्द ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्र वज्रके समान बड़े जल के वेग का शब्द होता है १६ सत्यपराक्रमी महासाहसी पाण्डव अर्जुन रथ के बड़े शब्दसमेत आपकी सेना को विजय करताहुआ सम्मुख गया १७ मद्र का राजा शल्य श्वेत घोड़ोंसमेत श्रीकृष्णजी के साथ आतेहुए अर्जुन को और उस महात्मा की ध्वजा को देखकर कर्ण से बोला १८ हे कर्ण ! श्वेत घोड़े और श्रीकृष्ण को सारथी रखनेवाला यह द्वैरथ जिसको कि तुम पूछते हो युद्ध में सबको मारताहुआ आता है १९ यह अर्जुन गाण्डीव धनुष को लियेहुए वर्तमान है जो तू इसको मारेगा तब हमारा कल्याण होगा २० हे राधाके पुत्र, कर्ण ! यह अकेला भरतवंशी अर्जुन उत्तम रथियों को मारताहुआ तुमको चाहता चला आता है अब तुम इसके सम्मुख जाओ २१ देखो यह दुर्योधन की सेना शीघ्रता से शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन के भय से चारों ओर अलग २ हुई जाती है २२ अर्जुन सब सेनाओं को छोड़ताहुआ तेरेही निमित्त शीघ्रता करताहै मैं यह मानता और जानताहूं और उसके शरीर से भी विदितहोताहै २३ वह अर्जुन तेरे सिवाय किसी के साथ युद्ध करने का अभिलाषी होकर स्थिर नहीं होता है जोकि भीमसेन के पीड़ित होने से क्रोध में भराहुआ है २४ अत्यन्त घायल और विरथ धर्मराज को वा शिखण्डी, सात्यकी, धृष्टद्युम्न २५ द्रौपदी के पुत्र युधामन्यु, उत्तमौजा और नकुल सहदेव इन दोनों वीर भाइयों को घायल देखकर शत्रुओं का तपानेवाला अकेला रथी अर्जुन अकस्मात् तेरे सम्मुख आता है वह क्रोध से रक्तनेत्र रोष में भरा सब राजाओं के मारने का

अभिलाषी शीघ्रतासे सेनाओंको त्यागताहुआ निस्सन्देह हमारे सम्मुख आता है २६ । २७ हे कर्ण! तुम शीघ्रही उसके सम्मुख चलो तेरे सिवाय इस लोक में दूसरे ऐसे धनुषधारी को नहीं देखता हूं २८ जोकि युद्ध में क्रोधयुक्त अर्जुन को मर्यादा के समान रोककर धारणकरे मैं पीछे और दोनों दायें बायें उसकी रक्षा को नहीं देखता हूं वह अकेलाही तेरे सन्मुख आता है तुम अपने स्थान को देखो २९ । ३० हे राधा के पुत्र ! तुम्हीं युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन को अपने स्वाधीन करनेको समर्थहो यह तेराही भाररूप कार्य है तू अर्जुनके सम्मुख चल ३१ तुम भीष्म द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा और कृपाचार्य के समान हो इसहेतु से महायुद्धमें इस आतेहुए अर्जुन को रोको ३२ हे कर्ण ! सर्प की समान होठों के चाबनेवाले वृषभ के समान गर्जनेवाले वनवासी व्याघ्रके समान अर्जुन को मारो ३३ यह महारथी धृतराष्ट्र के पुत्र और अन्य राजालोग युद्ध में अर्जुन के भय से बड़ी शीघ्रतासे भागते हैं ३४ हे सूतनन्दन, वीर, कर्ण! तेरे सिवाय अब दूसरा कोई ऐसा मनुष्य नहीं है जोकि उन भागेहुओं के भय को निवृत्तकरे हे पुरुषोत्तम ! यह सब कौरव युद्धमें तुझ रक्षकको पाकर ३५ तेरी रक्षा में आश्रित होने की इच्छा से नियत हैं वैदेह, काम्बोज, अम्बष्ठ, नग्नजित ३६ और युद्ध में बड़ी कठिनता से विजय होनेवाले गान्धारदेशीय जिस तेरे धैर्यसे विजय कियेगये हे राधाके पुत्र ! उस धैर्यकोकरके फिर पाण्डवों के सम्मुख चल ३७ हे महाबाहो ! बड़ी शूरता में नियत होकर उन यादव वासुदेवजी के सम्मुख चलो जोकि अर्जुनके साथ अत्यन्त प्रीति रखनेवाले हैं ३८ कर्ण बोला कि हे शल्य ! तुम अपने स्वभाव में नियत होजाओ हे महाबाहो ! अब तुम मुझको अङ्गीकृत विदित होते हो तुम अर्जुन से भयभीत मत हो ३९ अब मेरे भुजाओं के बल को और पाईहुई शिक्षा को देखो मैं अकेलाही इस पाण्डवों की बड़ी सेना को मारूंगा ४० इसके अनन्तर पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारूंगा यह तुमसे सत्यही सत्य कहता हूं कि इन दोनों वीरोंको विना मारेहुए कभी न हटूंगा अथवा चाहै उन्हीं के हाथसे मरकर शयन करूंगा क्योंकि युद्ध में सदैवही विजय नहीं हुआ करतीहै ४१ अब मैं उनको मारकर वा उनके हाथ से मरकर अपने मनोरथको सिद्धकरूंगा शल्य बोला कि हे कर्ण ! महारथीलोग युद्धमें इस रथियोंमें बड़े वीर अर्जुनको सबसे अजेय कहते हैं फिर हे कर्ण ! ऐसा

कौनसा मनुष्य है जो इस श्रीकृष्णसे रक्षित अर्जुनको विजय करनेका उत्साह करे ४२ कर्ण बोला कि लोक में ऐसा उत्तम रथी जहांतक हमने सुना कभी कोई नहीं हुआ ऐसे प्रतापी प्रसिद्ध कीर्तिवाले अर्जुनके सम्मुख होकर युद्धको करूंगा उस महायुद्ध में मेरी वीरता को देखो ४३ यह रथियों में बड़ावीर कौरवराज का पुत्र युद्धभूमि में श्वेत घोड़ों के द्वारा घूमता है अब वह मुझको बड़े दुःख से मिलताहै और कहता है कि कर्ण केही विजयमें मेरी विजय और कर्ण केही नाश में मेरा भी नाश है ४४ राजकुमार के प्रस्वेद और कम्प से रहित दोनों हाथ चिह्नों से युक्त होकर वृद्धिमान् हैं वह दृढ़शास्त्र अर्जुन बड़ाकर्मी और हस्तलाघवीय है इस पाण्डव के समान कोई युद्धकर्ता नहीं है ४५ बहुत बाणों को भी लेता है और उन सब को एकही बाणके समान धनुषपर चढ़ाकर छोड़ताहै फिर सकल बाण एक कोसपर गिरते हैं उसके समान इस पृथ्वीपर कौन शूरवीर है ४६ श्रीकृष्ण को साथ रखनेवाले जिस वेगवान् अधिरथी अर्जुन ने खाण्डव वनमें अग्निको तृप्तकिया वहांही महात्मा श्रीकृष्णजीने चक्रको और पाण्डव अर्जुन ने गाण्डीव धनुष को पाया ४७ अर्थात् बड़े पराक्रमी महाबाहुने अग्निसेही महाशब्दायमान श्वेतघोड़ों से युक्त रथको वा दो अक्षय तूणीरों को और दिव्य शस्त्रोंको पाया ४८ इसीप्रकार इन्द्रलोकमें युद्ध करके असंख्य कालकेय नाम दैत्यों को मारा और देवदत्तनाम शङ्ख को पाया इस पृथ्वीपर उससे अधिक कौन होसक्ता है ४९ इस महानुभाव ने उत्तम युद्ध से अस्त्रों के द्वारा साक्षात् महादेवजी को प्रसन्न किया और उनसे तीनोंलोकों का नाश करने वाला बड़ाघोर पाशुपतनाम महाअद्भुत अस्त्र पाया ५० सब लोकपालोंने इकट्ठे होकर युद्ध में पृथक्२ बड़े२ अस्त्रोंको दिया जिन अस्त्रों के द्वारा इस नरोत्तम ने युद्धमें इकट्ठे होनेवाले कालकेय नाम असुरोंको बड़ी शीघ्रतासे मारा ५१ इसी प्रकार इसअकेले अर्जुनने राजा विराटके पुरमें कौरवों समेत हम सब मिलेहुओं को एकही रथकेद्वारा विजय कर युद्धभूमि में उस गोधनको हरणकरके उनसब महारथियों के वस्त्रों को भी छीन लिया ५२ हे शल्य! इस प्रकार के पराक्रमी और गुणवाले श्रीकृष्ण को साथ में रखनेवाले सब लोक और राजाओं में श्रेष्ठ इस अर्जुन को अपने साहस से बुलाता हूं ५३ वह महापराक्रमी ब्रह्मा विष्णु और महेशजीके भी कँपानेवाले नारायण से रक्षित है सब संसार इकट्ठा होकर

हज़ारों वर्षतक भी जिसके गुणों का वर्णन न करसके ५४ ऐसे शङ्ख, चक्र, गदा, पद्मधारी वसुदेवजी के पुत्र महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुनके गुणोंके कहने को कोई समर्थ नहीं है एक रथपर बैठेहुए श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखकर मुझ को महाभय उत्पन्न होता है ५५ अर्जुन युद्ध में सब धनुषधारियों से श्रेष्ठनर है और नारायणजीभी युद्धमें अद्वितीय हैं ऐसे अर्जुन और वासुदेवजी हैं हे शल्य! चाहै हिमाचल अपने स्थानसे चलायमान होजाय परन्तु अर्जुन और श्रीकृष्ण चलायमान नहीं होसक्ते ५६ यह दोनों दृढ़शस्त्रधारी शूरवीर महारथी बड़े कठोर शरीरवालेहैं हे शल्य! ऐसे दोनों अर्जुन और वासुदेवजीके सम्मुख मेरे सिवाय दूसरा कौन जासक्ता है यह अत्यन्त अद्भुत वा अद्वितीय उनका और मेरा युद्ध शीघ्रही होगा ५७। ५८ मैं युद्धमें इन दोनोंको गिराऊँगा वा श्रीकृष्ण समेत अर्जुनही मुझको गिरावेंगे शत्रुओं का मारनेवाला कर्ण युद्धमें शल्यसे ऐसे २ वचनों को कहताहुआ बादलके समान गर्जा ५६ फिर आपके पुत्रके पास जा-कर बड़े प्रेम से मिला उसने भी इसको अनेकप्रकार से प्रसन्न किया फिर वहां प्रसन्नहोकर कौरवों में बड़ेवीर दुर्योधन, कृपाचार्य, कृतवर्मा, राजा गान्धार समेत उसके छोटेभाई इन सब से ६० वा अश्वत्थामा वा अपने पुत्र और उन पदाती हाथी और अश्वसवारों से बोला कि श्रीकृष्ण और अर्जुनको रोको प्रथम उन के सम्मुख जाकर शीघ्रही उनको सबप्रकारसे थकाओ ६१ जिससे कि हे राजा लोगो! आपलोगों से अत्यन्त घायलहुए इन दोनों को मैं सुखपूर्वक मारूं वह बड़े २ सब महावीर बहुत अच्छा ऐसा कहकर अर्जुन के मारने के अभिलाषी होकर बड़ी शीघ्रता से उनके सम्मुख गये ६२ कर्ण के आज्ञाकारी महारथियों ने बाणों से उस अर्जुन को घायल किया फिर अर्जुन ने युद्ध में उनको ऐसा निगला जैसे कि बड़ा जलसमूह रखनेवाला समुद्र नद नदियोंको निगलजाता है ६३ वह अर्जुन अपने उत्तम बाणों को चढ़ाता और छोड़ता हुआ शत्रुओं को दिखाई भी नहीं पड़ा फिर अर्जुन के चलायेहुए बाणों से घायल और मृतक हुए सब मनुष्य हाथी और घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े ६४ सब कौरव उस बाणरूप अग्नि और गाण्डीवरूप सुन्दर मण्डल रखनेवाले प्रलयकालीन सूर्य के समान महातेजस्वी अर्जुन की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि नेत्ररोगी मनुष्य सूर्य के दर्शन करनेको असमर्थ होताहै ६५ हँसतेहुए गाण्डीवधनुषरूप

पूर्णमण्डलवाले अर्जुन ने उन महारथियों के चलायेहुए बाणजालों को ऐसे काटा जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़ में उग्र किरणरखनेवाला सूर्य जलसमूहों को सुख-पूर्वक सोखलेता है हे महाराज ! फिर अर्जुन ने बाणों के समूहों को छोड़कर आपकी सेना को भस्म करदिया ६६। ६७ फिर कृपाचार्यजी बाणों को छोड़ते हुए उसके सम्मुख गये उसी प्रकार कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्योधन भी दौड़ा और महारथी 'अश्वत्थामा ने शायकों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल पहाड़ को ढकदेता है ६८ उस समय कुशलबुद्धि शीघ्रता करनेवाले पाण्डव अर्जुन ने उस बड़े युद्ध में बड़े उपाय से मारने के इच्छावान् वीरों के चलायेहुए उत्तम बाणों को अपने बाणों से काटकर तीन २ बाणों करके उनको छातीपर घायल किया ६९ गाण्डीवरूप बड़े पूर्ण मण्डलवाला बाणरूपी उग्र किरणों से युक्त अर्जुनरूपी सूर्य शत्रुओं को सन्तप्त करताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़ में पार्श्वमण्डल से युक्त सूर्य वर्तमान होता है ७० इसके पीछे अश्वत्थामा ने दश उत्तम बाणों से अर्जुन को तीनबाणों से श्रीकृष्णजी को चारबाणों से चारों घोड़ों को घायल करके नाराच नाम उत्तमबाणों से ध्वजास्थ हनुमान्जी को ढक दिया ७१ तौभी अर्जुन ने उस धनुषधारी अश्वत्थामा को तीनही बाणों से कम्पायमान करके क्षुरप्र से सारथी के शिर को चारबाणों से घोड़ों को और तीन बाणों से अश्वत्थामा की ध्वजा को रथसे गिराया ७२ फिर क्रोध-युक्त अश्वत्थामा ने हीरे मणि और सुवर्ण से जटित तक्षक के फण के समान प्रकाशित बड़े मूल्य के दूसरे धनुप को ऐसे उठाया जैसे कि अत्यन्त उत्तम बड़े सर्प को पर्वत के किनारे से कोई उठालेवे ७३ उस बड़ेगुणी अश्वत्थामा ने अपने शस्त्र को निकालकर घोड़े और सारथी से रहित पृथ्वी के समान रथपर अपने धनुष को प्रत्यञ्चा समेत करके समीप से आकर उन दोनों अजेय नरोत्तमों को उत्तम बाणों के द्वारा पीड्यमान किया ७४ युद्ध के शिरपर नियत वह महारथी कृपाचार्य कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्योधन युद्ध में अनेक बाणों समेत अर्जुन के ऊपर ऐसे आनकर गिरे जैसे कि बादल सूर्य को घेरलेते हैं ७५ फिर सहस्रबाहु के समान पराक्रमी अर्जुन ने कृपाचार्य के धनुष, बाण, घोड़े, ध्वजा और सारथी को बाणों से ऐसे घायल करदिया जैसे कि पूर्व समय में राजा बलि को वज्रधारी इन्द्र ने घायल किया था ७६ वह कृपाचार्य अर्जुन के बाणों से अस्त्रों

से रहित होगये और उस बड़े युद्ध में ध्वजा के टूटने पर हजारों बाणों से ऐसे छेदेगये जैसे कि पूर्व में अर्जुन के हाथ से भीष्मजी छेदे गये थे ७७ इसके पीछे प्रतापवान् अर्जुन ने गर्जते हुए आपके पुत्र की ध्वजा और धनुष को बाणों से काटकर कृतवर्मा के उत्तम घोड़ों को मार ध्वजा को भी काटडाला फिर शीघ्रता करनेवाले उस अर्जुन ने घोड़े, हाथी, रथ, ध्वजा और धनुष को विध्वंसन करदिया इसके पीछे आप की वह सेना पृथक् २ होकर ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि जल के वेग से टूटाहुआ पुल छिन्नभिन्न होकर बहजाता है ७८। ७९ तदनन्तर केशवजी ने शीघ्रही रथ के द्वारा अर्जुन के महादुःखी शत्रुओं को दक्षिण किया और जैसे इन्द्र के मारने की इच्छा से वृत्रासुर आदि दैत्य चले थे उसी प्रकार दूसरे युद्धाभिलाषी ऊंची ध्वजाधारी सुन्दर रत्नजटित रथों के द्वारा शीघ्र जानेवाले अर्जुन के ऊपर दौड़े इसके पीछे महारथी शिखण्डी सात्यकी नकुल और सहदेव समीप जाके उन अर्जुन के सम्मुख आनेवाले शत्रुओं को रोककर ८०। ८१ तीक्ष्ण बाणों से घायल करके बड़े भयानक शब्दों से गर्जे और सृञ्जयों समेत क्रोधयुक्त कौरवीय वीरों ने सीधे चलनेवाले सुन्दर वेगयुक्त बाणों से परस्पर में ऐसे मारा जैसे कि पूर्वसमय में असुरों ने देवताओं के गणों समेत युद्ध में परस्पर मारा था हे शत्रुसन्तापिन्, धृतराष्ट्र! वह विजयाभिलाषी स्वर्गजाने के उत्सुक हाथी घोड़े और रथ गिरते थे ८२। ८३ और ऊंचे स्वरों से गर्जते थे फिर अच्छी रीति से छोड़े हुए बाणों से पृथक् २ होकर परस्पर में अत्यन्त घायल किया हे राजन्! उस महायुद्ध में शूरवीरों में श्रेष्ठ महात्माओं के कर्म से परस्पर बाणों का अन्धकार उत्पन्न करने पर ८४ चारों दिशा विदिशा और सूर्य की किरणें भी अन्धकार होजाने से गुप्त होगईं ॥ ८५ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेऽशीतितमोऽध्यायः ॥ ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! कौरवों की अत्यन्त उत्तम सेनाओं से घिरेहुए और डूबे हुए पाण्डव भीमसेन को निकालने के अभिलाषी अर्जुन ने १ शायकों से कर्ण की सेना को मर्दन करके शत्रुओं के वीरों को मृत्युलोक में भेजा २ इसके पीछे इसके बाणजाल क्रम २ से आकाश में जाकर दिखाई दिये इसरीति से औरों ने भी आपकी सेनाको मारा ३ वह महाबाहु अर्जुन पक्षीगणों से सेवित

आकाश को अपने बाणों से पूर्ण करता कौरवों का नाश करनेवाला हुआ ४ फिर अर्जुन ने निर्मलभल्ल क्षुरप्र और नाराचों से अङ्गों को छेद २ कर शिरों को काटा ५ कटे हुए अङ्ग और कवचों से रहित वह शिर चारोंओर से गिरे उन गिरनेवाले शूरवीरों से पृथ्वी आच्छादित होगई ६ अर्जुन के बाणों से मृतक अङ्गभङ्ग चूर्ण २ नाशहुए अङ्गों से रहित हाथी, घोड़े, रथी और रथों से पृथ्वी व्याप्तहोगई ७ हे राजन्! युद्धभूमि बड़ी दुर्गम विषम महाघोर दुःख से देखने के योग्य वैतरणीनदी के समान होगई ८ शूरवीरों के घोर सारथी रखनेवाले मृतक घोड़े वा सारथीसमेत रथों से और ईशा, रथ, चक्र, अक्ष और भल्लों से पृथ्वी महा-चित्रित सी होगई ९ कवचों से अलंकृत सेना के सेनाधिप सुनहरी कवच सुनहरी भूषण रखनेवाले शूरवीरों समेत नियतहुए १० कठोर प्रकृतिवाले सवारों की एँड़ी और अंगुष्ठों से प्रेरित क्रोधयुक्त चारसौहाथी अर्जुनके बाणों से ऐसे गिरपड़े ११ जैसे कि वज्र से बड़े पर्वतों के शिखर गिरपड़ते हैं रत्नों से पूर्ण पृथ्वीपर अर्जुन के बाणों से नाश होकर गिरेहुए उत्तम हाथियों से पृथ्वी आच्छादित होगई १२ अर्जुनके रथने बादल के रूप मद डालनेवाले हाथियों को चारोंओर से ऐसे प्राप्त किया जैसे कि सूर्य बादलों को प्राप्त करताहै १३ मृतक हाथी घोड़े मनुष्य अनेक प्रकार के टूटे रथ शस्त्र सारथी वा कवचों से रहित युद्ध में मतवाले मृतक मनुष्यों से १४ और बड़े भयानक शब्दवाले गाण्डीव धनुष को टङ्कारते अर्जुन के हाथ से टूटेहुए शस्त्रों से युद्धभूमि का मार्ग आच्छादित होगया १५ जैसे कि आकाश में घोर वज्र से विनिष्पेष मेघ होता है उसी प्रकारवाला धनुष का शब्द था उसके पीछे अर्जुन के बाणों से घायल होकर सेना ऐसे पृथक् होकर छिन्नभिन्न होगई १६ जैसे कि समुद्र में बड़े वायु के वेग से चलायमान नौका होती है नाना प्रकार के रूपवाले प्राणों के हरने-वाले गाण्डीव धनुष से छोड़े हुए १७ उल्का और बिजली के रूपवाले बाणों ने आपकी सेना को ऐसे भस्म करदिया जैसे कि सायङ्काल के समय बड़े पर्वत पर प्रचण्ड अग्नि बांसों के वन को भस्म करदेता है १८ इसी प्रकार बाणों से पीड़ित आपकी बड़ी सेना भी महाव्याकुल होकर चलायमान हुई और अर्जुन के हाथ से मर्दित और भस्मीभूत करीहुई सेना नाश को प्राप्त हुई १९ बाणों से कटीहुई वा घायल होकर वह सेना सब ओर को ऐसे भागी जैसे कि दावानल

अग्नि से भयभीत होकर बड़े मृगों के समूह भागते हैं २० इसी प्रकार अर्जुनके हाथसे भस्महुए कौरव उस महाबाहु भीमसेनको छोड़कर चारोंओरको भागे २१ इसरीति से कौरवों की सब सेना व्याकुल होकर मुख मोड़ २ कर भागी इसके पीछे कौरवों के छिन्न भिन्न होनेपर वह अजेय अर्जुन भीमसेन को पाकर २२ एक मुहूर्त पर्यन्त समीप वर्तमान रहा वहां भीमसेन से युधिष्ठिरका सब वृत्तान्त और आनन्दसे होनेका समाचार कहकर भीमसेन से आज्ञा लेकर अर्जुन फिर चलागया २३ । २४ हे भरतवंशिन्! वह रथके शब्दसे पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करताहुआ गया इसके पीछे शूरवीरों में श्रेष्ठ प्रतापी अर्जुन २५ दुश्शासन से छोटे आपके दश पुत्रों से घेरागया उन्होंने भी उसको बाणों से ऐसे पीड्यमान किया जैसे कि उल्काओं से हाथी को पीड़ित करते हैं २६ हे भरतवंशिन्! धनुषको मण्डलाकार करनेवाले शूरवीर नर्तकोंके समान दिखाई दिये उनको मधुसूदनजी ने अपने रथ के द्वारा दक्षिण किया २७ और अर्जुन के हाथसे मरकर उनको यमराजके पास जानेवाला अनुमान किया उसके पीछे अर्जुन के रथ के मुड़ने पर उन शूरों ने चढ़ाई करी २८ अर्जुनने उन सम्मुख आनेवालोंके घोड़े रथ सारथी और ध्वजासमेत धनुष और शायकोंको शीघ्रही अपने नाराच और अर्द्धचन्द्रनाम बाणोंसे गिराया २९ पीछे से दूसरे दशभल्लों से उनके उन शिरोंको पृथ्वीपर गिराया जोकि बहुत कालसे रक्तनेत्र कर २ ओठों को काटते थे ३० वह बहुत से कमलरूपी मुखों समेत शिर बड़े शोभायमान हुए फिर वह शत्रुओं का मारनेवाला सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाला सुनहरी पुङ्खवाले दशभल्लों से बड़े वेगवान् दशों कौरवों को मारकर चलादिया ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेएकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि कौरवों के बड़े वेगवान् नब्बे रथी घोड़ों के द्वारा उस आनेवाले कपिध्वज अर्जुन के सम्मुख गये १ और नरोत्तम संसप्तकों ने परलोकसम्बन्धी घोर शपथको खाकर युद्ध में पुरुषोत्तम अर्जुन को घेरलिया २ और श्रीकृष्णजी ने बड़े वेगवान् सुवर्णभूषणों से अलंकृत मोतियों के जालों से ढके हुए श्वेत घोड़ों को कर्णके रथपर हाँका ३ इसके पीछे संसप्तकों के रथ बाणों की वर्षासे प्रहार करते कर्णकी ओरको जानेवाले उस अर्जुन के सम्मुख गये ४

अर्जुन ने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे शीघ्रता करनेवाले उन सब नव्वे वीरोंको सारथी धनुष और ध्वजा समेत मारा ५ अर्जुन के नानारूप के बाणों से घायल होकर वह शूरवीर ऐसे गिरपड़े जैसे कि तपके क्षीण होनेपर सिद्धलोग अपने विमान समेत स्वर्ग से गिरते हैं इसके पीछे कौरवलोग बड़ी निर्भयता से रथ हाथी और घोड़ों समेत उस वीर अर्जुन के सम्मुख आये ६ । ७ तीव्रता युक्त मनुष्य घोड़े और उत्तम हाथीवाली उस आपकी बड़ी सेना ने अर्जुन को घेर लिया ८ वहां बड़े धनुषधारी कौरवों ने शक्ति, दुधारा खड्ग, तोमर, प्रास, गदा, खड्ग और शायकों से कौरवनन्दन अर्जुनको ढकदिया ९ फिर अर्जुन ने चारों ओर से अन्तरिक्ष में फैलीहुई उसबाणों की वर्षा को अपने बाणों से ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि सूर्य अपनी किरणोंसे अँधेरे को तिर्र बिर्र करदेताहै १० इसके पीछे मतवाले तेरहसौ हाथियोंसमेत नियतहुए म्लेच्छों ने आपके पुत्रों की आज्ञा से अर्जुन को पार्श्वभाग की ओर से घायल किया ११ और कर्ण, नालीक, नाराच, तोमर, प्रास, शक्ति, मुशल और भिन्दिपालों से रथ में सवार अर्जुन को पीड्यमान किया १२ अर्जुन ने उस हाथी के सवारों से छोड़े हुए बड़े बाणजालों को अपने तीक्ष्णधार भल्ल और अर्द्धचन्द्रबाणोंसे काटा १३ इस के पीछे नानारूप के उत्तम बाणों से उन सब हाथियों को पताका ध्वजा और सवारों समेत ऐसे मारा जैसे कि वज्रों से पर्वतों को मारते हैं १४ वह स्वर्णमय मालाधारी बड़े २ हाथी सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से पीड़ित और मृतक होकर ऐसे गिरपड़े जैसे कि ज्वालामुखी पर्वत गिरपड़ते हैं १५ हेराजन्! इसके पीछे हाथी घोड़ेसमेत मनुष्योंको पुकारते और चिंघाड़तेहुए गाण्डीव धनुषका बड़ा शब्द हुआ १६ और वह घायल हाथी चारोंओर मृतकसवारों समेत भागे १७ हे महाराज! रथियों और घोड़ोंसे रहित हज़ारों रथ गन्धर्वनगर के रूप दिखाई पड़े १८ और इधर उधर से दौड़नेवाले अश्वसवार जहां तहां अर्जुन के शायकोंसे मृतक दिखाईदिये १९ उस युद्ध में पाण्डव अर्जुनकी भुजाओंका पराक्रम देखा गया जो अकेले नेही युद्ध में अश्वसवार हाथी और रथोंको विजय किया २० हे भरतर्षभ, राजन्, धृतराष्ट्र! इसके पीछे भीमसेन तीन अङ्ग रखनेवाली बड़ीसेना से घिराहुआ अर्जुन को देखकर २१ मरनेसे शेष बचेहुए आपके थोड़े रथियों को छोड़कर वेग से अर्जुन के रथकी ओर को दौड़ा २२ इसके

पीछे बहुत मृतक और दुःखी सेना भागी तब भीमसेन अपने भाई अर्जुनके पास गये बड़े युद्ध में थकावटसे रहित गदाको लियेहुए भीमसेनने अर्जुनसे बचेहुए शेष पराक्रमी घोड़ोंको मारा २३।२४ इसकेपीछे भीमसेनने कालरात्रिके समान बड़े उग्र हाथी घोड़े और मनुष्यों की खानेवाली नगर के कोटों की तोड़नेवाली महाभयानक गदाको २५ मनुष्य हाथी और घोड़ोंपर छोड़ा हे राजन्! उस गदाने बहुतसे हाथी घोड़े और अश्वसवारोंको मारकर लोहे के कवचधारी मनुष्य और घोड़ोंको मारा और वह मनुष्य मृतक होकर शब्द करतेहुए पृथ्वी पर गिरपड़े २६। २७ दाँतों से पृथ्वीको काटने रुधिर में भरे टूटे मस्तक हाड़ और चरणहोकर मांसभक्षी जीवोंको भक्षणार्थ मृत्युवश हुए २८ तब गदानेभी रुधिर मांस और मज्जा से तृप्तहोकर शीतलता को पाया कालरात्रि के समान दुःखसे देखने के योग्य हाड़ोंको भी खातीहुई नियत हुई २९ अत्यन्त क्रोधयुक्त गदा हाथमें लिये भीमसेन दशहज़ार घोड़े और अनेक पत्तियोंको मारकर इधर उधर को दौड़ा ३० हे भरतवंशिन्! इसके पीछे आपके शूरवीरों ने गदाधारी भीमसेन को देखकर कालदण्डके उठानेवाले यमराज कोही सम्मुख आयाहुआ माना ३१ मतवाले हाथीके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह पाण्डुनन्दन हाथियों की सेना में ऐसे पहुँचा जैसे कि समुद्र में मगर पहुँचता है ३२ वहां अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेनने बड़ी गदाको लेकर हाथियोंकी सेनाको मँझाकर वा मथकर क्षणमात्र में ही यमलोक में पहुँचाया ३३ घण्टों समेत वा ध्वजापताकाधारी सवारोंसे युक्त मतवाले हाथियों को ऐसे गिरताहुआ देखा जैसे कि पक्षधारी पर्वत गिरते हैं ३४ बड़े पराक्रमी भीमसेन उस हाथियों की सेना को मारकर अपने रथपर सवार होकर अर्जुन के पीछे चले ३५ हे महाराज! शत्रुओं की बहुत सी सेना मारीगई और बहुधा सेनाके लोग मुखफेरेहुए निरुत्साह और बहुतेरे शस्त्रों से ढकेहुए शरण में आये ३६ अर्जुन ने उस शरण में आईहुई अचेत सेना को देखकर प्राणोंके तपानेवाले बाणों से ढकदिया ३७ उस युद्ध में गाण्डीवधनुषधारीके बाणों से छिदेहुए मनुष्य घोड़े रथ और हाथी ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि केशरोंकरके कदम्बका वृक्ष शोभित होताहै ३८ हे राजन्! इसके पीछे मनुष्य घोड़े और हाथियोंके प्राणोंके हरनेवाले अर्जुनके बाणों से घायलहुए कौरवों के बड़े पीड़ावान् शब्द हुए ३९ तब हाय २ करनेवाली आपकी सेना अत्यन्त भय-

भीत होकर परस्पर में गुप्तहोनेवाले अलातचक्र अर्थात् बनेठी के समान भ्रमण करनेलगी ४० इसके अनन्तर वह कौरवोंका युद्ध बड़ेपराक्रमियों के साथ हुआ जहां रथ अश्वसवार घोड़े और हाथियोंमें कोईभी विना घायलहुए नहीं रहा ४१ वह सेना चारोंओर से अग्निरूप बाणों से विदीर्ण रुधिर और चर्म से भरे शरीर फूलेहुए अशोक वृक्षके वनके समान होगई ४२ वहां सब कौरव इस पराक्रमी अर्जुनको देखकर कर्णके जीवनमें निराशा युक्त हुए ४३ गाण्डीव धनुषधारी से मारेहुए कौरव युद्धमें अर्जुन के बाणों की वर्षाको असह्य मानकर लौटे ४४ शायकों से घायलहुए वह कौरव कर्ण को त्यागकर भयभीत होकर चारों ओर को भागे और कर्णको भी पुकारे ४५ उस समय अर्जुन हज़ारों बाणोंको छो-ड़ताहुआ और भीमसेन आदि युद्धकर्त्ता पाण्डवोंको प्रसन्न करताहुआ उन के सम्मुख गया ४६ हे महाराज ! फिर आप के पुत्र कर्ण के रथके पास गये तब उन अथाह समुद्र में डूबेहुए आपके पुत्रादिकों को आश्रयरूप टापू होगया ४७ हे राजन् ! निर्विष सर्प के समान सब कौरव अर्जुन के भयसे कर्ण के पास गुप्त होकर छिपगये ४८ जैसे कि कर्मकर्ता लोग मृत्यु से भयभीत होकर अपने ही धर्म में आश्रित होते हैं उसी प्रकार आप के पुत्र भी महात्मा पाण्डव अर्जुनके भय से बड़े धनुषधारी कर्ण के पास शरणागतरूप हुए ४९ । ५० उन रुधिर से भरे बाणों से पीड्यमान बड़ी आपत्ति में फँसेहुए लोगोंको देखकर कर्ण ने कहा कि भय मतकरो और मेरेही पास नियत रहो ५१ फिर अर्जुन के पराक्रम से अत्यन्त छिन्नभिन्न और व्याकुल आप की सेना को देखकर वह कर्ण शत्रुओं के मारने की इच्छासे धनुष टङ्कारताहुआ नियतहुआ ५२ उस शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्वास लेनेवाले कर्णने उन भागेहुए कौरवोंको देखकर चिन्तापूर्वक अर्जुन के मारने में चित्त किया ५३ इसके पीछे अधिरथी कर्ण बहुत बड़ेभारी धनुषको टङ्कारकर अर्जुन के देखतेहुए फिर पाञ्चालों की ओर को दौड़ा ५४ उस समय रक्तनेत्र राजाओं ने एकक्षणभर मेंही कर्ण के ऊपर ऐसी बाण वर्षा करी जैसे कि पर्वत पर बादल वर्षा करते हैं ५५ हे जीवधारियों में श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! इसके पीछे कर्णके छोड़ेहुए हज़ारों बाणोंने पाञ्चालों को प्राणोंसे रहित करदिया ५६ हे बड़े ज्ञानिन् ! वहां मित्र को चाहनेवाले कर्णके हाथसे मित्रों केही निमित्त घायल होनेवाले पाञ्चालों के बड़े शब्दहुए ॥ ५७ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! इसके अनन्तर कवच और श्वेत घोड़ेवाले अर्जुन के हाथ से कौरवों के भागजानेपर सूत के पुत्र कर्ण ने बड़े बाणों से राजा पाञ्चाल के पुत्रोंको ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसे कि बादलोंके समूहों को वायु तिर्र बिर्र करदेता है १ अञ्जलिक नाम बाणों के द्वारा रथसे सारथी को गिराकर घायल कियेहुए घोड़ों को मारा और शतानीक वा श्रुतसोम को भल्लों से ढक कर उनके धनुषों को भी काटा २ इसके पीछे छःबाणों से धृष्टद्युम्न को छेदके बड़े वेग से उसके घोड़ों को भी मारा फिर सूतपुत्र ने सात्यकी के घोड़ों को मारकर कैकेयके विशोकनाम पुत्रको मारा ३ कुमारके मरनेपर कैकेयका सेनापति जोकि महाभयानक कर्म करनेवाला था वह अपने उग्रबाणों से सेना को छिन्नभिन्न करता हुआ उसके सम्मुख दौड़ा और कर्ण के पुत्र प्रसेन को घायल किया ४ कर्ण ने हँसकर तीन अर्द्धचन्द्र बाणों से उसकी भुजा और शिर को काटा तब वह मृतक होकर रथसे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि फरसे से काटाहुआ साल का वृक्ष होताहै ५ कर्णका पुत्र प्रसेन मृतक घोड़ेवाले सात्यकी को अपने कान तक खेंचेहुए पृषत्क नाम बाणोंसे ढककर नाचताहुआ सात्यकीके हाथसे घायल होकर गिरपड़ा ६ पुत्र के मरने से क्रोधयुक्त चित्त करके सात्यकी के मारने की इच्छा करतेहुए मारा है इस प्रकार बोलतेहुए कर्णने सात्यकीके ऊपर शत्रुघाती बाण को छोड़ा ७ उसके उस बाण को शिखण्डी ने काटकर तीनबाणों से कर्ण को पीड़ित किया फिर शिखण्डी के बाण कर्णकी ध्वजा और धनुष को काटकर पृथ्वी में गिरपड़े ८ तब उग्ररूप महात्मा अधिरथी कर्ण ने शिखण्डी को छः बाणों से घायल करके धृष्टद्युम्न के लड़के के शिरको काटा और इसी प्रकार बड़े तीक्ष्ण बाणों से श्रुतसोम को घायल किया ९ हे राजाओं में श्रेष्ठ ! वहां प्रबल शूरवीर के वर्तमान होने और धृष्टद्युम्न के पुत्र के मरनेपर श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से कहा कि यह कर्ण इस लोक को पाञ्चालों से रहित किये देता है हे अर्जुन ! अब से चलकर कर्ण को मार १० उसके पीछे नरों में बड़े वीर सुन्दर भुजावाले भय के स्थान में महारथी से घायल इन लोगों की रक्षा करने के इच्छावान् अर्जुन ने हँसकर शीघ्रही रथ के द्वारा कर्ण के रथ को पाया ११ और महाकठोर

उग्र गाण्डीव धनुष को चढ़ाकर हथेलीपर प्रत्यञ्चा का शब्द करके अकस्मात् बाणों का अन्धकार उत्पन्न करके ध्वजा रथ घोड़े और हाथियों को मारा अन्तरिक्ष में बहुत से शब्द घूमने लगे और पक्षीलोग पर्वतों की गुफाओंमें गिरे जो कि जीवों के मण्डल से जँभाई लेता अर्जुन रुद्रमुहूर्त में सम्मुखगया १२ । १३ और एकवीर भीमसेन रथ के द्वारा अर्जुन को पीछे की ओर से रक्षाकरता हुआ चला शत्रुओंसे घिरेहुए वह दोनों राजकुमार रथोंके द्वारा शीघ्रही कर्णके सम्मुख गये १४ वहांपर अन्तरिक्ष में कर्ण के सोमकलोगों को घेरकर उस महायुद्ध के नियत रथ घोड़े और हाथियों के समूहों को मारा और बाणों से सब दिशाओं को ढकदिया १५ उत्तमौजा, जनमेजय, क्रोधयुक्त युधामन्यु, शिखण्डी और धृष्टद्युम्न इन सब ने अपने २ पृषत्कों से कर्ण को छेदा वह पाञ्चालदेशीय रथियों में बड़े वीर पांचों कर्णके सम्मुख दौड़े धैर्य से बड़े सावधान कर्णको यह सबलोग रथसे गिरानेको ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि शान्त और जितेन्द्रिय पुरुषको इन्द्रियों के विषय नहीं गिरासक्ते १६ । १७ कर्ण ने बाणों से उन्हों के धनुष, ध्वजा, घोड़े, सारथी और पताकाओं को शीघ्रता से काटकर पांच पृषत्कों से उनको घायलकरके सिंहनाद किया १८ उन बाणोंको छोड़ते और चारोंओर से मारते उस प्रत्यञ्चा और बाण रखनेवाले कर्णके धनुषके घोरशब्दसे पर्वत वा वृक्षादि समेत पृथ्वी कम्पायमान होगई ऐसा जानकर मनुष्यों के समूह पीड्यमान हुए १९ वह कर्ण इन्द्रधनुष के समान अपने बड़े धनुष से बाणों को छोड़ता युद्ध में ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रकाशित ज्योतियों का मण्डल और किरणों के समूहों का रखनेवाला पार्श्व मण्डल से घिराहुआ सूर्य होता है २० शिखण्डी को तीक्ष्णबारह बाणों से उत्तमौजा को छः बाणों से युधामन्यु को शीघ्रगामी तीनबाणों से और सोमक धृष्टद्युम्न के पुत्रों को तीन २ बाणों से छेदा २१ हे श्रेष्ठ ! फिर युद्ध में कर्णके हाथसे पराजित शत्रुओं के प्रसन्न करनेवाले पांचों महारथी कर्मरहित होकर ऐसे नियत हुए जैसे कि ज्ञानी से जीते हुए इन्द्रियों के विषय होते हैं २२ जैसे कि नौका से रहित व्यापारीलोग समुद्र में डूबते हैं इसी प्रकार कर्णरूपी समुद्र में डूबनेवाले उन अपने मामाओं को द्रौपदी के पुत्रों ने अच्छे अलंकृत रथरूप नौकाओं के द्वारा उस समुद्र से निकाला २३ उसके पीछे सात्यकीने कर्णके चलायेहुए बहुतबाणों को अपने तीक्ष्ण

बाणों से काटकर और तीक्ष्णलोहे के बाणोंसे कर्ण को घायलकरके आठ बाणों से आपके बड़े पुत्र को छेदा २४ इसके पीछे कृपाचार्य, कृतवर्मा, दुर्योधन और आप कर्ण ने तीक्ष्णबाणोंसे घायल किया वह श्रेष्ठ यादव इनचारों के साथ ऐसे युद्ध करनेलगा जैसे कि दैत्योंका स्वामी दिक्पालों के साथ लड़ता है २५ बड़े उच्चशब्दवाले बहुत लम्बे असंख्य बाण वर्षानेवाले बड़े धनुष से वह सात्यकी उनपर ऐसा प्रबलहुआ जैसे कि शरदऋतु में आकाश में वर्तमान सूर्य प्रबल होताहै २६ शत्रुसन्तापी बड़े अलंकृत शस्त्रधारी पाञ्चालदेशीय महारथियों ने फिर रथों पर सवार होके सात्यकी को ऐसे रक्षित किया जैसे कि शत्रुओं के मारने में मरुद्गणलोग इन्द्र को रक्षित करते हैं २७ इसके पीछे आपकी सेनाओं के साथ शत्रुओं का वह युद्ध महाभयकारी हुआ जोकि उन रथ घोड़े और हाथियों का विनाशकारी था जैसे कि पूर्वसमय में देवताओं का युद्ध दैत्योंके साथ हुआ २८ उसीप्रकार रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों समेत सब सेना शस्त्रों से ढकगई और परस्पर शब्दों को करतेहुए मृतक होकर गिरपड़े २९ उस दशामें राजा दुर्योधन से छोटा आप का पुत्र दुश्शासन बाणों से भीमसेन को ढकता सम्मुखगया भीमसेन भी बड़ी शीघ्रता से उसके सम्मुखगया और उसको ऐसे सम्मुखपाया जैसे कि सिंह बड़े रुरुको सम्मुख पाताहै ३० इसके पीछे प्राणोंका द्यूतखेलनेवाले परस्पर क्रोधभरेहुए उन दोनोंका ऐसा महाभारी युद्धहुआ जैसे कि बड़ेसाहसी शम्बरदैत्य और इन्द्रका हुआथा ३१ उनदोनोंने शरीरको पीड़ित करनेवाले सुन्दर वेतवाले बाणोंसे परस्परमें ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि हथिनियों के मध्य में कामदेव से प्रवृत्तचित्त वारंवार घायलहुए दो बड़े हाथी लड़ते हैं ३२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेनने आपके पुत्रके ध्वजा और धनुष को दो क्षुरप्रों से काटा और उसके ललाटको बाण से छेदकर सारथी के शिरको शरीरसे पृथक् कर दिया ३३ उस राजकुमारने दूसरे धनुषको लेकर भीमसेनको बारहबाणोंसे छेदा और आपही घोड़ों को चलाताहुआ भीमसेनपर बाणोंकी वर्षा करनेलगा ३४ इसके पीछे सूर्यकी किरणके समान प्रकाशमान सुवर्ण हीरे आदि उत्तम रत्नों से अलंकृत महेन्द्र के वज्ररूप बिजली के गिरनेके समान कठिनता से सहने के योग्य भीमसेन से अङ्गों के चीरनेवाले बाण को छोड़ा ३५ उस बाण से घायल शरीर व्यथितरूप भीमसेन निर्जीव के समान

गिरा और दोनों भुजाओं को फैलाकर उत्तम रथपर आश्रितहुआ और थोड़ेही काल में सचेत होकर गर्जा ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिदुश्शासनभीमसेनयुद्धेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, उस युद्ध में कठिन युद्धकरनेवाले राजकुमार दुश्शासन ने ऐसा कठिन कर्म किया कि एक बाणसे तो भीमसेनके धनुषको काटा और सात बाणों से सारथी को छेदा १ उस वेगवान् राजकुमारने उस कर्मको करके भीमसेनको नब्बे पृषत्कोंसे पीड़ित किया इसके पीछे बड़ीशीघ्रता करके उत्तम बाणों से फिर भीमसेन को छेदा २ फिर महाक्रोधरूप भीमसेन ने आपके पुत्रपर उग्रशक्तिको चलाया तब आपके पुत्रने उस जलतीहुई उग्र शक्तिको अकस्मात् आतेहुए देखकर ३ कानतक खैंचेहुए दश पृषत्क बाणोंसे काटा उससमय सब शूरवीरों ने प्रसन्न चित्त होकर उसकी प्रशंसाकरी ४ इसके अनन्तर शीघ्रही आपके पुत्र ने भीमसेन को फिर कठिन पीड़ित किया तब भीमसेन उसपर अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसको देखकर क्रोध से अत्यन्त कोपयुक्त होकर ५ कहनेलगा कि हे वीर ! मैं तेरे बाण से घायल हूं अब तुम मेरी गदा को सहो तब क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़े शब्द से यह कहकर उस भयानकरूप गदा को मारनेके निमित्त लिया ६ और कहा कि अरे दुरात्मा ! अब मैं इस युद्धभूमिमेंही तेरे रुधिर को पानकरूंगा यह वचन सुनकर आपके पुत्रने मृत्युरूप उग्रशक्ति को अकस्मात् फेंका तब क्रोध में पूर्ण भीमसेन ने भी बड़ी उग्ररूपगदा को घुमाकर फेंका उस गदाने उसकी शक्तिको अकस्मात् तोड़कर आपके पुत्र को मस्तकपर घायलकिया ७ । ८ मदझाड़नेवाले हाथीके समान रुधिरको गिराते हुए उस दुश्शासनपर फिर भीमसेनने उस कठिन गदा को चलाया उस गदा के द्वारा भीमसेनने बड़े हठपूर्वक दुश्शासन को दश धनुषकी दूरीपर डाला ९ अर्थात् उस वेगवान् गदा से घायल और कम्पित होकर दुश्शासन गिरपड़ा हे महाराज ! गिरतीहुई गदा से सारथी समेत घोड़े मारेगये और उसका रथ भी चूर्ण२ होगया १० टूटे कवच भूषण और पोशाकवाला फड़कताहुआ दुश्शासन कठिन पीड़ा से दुःखीहुआ और सब पाण्डव और पाञ्चालों ने दुश्शासन को देखकर बड़ी प्रसन्नतापूर्वक सिंहनादोंको किया इसके पीछे भीमसेन इसको

गिराकर बड़ी खुशी से दिशाओं को शब्दायमान करता हुआ गर्जा हे अज-मीढ़वंशिन् ! सब पार्श्ववर्त्ती नियत मनुष्य भी उस शब्दसे मूर्च्छित होकर गिर पड़े वेगवान् भीमसेन भी बड़े वेगपूर्वक रथसे उतरकर दुश्शासनकी ओर दौड़ा और वह शत्रुता जो ११।१३ आपके पुत्रोंकी ओर से कीगईथी उसको स्मरण करके हे राजन् ! चारों ओर से उत्तमपुरुषों समेत उस घोर और कठिन युद्ध के वर्तमान होनेपर वहां बुद्धि से बाहर कर्मवाला महाबाहु भीमसेन दुश्शासनको देखकर १४ देवी द्रौपदी के केशों का पकड़ना और उसी रजस्वला के वस्त्रों का पृथक् करना इन दोनों बातोंको स्मरण करताहुआ उस निरपराधिनी पतियांसे जुदीहुई को दुःखों के देनेको शोचकर १५ फिर भीमसेन क्रोधसे ऐसा अग्नि-रूप होगया जैसे कि घृत सींचाहुआ अग्नि प्रज्वलित होताहै ऐसा होकर उसने उस स्थानपर खड़ाहोकर कर्ण,दुर्योधन, कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मा से कहा १६ कि अब मैं इस पापी दुश्शासनको मारताहूं अब सब युद्ध करनेवाले शूरवीर इसकी रक्षाकरनेको आवो ऐसा कहकर मारने को उत्सुक महापराक्रमी और वेगवान् भीमसेन सम्मुख दौड़ा १७ इस रीतिसे भीमसेनने युद्धमें पराक्रम करके जैसे कि केशरी सिंह हाथीको पकड़ना चाहताहै उसीप्रकार वह अकेला भीमसेन वीर दुर्योधन और कर्ण के समक्ष में दुश्शासन को पकड़ने की इच्छा करके १८ बड़े उपायसे उसमें दृष्टिको लगा रथसे कूद पृथ्वीपर गया और सुन्दर धारवाले उत्तम खड्ग को उठाकर उस कँपतेहुए पृथ्वीपर पड़ेहुए कण्ठको दबाय छातीको और जङ्घाको काटकर थोड़ा सा गरम २ रुधिर पिया उसके पीछे गिरा कर उसके शिर को भी काटने की इच्छा से अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये उस बुद्धिमान् भीमसेनने फिर थोड़ासा गरमलोहू पिया और उस रुधिरके स्वादु को लेकर महाक्रोधित होकर सबके सम्मुख यह वचन कहा १९।२१ कि माता के स्तन्य मधु घृत अच्छी बनीहुई दिव्य माध्वी मदिरा अथवा दुग्ध दधि वा दुग्ध दधिको मथकर जो तक्र होताहै इनके सिवाय जो इस संसारमें सुधा और अमृत के स्वादुयुक्त पान करनेवाले रस हैं उन सब पदार्थों से अब इस शत्रु के रुधिर में मुझको अधिक स्वाद आता है २२।२३ तदनन्तर उसको कुछेक सचेत देखकर भीमसेनने कहा कि हे दुष्ट! सभा के मध्य में जो हमने तेरे रुधिर पीनेकी प्रतिज्ञा करीथी उसको हमने सत्य किया अब तुमको कौन सा शूरवीर

बचासक्ताहै हे राजन्! भीमसेन के इस वचनको सुनकर आपके पुत्र दुश्शासन ने उत्तर दिया कि ॥

चौ० ये ममकर करि कुम्भविदारन । देनहार गो बाजि हजारन ॥
इनके बल तुम सर्वस हारे । वर्षत्रयोदश विपिन विहारे ॥
शरपञ्जर विरचन बलभारे । पीन पयोधर मर्दनहारे ॥
अति सुकुमार सुगन्धन मीजे । राजसूय के जल सों भीजे ॥
केश द्रौपदी को त्यहि कर्षण । करणहार मम भुज अरिधर्षण ॥
तुम सब लखत रहे त्यहि क्षन में । तब न रह्यो कछु विक्रम तन में ॥
अब हम परे समर में ऐसे । मन में रुचै करो सो तैसे ॥
शोणित पान कियो मम सोऊ । या में मम नहिं अमरष कोऊ ॥
क्षात्रधर्म पालनकरि रण में । हम इमि परे मरे भटगण में ॥
काक शृगाल पियें मम शोणित । कैतुम पियो करनिकर द्रोणित ॥
यह सुनि भीमक्रोध अतिगाहिकै । फिर वहिभांति भटनसों कहिकै ॥
गहि तो सुतकी भुजा उपारी । सोई तासु गात में मारी ॥
लागो पियन रुधिर पुनि तातो । वीर विभित्स रौद्र रसरातो ॥
पिये वारिग्रीषम को प्यासो । तिमि सो रुधिर पियततहँभासो ॥

दो० भरिअञ्जलि पीवत रुधिर, उमँगि गात पै जात ।
गिराधार धर शिलासम, लसौ भीम को गात ॥
कुम्भकरण सम गरजिकै, फिर सब भटन प्रचारि ।
कण्ठ काटि पीवन लगो, शोणित कर्म विचारि ॥
कहि कहि कहि ताके किये, कर्म आदि ते सर्व ।
डकरि डकरि पीवत भयो, शोणित भीम सगर्व ॥

इसके पीछे महाघोर कर्मी क्रोध में भराहुआ भीमसेन बड़े शब्दसे हँसा और दुश्शासन को निर्जीव देखकर यह वचन बोला कि मैं क्या करूं तू मृत्यु से रक्षित है २४ उस समय जिन २ लोगों ने इसप्रकार से बोलनेवाले वा दौड़नेवाले स्वादुलेनेवाले अत्यन्त प्रसन्न होनेवाले उस भीमसेन को देखा वह सब महाभयभीत होकर भागे २५ और जो लोग कि दृढ़ता से नहीं भागे उनके हाथों से शस्त्र गिरपड़े और बहुतेरे आँखों को बन्द करके भयके कारण धीरे से

पुकारे और चारोंओर को देखकर २६ । २७ कहनेलगे कि यह मनुष्य नहीं है कोई उग्र राक्षस है इस प्रकार कहकर भयभीत होकर भागे २८ और राजपुत्र युधामन्यु अपनी सेना समेत उस भागेहुए चित्रसेन के सम्मुखगया और बड़ी निर्भयतासे तीक्ष्ण धारवाले साठ पृषत्कों से उसको पीड्यमान किया २९ ऊंचा फल करनेवाले जिह्वा के चाटनेवाले क्रोधरूप विषके छोड़नेको अभिलाषी बड़े सर्प के समान चित्रसेन ने लौटकर उस युधामन्यु को तीन बाणों से और उस के सारथी को छः बाणोंसे छेदा ३० इसके पीछे शूरवीर युधामन्यु ने सुन्दर पुङ्ख और नोकवाले अच्छे प्रकार धनुपपर चढ़ायेहुए कानतक खैंचेहुए बाण से उस के शिर को काटा ३१ उस भाई चित्रसेन के मरनेपर बड़े तेजस्वी शूरता को दिखलाते क्रोधयुक्त कर्ण ने पाण्डवीय सेना को भगाया और नकुल के सम्मुख गया ३२ वहांपर भीमसेन भी दुश्शासनको मारकर बड़ा क्रोधयुक्त कठोर शब्द करता अपनी रुधिर की अञ्जली को पूजकर ३३ सब लोकोंके वीरोंको सुनाकर यह वचन बोला कि हे नीच पुरुष ! मैं इस तेरे रुधिर को कण्ठ से पीता हूं ३४ अब तुम अत्यन्त प्रसन्न होकर फिर कहो कि हे गौ ! हे गौ ! उस समय जो जो लोग हमको देखकर नाचते थे वह हे गौ ! हे गौ ! इस शब्दको फिर कहें ३५ हम उनके सम्मुख नाचते हैं वह फिर कहैं कि हे गौ ! हे गौ ! प्रमाणकोटी नाम स्थान में सोना कालकूट नाम विष का भोजन काले सर्पों से काटना लाक्षागृह में भस्महोना द्यूतविद्या से राज्य का हरना वन में निवास ३६ । ३७ द्रौपदी के केशों का भयानक पकड़ना और युद्ध में बाण अस्त्र और स्थानपर अत्यन्त दुःख ३८ विराट भवनमें नवीन प्रकार के दुःख जो हम को हुए और जो दुःख कि शकुनी दुर्योधन और कर्ण के मत से हुए ३९ उन सब कारणों का हेतुरूप तुही है हमने इन दुःखों के सिवाय कभी सुख को नहीं पाया ४० पुत्र समेत धृतराष्ट्र की दुर्बुद्धि से हमलोग सदैव दुःखी हुए हे महाराज, राजन्, धृतराष्ट्र ! यह कहकर विजय को पाकर ४१ फिर मन्द मुसकान करता वेगवान् रुधिर में भरा लालमुख और क्रोध में भराहुआ भीमसेन अर्जुन और केशवजी से बोला कि हे वीरो ! युद्ध में दुश्शासन के साथ जो प्रतिज्ञाकरी थी उसे यहां अब मैंने सत्य२ करके पूरी करी इस स्थानपर यज्ञ पशुरूप दुर्योधन को मारकर मैं अपनी दूसरी प्रतिज्ञा को भी पूरी करूंगा ४२ । ४३ जब कौरवों के समक्षमें इसके शिर

को काटूंगा तभी मैं शान्तिको पाऊंगा फिर वह रुधिरमें डूबाहुआ अत्यन्त प्रसन्न चित्त भीमसेन इस वचन को कहकर बड़े शब्दसे ऐसा गर्जा जैसे कि सहस्राक्ष इन्द्र वृत्रासुर को मारकर प्रसन्नता से गर्जा था ॥ ४४ । ४५ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिदुश्शासनवधेचतुरशीतितमोऽध्यायः ॥ ८४ ॥

पचासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! फिर दुश्शासन के मरनेपर क्रोधरूपी बड़े विषके रखनेवाले युद्धों में मुख न फेरनेवाले महापराक्रमी आपके शूरवीर दश पुत्रों ने बाणोंसे भीमसेन को ढकदिया उनके नाम यह हैं निषङ्गी, कवची, पाशी, दण्डधार, धनुर्द्धर १ । २ अलोलुप, सहखण्ड, वातवेग, सुवर्चस भाई के दुःखसे पीड्यमान इन दशों ने मिलकर ३ महाबाहु भीमसेन को रोका फिर चारोंओर से उन महारथियों के बाणों से रोकाहुआ ४ क्रोधअग्नि से रक्तनेत्र वह भीमसेन क्रोध भराहुआ काल के समान शोभायमान हुआ उस समय पाण्डव भीमसेन ने सुनहरी पुङ्खवाले दशभल्लों से उन सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाले दशों भाई भरतवंशियों को यमलोकमें पहुँचाया उन वीरोंके मरनेपर ५ । ६ भीमसेनके भय से पीड़ित आपकी सेना कर्ण के देखतेहुए भागी हे महाराज ! इसके अनन्तर कर्ण ७ प्रजाओंपर पराक्रम करनेवाले कालमृत्यु के समान भीमसेनके पराक्रम को देखकर बड़ा भयभीत हुआ उसके रूपान्तर सूरत से वृत्तान्त के जाननेवाले युद्धमें शोभायमान राजा शल्यने ८ उस शत्रुविजयी कर्ण से समयके अनुसार यह वचन कहा कि हे राधा के पुत्र ! पीड़ा मत कर तुझको ऐसी पीड़ा करना उचित नहीं है ९ भीमसेन के भयसे पीड्यमान होकर यह राजालोग भागते हैं और भाई के दुःख से पीड्यमान दुर्योधन अचेत होरहा है १० बड़े साहसी से दुश्शासन का रुधिर पीने पर अचेत और शोक से घायलचित्त ११ कृपाचार्य आदि यह मरनेसे बाकी बचेहुए सगे भाई चारोंओरसे दुर्योधन के पास बैठे नियत हैं १२ और लक्ष्यभेदी शूरवीर पाण्डव जिनमें अग्रगामी अर्जुनहै वह युद्ध के लिये तेरे सम्मुख वर्तमान है १३ हे पुरुषोत्तम ! इससे अब तुम शूरवीरतासे नियत होकर क्षत्रियधर्म को आगे करके अर्जुन के सम्मुख जावो १४ राजा दुर्योधन ने सब युद्ध का भार तुम्हीपर नियत कियाहै हे महाबाहो ! उस भारको तुम अपने बल और पराक्रम से उठाओ १५ विजय करने में तो अतुल कीर्ति

होगी और पराजय में निश्चय स्वर्ग है हे राधा के पुत्र! अत्यन्त क्रोधयुक्त तेरा पुत्र १६ तेरे मोहित होने पर पाण्डवों के सम्मुख दौड़ताहै बड़े तेजस्वी शल्य के इस वचनको सुनकर १७ कर्ण ने युद्ध करने का दृढ़ विचार अपने हृदय में नियत किया उसके पीछे क्रोधयुक्त वृषसेन उस सम्मुख वर्तमान भीमसेन के सम्मुख दौड़ा १८ जोकि दण्डधारी कालके समान गदा धारण करनेवाला आप के शूरों से युद्ध कररहा था और बड़ा भारी नकुल पृषत्कों से शत्रुओं को पीड्यमान करता दौड़ा १९ युद्ध में प्रसन्नचित्त उस कर्ण के पुत्र वृषसेन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि पूर्व समय में जम्भ के मारनेकी इच्छा से इन्द्र उसके सम्मुख गयाथा वहां पहुँचकर वीर नकुलने क्षुरप्र से उसकी उस ध्वजाको काटा जोकि श्वेतरङ्ग के अपूर्व कवचवाली थी २० और सुनहरी चित्रों से चित्रित अत्यन्त अद्भुत वृषसेन के धनुष को काटा तब तो कर्णके पुत्रने शीघ्रही दूसरे धनुषको लेकर नकुल को छेदा २१ दुश्शासन का बदला लेने के अभिलाषी कर्ण के पुत्र वृषसेनने दिव्य महाअस्त्रों से नकुलको घायल किया उसके पीछे क्रोधयुक्त महात्मा नकुलने बड़ी उल्का के समान बाणों से उसको छेदा २२ फिर अस्त्रज्ञ कर्णका पुत्र दिव्यअस्त्रोंसे नकुलपर वर्षा करनेलगा हे राजन्! वह कर्णका पुत्र बाणों के प्रहार वा क्रोध वा अपने तेज अथवा अस्त्रों के चलाने से ऐसा अत्यन्त क्रोधरूप हुआ जैसे कि घृतकी आहुतियों से बढ़ीहुई अग्नि होती है हे राजन्! कर्ण के पुत्रने अपने उत्तमअस्त्रों से नकुलके उन सब घोड़ोंको मारा २३।२४ जोकि श्वेतरूप बड़े ऊंचे सुनहरी जालों से अलंकृत वनायुज नाम प्रकारके थे उसके पीछे मृतक घोड़ेवाले रथ से उतरकर सुवर्णमयी चन्द्रमावाली निर्मल ढाल को लेकर २५ आकाशरूप खड्ग को पकड़कर चलायमान पक्षी के समान घूमा उस समय अपूर्व युद्ध करनेवाले नकुलने शीघ्रतासे अन्तरिक्ष में रथ घोड़े और हाथियों को मारा २६ खड्ग से कटकर वह सब पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि अश्वमेधयज्ञ में मारनेवाले के हाथ से यज्ञपशु गिरपड़ता है नानादेशों में उत्पन्न होनेवाले अच्छी जीविका पानेवाले सत्यसंकल्पी दोहज़ार शूरवीर गिर पड़े २७ युद्ध में विजयाभिलाषी चन्दन से युक्त शरीर उत्तम शूरवीरलोग अकेले नकुल के हाथ से मारेगये फिर उसने सम्मुख जाकर उस आतेहुए नकुल को शायकों के द्वारा चारोंओर से घायल किया २८ पृषत्कों से पीड्यमान उस

नकुल ने भी उस वीर को व्यथित किया फिर वह भी व्यथित होकर महाक्रोध-युक्त हुआ बड़े भारी घोर भय में भी भाई भीमसेनसे रक्षित नकुल ने यहां भय को नहीं किया २६ फिर क्रोधयुक्त कर्णके पुत्रने बहुतसे मनुष्य, घोड़े, हाथी और रथों के मर्दन करनेवाले पीड्यमान अकेले वीर नकुल को अठारह पृषत्कों से पीड्यमान किया ३० हे राजन् ! उस महायुद्ध में वृषसेनसे महाघायल वह बड़ा वेगवान् नरवीर नकुल कर्ण के पुत्र को मारने को युद्ध में दौड़ा ३१ जैसे कि मांस का चाहनेवाला पक्षों को फैलाकर आनेवाले बाज पक्षी को घायल करता है उसी प्रकार उस क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी आनेवाले नकुल को अपने तीक्ष्ण बाणों से वृषसेन ने ढकदिया ३२ वह नकुल उसके बाणों को निष्फल करता हुआ अपूर्वरूप के मार्गों में घूमा हे महाराज ! इसके पीछे कर्ण के पुत्रने खड्ग समेत उस घूमनेवाले नकुलकी उस हजारों नक्षत्रोंसे चित्रित अपने बड़े बाणों से टुकड़े २ करके उस खड्ग को भी काटा जोकि लोहे से निर्मित तीक्ष्णधारवाला मियान से जुदा महाभयानक बड़े भार का सहनेवाला ३३ । ३४ शत्रुओं के शरीरों का नाश करनेवाला महाघोर सर्पके समान उग्ररूप था उसको उस कर्ण के पुत्र ने तीक्ष्णधारवाले उत्तम छः बाणों से शीघ्रही काटडाला और नकुल को छातीपर बड़े तीव्र पृषत्कों से छेदा हे राजन् ! युद्ध में अन्य मनुष्य से कठिनता से करने के योग्य श्रेष्ठ मनुष्यों से सेवित कर्म को करके फिर बाणों से दुःखित महात्मा ३५ । ३६ शीघ्रता करनेवाला नकुल भीमसेन के रथ के पास गया वह मृतक घोड़ेवाला कर्णपुत्र के बाणों से व्यथित माद्रीनन्दन नकुल अर्जुनके देखते भीमसेन के रथपर ऐसे गया जैसे कि सिंह पर्वतकी नोकपर चढ़जाता है उसके पीछे बड़ासाहसी क्रोधयुक्त वृषसेन अपने बाणोंको दोनों के ऊपर बरसाने लगा ३७ । ३८ तब एक रथपर मिलेहुए दोनों महारथी पाण्डवों ने उसको भी बाणों से छेदा फिर शीघ्रही विशिखों से रथ और खड्गके खण्डित होने पर ३९ बड़े वीर मिलेहुए कौरवोंने सम्मुख आकर पूजीहुई अग्नि के समान उन दोनों पाण्डवों को चारोंओर से बाणों के द्वारा घायल किया फिर क्रोधयुक्त भीमसेन और अर्जुन ने बड़े घोर बाणों की वर्षा वृषसेनपर करी इसके अनन्तर भीमसेन अर्जुनसे बोले कि इस पीड्यमान नकुल को देखो ४० । ४१ और यह कर्ण का पुत्र हमको पीड़ा देताहै इससे अब तुम उस कर्ण के पुत्र के सम्मुख जाओ इस

वचन को सुनकर वह अर्जुन भीमसेन के रथको पाकर नियतहुआ ४२ इसके पीछे नकुल उस वीर को देखकर बोला कि शीघ्रही इस सम्मुख आनेवाले को मारो इसप्रकार भाई के वचन को सुनकर अर्जुन ४३ कपिध्वजवाले केशवजी को सारथी रखनेवाले अपने रथको वृषसेन के घोड़ों के समीप लाया ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिवृषसेनयुद्धेनकुलपराजयोनामपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

इसके पीछे नकुल को टूटा धनुष खड्गवाला रथ से रहित शत्रुओं के बाणोंसे घायल कर्ण के पुत्र के अस्त्रसे पराजित जानकर वह वीर जिनकी पताका वायु से कम्पित और घोड़े शब्दों को करते अच्छे शीघ्रगामी थे अपने सेनापति की आज्ञासे रथों की सवारी से शीघ्र चले आये १ अर्थात् उनके नाम वरिष्ठद्रुपद के पांचों पुत्र जिनमें छठा सात्यकी है और पांचों द्रौपदी के पुत्र यह सब शस्त्रधारी सर्पगज के समान बाणोंसे आपके हाथी, रथ, मनुष्य और घोड़ोंको मारते चढ़ आये २ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कृपाचार्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा और दुर्योधन यह सब आपके उत्तम रथी उनके सम्मुख गये ३ हे राजन्! शकुनी, सुतवृष, क्राथ, देवावृद्ध यह आपके वीर रथी हाथी और बादलके समान शब्दायमान रथ और धनुषों समेत उन ग्यारह वीरों के रोकनेवाले हुए अत्यन्त उत्तम बाणों से घायल करते ४ कलिङ्गदेशीय बादल और पर्वतके शिखरों के समान भयानक वेगवाले हाथियों समेत उनके सम्मुख गये और अच्छे प्रकारसे अलंकृत मद से मतवाले युद्धाभिलाषी कर्मकर्ता पुरुषों से युक्त ५ सुनहरी जालों से अलंकृत हाथी ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि आकाश में बिजली रखनेवाले बादल होते हैं वहां कलिङ्ग के पुत्रने दश लोहे के बाणोंसे कृपाचार्यको सारथी समेत घोड़ों समेत अत्यन्त घायल किया ६ इसके पीछे कृपाचार्य के बाणोंसे वह छिन्न हुआ कलिङ्ग का पुत्र हाथी समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा तब उसका छोटा भाई इन्द्रकी की किरण के समान प्रकाशित लोहे के तोमरों से ७ रथको कम्पायमान करके जड़ गर्जा इसके पीछे राजा गान्धारने इस गर्जनेवाले के शिर को काटा समानकिया उन कलिङ्गदेशियों के मरनेपर अत्यन्त प्रसन्नरूप आपके उन महारथियों ने शङ्खों को बड़ी ध्वनियों से बजाया और धनुषको हाथमें रखनेवाले वृषसेन के फिर दूसरीबार के सम्मुख गये इसके पीछे सृञ्जयों समेत पाण्डव और कौरवों का युद्ध सुखपर

कारी वह युद्ध फिर हुआ ९ जोकि बाण, खड्ग, शक्ति, दुधारे, खड्ग, गदा और फरसों से मनुष्य, हाथी और घोड़ों के प्राणों का हरनेवाला था इसके अनन्तर हज़ारों रथ घोड़े और हाथी पदातियों से परस्पर में घायल होकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े १० जैसे कि बिजली और गर्जना रखनेवाले धुवें से युक्त बादल दिशाओं से गिरे उसके पीछे सैकड़ों सेना रखनेवाले हाथी रथी और पत्तियों के समूहों को ११ और घोड़ों को भोजवंशीय कृतवर्मा ने मारा वह सब उसके बाणों से मृतक होकर एक क्षण मेंही गिरपड़े उसके पीछे अश्वत्थामा के बाणसे सब शस्त्र और ध्वजाओं समेत घायल शूरवीर १२ और निर्जीव अन्य बड़े २ हाथी ऐसे पृथ्वी पर गिरपड़े जैसे कि वज्र से ताड़ित बड़े २ पर्वत गिरते हैं १३ राजा कलिङ्गके छोटे भाई ने उत्तम बाणोंसे आपके पुत्रको छातीपर घायल किया फिर आपके पुत्रों ने भी अपने तीक्ष्ण बाणों से उसके शरीरसमेत हाथीको मारा १४ तब वह गजराज उस राजकुमार समेत सब ओर को रुधिर को गेरता ऐसे गिर पड़ा जैसे कि बादलों के आने में इन्द्र के वज्र से टूटा धातुवान् पर्वत जल को गिराता गिरपड़े १५ फिर कलिङ्ग के पुत्र के भेजेहुए दूसरे हाथी ने किरात को सारथी घोड़े और रथ के समेत मारा तदनन्तर बाणों से घायल हाथी अपने स्वामी समेत ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्र का माराहुआ पर्वत होता है १६ वह रथ में सवार कठिनता से विजय होनेवाला राजा किरात हाथी सारथी धनुष और ध्वजा समेत उस हाथीपर सवार पर्वतीय के बाणों से घायल ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बड़ी वायुसे ताड़ित और कम्पित होकर बड़ा वृक्ष होता है १७ वृक ने गिरि-राजके रहनेवाले हाथी के सवार को बारह बाणों से अत्यन्त घायलकिया उसके पीछे उस बड़े हाथी ने बड़ी शीघ्रता से चारों पैरों से घोड़े और रथसमेत वृक को मारा १८ फिर उस बभ्रु के पुत्र के बाणों से कठिन घायल वह गज भी अपने हाथी सवार समेत गिरपड़ा सहदेव के पुत्र के हाथ से घायल और पीड्यमान वह देववृद्ध का पुत्र भी गिरपड़ा १९ उत्तम युद्धकर्ताओं के ऊपर गिरनेवाले हाथी की सवारी से राजा कलिङ्ग का विषाणगात्र नाम पुत्र भी बड़े वेग से शकुनी को बहुत कठिन पीड़ित करताहुआ उसके मारनेको गया उसके पीछे गान्धार के राजा शकुनी ने उसके शिर को काटा २० उस समय उन कलिङ्ग देशियों के मरनेपर अत्यन्त प्रसन्नमूर्ति आपके अन्य महारथियों ने शङ्खों को

अच्छीरीति से बजाया और धनुष हाथों में लिये शत्रुओं के सम्मुख गये २१ इसके पीछे कौरवों का युद्ध पाण्डव और सृञ्जयों के साथ ऐसा हुआ जो अत्यन्त भयकारी बाण, खड्ग, शक्ति, दुधारेखड्ग, गदा और फरसों से रथ हाथी और घोड़ों के प्राणों का हरनेवाला घोररूप था २२ फिर परस्परमें घायल रथ, घोड़े, हाथी और पदाती पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि प्रचण्ड वायु से ताड़ित बिजली और गर्जना रखनेवाले बादल दिशाओं से गिरते हैं २३ इसके पीछे आपके बड़े हाथी घोड़े रथ और पत्तियों के समूह शतानीक के हाथ से मारेगये और अचेतता से चूर्ण २ होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि गरुड़जी के पक्षों की वायु से घायल सर्प गिरते हैं २४ उसके पीछे मन्दमुसकान करतेहुए कलिङ्ग के पुत्र ने बड़े तीक्ष्ण बाणों से नकुल के पुत्रों को छेदा फिर नकुल के पुत्र ने भी क्षुरप्र से कमलरूपी मुख रखनेवाले उसके शिर को शरीर से काटा २५ तब कर्ण के पुत्र ने तीन लोहे के बाणों से शतानीक को और तीनबाणों से अर्जुन को तीन से भीमसेन को सात से नकुल को और बारह से श्रीकृष्णजी को घायल किया २६ तदनन्तर प्रसन्नचित्त कौरवों ने बुद्धि से बाहर कर्म करनेवाले कर्ण के पुत्र के उस कर्म को देखकर बड़ी प्रशंसाकरी परन्तु जो अर्जुन के पराक्रमके जाननेवाले थे उन्होंने यह माना कि अब यह अग्नि में होमागया २७ इसके पीछे नरों में बड़ा शूरवीर शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अर्जुन माद्री के पुत्र नकुलको मृतक घोड़ेवाला देखकर और लोकमें श्रीकृष्णजी को अत्यन्त घायल विचार कर २८ युद्धमें वृषसेनके सम्मुख दौड़ा तब कर्णका पुत्र उस आनेवाले नरवीर गुरुरूप महायुद्ध में हजारों बाणधारण करनेवाले महारथी अर्जुन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि पूर्व समय में नमुचि महेन्द्र के सम्मुख गया था उसके पीछे कर्ण का पुत्र शीघ्रतापूर्वक बड़ेतीव्र और स्वच्छ बाणों से अर्जुन को छेद कर युद्ध में ऐसे महाशब्द से गर्जा जैसे कि वह महानुभाव वीर नमुचि इन्द्रको छेदकर गर्जाथा फिर उस वृषसेनने उग्रबाणों से अर्जुन की वाम भुजा को जड़ में छेदा २९ । ३१ और इसीप्रकार नौ बाणों से श्रीकृष्णजीको पीड्यमानकिया इसके पीछे फिर भी अर्जुन को दशबाणों से घायल किया जैसे कि वृषसेन के पहले बाणों से अर्जुन घायलहुआ ३२ और कुछ क्रोधयुक्त हुआ फिर दूसरीबार के बाणों से उसके मारने का मन में विचार किया फिर अर्जुन ने युद्ध मुखपर

अपने क्रोधसे ललाटपर भृकुटीको तीनरेखावाली करके ३३ शीघ्रही विशिखों को छोड़ा तब युद्ध में कर्ण के पुत्र के मारने में चित्तको प्रवृत्त करके बड़ासाहसी नेत्रों के कोणों को लाल करके अर्जुन बहुत हँसकर कर्ण दुर्योधन और अश्वत्थामा आदि शूरवीरों से बोला ३४ हे कर्ण ! अब मैं तेरे देखतेहुए तीक्ष्ण-धारवाले पृषत्कों से इस उग्ररूप वृषसेन को परलोक में पहुँचाता हूं ३५ निश्चय करके तबतक मनुष्य कहेंगे जो मुझसे पृथक् अकेला यहमेरा रथी वेगवान् पुत्र आप सबके हाथ से मारागया इसी से मैं आप सबलोगों के समक्ष में इसको मारूंगा ३६ रथों में सवार तुम सब मिलकर इसकी अच्छी रीति से रक्षाकरो यह उग्ररूप आपका वृषसेन पुत्र है इसको मैं मारूंगा इसके पीछे इसी युद्धभूमि में जो मेरा नाम अर्जुन जो तुझ महाअज्ञानी को भी इसीप्रकार से न मारूं ३७ अब मैं युद्ध में तुझ उपद्रव के मूल दुर्योधन की आश्रयता से अहङ्कारी होनेवाले को बड़ी हठता से मारूंगा और इस नीच दुर्योधन का मारनेवाला भीमसेन है ३८ जिसके कि अन्याय से यह बड़ाभारी वीरों का नाशहुआ ऐसा कहकर उसने अपने धनुषको तैयार करके और युद्धभूमि में वृषसेन को लक्ष्यबनाकर ३९ उस बड़े साहसी ने कर्ण के पुत्र के मारने के लिये विशिखनाम बाणों को छोड़ा हे राजन्! हँसतेहुए अर्जुन ने दश पृषत्कों से वृषसेन को मर्मस्थलों में वेधा ४० और क्षुरप्रनाम तीक्ष्ण चार बाणों से धनुष समेत उसकी दोनों भुजाओं समेत शिर को काटा अर्जुन के बाणों से घायल और बेशिर होकर वह कर्ण का पुत्र रथ से पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा ४१ जैसे कि बहुत लम्बा और फूलाहुआ शाल का वृक्ष वायु के वेग से पर्वत के शिखर से गिरपड़े फिर शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने बाणों से मरेहुए रथ से गिरतेहुए पुत्र को देखकर ४२ शीघ्रही पुत्र के मारने से अर्जुनपर क्रोधयुक्त होकर अपने रथ को उसके सम्मुख किया अर्थात् युद्ध में अपने नेत्रों के सम्मुख पुत्र को मराहुआ देखकर ४३ वह महासाहसी अत्यन्त क्रोधमें मूर्च्छित होकर अकस्मात् श्रीकृष्ण और अर्जुन के सम्मुख दौड़ा॥४४॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिवृषसेनवधोनामषडशीतितमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, मर्यादा के उल्लङ्घन करनेवाले समुद्र के समान डीलडौल युक्त उस गर्जनेवाले आयेहुए कर्णको देखकर १ पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी हँसकर

अर्जुन से बोले कि यह श्वेत घोड़ेवाला शल्यको सारथी बनानेवाला अधिरथी आता है २ इसके साथ तुझ को लड़ना चाहिये हे अर्जुन ! अब दृढ़ होकर नियत हो हे पाण्डव ! इस रथ को देखो जोकि अच्छे प्रकार से बना हुआ ३ श्वेत घोड़ों से युक्त राधा के पुत्र की सवारी से शोभित नाना प्रकार की ध्वजा, पताका और क्षुद्रघण्टिकाओं के जालों का रखनेवाला ४ और श्वेत घोड़ेरूप आकाश में चलनेवाला चित्रविचित्ररूप आकाश के विमान के समान है और महात्मा कर्ण के नाग की कक्षा का चिह्न रखनेवाली ध्वजा को देखो ५ और इन्द्रधनुष के समान धनुषसे मानों आकाश में लिखनेवाले दुर्योधन का अभीष्ट चाहनेवाले बाणों की वर्षा से युक्त आतेहुए कर्णको ऐसे देखो जैसे कि जल की धाराओं के छोड़नेवाले बादल को देखते हैं रथके आगे नियत यह मद्रदेश का राजा ६।७ उस बड़े तेजस्वी कर्णके घोड़ों को हांकताहै दुन्दुभियों और शङ्खों के भयानक शब्द ८ और नानाप्रकार के सिंहनादों को सब ओर से सुनो हे पाण्डव ! बड़े तेजस्वी कर्णके द्वारा बड़े २ शब्दोंको गुप्तकरके ९ कठोर कम्पायमान धनुष के शब्दको सुनो यह पाञ्चालों के महारथी अपने सेनासमूहों समेत छिन्न भिन्न होकर ऐसे पृथक् होते हैं जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त केशरी सिंह को देखकर छिन्न भिन्न होकर मृग पृथक् होते हैं हे अर्जुन ! तुम सब उपायों से कर्ण के मारने के योग्य हो १०।११ तुम्हारे सिवाय दूसरा मनुष्य कर्णके बाण सहने की सामर्थ्य नहीं रखता है देवता, असुर, गन्धर्व और जड़ चैतन्य जीवों समेत तीनोंलोक के १२ विजयकरने को तुम्हीं समर्थ हो यह मैं निश्चय जानता हूं कि उस भीम उग्ररूप महात्मा त्रिनेत्रधारी कपर्दी प्रभु शिवजी के १३ देखने को भी कोई समर्थ नहीं होसक्ता है फिर युद्ध करनेकी किसको सामर्थ्य होसक्ती है तुमने सब जीवमात्र के कल्याणरूप साक्षात् महादेवजी की युद्धकेही द्वारा आराधना करी १४ और देवताभी तुझको वर देनेवाले हैं हे महाबाहो, अर्जुन ! उस देवताओं के भी देवता शूलधारी शिवजीकी कृपासे १५ तुम कर्णको ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको मारा था हे अर्जुन ! सदैव तेरा कल्याणहोय तू युद्ध में विजयको पावेगा १६ अर्जुन ने कहा हे कृष्णजी ! जो सब लोक के गुरु और स्वामी आप मेरे ऊपर प्रसन्न हैं तो निश्चय करके मेरी अवश्य विजय है इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है १७ हे महारथिन्, श्रीकृष्णजी ! मेरे रथ और

घोड़ोंको चलायमान करो अब अर्जुन कर्णको विना मारेहुए युद्धसे नहीं लौटेगा १८ हे गोविन्दजी ! अब मेरे बाणोंसे कर्णको मृतक और खण्ड २ देखोगे अथवा कर्ण के बाणों से मुझको मृतक और खण्ड २ देखोगे १९ यह तीनों लोकों का मोहनेवाला घोरयुद्ध अब वर्तमानहुआ जिसको पृथ्वी जबतक रहैगी तबतक मनुष्य वर्णनकरेंगे २० तब सुगमकर्मी श्रीकृष्णजीसे ऐसा कहताहुआ अर्जुन रथकी सवारी केद्वारा ऐसी शीघ्रतासे सम्मुखगया जैसे कि हाथी हाथीके सम्मुख जाताहै २१ तेजस्वी अर्जुन फिरभी शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजीसे बोला कि हे हृषीकेशजी! आप शीघ्र घोड़ोंको तीव्रकरो यह समय व्यतीतहुआ जाताहै २२ उस महात्माअर्जुन के इस वचन के कहतेही श्रीकृष्णजीने उसको विजय का आशीर्वाद देकर चित्तके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको तीक्ष्णकिया २३ चित्तके समान शीघ्रगामी वह अर्जुनका रथ क्षणमात्रमेंही कर्णके रथसे आगेहोगया २४॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णवधायार्जुनप्रस्थानेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, वृषसेन को मृतक देखकर शोक सन्तापसेयुक्त कर्णने पुत्र के शोक से उत्पन्न होनेवाले जल को नेत्रों से छोड़ा १ फिर क्रोध से रक्तनेत्र तेजस्वी कर्ण युद्ध के निमित्त अर्जुन को बुलाता रथकी सवारी के द्वारा शत्रुके सम्मुख गया २ सूर्यके समान प्रकाशमान व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुए वह दोनों और दोनों के रथ मिलेहुए ऐसे दिखाई दिये जैसे कि आकाश में वर्तमान दो सूर्य होयँ ३ वह शत्रुओं के मर्दनकरनेवाले दिव्यपुरुष श्वेतघोड़ेवाले दोनों महात्मा युद्धभूमि में नियत होकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि स्वर्ग में चन्द्रमा और सूर्य शोभादेते हैं ४ हे श्रेष्ठ! तीनोंलोकके विजय करने में उपाय करनेवाले इन्द्र और वैरोचन असुरके समान उनदोनों को देखकर सब सेनाके मनुष्योंको बड़ा आश्चर्यसा हुआ ५ रथ कवच प्रत्यञ्चा और बाणों के शब्द और इसीप्रकार सिंहनादों समेत सम्मुख दौड़नेवाले उन रथियों को देखकर ६ और मिलीहुई ध्वजाओं को भी देखकर राजाओं को आश्चर्य उत्पन्न हुआ गज की कक्षा के चिह्नवाली कर्णकी ध्वजा और हनुमानजी के रूप की धारण करनेवाली अर्जुन की ध्वजा थी ७ हे भरतवंशिन् ! फिर सब राजाओं ने उन मिलेहुए रथियों को देखकर सिंहनादपूर्वक बड़ी प्रशंसाकरी ८ वहांपर हजारों शूरवीरोंने उनदोनों

के साथ में द्वैरथ युद्धको देखकर भुजाके शब्द अर्थात् खम्भों को फटकार कर दु-पट्टों को घुमाया ९ और कर्णके प्रसन्न करनेको कौरवलोगोंने चारोंओरसे बाजों को बजाकर सबने शङ्खोंको बजाया १० इसीप्रकार अर्जुनकी प्रसन्नताके लिये सब पाण्डवोंने तूरी और शङ्खके शब्दोंसे सब दिशाओंको शब्दायमान किया ११ सिंहनाद तालों का ठोकना शूरों का पुकारना और शूरों की भुजाओं के महा-कठोर शब्द अर्जुन और कर्ण की सम्मुखता में सब ओरको हुए १२ हे राजन्! उन रथपर नियत रथियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी बाण, शक्ति, ध्वजा से युक्त १३ कवच खड्गधारी श्वेत घोड़ोंसमेत मुखोंसे शोभायमान उत्तम तूणीर बाँधे सुन्दर दर्शन १४ लालचन्दन से अलंकृत सुन्दर शरीर उत्तम मतवाले बैलों के समान धनुष और ध्वजारूपी बिजलीसे युक्त घनरूपी शस्त्रोंसे युद्धकरनेवाले १५ चमर और व्यजनों से युक्त श्वेत छत्रों से शोभित श्रीकृष्ण और शल्यको सारथी रख-नेवाले एक से रूप महारथी १६ सिंहके समान स्कन्ध लम्बीभुजा रक्तनेत्र सुवर्ण की मालाओंसे भूषित सिंहके समान शरीर बड़े हृदय और पराक्रमवाले परस्पर एक दूसरे का मरण चाहनेवाला दोनों परस्पर विजयाभिलाषी, गोशाला में उत्तम बली बर्धों के तुल्य परस्पर सम्मुख दौड़नेवाले मतवाले हाथियों के और पर्वतों के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त १७ । १८ विषैले सर्पके बच्चों के समान यमराज काल और मृत्युके समान इन्द्रवज्रके समान क्रोधी सूर्य चन्द्रमाके समान तेजस्वी १९ प्रलयकाल के लिये उठेहुए महाग्रहों के समान क्रोध में भरे देव-कुमार देवताके समान पराक्रमीरूप में भी देवरूप दैवकी इच्छासे सूर्य चन्द्रमा के समान सम्मुख आनेवाले पराक्रमी युद्ध में अभिमानी लड़ने में नाना प्रकार के शस्त्रों के रखनेवाले २० । २१ शार्दूलों के समान नियत उन दोनों पुरुषोत्तमों को देखकर आपके शूरवीरों को बड़ा आनन्द हुआ २२ भिड़े हुए पुरुषोत्तम कर्ण और अर्जुनको देखकर पूरी विजयमें सब जीवोंको सन्देह वर्तमानहुआ २३ दोनों उत्तम शस्त्रधारी और युद्ध में परिश्रम करनेवालों ने भुजाओं के शब्दों से आकाशमण्डल को शब्दायमान किया २४ दोनों वीरता और पराक्रम से प्र-सिद्धकर्मी और समरमें देवराज और शम्बर के समान थे २५ फिर दोनों सहस्रा-बाहु के समान वा श्रीरामचन्द्रजी के तुल्य पराक्रमी और उसी प्रकार युद्ध में शिवजी के समान पराक्रमी थे २६ हे राजन्! दोनों श्वेत घोड़ेवाले उत्तम रथों

की सवारी रखनेवाले थे और उस बड़े युद्ध में दोनों के श्रेष्ठतर सारथी थे२७ हे महाराज ! इसके अनन्तर उन शोभायमान महारथियों को देखकर सिद्ध चारण लोगों के समूहों को भी आश्चर्य उत्पन्न हुआ २८ हे भरतर्षभ ! इसके पीछे सेनासमेत आपके पुत्रों ने युद्ध को शोभा देनेवाले महात्मा कर्ण को शीघ्रही चारों ओर से घेरकर रक्षित किया २९ इसी प्रकार प्रसन्नरूप पाण्डवों ने भी जिन का अग्रगामी धृष्टद्युम्न था उस युद्ध में अनुपम महात्मा अर्जुन को चारोंओर से रक्षित किया ३० हे राजन् ! तब युद्धमें आपके पुत्रों का रक्षक कर्ण हुआ और पाण्डवों का रक्षक अर्जुन हुआ ३१ वहांपर वही सब वर्तमान शूर सभासद हुए और वही देखनेवाले हुए वहां इन रक्षा करनेवालों की विजय और पराजय निश्चयहुई युद्ध के अग्रभाग में वर्तमान पाण्डव और हमलोगों का विजय और पराजयवाला द्यूत उन दोनों शूरवीरों के द्वारा जारी हुआ ३२ । ३३ हे महाराज ! वह युद्धभूमि में युद्ध में प्रशंसनीय परस्पर क्रोधभरे परस्पर के मारने की इच्छासे नियतहुए ३४ हेप्रभो ! वह दोनों क्रोधरूप इन्द्र और वृत्रासुर के समान प्रहार करने के उत्सुक हुए और बड़े धूम्रकेतु उपग्रहों के समान भयानकरूपधारी हुए ३५ हे भरतर्षभ ! इसके पीछे कर्ण और अर्जुन के विषय में अन्तरिक्ष में जीवोंके परस्परमें निन्दा स्तुति करने के शास्त्रार्थरूप वाद हुए ३६ पिशाच सर्प और राक्षस दोनों ओर को परस्पर में सुनेगये ३७ उनसबों ने कर्ण और अर्जुन के पक्षपातों में चित्त को प्रवृत्त किया स्वर्ग उस कर्ण की ओर के पक्ष में नियत हुआ ३८ और पृथ्वी माता के समान अर्जुन की विजय चाहनेवाली हुई इसी प्रकार पर्वत समुद्र नदी भी जलों समेत अर्जुन के पक्षपाती हुए वृक्ष और ओषधियां भी अर्जुन केही पक्ष में हुए यह सब परस्पर दोनों ओरों को सुनेगये हे शत्रुसन्तापिन्, धृतराष्ट्र ! असुर, यातुधान और गुह्यक ३९ । ४० इन स्वरूपवानों ने चारों ओरसे कर्ण को प्राप्त किया मुनि, चारण, सिद्ध, गरुड़, पक्षी ४१ रत्न, सब खाने, चारोंवेद जिन में पांचवां इतिहास है उपवेद, उपनिषद्, रहस्य और संग्रहसमेत वासुकी, चित्रसेन, तक्षक, पन्नग, सबकद्रूके पुत्र सर्प ४२।४३ और विषैले सर्प यह सब अर्जुन की ओर हुए ऐरावतवंशीय, सुरभीवंशीय, वैशाली, भोगीनाम सर्प ४४ यह सब अर्जुनकी ओर हुए और नीच सर्प कर्ण की ओर हुए ईहामृग, व्यालमृग और मङ्गली पशुपक्षी यहसब ४५ अर्जुनकी

विजय में प्रवृत्तचित्त हुए आठों वसु, ग्यारहों रुद्र, साध्यगण, मरुद्गण, विश्वेदेवा, दोनों अश्विनीकुमार ४६ अग्नि, इन्द्र, चन्द्रमा, दशोंदिशा, वायु यह सब अर्जुन की ओर हुए और बारह सूर्य कर्णकी ओर हुए ४७ हे महाराज ! तब वैश्य, शूद्र, सूत और जो २ कि संकरजातिवाले हैं इन सबने कर्णको सेवन किया ४८ पीछे चलनेवाले समूहों समेत पितरों से युक्त देवता यमराज और कुबेर अर्जुन की ओर हुए ४९ ब्राह्मण, क्षत्रिय, यज्ञ, दक्षिणा अर्जुन की ओर हुए प्रेत, पिशाच, मांसभक्षी, राक्षस आदि पशुपक्षी ५० और जलके जीव, श्वान, शृगाल कर्ण की ओरहुए देवर्षि ब्रह्मर्षि और राजऋषियों के समूह पाण्डवों की ओर हुए ५१ हे राजन् ! और तुम्बुरु आदि गन्धर्व भी अर्जुन की ओर हुए मनु के पुत्र गन्धर्व और अप्सराओं के समूह कर्ण की ओर हुए ५२ भेड़िये आदि पशु और पक्षियों के समूह हाथी घोड़े रथ और पत्ति इसी प्रकार मेघ वायुपर आरूढ़ ऋषिलोग ५३ कर्ण और अर्जुन के युद्ध के देखने की इच्छा से आये देवता, दानव, गन्धर्व, नाग, यक्ष, गरुड़ आदि ५४ और वेदज्ञ महर्षि लोग स्वधा के भोजन करनेवाले पितर और अनेक प्रकार के रूप पराक्रमों से युक्त तप विद्या औषध ५५ हे महाराज ! यह सब शब्दों को करते हुए आकाश में नियत हुए ब्रह्मर्षि और प्रजापतियों समेत ब्रह्माजी ५६ और विमान पर विराजमान शिवजी उस दिव्यदेश को आये तब उन भिड़े हुए महात्मा कर्ण और अर्जुन को देखकर ५७ इन्द्र देवता बोले कि अर्जुन कर्ण को मारकर विजयकरो और सूर्य देवता ने कहा कि कर्ण अर्जुन को विजय करो ५८ मेरा पुत्र कर्ण युद्ध में अर्जुन को मारकर विजय करे और इन्द्रने कहा कि मेरा पुत्र अर्जुन कर्ण को मारकर विजय करे ५९ वहां देवताओं में श्रेष्ठ पक्षपात में युक्त इन दोनों सूर्य और इन्द्र का परस्पर वाद हुआ ६० हे भरतवंशिन् ! देवता और असुरों के दो पक्ष हुए भिड़ेहुए उन दोनों महात्मा कर्ण और अर्जुनको देखकर देवता, सिद्ध, चारण आदिक समेत तीनोंलोक कम्पायमान हुए ६१ सब देवताओं के गण और जीवमात्र जितने हैं उनमें देवता अर्जुन की ओर हुए और असुर कर्ण की ओर हुए ६२ देवताओं ने कौरव और पाण्डवों के वीर महारथियों के दोनों पक्षोंको देखकर स्वयंभू ब्रह्माजी से कहा कि हे ब्रह्माजी, महाराज ! इन कौरव और पाण्डवों के दोनों युद्धकर्त्ताओं में किसकी विजय होगी हे देव ! इन दोनों न-

रोत्तमोंकी वारंवार विजयहोय ६३ । ६४ हे प्रभो, ब्रह्माजी ! कर्ण और अर्जुन के विवाद युद्ध से सब जगत् सन्देहयुक्त है इन दोनों की विजय को सत्य २ हम से कहिये हे ब्रह्माजी ! आप इसी वचन को कहिये जिसमें इन दोनों की विजय समान हो इन वचनों को सुनकर पितामहजी को प्रणाम करके ६५।६६ बड़े ज्ञानी इन्द्र ने देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी को यह जतलाया कि प्रथम आप भगवान् ने श्रीकृष्ण और अर्जुन की पूर्ण विजय वर्णन करी वह जैसा आपने कहा है वैसेही होय मैं आपको नमस्कार करता हूं आप मुझपर प्रसन्न हूजिये इसके पीछे ब्रह्माजी और शिवजी इन्द्र से यह वचन बोले ६७ । ६८ कि इस महात्मा अर्जुन कीही निश्चय विजय होगी जिस अर्जुन ने कि खाण्डव वन में अग्नि को प्रसन्न किया और हे इन्द्र ! उसने स्वर्ग में आकर तेरी सहायताकरी और कर्ण दानवों के पक्ष में है इस हेतु से वह पराजय होनेके योग्य है ६९।७० ऐसा करने से देवताओं का कार्य निश्चय होता है हे देवराज ! सबका निज कार्य बड़ा है ७१ महात्मा अर्जुन भी सदैव सच्चे धर्ममें प्रीति रखनेवाला है इसी की अवश्य विजय होगी इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है ७२ और जिसने भगवान् महात्मा शिवजीको प्रसन्नकिया हे इन्द्र ! उसकी विजय कैसे न होगी अर्थात् अवश्य होगी ७३ जगत् के प्रभु विष्णु भगवान्ने जिसकी आप रथवानी करी और जो साहसी पराक्रमी अत्रज्ञ तपोधन ७४ बड़ा तेजस्वी सब गुणों से युक्त अर्जुन सम्पूर्ण धनुर्वेद को धारण करता है इसीसे यह देवताओं का काम होगा ७५ पाण्डव सदैव से वनवास आदि से दुःख पातेहैं तपसे युक्त वह योग्य पुरुष अर्जुन ७६ अपनी प्रतिष्ठासे वाञ्छित मनोरथों की अमर्यादाओं को उल्लङ्घनकरे उसके उल्लङ्घन करनेपर लोकोंका अवश्य नाशहोजाय ७७ क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और अर्जुनकी पराजय कहीं नहीं वर्तमान है यह दोनों पुरुषोत्तम सदैवसे संसार के स्वामी हैं अर्थात् इनदोनों परमात्मा और आत्मा के तेज से सब जगत् प्रकट होता है ७८ यह दोनों नरनारायण पुराण पुरुष ऋषियोंमें श्रेष्ठ अजेय सबके ऊपर मुख्य हैं इसी हेतुसे यह दोनों शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले हैं ७९ स्वर्ग, मर्त्य, पाताल इन तीनों लोकों में इन दोनों के समान कोई नहीं है ८० सब देवगण और जीवोंके गण जितने हैं इन सब समेत सब संसारइनदोनोंसे मिलकर उन्हींके प्रभाव से प्रकट होताहै ८१ यह पुरुषोत्तम कर्ण उत्तम लोकोंको पावे क्योंकि यह

सूर्य का पुत्र और बड़ा शूरवीर है परन्तु श्रीकृष्ण और अर्जुनकी विजय होय ८२ यह कर्ण वसुओंकी सालोक्यता को और मरुद्गणोंके स्थानों को पावे और द्रोण वा भीष्मपितामह के साथ स्वर्गलोक को पावे ८३ देवताओंके देवता ब्रह्माजी और शिवजीके इस वचनको सुनकर इन्द्रने सब जीवमात्रोंको समझाकर ब्रह्मा जी और शिवजीके आज्ञारूप इस वचनको कहा ८४ कि हे सबजीवमात्रो! आप सबलोगों ने सुना जो जगत्के हितकारी भगवान् ब्रह्माजी और शिवजीने कहा है वह वैसाही होगा इसमें अन्यथा कभी न होगा तुम निस्सन्देह रहो ८५ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! सबजीव इन्द्रके इस वचनको सुनकर आश्चर्ययुक्त हुए और इन्द्र का पूजन किया और देवताओं ने प्रसन्नचित्त होकर सुगन्धित पुष्पों की वर्षाकरी और नानारूप के देवताओं के बाजों को बजाया ८६। ८७ इनदोनों नरोत्तमों को अनूपम द्वैरथ युद्धके देखनेकी इच्छासे देवता दानव और गन्धर्व सब नियतहुए ८८ उन दोनों महात्माओं के वह दोनों दिव्य रथ श्वेतघोड़ों से युक्त थे जिनपर यह दोनों महात्मा सवार थे ८९ सम्मुख आयेहुए लोकोंके वीरोंने अपने २ शङ्खोंको पृथक् २ बजाया हे भरतवंशिन्! फिर वासुदेवजी अर्जुन कर्ण और शल्यने भी शङ्खों को बजाया ९० तब परस्पर ईर्षा करनेवाले दोनों वीरों का युद्ध भयानकोंका भी भयकारी ऐसा कठिन हुआ जैसे कि इन्द्र और शम्बर दैत्य का युद्ध हुआ था ९१ उन दोनोंकी निर्मल भुजा रथपर नियत होकर ऐसी शोभायमान हुईं जैसे कि संसार की प्रलय होने के समय में आकाश में उदय होनेवाले राहु और केतु होते हैं ९२ विषवाले सर्पकी समान रत्नसार से जटित बड़ी दृढ़ इन्द्रधनुष के समान हाथी की कक्षा के चिह्नवाली कर्ण की ध्वजा शोभा देरही थी ९३ और खुले मुखवाले यमराजके समान विकराल दंष्ट्रावाले हनुमान्जीसे शोभित अर्जुनकी ध्वजा ऐसी भयकारी देखने में आती थी जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से दुःख से देखनेके योग्य होता है ९४ गाण्डीवधनुष-धारी की ध्वजा में से युद्धाभिलाषी हनुमान्जी अपने स्थान से उछलकर कर्ण की ध्वजापर नियत हुए ९५ बड़े वेगवान् हनुमान्जी ने उछलकर कर्ण के ध्वजा की नागकक्षा को अपने दाँत और नखों से ऐसे घायल किया जैसे कि सर्प को गरुड़ करता है ९६ इसके पीछे क्षुद्रघण्टिका और भूषण रखनेवाली कालपाश के समान अत्यन्त क्रोधरूप वह नाग की कक्षा हनुमान्जी की ओर

दौड़ी ९७ तब उन दोनों का अत्यन्त घोररूप द्वैरथ युद्ध होनेपर उन दोनों ध्वजाओं ने प्रथम वा उत्तम युद्ध के ९८ परस्पर ईर्षा करनेवाले घोड़ों से घोड़ों को हिंसन किया और कमललोचन श्रीकृष्णजी ने नेत्ररूप बाणों से शल्य को छेदा ९९ इसी प्रकार शल्यने भी श्रीकृष्णजी को देखा वहां वासुदेवजी ने नेत्ररूपी बाणों से शल्य को विजय किया १०० और कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने भी कर्ण को देखकर विजय किया इसके पीछे सूतपुत्र कर्ण ने शल्य से समक्ष होकर मन्दमुसकान समेत यह वचन कहा १०१ कि अब युद्ध में किसी समयपर जो कदाचित् अर्जुन मुझ को मारडाले तब हे शल्य ! तुम क्या करोगे यह सत्य २ हम से कहो १०२ शल्य ने कहा कि जो श्वेतघोड़ेवाला अर्जुन तुझ को युद्ध में मारडालेगा तो मैं एकही रथ के द्वारा उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारूंगा १०३ सञ्जय बोले कि इसी प्रकार अर्जुन ने गोविन्दजी से कहा तब श्रीकृष्णजी ने भी हँसकर उस अर्जुन से यह सत्य २ वचन कहा १०४ कि हे अर्जुन ! चाहै सूर्य अपने स्थान से गिरपड़े और समुद्र भी सूखजाय और अग्नि शीतलता को पावे परन्तु कर्ण तुझ को नहीं मारसक्ता है १०५ जो यह किसी प्रकार से होजाय और इन लोगों का निवास होय तो मैं कर्ण और शल्य को युद्ध में अपनी भुजाओं सेही मारडालूंगा १०६ श्रीकृष्णजी के इसवचन को सुनकर हँसते हुए कपिध्वज अर्जुन ने उन सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी को यह उत्तर दिया कि १०७ हे जनार्दनजी ! जब आपकी मेरे ऊपर ऐसी कृपा है तो कर्ण और शल्य मुझको युद्ध में विजय करने को असमर्थ हैं हे श्रीकृष्णजी ! अब युद्ध में मेरे हाथ के बाणों से पताका, ध्वजा, शल्य, रथ, घोड़े, छत्र, कवच, शक्ति, बाण और धनुष सहित बहुत प्रकार से घायल हुए कर्ण को देखोगे १०८ । १०९ अबहीं रथ, घोड़े, शक्ति, कवच और शस्त्रों समेत ऐसे अच्छी रीति से चूर्ण होगा जैसे कि वन में हाथी से वृक्षों का चूर्ण होता है ११० अब कर्ण की स्त्रियों को वैधव्यता अर्थात् विधवापना प्राप्त हुआ हे माधवजी ! निश्चय करके उन स्त्रियों ने सोते हुए अशुभ स्वप्नों को देखाहोगा १११ अभी आप कर्ण की स्त्रियों को विधवा देखेंगे क्योंकि वह मेरा क्रोध शान्त नहीं होता है जो इस प्रकार से हमको हँसकर और वारंवार हमारी निन्दा करके इस अज्ञानी अदीर्घदर्शी ने पूर्व समय में सभा में वर्तमान द्रौपदी को देखकर कर्म किया

था ११२ । ११३ हे गोविन्दजी ! अब मेरे हाथ से मथन किये हुए कर्ण को ऐसे देखोगे जैसे कि मतवाले हाथी से मर्दन कियाहुआ पुष्पित वृक्ष होता है हे मधुसूदनजी ! अब कर्ण के पछाड़ने पर उन मधुर वचनों को आप सुनेंगे कि हे श्रीकृष्णजी ! आप प्रारब्ध से विजय करते हो ११४ । ११५ हे जनार्दनजी ! अब आप अत्यन्त प्रसन्न होकर अभिमन्यु की माता को और अपनी फूफी कुन्ती को विश्वासयुक्त करोगे ११६ हे माधवजी ! अब तुम अमृत के समान वचनों से अश्रुओं से पूरित मुखवाली द्रौपदी को और धर्मराज युधिष्ठिर को विश्वासयुक्त करके शान्त करोगे ॥ ११७ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकृष्णार्जुनसंवादेद्वैरथयुद्धेऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि आकाश देवता, नाग, असुर, सिद्ध, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व और अप्सराओं के समूहों से और राजऋषि ब्रह्मऋषि और गरुड़ से सेवित होकर अपूर्व शोभितहुआ १ और सब मनुष्य और पक्षियों ने नाना प्रकार के बाजे, गान, प्रशंसा, नृत्य, हास और अनेक चित्तरोचक शब्दों से अन्तरिक्ष को अपूर्व रूप का शब्दायमान देखा २ तदनन्तर बाजे शङ्ख और सिंहनादों के शब्दों से पृथ्वी और दिशाओं को शब्दायमान करते अत्यन्त प्रसन्नचित्त कौरवीय और पाण्डवीय सेना के शूरवीरों ने सब शत्रुओं को मारा ३ तब युद्धभूमि मनुष्य घोड़े हाथी और रथों से व्याप्त बाण खड्ग शक्ति और दुधारे खड्गों के प्रहारों से महाअसह्य और निर्भय शूरवीरों से सेवित वा मृतक योद्धाओं से पूरित होकर रक्तवर्ण को धारण किये अत्यन्त शोभायमान हुई ४ इस रीति से कौरव और पाण्डवों का ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि असुरों का और देवताओं का हुआ था इस प्रकार महाभयकारी घोर युद्ध के जारी होनेपर अर्जुन और कर्ण के महातीक्ष्ण सीधे चलनेवाले अच्छे अलंकृत उत्तम शायकों से दिशाओं समेत सम्पूर्ण सेना ढकगई तदनन्तर अन्धकार होजाने पर आपके और पाण्डवों के युद्धकर्ताओं ने कुछ भी नहीं देखा ५ । ६ रथियों में श्रेष्ठ वह दोनों कर्ण और अर्जुन भय से दुःखी होकर सम्मुखहुए फिर सबओर से अपूर्व युद्धहुआ अर्थात् पूर्वीय पश्चिमीय वायु के समान परस्पर में अस्त्रों से अस्त्रों को हटाकर ७ ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बादलों से अन्धकार होजानेपर उदय होनेवाले सूर्य और चन्द्रमा हटना नहीं

चाहते इस नियम से प्रेरित आपके और पाण्डवों के शूरवीरलोग सम्मुख नियत हुए ८ वह दोनों महारथी नरोत्तम सबओरसे घेरकर मृदङ्ग, भेरी, पणव और आनक नाम बाजों के और सिंहनादों के शब्दों के द्वारा ऐसे शब्दवाले हुए जैसे कि देवता असुर शम्बर और इन्द्र हुए थे ९ तब वह दोनों पुरुषोत्तम बड़े धनुषमण्डल में वर्त्तमान बड़े तेजस्वी बाणरूप हजारों किरणों के रखनेवाले होकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बादलों के शब्दों से चन्द्रमा और सूर्य होते हैं १० वह दोनों प्रलयकाल के सूर्य के समान युद्ध में कठिनतापूर्वक सहने के योग्य जड़ चैतन्यों समेत संसार के भस्म करने के इच्छावान् महा अजेय शत्रुओं का नाश करनेवाले परस्पर में मारने के अभिलाषी ११ कर्ण और अर्जुन निर्भयतापूर्वक उस बड़े युद्ध में ऐसे सम्मुखहुए जैसे कि महेन्द्र और जम्भ सम्मुख हुए थे उसके पीछे बड़े धनुषधारी भय के उत्पन्न करनेवाले बाणों के द्वारा बड़े अस्त्रों को छोड़तेहुए १२ दोनों महारथियों ने बहुतसे मनुष्य घोड़े और हाथियों समेत परस्पर में एक ने दूसरे को घायलकिया हे राजन्! इसके पीछे उन दोनों नरोत्तमों से पीड्यमान कौरवीय और पाण्डवीय मनुष्य, हाथी, पत्ति, घोड़े और रथों से युक्त ऐसे दशों दिशाओं में भागे जैसे कि सिंह से घायलहुए वनवासी जीव भागते हैं इसके पीछे दुर्योधन, कृतवर्मा, शकुनी, कृपाचार्य और शारद्वत का पुत्र इन पांचों महारथियों ने शरीर के छेदनेवाले बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को पीड़ित किया तब अर्जुन ने उनके धनुष, तूणीर, ध्वजा, घोड़े, रथ और सारथियों समेत १३।१५ चारों ओर से इन शत्रुओं को मथन करके शीघ्रही उत्तम बारह बाणों से कर्ण को घायल किया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले मारने के अभिलाषी लोग सम्मुख दौड़े और अर्जुन के मारने के उत्सुक सौ रथ सौ हाथी १६ और अश्व सवार शक, तुषार, यवन, काम्बोजदेशियों समेत इन सबों ने हाथों में क्षुरप्र लेकर सब शस्त्रों को काटकर शिरों को भी काटा उस समय वहां अनेक शिर पृथ्वीपर गिर पड़े १७ तब उस युद्ध करनेवाले अर्जुन ने घोड़े हाथी और रथों समेत उन शत्रुओं के समूहों को काटा इसके पीछे अन्तरिक्ष में देवताओं ने इन दोनों की कीर्ति समेत बाजों से स्तुति करी १८ और आकाश से सुगन्धित पुष्पों की वर्षा होने लगी तब उस आश्चर्य को देखकर देवता और मनुष्यों के समक्ष में सब जीवमात्र अचम्भा सा करनेलगे फिर उत्तम निश्चय रखनेवाले आपके पुत्र और कर्ण ने

न पीड़ाकरी न आश्चर्य को पाया इसके पीछे मधुरभाषी अश्वत्थामाजी हाथ से हाथ को मलकर आपके पुत्र से बोले १६। २० हे दुर्योधन! अब तू प्रसन्न होकर पाण्डवों से सन्धिकर लड़ना त्यागो और युद्ध को धिक्कार हो बड़े अस्त्रज्ञ ब्रह्माजी के समान गुरुजी और वैसेही भीष्मसरीखे प्रतापी वीर मारेगये २१ मैं और मेरा मामा चिरञ्जीवी हैं पाण्डवों समेत तुम बहुतकाल तक राज्य करो मुझ से निषेध कियाहुआ अर्जुन सन्धि को करता है और श्रीकृष्णजी भी शत्रुता को नहीं चाहते हैं २२ युधिष्ठिर सदैव जीवधारियों के मनोरथों में प्रवृत्त है और इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेव भी मेरे स्वाधीन हैं तेरी इच्छा से पाण्डवों से और तुझ से सन्धि होनेपर प्रजालोगों का कल्याण होगा और सुख को पावेंगे बाकी बचेहुए बान्धवलोग अपने २ पुरों को जायँ और सेना के मनुष्य भी युद्ध करना छोड़ें हे राजन्! जो मेरे वचन को नहीं सुनोगे तो निश्चय जानो कि अवश्य तुम शत्रुओं से घायल और पीड़ित होकर दुःखों को पावोगे २३।२४ तेरे साथ सब जगत् ने देखा जो अकेले अर्जुन ने किया ऐसा कर्म न यमराज न इन्द्र न भगवान् ब्रह्मा और यक्षों का राजा कुबेर भी नहीं करसक्ता है २५ अर्जुन अपने गुणों से इन सबसे भी अधिक है परन्तु वह मेरे किसी वचन को भी उल्लङ्घन नहीं करेगा अर्थात् मेरे कहने को अवश्य करेगा और सदैव तेरे पीछे चलेगा हे राजेन्द्र! तुम प्रसन्न होकर शान्तता में युक्त होजावो तुझ में मेरा सदैव बड़ा मन है इसी हेतु से मैं बड़ी शुभचिन्तकता से अर्थात् तेरे भले के लिये तुझ से कहता हूं जब आप मृदु होगे तब मैं कर्ण को भी निषेध करूंगा २६। २७ पण्डितलोग साथ उत्पन्न होनेवाले को मित्र कहते हैं इसी प्रकार प्रीति और धन के द्वारा प्राप्त होने वाला और अपने प्रताप से नम्रीभूत होनेवाले को मित्र कहते हैं यह चार प्रकार की मित्रता है वह तेरी चारोंप्रकार की मित्रता पाण्डवों में है २८ हे प्रभो! तेरी उत्पत्ति से तो तेरे बान्धव हैं प्रीति समेत उनको प्राप्तकरो और तेरी प्रसन्नतासे अर्थात् आधाराज्य देनेसे जो मित्र होजायँ उस दशा में तेरे कारणसे जगत्का बड़ाहित होगा उस शुभचिन्तक के ऐसे हितकारी वचनोंको सुनकर वह दुःखी चित्त दुर्योधन बहुत शोच से श्वासों को लेकर बोला हे मित्र! जैसा आप ने कहा वह सब इसी प्रकार है परन्तु मुझ जतानेवाले के भी वचनों को सुनो कि २६। ३० इस दुर्बुद्धि भीमसेन ने शार्दूल के समान अपना हठ करके

दुश्शासन को मारकर जो वचन कहा है वह मेरे हृदय में नियत है यह सब आप के समक्ष मेंही हुआ है कैसे शान्ति होसक्ती है ३१ अर्जुन भी युद्ध में कर्णको ऐसे नहीं सहसकेगा जैसे कि कठोर पवन मेरुनाम पर्वत को नहीं सहसक्ता है कुन्तीके पुत्र हठकरके और बहुधा शत्रुताको शोचकर मेरा विश्वास नहीं करेंगे हे गुरुजी के पुत्र ! तुम अजेय होकर इस बातको कर्ण से कभी न कहिये कि तुम युद्ध को त्याग दो अब अर्जुन बहुत थकावटसे युक्त है इसीसे यह कर्ण बड़े हठ से उसको मारेगा ३२ । ३३ आपके पुत्र ने उससे ऐसा कहकर और वारंवार समझाकर अपने सेनाके लोगोंको आज्ञादी कि तुम हाथों में बाणोंको लेलेकर मेरे शत्रुओं के सम्मुख जावो क्या मौन होकर नियत हो ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वण्यश्वत्थामाहितवर्णनेनवाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥

नब्बे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे राजन् ! आपके पुत्रके दुर्मन्त्रित होने वा शङ्ख और भेरी के शब्दों की आधिक्यतासे श्वेत घोड़े रखनेवाला नरोत्तम अर्जुन और सूर्यका पुत्र कर्ण दोनों ऐसे सम्मुखहुए जैसे कि मद झाड़नेवाले दीर्घदन्ती हिमालय पर्वत के उत्पन्न बड़े दो हाथी हथिनी के निमित्त भिड़ते हैं १ । २ अथवा जैसे कि दैवइच्छा से महाबलाहक नाम बादल बलाहक बादल से और पर्वत पर्वत से भिड़जायँ उसी प्रकार बाणरूपी वर्षा के करनेवाले धनुषरोदा और प्रत्यञ्चा के शब्दों समेत सम्मुखहुए ३ और परस्पर में ऐसे घायलहुए जैसे कि बड़े वृक्ष औषधी और शिखरवाले नाना झिरनों से युक्त बड़े पराक्रमी दो पर्वत आपस में घायल होते हैं उसी प्रकार वह दोनों महाअस्त्रों से परस्पर में घायलहुए ४ फिर बाणोंसे घायल शरीर सारथी और घोड़ेवाले उन दोनोंकी वह चढ़ाई बहुत बड़ी हुई जो अन्य से दुःखपूर्वक सहनेके योग्य कठोर रुधिररूप जलकी ऐसी रखने वाली थी जैसे कि पूर्व समय में देव इन्द्र और विरोचन के पुत्र बलि की चढ़ाई हुई थी जैसे कि बहुतसे पद्म वा उत्पल कमल मछली कछुये रखनेवाले पक्षियों के समूहोंसे वेष्टित अत्यन्त समीपवायुके वेगसे दो ह्रद परस्परमें भिड़जायँ उसीप्रकार वह दोनों ध्वजाधारी रथ आपसमें सम्मुख हुए ५ । ६ महेन्द्र के समान पराक्रमी और रूपवाले उन दोनों महारथियों ने उसी महेन्द्रके वज्रके समान शायकों से परस्परमें ऐसे घायलकिया जैसे कि महेन्द्र और वृत्रासुर ने परस्पर घायलकिया

था ७ हाथी पत्ति घोड़े रथ और चित्र विचित्र कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रों को धारण करनेवाली वह अपूर्वरूपवाली दोनों विस्मित सेना कम्पायमान हुई उस अर्जुन और कर्णके युद्धमें वस्त्र और अँगुलियों से युक्त ऊंची २ भुजा आकाश में वर्तमान हुई मतवाले हाथी के समान प्रसन्नचित्त अर्जुन तमाशा देखनेवालों के सिंहनादों समेत मारनेकी इच्छासे कर्णके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है ८। ९ वहां आगे चलनेवाले सोमक लोग अर्जुनको पुकारे कि हे अर्जुन! कर्णको छेदकर इसके मस्तकको काटो और धृतराष्ट्र के पुत्र की श्रद्धा को राज्यसे पृथक्करो इसमें विलम्ब मतकरो १० इसी प्रकार हमारे भी बहुत से शूरवीरों ने कर्ण को प्रेरणा करी कि चलो २ हे कर्ण! अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को मारो और पाण्डव फिर बहुत कालके लिये वन को जायँ ११ इसके पीछे प्रथम तो कर्ण ने उत्तम दशबाणों से अर्जुन को छेदा और अर्जुनने हँसकर तीक्ष्ण दशबाणोंसे कर्णको कुक्षमें वेधा १२ फिर उन दोनों कर्ण और अर्जुन ने सुन्दर पुङ्खवाले बाणों से परस्पर घायल किया और बड़ी प्रसन्नतासे एकने दूसरे को छेदा और भयकारी रूपोंसे सम्मुखगये १३ इस के पीछे उग्रधनुषधारी अर्जुन ने दोनों भुजाओं से गाण्डीव धनुषको ठीक करके नाराच, नालीक, वराहकर्ण, क्षुरप्र, आञ्जुलिक, अर्धचन्द्र इन बाणों को छोड़ा १४ हे राजन्! वह अर्जुनके छोड़े हुए बाण रथ में प्रवेश करगये और सब ओरसे ऐसे फैलगये जैसे कि सायंकाल के समीप नीचा शिर करनेवाले प-क्षियोंके समूह निवासके लिये शीघ्र वृक्षपर प्रवेशकरते हैं १५ शत्रुओंके विजय करनेवाले अर्जुन ने जिन बाणों को भृकुटी के कटाक्ष से युक्त कर्ण के निमित्त छोड़ा था उन बाणों को कर्ण ने अपने शायकों से दूर किया १६ इसके पीछे इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने शत्रु के वशीभूत करनेवाले अग्न्यस्त्र को कर्ण के ऊपर छोड़ा तब पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओं के मार्गों को ढककर उसका शरीर प्रकाशमानहुआ १७ और अग्नि से जलतीहुई पोशाकवाले वा पोशाकों से अत्यन्त रहित होजानेवाले शूरवीर बड़े व्याकुल होकर भागे और ऐसा बड़ा घोर शब्द हुआ जैसे कि बांसों के वन में जलते हुए बांसों के शब्द होते हैं १८ फिर उस प्रतापवान् कर्ण ने युद्ध में उठे हुए उस अग्न्यस्त्र को देखकर उसके शान्त होने के निमित्त वारुणास्त्र को छोड़ा और उसी से वह अग्नि शान्त हुई १९

फिर उस वेगवान् ने बादलों के समूहों से सब दिशाओं में अन्धकार करदिया तब पर्वत के समान किनारा रखनेवाले कर्ण ने चारोंओर को जल की परिधि करके २० उस अत्यन्त भयानक अग्नि को शान्त करादिया परन्तु दिशाओं के सब स्थान जोकि बादलों से युक्त थे २१ इससे कुछ दिखाई नहीं दिया तद-नन्तर अर्जुन ने वायुअस्त्र से कर्ण के उन अस्त्रोंके समूहों को दूर किया २२ फिर शत्रुओं से अजेय अर्जुन ने गाण्डीव धनुष प्रत्यञ्चा और विशिखों पर मन्त्रों को पढ़कर बड़े प्रभाववाले देवेन्द्र के प्यारे वज्रास्त्र को भी प्रकट किया २३ इसके पीछे क्षुरप्र, आञ्जुलिक, अर्धचन्द्र, नालीक, नाराच, वराहकर्ण नाम अत्यन्त तीक्ष्ण वज्रके समान वेगवान् हजारों बाण गाण्डीव धनुष से प्रकट हुए २४ वह बड़े प्रभावयुक्त सुन्दर वेन गृध्रपक्षों से जटित अच्छे वेगवान् बाण कर्ण को पा-कर उसके सब अङ्ग, घोड़े, धनुष, जुये, चक्र से होकर पृथ्वी में प्रवेश करगये तब बाणों से युक्त रुधिर से लिप्तअङ्ग क्रोध से खुले नेत्रवाले महात्मा कर्ण ने २५ । २६ दृढ़प्रत्यञ्चावाले समुद्र के समान शब्दायमान धनुष को दबाकर भार्गवअस्त्र को प्रकटकिया और महेन्द्रास्त्र के सम्मुख छोड़ेहुए अर्जुन के बाणों के समूहों को काट २७ अपने अस्त्रसे उसके अस्त्र को हटाके युद्ध में रथ हाथी और पत्तियों को मारा महेन्द्र के समान कर्मकरनेवाले कर्ण ने भार्गवअस्त्र के प्र-ताप से ऐसा कर्म किया २८ इसको करके फिर क्रोधयुक्त सूत के पुत्र कर्ण ने युद्ध में पाञ्चालों के अत्यन्त उत्तम शूरवीरों को रोककर अच्छी रीति से छोड़े हुए तीक्ष्णधार सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से पीड्यमान किया २९ हे राजन्! युद्धभूमि में कर्णके बाणसमूहों से पीड़ित पाञ्चाल और सोमकोंने भी हठ करके प्रसन्नता से कर्णको बाणोंसे छेदकर पीड्यमान किया ३० फिर कर्णने बाणोंसे पाञ्चालों के उन रथ हाथी और घोड़ों के समूहों को मारा और मारे बाणों के सबको पी-ड़ित करडाला ३१ वह कर्ण के बाणों से निर्जीव होकर शब्दों को करते हुए ऐसे गिरपड़े जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त भयानक सिंह से हाथियों के समूह गिरपड़ते हैं ३२ हे राजन्! इसके पीछे वह बड़ा साहसी और बड़े उत्साह का करनेवाला कर्ण अत्यन्त उत्तम २ शूरवीरों को मारकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें तीक्ष्ण किरणों का रखनेवाला सूर्य होताहै ३३ हे कौरवेन्द्र! फिर आपके शूरवीरों ने कर्ण की विजय को मानकर बड़ी प्रसन्नता मनाकर

सिंहनादों को किया और सबने कर्णके हाथसे श्रीकृष्ण और अर्जुन को निहायत घायल माना ३४ फिर वह महारथी कर्ण अपने उस पराक्रम को दूसरों से असह्य वाला जानकर और इस रीति से अर्जुन के उस अस्त्र को अपने से निष्फल हुआ देखकर ३५ क्रोध से रक्तनेत्र असह्य क्रोधयुक्त वायुका पुत्र भीमसेन श्वासों को लेता हुआ हाथ से हाथ को मलकर सत्यसंकल्प अर्जुनसे बोला ३६ अब युद्धमें तेरे और विष्णुजी के सम्मुख किस प्रकारसे उस पापी अनर्थी सूतके पुत्र कर्णने प्रबल होकर पाञ्चालों के उत्तम शूरवीरों को मारा ३७ हे अर्जुन! साक्षात शिवजी की भुजा के स्पर्श को पाकर कालकेय नाम असुरों से अजेयरूप तुझको इस कर्ण ने प्रथम दशबाणों से कैसे छेदा ३८ और तेरे चलाये हुए बाणसमूहों को सहगया इससे यह कर्ण मुझको अपूर्व दिखाई देताहै तुम द्रौपदी के उन दुःखों को स्मरणकरो कि इसने कैसे २ वचन कहे थे ३९ हे अर्जुन! इस पापबुद्धि दुर्मति दुष्टहृदय सूतपुत्र ने रूखे २ अत्यन्त तीव्रवचन कहे अब तुम उन सब वचनों को स्मरण करके उस पापी कर्ण को युद्ध में शीघ्र मारो ४० हे अर्जुन! उसको कैसे छोड़ रक्खा है? अब यहां यह समय तेरे त्याग करने का नहीं है खाण्डववन में जिस धैर्यता से तैंने सब जीवों को विजय किया उसी धैर्यतासे इस दुर्मति सूतपुत्र को मारो मैं उसको गदा से मारूंगा उसके पीछे वासुदेवजी भी बाणों से व्यथित देखकर अर्जुन से बोले ४१।४२ कि अब इस कर्णने तेरे अस्त्र को अपने अस्त्रों से सब प्रकार मर्दन किया है हे अर्जुन! यह क्या बात है हे वीर! तुम क्यों मोहित होरहे हो क्यों नहीं सचेत होते हो देखो यह कौरव लोग अत्यन्त प्रसन्न होकर गर्जते हैं ४३ सबने कर्ण को आगे करके तेरे अस्त्र को अस्त्रों से गिरायाहुआ जाना है जिस धैर्यतासे तैंने तामस अस्त्रको दूरकिया और युग २ में भी ४४ दम्भोद्भवनाम घोर राक्षसों को युद्धों में मारा उसी धैर्य से अब तुम कर्ण को मारो अब हठ करके मेरे दियेहुए नेमियोंपर छूरेवाले सुदर्शन चक्र से इस शत्रु के शिरको ऐसे काटो जैसे कि इन्द्रने अपने शत्रु नमुचि के शिरको काटा था किरातरूपी भगवान् शिवजी भी तेरे धैर्य से प्रसन्नहुए ४५।४६ हे वीर! तुम फिर उसी धैर्य को धारण करके कर्ण को उसके सब साथियों समेत मारो इसके पीछे तुम सागररूप मेखला रखनेवाली नगर ग्रामों से युक्त और धन रत्नों से पूर्ण उस पृथ्वी को ४७ जिसमें कि शत्रुओं के समूह मारे गये हैं

अपने राजा युधिष्ठिर के सुपुर्द करो यह वचन सुनकर उस बड़े बुद्धिमान् महा-पराक्रमी महात्मा अर्जुन ने कर्ण के मारने के निमित्त बुद्धि करी ४८ भीमसेन और श्रीकृष्णजी से प्रेरणा कियेहुए उस अर्जुन ने आपको ध्यान करके और सब बातों को विचार कर इसलोक के इन्द्र अपने आने में प्रयोजन को जानकर केशवजी से यह वचन कहा ४९ कि हे केशवजी! मैं लोक के आनन्द और कर्ण के मारने के निमित्त इस उग्र महाअस्त्र को प्रकट करता हूं सो आप ब्रह्माजी शिवजी देवता और वेदों के सब जाननेवाले ऋषिलोग मुझको आज्ञा दो ५० उस महासाहसी अर्जुन ने इसप्रकार से कहके और ब्राह्मणों को नमस्कार करके उस उग्र महाअस्त्र को प्रकट किया जोकि असह्य और चित्त से प्रकट करने के योग्य था ५१ जैसे कि बादल शीघ्र जलधाराओं को छोड़ता है उसी प्रकार कर्ण बाणों से इसके उस अस्त्र को दूर करके शोभायमान हुआ तब क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेन ने इस रीति से युद्धभूमि में कर्ण के हाथ से अर्जुन के उस अस्त्र को दूर किया हुआ देखकर सत्यसङ्कल्प अर्जुन से कहा कि निश्चय करके मनुष्यों ने तुमको बड़ा उत्तम और ब्रह्मास्त्रनाम बड़े अस्त्रका जाननेवाला कहा है ५२। ५३ हे अर्जुन! इस हेतु से अब तुम दूसरे अस्त्र को चलाओ ऐसे कहेहुए अर्जुन ने अस्त्र का प्रयोगकिया तदनन्तर बड़े तेजस्वी अर्जुन ने गाण्डीवधनुष और भुजाओं से छोड़ेहुए भयकारी सूर्य की किरणों के समान प्रकाशित बाणों से सब दिशा और विदिशाओं को ढक दिया उस भरतर्षभ अर्जुन के छोड़ेहुए सुवर्ण पुङ्खवाले हजारों बाणों ने ५४। ५५ क्षणभरही में कर्ण के रथ को ढकदिया वह बाण प्रलयकाल के सूर्य की किरणों के समान थे इसके पीछे सैकड़ों शूल फरसे चक्र और नाराच ५६ भी महाभयकारी निकले उससे बहुत से शूरवीर चारों ओर से मारेगये युद्धभूमि में किसी का शिर धड़ से कटकर गिरा ५७ और कितनेही उन गिरेहुओं को देखकर भयभीत होकर जल्दी से पृथ्वीपर गिरपड़े और किसी शूरवीर की हाथी की सूंड़ के समान भुजा टूटकर खड्ग समेत पृथ्वी पर गिरपड़ी ५८ किसी की बाईंभुजा क्षुरप्र से कटकर ढालसमेत गिरी अर्जुन ने इस रीति के शरीरों के नाश करनेवाले भयकारी बाणों से उन सब उत्तम २ शूरवीरों समेत दुर्योधनकी सम्पूर्ण सेना को मारा और घायल किया इसी प्रकार कर्ण ने भी युद्धभूमि में अपने धनुष से हजारों बाणों को छोड़ा ५९। ६० वह

शब्दायमान बाण अर्जुन के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि पर्जन्य मेघ से छोड़ीहुई जल की धारा होती है इसके पीछे वह अनुपमप्रभाव और भयानक रूपवाला कर्ण श्रीकृष्ण अर्जुन और भीमसेन को ६१ तीन २ बाणों से घायल करके बड़े स्वर से घोर शब्द से गर्जा फिर अर्जुन ने उस असह्य कर्ण के बाणों से व्यथित भीमसेन और श्रीकृष्ण को देखकर ६२ अठारह बाणों को उठाया एक बाण से तो उसकी ध्वजा को चारबाण से शल्य को और तीनबाणों से कर्ण को घायल किया ६३ फिर अच्छीरीति से छोड़ेहुए दश बाणों से सुवर्णकवच से अलंकृत सभापति को मारा वह राजकुमार शिर भुजा घोड़े सारथी धनुष और ध्वजा से रहित ६४ मृतक होकर रथ से ऐसे गिरपड़ा जैसे कि फरसों का काटाहुआ और उखड़ाहुआ शाल का वृक्ष गिरता है फिर कर्ण को तीन आठ बारह चार और दश बाणोंसे छेद ६५ चार सौ घोड़ों को मारकर आठ सौ शस्त्रधारी रथियों को भी मारा तब सवारों समेत हजारों घोड़ों को वा आठहजार वीर पत्तियों को ६६ मारकर सारथी घोड़े रथ और ध्वजा समेत कर्ण को सीधेचलनेवाले बाणवृष्टि से अलक्ष्य करदिया इसके पीछे अर्जुनके हाथ से घायल होकर कौरव चारोंओर से कर्ण को पुकारे ६७ हे कर्ण! तुम शीघ्रही अर्जुनको छेदकर हमको छुड़ावो वह समीप से बाणोंकेही द्वारा सब कौरवोंको मारता है उनके वचनोंको सुनकर कर्णने भी बहुत उपायोंसे बहुतसे बाणों को वारंवार छोड़ा ६८ उन मर्मभेदी रुधिर धूलि से लिप्त बाणों ने पाण्डव और पाञ्चालों के समूहों को व्यथित किया सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ बड़े पराक्रमी सब शत्रुओंके पराजय करनेवाले महाअस्त्रज्ञ उनदोनोंने ६९ महाअस्त्रों से शत्रुकी उग्रसेना को और एकने दूसरेको घायल किया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला युद्धके देखने का अभिलाषी वह युधिष्ठिर पास गया जोकि अत्रिकुल में उत्पन्न होनेवाले अष्टाङ्गविद्या के आसनपर बैठनेवाले अश्विनी-कुमार सुरवैद्यों के मन्त्र ओषधियों के द्वारा पीड़ासे रहित भालों से पृथक् शुभ-चिन्तक चिकित्सा करनेवाले उत्तम पुरुषों से मर्हम पट्टी बांधाहुआ सुवर्ण के कवच को पहिरे हुए था इसी से वह सावधान ऐसा न था जैसे कि दैत्यों के हाथ से घायल शरीर देवराज इन्द्र था इस प्रकार के रूपवाले धर्मराज को युद्ध में समीप आयाहुआ देखकर सब जीवमात्र बड़े प्रसन्न हुए ७०। ७२ जिस प्रकार राहुसे छूटेहुए निर्मल और पूर्णचन्द्रमा को देखते हैं उसी प्रकार उदय होनेवाले

उन युद्धकर्ता उत्तम श्रेष्ठ शत्रुओं के मारनेवाले दोनों पुरुषोत्तमों को देखकर देखने के इच्छावान् ७३ आकाश के देवता और पृथ्वी के मनुष्य कर्ण और अर्जुन को देखतेहुए नियत हुए वहां बाणों के जालों से परस्पर मारनेवाले अर्जुन और कर्ण के छोड़ेहुए बाणों से उस धनुष रोदा और प्रत्यञ्चा का गिरना कठिन हुआ इसके पीछे अच्छी खिंचीहुई अर्जुन के धनुष की जीवा अकस्मात् शब्द करके टूटी ७४ । ७५ उसीसमय सूत के पुत्र ने सौ क्षुद्रक बाणों से अर्जुन को छेदा और सर्परूप तैल से साफ गृध्रपक्ष से जटित बराबर छोड़ेहुए ७६ साठबाणों से शीघ्रता करके वासुदेवजी को छेदा इसके पीछे फिर आठ बाणों से अर्जुन को छेदा तदनन्तर सूतपुत्र कर्ण ने हज़ार बाणों से भीमसेन को मर्मस्थलों पर छेदा ७७ और सोमकों को गिराते हुए उन शूरवीरों ने विशिख वा पृषत्कनाम बाणों से श्रीकृष्ण अर्जुन की ध्वजा और उनके छोटे भाइयों को बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादलों के समूह सूर्य को ढकदेते हैं ७८ फिर उस अस्त्रज्ञ कर्णने उन सबको विशिखनाम बाणों से रोककर अपने अस्त्रों से सब अस्त्रों को हटाकर उनके रथ घोड़े और हाथियों को भी मारा ७९ हे राजन् ! इसी रीति से सूतपुत्र ने बाणों से सेना के उत्तम २ शूरवीरों को पीड़ित किया फिर कर्ण के बाणों से घायल और मृतक होकर शब्दों को करते हुए पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े ८० जैसे कि बड़े पराक्रमी कुत्तों के समूह क्रोधभरे बड़े पराक्रमी सिंह से गिरते हैं फिर पाञ्चालदेशियों के उत्तम २ लोग और अन्य २ शूरवीर इस स्थानपर कर्ण और अर्जुन के लिये ८१ चेष्टाकरनेवाले उस पराक्रमी कर्ण के अच्छीरीति के छोड़ेहुए बाणों से मारेगये और आपके शूरों ने बड़ी विजयको मानकर तालियां बजाईं और वारंवार सिंहनाद को किया उन सबों ने युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन को कर्ण की स्वाधीनता में माना फिर तो कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल शरीरवाले क्रोधयुक्त अर्जुन ने धनुष की प्रत्यञ्चा को नवाकर शीघ्रता से कर्ण के उन बाणों को हटाके कौरवों को रोका ८२ । ८३ प्रत्यञ्चा को ठीक करके तल को तर में दबाया और अकस्मात् बाणों का अन्धकार उत्पन्न किया उस समय बड़े हठसे अर्जुन ने बाणों के द्वारा कर्ण शल्य और सब कौरवों को छेदा ८४ तब महाअस्त्र से अन्धकार उत्पन्न होजानेपर अन्तरिक्ष में पक्षी भी नहीं घूमे और आकाशवर्ती जीवों के समूहों से प्रेरित वायु ने दिव्य

सुगन्धियों को फैलाया ८५ फिर हँसतेहुए अर्जुन ने दशपृषत्कों से शल्यके कवच को छेदा इसके पीछे अच्छे प्रकार से छोड़ेहुए ८६ बारह बाणों से कर्ण को छेद कर दुबारा भी सात बाणोंसे छेदा अर्जुनके धनुपसे छूटेहुए महावेगवाले बाणों से अत्यन्त घायल ८७ विदीर्ण और रुधिरसे भरा अङ्ग वह कर्ण जिसके कि बाण फैलरहे थे रुद्रजी के समान शोभायमान हुआ इसके पीछे श्मशानभूमि में रुद्र मुहूर्त में क्रीड़ा करनेवाले रुधिर से लिप्तशरीर अधिरथी कर्ण ने उस देवराज के समान रूपवाले अर्जुन को तीन बाणों से छेदा ८८। ८९ फिर मारने की इच्छा से सर्पों के समान अग्निरूप पांचबाणों को श्रीकृष्णजी के शरीर में प्रविष्ट किया ९० वह सुवर्णजटित अच्छीरीति से छोड़ेहुए बाण पुरुषोत्तमजी के कवच को छेदकर गिरपड़े ९१ और बड़े वेग से पृथ्वी में प्रवेश करगये और पातालगङ्गा में स्नान करके फिर कर्णसे मुख फेरकर चलेगये इसके पीछे अर्जुनने उन बाणों को अच्छीरीति से छोड़ेहुए पन्द्रह भल्लों से तीन२ खण्ड करदिया ९२ उन बाणों से घायल तक्षक के पुत्र के साथी बड़े सर्प पृथ्वीपर आये फिर तो अर्जुन ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि सूखे वन को जलाताहुआ अग्नि होता है ९३ उस अर्जुन ने कर्ण की भुजा से छोड़ेहुए बाणों से इसप्रकार घायल शरीर श्रीकृष्णजी को देखकर कानतक खैंचकर शरीर के नाश करनेवाले अग्निरूप बाणों से कर्ण को ९४ मर्मस्थलों में छेदा वह दुःख से तो कम्पित हुआ परन्तु बड़ी बुद्धि से धैर्ययुक्त होकर दैवयोग से नियत रहा हे राजन्! इसके पीछे अर्जुन के क्रोधरूप होनेपर ॥ ९५ ॥

दो० तजि कर्णहि तेहि क्षण भगे, तो सुत भट समुदाय।
जिमि व्याधहि लखि सुतरुतजि, भगत विहग भयपाय॥
पार्थ अधिरथी के बधन, को प्रण पूरण धारि।
पार्थ लसौ जिमि त्रिपुरदल, मध्य लसौ त्रिपुरारि॥

सो० तिमि सूतज रणधीर, प्रलयभस्यो परसेन मधि।
दोऊ तुल बलवीर, कीन्हें अद्भुत युद्ध तहँ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥

महावीर दोऊ धनुर्वेद चारी। दहूंओर के बाण की वृष्टि भारी॥
किये घोर संग्राम ता ठौर दोऊ। नहीं सामुहे भे दुहूं ओर कोऊ॥

गये दूरि जे ते भये मौन ऐसे । गये सामने सिंह पशुभीत जैसे ॥
दुहूंओर के यों कहैं जाचिबे को । नहीं आजु तो योगहैबाचिबेको ॥
दो० कर्णहि वधि दल कौरवी, वधिहि पार्थ बल ऐन ।
कै पार्थहि वधिकै करण, वधत पाण्डवी सैन ॥
दोऊ गगन शरनभरि दीन्हे । अन्धकार आरोपित कीन्हे ॥
दोउन के अति विक्रम देखी । विस्मित भेसुरगण अवरेखी ॥
दोऊ क्षात्रधर्म अवतंसे । इमिकहिकहिकै दुहुनप्रशंसे ॥
दोउनके कर करिकर भारी । रहे जात लखि काननबारी ॥
कबहुँ पार्थ बढि विक्रमकीन्हों । कबहुँ सूतसुतगुरुतालीन्हों ॥
रह्यो न थिरिघटिबढ़ि पदकोऊ । अतिशयप्रबल धनुर्धरदोऊ ॥
भूपहुई तहँ तुमुल लराई । पृथकपृथकसबकही न जाई ॥६६।१००॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिद्वैरथकर्णार्जुनयुद्धेनवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

इक्यानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे पृथक् २ सेनावाले एकवीरके अन्तरपर जानने वाले कौरव नियत हुए और अर्जुन के प्रकट कियेहुए अस्त्र को चारोंओर से बिजली के समान प्रकाशमान देखा १ तब कर्ण ने उस अर्जुन के आकाश में वर्तमान महाअस्त्र को बड़े घोर बाणों से दूर किया जोकि बड़े युद्ध में अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने कर्ण के मारने को छोड़ा था २ उस कौरवों के भस्म करनेवाले उदयरूप अस्त्रको सुनहरी पुङ्खवाले विशिखों से मर्दन किया फिर दृढ़ प्रत्यञ्चायुक्त सफल धनुषको उठाकर बाणों के समूहों को छोड़तेहुए कर्णने ३ परशुरामजी से पायेहुए शत्रुओं के नाश करनेवाले अथर्ववेदसम्बन्धी मन्त्रसे अभिमन्त्रित किये हुए तीक्ष्णधारवाले बाणसे उस भस्मकरनेवाले अर्जुनके अस्त्रको दूर करदिया ४ हे राजन्! इसके पीछे वहां पृषत्कों से परस्पर युद्ध करनेवाले कर्ण और अर्जुन का ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसे कि दाँतों के कठिन प्रहारोंसे दो हाथी युद्ध करते होयँ ५ उस समय वहां सबओर से अस्त्रोंके प्रहारों से बड़ा कठिन युद्ध हुआ और दोनों ने अपने २ बाणसमूहों से आकाशको पूर्ण कर दिया ६ इसके पीछे सब कौरव और सोमकों ने बड़े बाणजालोंको देखा और बाणों से अन्धकार होनेपर अन्तरिक्ष में किसी जीवमात्र को भी नहीं देखा हे राजन्! तब उन अनेक बाणों

के छोड़ने और चढ़ानेवाले दोनों धनुषधारियों ने अनेक प्रकार की अपनी अस्त्रज्ञताओं के साथ युद्धमें विचित्र मार्गों को दिखलाया ७।८ इस रीतिसे कभी अर्जुन कभी कर्ण प्रबल होते हुए देखके ९ अन्य सब शूरवीरों ने युद्धभूमि में परस्पर घात ढूंढ़नेवाले उन दोनों के असह्य और घोरयुद्ध को देखकर बड़ाही आश्चर्य किया हे नरेन्द्र ! इसके पीछे अन्तरिक्षवर्ती जीवों ने उन कर्ण और अर्जुन दोनोंकी प्रशंसा करी कि हे कर्ण ! धन्य है हे अर्जुन ! धन्य है धन्य है यह शब्द सबओर से सुनेजाते थे १०।११ तब उस युद्ध में रथ घोड़े और हाथियों के प्रहारों से पृथ्वी के धसकने पर पातालतल में विश्राम करनेवाला अर्जुन का शत्रु अश्वसेन सर्प १२ जोकि खाण्डववनकी अग्नि से निकलकर क्रोधयुक्त होकर पृथ्वी में घुसगया था वह फिर ऊर्ध्वगामी होकर कर्ण और अर्जुन का युद्ध देखकर ऊपरको आया १३ हे राजन् ! उसने सोचा कि इस दुष्ट अर्जुन से अपना बदला लेनेका यही समय है इसी हेतु से बाणरूप बनकर कर्ण के तूणीर में आया इसके पीछे अस्त्रों के प्रहारों से संयुक्त फैलेहुए बाणों के समूहरूपी किरणों से पूर्ण हुआ तब उन दोनों कर्ण और अर्जुन ने बाणों के समूहोंकी वर्षासे आकाश के अन्तर को निरन्तर करदिया उस समय वह आकाश बड़ी दूरतक बाणसमूहोंसे एकसेही रूपका था उसको देखकर सब कौरव और सोमक भयभीत हुए १४।१६ उस बाणों के बड़े अन्धकार में दूसरा कोई जीव आता हुआ नहीं देखा तदनन्तर सब लोक के धनुषधारी महावीर वह दोनों पुरुषोत्तम युद्ध में प्राणोंके त्यागनेवाले युद्धके परिश्रम में प्रवृत्त १७ निन्दित वचनोंको परस्पर कहनेवाले हुए फिर वह देखनेवालों से व्याप्त जल चन्दन से सींचेहुए दिव्य बालव्यजनोंकी रखनेवाली स्वर्गवासिनी अप्सराओं के समूहोंसमेत इन्द्र और सूर्य के करकमलों से स्वच्छ मुखवाले हुए १८ जब अर्जुन के बाणों से अत्यन्त पीड्यमान कर्ण अर्जुन को न मारसका तब बाणों से अत्यन्त घायलशरीर वाले उस वीर ने उस अकेले तरकस में रहनेवाले सर्परूप बाण के चलाने को चित्त किया १९ और बड़े क्रोधपूर्वक उस अच्छीरीति से प्राप्त होनेवाले बहुत काल से गुप्तरूप सर्पमुख बाण को अर्जुन के वास्ते धनुषपर चढ़ाया अर्थात् बड़े तेजस्वी कर्ण ने उस सदैव से पूजित चन्दनचूरे में रहनेवाले सुवर्ण के तूणीर में नियत बड़े प्रकाशित बाण को कानतक खैंच अर्जुन के मुख की ओर धनुष

पर चढ़ाया २० । २१ अर्जुन के शिर काटने को अभिलाषी उस ऐरावतके वंश में उत्पन्न होनेवाले अत्यन्त प्रकाशमान बाण को चढ़ातेही सब दिशा और आकाश में अग्नि ज्वलित हुई और आकाश से सैकड़ों घोररूप उल्कापात हुए २२ धनुष में उस सर्परूप बाण के चढ़ाने पर इन्द्रसमेत सब लोकपाल हाहाकार करनेलगे और सूतपुत्र कर्ण ने योगबल से उस बाण में प्रवेश करनेवाले सर्प को न जाना परन्तु सहस्राक्ष इन्द्र उस कर्ण के तूणीर में प्रवेश करनेवाले सर्प को देखकर अपने पुत्र के मारेजाने के सन्देह और शोच में शिथिलअङ्ग हुआ उसको शोचग्रस्त देखकर बड़े महात्मा कमलयोनि ब्रह्माजी इन्द्र से बोले कि शोच मत करो अर्जुनही में लक्ष्मी और विजय दोनों हैं २३ । २४ इसके पीछे मद्र के राजा महात्मा शल्य ने उस उग्रबाण के चलानेवाले कर्ण से कहा कि हे कर्ण ! यह बाण अर्जुन को नहीं पावेगा इस शिर काटनेवाले बाण को तुम अच्छी रीति से देखकर चढ़ाओ २५ इसके पीछे क्रोध से रक्तनेत्र बड़ावेगवान् कर्ण राजामद्र से बोला कि हे शल्य! कर्ण दूसरी बार बाण को नहीं चढ़ाता है मुझसे मनुष्य छल से युद्ध नहीं करते हैं २६ हे राजन् ! उस शीघ्रता करनेवाले उद्युक्त कर्ण ने यह कहकर विजय के निमित्त बड़े उपाय से उस बाण को छोड़ा और कहने लगा कि हे अर्जुन ! अब तुझको मारा है २७ कर्ण की भुजा से धनुष के द्वारा छूटा हुआ वह घोर बाण प्रत्यञ्चा से पृथक् हो उग्र सूर्य के समान आकाश में जाके अग्नि के समान होगया २८ तब तो बड़ी शीघ्रतापूर्वक माधवजी ने उस अग्निरूप बाण को देखकर बड़ी शीघ्रता से अपने चरणों से रथ को दबाकर थोड़ा सा पृथ्वी में घुसाया तब वह सुवर्णभूषणों से अलंकृत वह घोड़े भी घुटनों से पृथ्वी पर बैठगये २९ महापराक्रमी माधवजी ने कर्ण के हाथ से धनुष पर चढ़ाये हुए सर्प को देखकर पहियोंपर बल करके उस उत्तम रथको पृथ्वी में गड़ादिया ३० तभी वह घोड़े पृथ्वीपर बैठगये इसके पीछे मधुसूदन के पूजन के निमित्त अन्तरिक्ष में बड़ाभारी शब्द होकर अकस्मात् आकाशवाणी हुई और दिव्य पुष्पों की वर्षा होकर सिंहनाद हुए ३१ उस समय मधुसूदनजी के बड़े उपाय से पृथ्वी में रथ के घुसनेपर उस बाण ने उस बुद्धिमान् अर्जुन के बड़े दृढ़रूप इन्द्र के दियेहुए किरीट को घायलकिया इसके पीछे सूतपुत्रने सर्पअस्त्र के छोड़ने और क्रोधयुक्त उत्तम उपायपूर्वक बाण

के द्वारा से अर्जुन के शिरसे मुकुट को हरण किया वह मुकुट आकाश स्वर्ग और जलों में प्रसिद्ध सूर्य चन्द्र और अग्नि के समान प्रकाशित सुवर्ण, मोती, हीरे, मणियों से जटित था जिसको कि आप समर्थ ब्रह्माजी ने तप के द्वारा बड़े उपाय से इन्द्र के लिये उत्पन्न किया था और बड़ा सुन्दररूप शत्रुओं को भयकारी शिरपर धारण करनेवाले को महाआनन्ददायक होकर श्रेष्ठ गन्धियों से युक्त था ३२।३३ उसी को प्रसन्नचित्त होकर आप इन्द्र ने असुरों के मारने के अभिलाषी अर्जुनको दिया था वह मुकुट ऐसे प्रभाववाला था कि इन्द्र, वरुण, कुबेर के वज्र पाश और उत्तम बाणों से अथवा शिवजी के पिनाक धनुष से भी ३४ मर्दन के योग्य न था ऐसे मुकुट को कर्ण ने अपनी हठ से सर्परूप बाण के द्वारा हरण करलिया अर्थात् दुरात्मा दुष्टभाव असत्यप्रतिज्ञावाले ३५ वेगवान् सर्प ने अर्जुन के उस किरीट को शिरपर से हरलिया वह किरीट अत्यन्त अद्भुत बड़ों के योग्य सुवर्ण के जालों से मण्डित प्रकाशित शब्दायमान होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा ३६ अर्थात् उत्तम बाण से मथित विषकी अग्नि से प्रकाशित वह अर्जुन का मुकुट पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रक्तमण्डलवाला सूर्य अस्ताचल मे गिरता है ३७ उस सर्प ने बल के द्वारा रत्नों से जटित और अलंकृत मुकुट को अर्जुन के शिर से ऐसे जुदा किया जैसे कि पर्वत के अंकुर और पुष्पित वृक्षों से जटित श्रेष्ठ शिखर को इन्द्र का वज्र गिरादेता है ३८। ३९ अथवा जैसे कि वायु से पृथ्वी आकाश स्वर्ग और जलों के समुद्र उत्पातयुक्त होकर कम्पित होते हैं उसी प्रकार वह उग्र मुकुट हट करके अत्यन्त चूर्ण हुआ उस समय तीनों लोकों के बड़े शब्दों को मनुष्यों ने सुना और सुनकर सब पीड़ित होके गिर पड़े ४० विना किरीट के भी वह पार्थ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि श्याम रङ्ग वाला नवीन उत्पन्न हुआ पर्वत का ऊंचा शिखर होताहै इसके अनन्तर पीड़ासे रहित अर्जुन अपने शिरके बालों को श्वेतवस्त्र से बांधकर ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि शिरपर वर्तमान सूर्य की किरणवाला उदयाचल पर्वत होताहै सूर्य के पुत्र कर्ण के भेजेहुए नेत्ररूप कान रखनेवाले दुःख से रक्षा करनेवाले सर्प के पुत्र अश्वसेन सर्प ने प्रत्यक्ष में बड़े तेजस्वी बागडोरों के समीप शिर रखनेवाले अर्जुन को देखकर भी बड़ी तीव्रता से नीचेको झुकने से असमर्थ होकर उस इन्द्र के पुत्र अर्जुन के मुकुट को जोकि अच्छीरीति से अलंकृत सूर्यके समान

प्रकाशमान था हरण किया और बाण के छोड़ने से सर्प को मर्दनकरनेवाला अर्जुन सर्प को न पाकर मृत्यु के आधीन नहीं हुआ ४१।४३ कर्ण की भुजा से छोड़ाहुआ अग्नि सूर्यरूप बड़े शूरवीर के योग्य वह शायक और उसमें प्रवेश करनेवाला अर्जुन का शत्रु मुकुट को घायल करके चलागया तब अर्जुन के उस सुवर्णजटित मुकुटको खैंचकर भस्म करके उसने फिर तूणीर में जाना चाहा और कर्ण से बोला कि हे कर्ण ! मैं विना विचार कियेहुए तेरे हाथ से छोड़ा गया था इसी से अर्जुनके शिरको न काटसका अब तू युद्ध में अर्जुन को अच्छे प्रकार से लक्ष्य करके शीघ्रता से मुझको छोड़ मैं अपने और तेरे शत्रु अर्जुन को अभी मारूंगा यह वचन सुनतेही कर्ण उससे बोला कि हे श्रेष्ठ ! तुम कौन हो ४४।४५ सर्प ने कहा माताके मारने से मुझ शत्रुता करनेवाले को अर्जुन का शत्रु जानो चाहै उसका रक्षक यमराज भी होजाय तौ भी मैं उसको यमलोक में पहुँचाऊंगा ४६ कर्ण बोला कि, हे सर्प ! अब कर्ण युद्ध में दूसरे के बलसे अपनी विजय को नहीं चाहता है और एक वार बाणको चढ़ाकर उसको फिर दूसरी बार नहीं चढ़ाऊंगा मैं अकेलाही एक अर्जुन नहीं जो ऐसे २ सौ अर्जुन भी होयँ उनको भी मारसक्ताहूं यह कहकर ४७ सूर्यके पुत्रोंमें श्रेष्ठ कर्ण युद्धभूमि में फिर भी उस सर्प से बोला कि हे सर्प ! मैं अस्त्र के वा क्रोधयुक्त किसी उत्तम उपाय के द्वारा अर्जुन को मारूंगा तुम खुशी से चलेजाओ कर्ण के इस वचन को उस सर्प ने क्रोधयुक्त होकर नहीं सुना और अर्जुन के मारने की इच्छा से वह सर्पराज अपने निज स्वरूप को धारण करके आपही अर्जुन के मारने को चला ४८। ४९ तदनन्तर श्रीकृष्णजी उस युद्धभूमि में अर्जुनसे बोले कि तुम इस शत्रुता करनेवाले बड़े सर्प को मारो श्रीकृष्णजी के इस वचन को सुनतेही शत्रु के बल का न सहनेवाला वह गाण्डीवधनुषधारी अर्जुन यह वचन बोला कि यह सर्प मेरा कौन है जो अपने आप गरुड़ के मुखमें आया है श्रीकृष्णजी ने कहा कि खाण्डववनमें अग्निके तृप्त करनेवाले तुझ धनुषधारी ने ५०।५१ इस आकाश में वर्तमान अपनी माता से गुप्त शरीरवाले को एकरूप जानकर इसकी माता को मारा था उसी के कारण से उस शत्रुता को स्मरण करता निश्चय करके अपने मरने के लिये तुझको चाहता है ५२ हे शत्रुओं के हँसने वाले ! तुम आकाश से प्रज्वलित उल्कापात के समान उस आनेवाले सर्प को

देखो सञ्जय बोले कि इसके पीछे उस अर्जुन ने महाक्रोधयुक्त होकर बड़े तीक्ष्ण उत्तम छः बाणों से उस सर्प को जो आकाश से तिरछा होकर आरहा था काट डाला ५३ फिर वह अङ्गों से कटाहुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा अर्जुन के हाथ से उस सर्प के मरने पर आप समर्थरूप पुरुषोत्तमजी ने ५४ उस गिरे और घुसेहुए रथ को शीघ्रही अपनी दोनों भुजाओं से ऊपर को उठाया उसी मुहूर्तमें अर्जुन को तिरछा देखनेवाले पुरुषों में बड़ेवीर कर्ण ने उग्रपक्षधारी दश पृषत्कों से फिर अर्जुन को व्यथित किया तब अर्जुन ने भी अच्छे प्रकार से छोड़े हुए वराहकर्ण नाम बारह तीक्ष्णबाणों से कर्णको घायल करके ५५ विषवाले सर्प की समान शीघ्रगामी कानतक खैंचेहुए नाराच नाम बाण को छोड़ा वह अच्छी रीति से छोड़ा हुआ उत्तम बाण कर्ण के जड़ाऊ कवच को चीरकर मानो प्राणों को घायल करता हुआ ५६ कर्ण के रुधिर को पीकर रुधिरमें लिप्त होके पृथ्वीमें समागया इसके पीछे बाणके आघातसे कर्ण ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि दण्ड से प्रेरित होकर महासर्प क्रोधरूप होताहै ५७ तब तो शीघ्रता करनेवाले कर्णने उत्तम बाणोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि बड़ा विषधर सर्प अपने विष को छोड़ताहै उस समय कर्णने बारह बाणोंसे तो श्रीकृष्णजी को और निन्नानबे बाणों से अर्जुनको छेदा ५८ फिर कर्ण घोर बाणों से अर्जुन को घायल करके गर्जनापूर्वक हँसा तब उसके उस हास्यको न सहकर उस मर्मज्ञ अर्जुन ने उसके मर्मों को छेदा ५९ इस इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने सैकड़ों बाणों से ऐसे वेग से छेदा जैसे कि इन्द्र ने राजा बलि को छेदा था इसके अनन्तर अर्जुन ने यमराज के दण्ड की समान नव्वेबाणों को कर्ण के ऊपर छोड़ा ६० इन अर्जुन के बाणों से विदीर्णशरीर वह कर्ण ऐसा पीड्यमान हुआ जैसे कि वज्र से कटाहुआ पर्वत पीड़ित होताहै और अर्जुन के बाणों से टूटाहुआ इसका सुवर्ण हीरों से जटित प्रकाशमान मुकुट ६१ वा दोनों कुण्डल और बड़े मूल्यवाला बड़े उपायों से अच्छे कारीगरों का बनाया हुआ कवच यह तीनों कटकर पृथ्वी पर गिरे इसके पीछे फिर क्रोधभरे अर्जुन ने उस कवचरहित खाली शरीरवाले कर्ण को चार तीक्ष्णबाणों से छेदा ६२। ६३ फिर शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल वह कर्ण ऐसा अत्यन्त पीड्यमान हुआ जैसे कि वात, पित्त, कफ से ग्रसित रोगी पीड़ित होता है उस समय शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने बड़े धनुषमण्डल से निकलेहुए और बड़े

उपायपूर्वक कर्म से चलाये हुए ६४ बहुत से उत्तम बाणोंसे घायल करके मर्म-स्थलों को भी छेदा अर्जुन के बड़े वेगवान् तीक्ष्ण नोकवाले नाना प्रकारके बाणों से अत्यन्त घायल कर्ण ६५ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पहाड़ी धातुओं से लालवर्ण का पर्वत वज्रोंके प्रहारोंसे रक्तजलों को छोड़ताहुआ शोभित होता है इसके पीछे अर्जुन ने सीधे चलनेवाले बड़े दृढ़रूप सुन्दररीति से छोड़ेहुए लोहे के यमराज और अग्नि के दण्ड के समान नौ बाणों से कर्ण को ऐसे छातीपर छेदा जैसे कि अग्नि के पुत्र स्वामिकार्त्तिकजी ने क्रौञ्चपर्वत को छेदा था उस समय सूतपुत्र तूणीर को और इन्द्रधनुष के समान उस धनुष को त्यागकर ६६।६७ रथके ऊपर अचेत होकर गिरताहुआ नियत हुआ हे प्रभो! जिसकी मुट्ठी फैलगई थी और अत्यन्त घायल था तब उत्तम पुरुषों के व्रत में नियत अर्जुन ने उस आपत्ति में पड़ेहुए कर्ण के मारने की इच्छा नहीं की ६८ इसके पीछे इन्द्र के छोटे भाई विष्णुरूप श्रीकृष्णजी भ्रान्ति से आश्चर्यपूर्वक उससे बोले कि हे अर्जुन! क्या भूल करता है पण्डितलोग अपने से कम पराक्रमी शत्रु को भी कभी नहीं त्याग करते हैं मुख्यकर पण्डितलोग भी आपत्तियों में शत्रु को मारकर धर्म और यश को पाते हैं सो तुम विना विचार कियेही इस अपने प्राचीनशत्रु वीर कर्ण के मारने का उपाय करो ६९।७० यह समर्थ कर्ण जो आगे आता है इसको तुम ऐसे छेदो जैसे कि इन्द्रने नमुचि को छेदा था इसके पीछे सब कौरवों में श्रेष्ठ शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने शीघ्रही श्रीकृष्णजी को मिलकर और पूजन करके कर्ण को ७१ उत्तम बाणों से ऐसा छेदा जैसे कि पूर्वसमय में शम्बर के मारनेवाले इन्द्रने राजा बलि को छेदा था हे भरतवंशिन्! फिर अर्जुन ने दन्तवक्रनाम बाणों से कर्ण को घोड़े और रथ के समेत ढक दिया ७२ सब उपायों से सुनहरी पुङ्खवाले बाणों के द्वारा दिशाओं को भी ढक दिया फिर वह बड़े दीर्घ और उन्नत वक्षस्स्थलवाला कर्ण वत्सदन्त नाम बाणोंसे छिदाहुआ ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि अच्छे २ पुष्पवाले अशोक पलाश शाल्मलि और रक्तचन्दन के वनसे युक्त पर्वत शोभायमान होता है हे राजन्! वह कर्ण शरीर में लगेहुए बहुत बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ ७३।७४ जैसे कि वृक्षों से पूर्ण वन अथवा कन्दरा और प्रफुल्लित कर्णिकार के वृक्षों से युक्त गिरिराज शोभित होताहै वह बाणजालरूप किरणों का रखनेवाला कर्ण

बाणोंके समूहों को छोड़ताहुआ ऐसा प्रकाशमान था ७५ जैसे कि अस्ताचल के सम्मुख रक्तमण्डलवाला सूर्य होता है अर्जुन की भुजाओं से छोड़ेहुए तीक्ष्ण नोकवाले बाणों ने दिशाओं को पाकर कर्ण की भुजाओं से छूटेहुए सर्परूप प्रकाशित बाणों को पराजय किया इसके पीछे क्रोधयुक्त सर्पों के समान बाणों को छोड़तेहुए उस कर्ण ने धैर्य को पाकर ७६ । ७७ क्रोधयुक्त सर्प की समान दशबाणों से अर्जुन को और छः बाणों से श्रीकृष्णजी को पीड़ित किया इसके पीछे बड़ा बुद्धिमान् अर्जुन कठोरशब्दयुक्त सर्प विष और अग्निके समान लोहे के भयङ्कर बाणों के फेंकने में प्रवृत्त हुआ हे राजन् ! फिर तो अदृष्टगुप्तरूप काल ब्राह्मण के क्रोध से कर्ण के मरने को कहनेवाला हुआ ७८ । ७९ कर्ण के मरने का समय आने पर यह वचन बोला कि पृथ्वी रथ के पहिये को निगलती है इसके पीछे वह महात्मा परशुरामजी के उस दियेहुए अस्त्र को भी चित्त मे भूल गया ८० हे वीर, धृतराष्ट्र ! उसके मरण का समय आनेपर उसके रथ के पहिये को पृथ्वी ने पकड़ा तब उस उत्तम ब्राह्मण के शाप से उसका रथ घूमगया ८१ और रथका पहिया पृथ्वीपर गिरपड़ा तब तो वह कर्ण युद्ध में ऐसा व्याकुलचित्त हुआ जैसे कि अच्छे पुष्पवाला वेदिकासमेत चैत्यनाम वृक्ष भूमि में डूबजाता है ८२ ब्राह्मण के शाप से रथ के घूमने और परशुरामजी से पाये हुए अस्त्र के विस्मरण होनेपर ८३ और अर्जुन के हाथ से सर्पमुख प्रकाशित घोर बाण के गिरनेपर उन दुःखों को न सहनेवाला कर्ण दोनों हाथोंको कम्पायमान करके इस बात की निन्दा करनेलगा कि धर्मज्ञलोग सदैव इस बात को कहाकरते हैं कि धर्मकरनेवाले का धर्म उस धार्मिक पुरुष की सदैव रक्षा करताहै और हम पराक्रमी लोग उनके कहने के अनुसार विश्वासपूर्वक धर्म करने में उपायों को करते हैं ८४।८५ सो मेरी बुद्धिसे वह कियाहुआ धर्म रक्षा नहीं करताहै किन्तु अवश्य मारता है भक्तों की रक्षा कभी नहीं करता है यह मैं मानता हूं कि धर्म सदैव रक्षा नहीं करता है इस रीति से घोड़े और सारथी से पृथक् और अर्जुन के बाणों से अत्यन्त चेष्टावान् ८६ और मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल होने से कर्म करने में शिथिल होकर वारंवार धर्म की निन्दा करी इसके पीछे अत्यन्त भयकारी तीन बाणों से युद्ध में श्रीकृष्णजी को हाथपर छेदा और अर्जुन को भी सातबाणों से ८७ इसके पीछे अर्जुनने कठिनवेगयुक्त सीधे चलनेवाले इन्द्रवज्र के समान

घोरअग्निके समान सत्तर बाणोंको छोड़ा वह भयानक वेगवाले बाण उसको छेदकर पृथ्वी पर गिरपड़े ८८ तदनन्तर अपने शरीर को कम्पायमान करते हुए कर्ण ने अपनी सामर्थ्य से चेष्टा को दिखाया फिर बलसे अपने को साधकर ब्रह्मास्त्रको प्रकट किया फिर अर्जुनने भी उस अस्त्रको देखकर ऐन्द्रास्त्र के मन्त्रको पढ़ा ८९ फिर उस शत्रुके तपाने वाले ने गाण्डीवधनुष प्रत्यञ्चा और बाणपर मन्त्र को पढ़कर बाणों की ऐसी वर्षा करी जैसे कि इन्द्र जल की वृष्टि को करताहै ९० इसके पीछे अर्जुन के रथ से निकले हुए तेजरूपी पराक्रमी बाण कर्ण के रथ के समीपजाकर प्रकटहुए ९१ फिर महारथी कर्णने अपने छोड़ेहुए बाणोंसे उन बाणों को निष्फल करदिया इसपीछे उस अस्त्र के दूर होनेपर वह वृष्णिवीर श्रीकृष्णजी बोले ९२ हे अर्जुन ! तू परमअस्त्रको छोड़ क्योंकि कर्ण बाणोंको निष्फल करे देताहै इसके पीछे ब्रह्मास्त्र के उग्रमन्त्र को पढ़कर बाणको धनुषपर चढ़ाया ९३ और कर्ण को बाणों से ढककर उसपर फिर बाणों को फेंका तब कर्ण ने सुन्दर बेतवाले तीक्ष्णबाणों से उसकी प्रत्यञ्चाको काटकर पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी, सातवीं, आठवीं, नौमी, दशवीं, ग्यारहवीं प्रत्यञ्चा को काटा परन्तु वह कर्ण उस हज़ारों प्रत्यञ्चा चढ़ानेवाले को नहीं जानता था ९४।९५ तदनन्तर अर्जुन ने दूसरी प्रत्यञ्चा को धनुषपर चढ़ाकर मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर सर्पों की समान प्रकाशित बाणों से कर्ण को ढकदिया ९६ कर्ण ने उसकी प्रत्यञ्चा के टूटने और चढ़ाने को हस्तलाघवता के कारण नहीं जाना यह भी आश्चर्य सा हुआ ९७ फिर कर्णने अपने अस्त्रोंसे अर्जुनके अस्त्रोंको रोककर घायल किया और अपने पराक्रम को अच्छा दिखाकर उसने अर्जुन से भी अधिक कर्म किया ९८ इसके पीछे श्रीकृष्णजी कर्ण के अस्त्र से अर्जुनको पीड्यमान देखकर बोले कि चलो अन्यबाणोंको प्रेरित करके चलाओ ९९ इसके पीछे शत्रुसन्तापी अर्जुन अग्नि की समान घोर सर्प के विष के समान लोहे के दिव्य बाणों को अभिमन्त्रित करके १०० रुद्रअस्त्र को चढ़ाकर छोड़ने को उपस्थित हुआ हे राजन् ! उसी समय पृथ्वी ने कर्ण के रथ चक्र को निगला १०१ इसके पीछे उस सात्वभान कर्ण ने शीघ्र रथ से उतरकर दोनों भुजाओं से चक्रको पकड़कर पृथ्वी से निकालना चाहा १०२ वह सप्तद्वीपा वसुन्धरा रथचक्र को निगलनेवाली पृथ्वी, पर्वत, वन, नदी और समुद्रों समेत कर्ण के हाथ से चार अंगुल ऊंची उठआई

परन्तु पहिया न छूटा तब तो कर्ण ने क्रोधकरके अश्रुपातों को डाला और अर्जुन को क्रोधयुक्त देखकर यह वचन बोला १०३। १०४ हे बड़े धनुषधारिन्, अर्जुन ! मैं जबतक इस पृथ्वी में गड़ेहुए चक्रको न निकाल लूं तबतक क्षणभर के लिये शस्त्रफेंकने को रोको १०५ हे अर्जुन ! दैवयोग से इन मेरे वामरथ के चक्र को पृथ्वी में गड़ाहुआ देखकर नपुंसकों के युद्ध को त्यागकरो १०६ हे कुन्तीनन्दन ! तुम नपुंसकों के समान अथवा नपुंसकों के मतपर चलने के योग्य नहीं हो क्योंकि युद्धकर्म में बड़ेनामी प्रसिद्ध हो १०७ हे पाण्डव ! तुम गुणों से भरेहुए कर्म करनेके योग्य हो जो शूरवीर लोग कि साधुओं के व्रत में नियत हैं वह केशोंके फैलानेवाले १०८ शरणागत होनेवाले अस्त्रोंके त्यागने वाले अथवा प्रार्थना करनेवाले वा बाण न रखनेवाले कवच से रहित और टूटे शस्त्रवाले पर १०९ अपने शस्त्रों को नहीं छोड़ते हैं हे पाण्डव ! तुम लोक में बड़े शूरवीर साधुव्रतवाले ११० युद्ध के धर्मों को उत्तम रीति से जाननेवाले यज्ञान्त में अमृत स्नान करनेवाले दिव्यअस्त्रों के ज्ञाता महामाहसी युद्ध में सहस्त्राबाहु के समान हो १११ हे महाबाहो ! जबतक मैं इस गड़ेहुए पाये को न निकाल लूं तबतक तुम रथ पर सवार होकर पृथ्वीपर नियत मुझ व्याकुलचित्त के मारने को योग्य नहीं हो ११२ हे अर्जुन ! मैं तुमसे और वासुदेवजी से नहीं डरता हूं और तुम क्षत्रिय के पुत्र और बड़े वंश के बढ़ानेवाले हो ११३ इस हेतु से तुम से मैं कहता हूं कि हे पाण्डव ! एकमुहूर्त तक ठहरजाओ ॥ ११४ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णरथचक्रग्रसनंनामैकनवतितमोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

बानबे का अध्याय ॥

चौ० समय देखि ह्वै व्याकुल मनमें। रथ बिनु चले कर्ण तेहि क्षनमें ॥
धनुरथ पै धरि वीर उतरिकै। चारु चक्रयुत करसों धरिकै ॥
लगो उठावन सुनु महिसाईं। अचरज कियो कर्ण तेहि ठाईं ॥
गिरि सागरकानन सह धरनी। रथ के संग उठाई अवनी ॥
अंगुल चारि प्रमाण उठायो। सुरगण के मन विस्मय छायो ॥
छुटो न रथ तब कर्ण बिलखिकै। सजलनयन भो इतउतलखिकै ॥
करि शरवृष्टि पार्थ तेहि क्षनमें। बहु शर हने कर्ण के तनमें ॥
तिनसों कर्ण महादुख पायो। पारथ को इमि टेरि सुनायो ॥

हे हे पार्थ कहा अघ धारो । बाण वृष्टि क्षण एक निवारो ॥
असित चक्र धरणी ते जबलौं । मैं काढ़ौं तू थिर रहु तबलौं ॥
विना शस्त्र पहँ तजिबो शायक । उचितनतुम्हैंविदितभटनायक ॥
दो० नहिं कृष्णहिं नहिं तुमहिं हम, भीति कहत ये बैन ।
तुम से क्षत्रिहि धर्म को, तजिबो सोहत हैन ॥
जो लगि चक्र छुड़ाइ हम, नहिं पकरैं धनुबान ।
पारथ तौ लगि करि क्षमा, बहुरि करौ मनमान ॥

जयकरीछन्द ॥

तहां कर्ण के सुनि यह बैन । कहत भये केशव मतिऐन ॥
तुम दुर्योधन शकुनि कराल । कब कीन्हे सुधरम प्रतिपाल ॥
भीमसेन कहँ जहर खवाय । सांपन सों दीन्हों कटवाय ॥
करिकै मन्त्र नाश अभिलाखि । इन कहँ लाक्षागृह में राखि ॥
निशि में दाह करायो पूर्व । तब कित रह्यो धर्म व्रत गूर्व ॥
किये सभा में कुकरम जौन । अब नहिं कहतबनत सबतौन ॥
तेरहें वर्ष बांटि महि लेन । किये करार न चाहे देन ॥
तब कित गयो धरम को काम । अब लखिपरा धरम अभिराम ॥
विरथ विधनुष अकेलो बार । पार्थसुतहि वधि षट्धनुधार ॥
अति अनन्द लहिभये अभर्म । अब चाहत करवावो धर्म ॥
अब तो वध करिबो यहि याम । है पारथ को धर्म ललाम ॥
केशव के यह वचन अनूप । सुनि सूतज ह्वै लज्जित रूप ॥
फिरि रथपर चढ़ि गहि कोदण्ड । वर्षन लागो बाण उदण्ड ॥
भरो क्रोध लाघव दरशाय । दये पार्थ पहँ शायक छाय ॥
सो लखिके केशव अनुमानि । कहे पार्थ सों अवसर जानि ॥
दिव्य शस्त्र सों बेधि सडौर । अब यहि शीघ्रवधौ करि गौर ॥
दो० केशव के यह वचन सुनि, पारथ धनु टङ्कारि ।
वर्षन लागो कर्ण पहँ, दिव्य अस्त्र पण धारि ॥
करतभयो ब्रह्मास्त्र को, तेहि क्षण कर्ण प्रयोग ।
पारथ तजि ब्रह्मास्त्र तेहि, शमितकियो करियोग ॥

ताहि क्षमित करि तजत भो, दइत अस्त्र सो वीर ।
वारुणास्त्र सों तेहि शमित, कियो कर्ण रणधीर ॥
घनतम सों छादित दिशा, देखि पार्थ करि कोप ।
कियो अस्त्र वायव्य सों, वारुणास्त्र को लोप ॥
सो० सो लखिकर्ण अमान, परम दिव्य शरगहत भो ।
करि अद्भुत संधान, तज्यो देखि डरपे सुमन ॥
वज्र सरिस सो बान, तासुभुजा तर मधि लगो ।
भिदि तासों बलवान, मोहित भो अर्जुन सुभट ॥
चौ० महाराज सुनिये तेहि क्षन में । रथ ते उतरि कर्ण गुनि मनमें ॥
हर्ष विषाद क्रोध सों पागो । बलकरि सुरथ उठावन लागो ॥
कृष्णचन्द्र सो समय निरेषी । पारथ सों बोले अवरेषी ॥
रथचढ़ि गहै धनुष शर जौलौं । कर्णहिं पार्थ वधौ तुम तौलौं ॥
कृष्णचन्द्र की वाणी सुनिकै । पारथ मन्त्र यथारथ गुनिकै ॥
तीक्षण शर क्षुरप्र करलीन्हो । तासों केतु काटि द्वै कीन्हो ॥
फिरिअमोघआञ्जलिकसुशायक । गह्यो पार्थ भटधनुधरनायक ॥
चक्र त्रिशूल वज्र सम घोरा । कालदण्ड सम कठिन कठोरा ॥
प्रलयकाल के भानु समाना । वायु अग्निसम दुसह अमाना ॥
भरि आङ्गिरस मन्त्रकी पुरता । करि अतिअगणितगौरवगुरता ॥
सबदिशि हेरि क्रोध सों राता । बोलो पार्थ वीर रस माता ॥
अब हनि यह शर गौरवभेखो । कर्णहिं वधि डारत शर देखो ॥
इमि कहि पारथ तेहि शरवरसों । काट्यो शीश कर्ण के धर सों ॥
मार्त्तण्ड सम परम प्रभा को । महिपर गिरो शीश कटिताको ॥
तदनु गिरो धर तजि बल गारो । सरस सुखोचित सुखमाभारो ॥
मणिमयभूरि भूषणनि छाजित । महिपर भयो कर्ण भट राजित ॥
दो० सबके देखत तहँभयो, अद्भुत अति अमलीन ।
तेज कर्ण की देह सों, कढ़ि भो रवि में लीन ॥
इहिविधि कर्ण को वध निरखि, केशव पाण्डव सर्व ।
लगे बजावन शङ्ख अति, आनँद भरे सगर्व ॥

गरजि गरजि सोमक सकल, अरु पाञ्चाल समस्त ।
सानँद बजवावन लगे, जय दुन्दुभी प्रशस्त ॥
नृप तहँ ममदल भभिवढ़ो, हाहा धुनि गम्भीर ।
भागिचले भट विकल ह्वै, तजिबल गौरव धीर ॥

इन पद्यों के गद्य आशय में ॥

सञ्जय बोले कि रथ पर चढ़ेहुए वासुदेवजी उससे बोले कि, हे कर्ण ! अब यहां तू धर्म को याद करता है आपत्ति में डूबेहुए नीचलोग बहुधा ईश्वर की निन्दा कियाकरते हैं परन्तु अपने दुष्टकर्म को नहीं कहते १ हे कर्ण ! जब दुश्शासन, शकुनी, दुर्योधन और तुमने एक वस्त्र रखनेवाली द्रौपदी को सभा में बुलाया तब वहां तुमको धर्म नहीं दिखाई दिया २ जब शकुनी ने विद्या के द्वारा द्यूतकर्म न जाननेवाले राजा युधिष्ठिर को अधर्म से सभा में विजयकिया तब तेरा धर्म कहां गया था ३ हे कर्ण ! वनवास के व्यतीत होनेपर तेरहवें वर्ष को भी पाकर आधा राज्य नहीं दिया तब तेरा धर्म कहां गया था ४ जब राजा दुर्योधन ने तेरे मत से भीमसेन को सर्पों से और विषमिले अन्न खवाने से मारना चाहा तब तेरा धर्म कहां गया था ५ जब कि वारणावत नगर में लाक्षागृह में सोतेहुए पाण्डवों को अग्निसे जलाया तब तेरा धर्म कहांगया था हे कर्ण ! जब सभा में बैठकर दुश्शासन के अधीन हुई द्रौपदी को हँसा तब तेरा धर्म कहां गया था ६ । ७ हे कर्ण ! जब पूर्व काल में नीचों से दुःखित निरपराधिनी द्रौपदी को त्याग करता था तब तेरा धर्म कहां गया था ८ जब द्रौपदी को तैंने यह कुत्सित अभद्र वचन कहे थे कि हे कृष्णे ! पाण्डवों का नाश होगया और सनातन नरक में गये तुम दूसरे पतिको वरो उस हाथी के समान चलनेवाली को ऐसे दुर्वाक्य कह २ कर त्यागता था ९ तब तेरा धर्म कहां गया था हे कर्ण ! फिर जब तैंने शकुनी से मिलकर राज्य का लोभी होकर पाण्डवों को बुलाते बालक अभिमन्यु को मारा तब तेरा धर्म कहांगया था १० । ११ जो यह धर्म तैंने धारण नहीं किया था तो अब गाल बजाने से क्या लाभ है हे सूत ! अब चाहै जितना तू धर्म वर्णनकर परन्तु जीते नहीं बचसका जैसे कि द्यूत में अपने भाई पुष्कर से हारेहुए पराक्रमी नल ने भाई को विजय करके फिर राज्य को पाया १२ । १३ उसीप्रकार निर्लोभ होकर सबको जीतकर पाण्डवों

ने भी अपनी भुजाओं के बल से राज्य को पाया इन पाण्डवों ने युद्धमें बड़े २ वृद्धियुक्त शत्रुओं को सोमकों समेत अनेक पराक्रमों से मारकर राज्य को पाया और धर्मधारी नरोत्तमों समेत दुष्टात्मा धृतराष्ट्रके पुत्रों ने पराजयको पाया १४ सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन्! वासुदेवजी के ऐसे २ वचनों को सुनकर कर्ण ने १५ लज्जा से नीचा शिर करके कुछ उत्तर नहीं दिया और क्रोध से होठों को चाट हाथ में धनुष लेकर १६ उस पराक्रमी वेगवान् ने फिर अर्जुन से युद्ध किया इसके पीछे वासुदेवजी पुरुषोत्तम अर्जुन से बोले १७ कि हे महाबलिन्! अब इसको दिव्य अस्त्र से छेदकर गिराओ श्रीकृष्णजी के इस वचन को सुनते ही अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ अर्थात् अर्जुन उन पूर्व बातों को स्मरण करके महाक्रोधित हुआ हे राजन्! तब तो उस क्रोधभरे अर्जुन के सब शरीर के छिद्रों से तेज की अग्नियां प्रकटहुईं १८। १९ यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ इसके पीछे कर्ण उसको देखकर २० ब्रह्मास्त्र से बाणों की वर्षा करनेलगा फिर रथको पृथ्वी से निकालने का उपाय किया तब अर्जुन भी ब्रह्मास्त्र से उसपर बाणों की वर्षा करनेलगा २१ फिर पाण्डव ने कर्ण के अस्त्रको अपने अस्त्रसे रोककर दूरकिया तब कुन्तीनन्दन ने अग्नि के अतिप्रिय दूसरे अस्त्र को २२ कर्ण को लक्ष्य बनाकर छोड़ा वह अस्त्र तेजसे देदीप्यमान हुआ फिर कर्ण ने वारुणास्त्र से उसकी अग्निको शान्त किया २३ और बादलों से सब दिशाओं को अन्धकार युक्त करके दिनको अशुभरूप करदिया फिर बड़ी सावधानी से अर्जुन ने वायव्यास्त्र से २४ बादलों को कर्ण के देखतेहुए दूर करदिया इसके पीछे सूत के पुत्रने पाण्डव के मारने की इच्छा से अग्नि के समान महाप्रज्वलित उग्र बाण को अपने हाथ में लिया तदनन्तर अपने पूजित धनुष में उस बाण के योजित करने पर २५। २६ पर्वत वन समुद्रोंसमेत पृथ्वी कम्पायमानहुई और कङ्कड़ पत्थरों से मिलेहुए पवन बड़े वेग से चले सब दिशा विदिशा धूलिसे मण्डित होगईं २७ और हे भरतवंशिन्! स्वर्ग में देवताओं का हाहाकार उत्पन्नहुआ हे श्रेष्ठ! कर्ण के हाथ में चढ़ाये हुए उस बाण को देखकर २८ अर्जुन ने चित्तमें दुःख पाकर बड़ी व्याकुलता को पाया कर्ण की भुजा से छोड़ाहुआ वह इन्द्रवज्र की समान तीक्ष्ण नोकवाला बाण अर्जुन की भुजा में आकर ऐसे प्रवेशित होगया जैसे कि सर्प अपनी उत्तमबामी में प्रवेश करजाता है २९ युद्ध

में वह शत्रुओं का मारनेवाला अर्जुन अत्यन्त घायल होकर बड़ा सुस्त होकर ऐसे कम्पायमानहुआ जैसे कि बड़े भूकम्प होनेसे उत्तम पर्वत कम्पायमान होता है उस अवकाश को पाकर पृथ्वी में गड़ेहुए अपने रथ के पहिये को निकालने की इच्छा से महारथी कर्ण ने ३० । ३१ रथ से कूदकर अपने दोनों हाथों से पहिये को पकड़कर खींचा परन्तु वह महापराक्रमी भी उसके निकालने को समर्थ नहीं हुआ उसके पीछे अर्जुन ने सचेत होकर यमराज के दण्ड की समान बाण को हाथमें लिया ३२ अर्थात् महात्मा अर्जुन ने आञ्जुलिकनाम बाण को हाथ में लिया इसके पीछे वासुदेवजी अर्जुन से बोले कि जबतक यह कर्ण रथपर सवार न होने पावे तबतक तुम इस अपने बाणसे अपने शत्रु के शिर को काटो ३३ इसके पीछे अर्जुन ने अपने प्रभु की आज्ञा पाकर महातीव्र प्रज्वलित उग्रक्षुरप्र को लेकर प्रथम तो सूर्य के समान निर्मल अत्यन्त उत्तम हाथी की कक्षा रखनेवाली सुवर्ण, हीरे, मोतियों से जटित अच्छे कारीगरों की बनाईहुई सुन्दर रूप स्वर्णमयी ३४ । ३५ सदैव आपकी सेना के विजय का स्थान शत्रुओंको भयभीत करनेवाली स्तुतिमान् लोक में सूर्य के समान प्रसिद्ध और कान्ति में सूर्य चन्द्रमा और अग्नि के समान ३६ लक्ष्मीसे ज्वालायमान महारथी कर्ण की ध्वजा को अर्जुन ने अत्यन्त तीक्ष्ण सुनहरी पुङ्खवाले अग्नि के समान प्रकाशमान क्षुरप्र से काटा ३७ और उस ध्वजा के कटने से कौरवों के यश अभिमान और सब मन के मनोरथों सहित हृदय टूटगये और महाहाहाकार शब्दहुआ ३८ हे भरतवंशिन्! उस समय जो २ आपके युद्धकर्ता शूरवीर थे उनसबों ने और कौरवों के बड़े २ वीरों ने अर्जुन के हाथ से काटी और गिराई ध्वजा को देखकर कर्ण के विजयी होने की आशा छोड़दी ३९ फिर कर्ण के मारने में शीघ्रता करनेवाले पाण्डव अर्जुन ने महेन्द्र के वज्र वा अग्नि के दण्ड की समान हज़ार किरण रखनेवाले सूर्य की उत्तम किरण के समान आञ्जुलिक नाम बाण को अपने तूणीर से निकाला ४० वह मर्मभेदी रुधिर मांस से लिप्त अग्नि सूर्य के रूप बड़ों के योग्य मनुष्य घोड़े और हाथियों के प्राणों का हरनेवाला तीन अर्त्तिनी लम्बा (अर्त्तिनी किसी नाप की संज्ञा है) छःपक्ष रखनेवाला सीधा चलनेवाला महावेगयुक्त ४१ इन्द्रवज्र के समान पराक्रमी काल का भी काल अग्नि की समान बड़ा घोर पिनाक धनुष और नारायणजी के सुदर्शन चक्र

की समान भयकारी और जीवमात्र का नाश करनेवाला था ४२ जो देवगणों से भी हटाने के अयोग्य महात्माओं से सदैव पूजित देवासुरों का भी विजय करनेवाला था उसको अर्जुन ने अपने हाथ में लिया ४३ युद्ध में उस अर्जुन से पकड़ेहुए उस बाण को देखकर सब जड़ चैतन्य स्थावर जङ्गम जीवों समेत सब जगत् कम्पायमान हुआ अर्जुन को उस बाण को उठायेहुए देखकर ऋषि लोग पुकारे कि संसार का कल्याण हो ४४ इसके पीछे उस गाण्डीव धनुषधारी ने उस अचिन्त्य प्रभाववाले बाण को धनुष में लगाया और उत्तम महाअस्त्र से संयुक्त कर गाण्डीव धनुष को खींचकर शीघ्रता से बोला ४५ यह महाअस्त्र से संयुक्त बड़ा बाण शत्रु के शरीर और प्राणों का हरनेवाला हो जो मैंने तपस्या करी है वा गुरुओं को प्रसन्न करके यज्ञों को किया है और शुभचिन्तक मित्रोंकी आज्ञा को माना है ४६ इस सत्यता से सेवित यह कठिन और उग्र बाण मेरे बड़े शत्रु कर्ण के शिर को काटे यह कहकर अर्जुन ने उस घोर उग्र बाण को कर्णके मारने को छोड़ा ४७ और अत्यन्त प्रसन्नमन अर्जुन यह कहताहुआ कि यह अथर्वनगर से कृत्या के समान उग्रप्रकाशित और युद्ध में मृत्यु से भी असह्यरूप बाण मेरी विजय का करनेवाला हो ४८ कर्णके मारनेका अभिलाषी सूर्य चन्द्रमा के समान प्रभाववाला अर्जुन यह बोला कि मेरा चलायाहुआ बाण कर्ण को मारकर यमपुर को भेजे यह कहकर मारने के इच्छावान् शस्त्रधारी अत्यन्त प्रसन्नचित्त अर्जुन ने उस उत्तम विजय करनेवाले ४९ सूर्य व चन्द्रमा के समान प्रकाशित बाण से चक्र के उठाने में प्रवृत्त शत्रु को मारना चाहा तब उस छोड़े हुए सूर्य की समान प्रकाशमान बाण ने आकाश और दिशाओं को अग्निरूप किया ५० फिर इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने दिन के समाप्त होनेपर उस बाण से उसके शिर को ऐसे काटा जैसे कि महेन्द्र ने अपने वज्र से वृत्रासुर के शिरको काटा था ५१ इसके पीछे आञ्जुलिक से कटाहुआ उसका शिर गिरपड़ा तदनन्तर उसका धड़ भी गिरपड़ा वह उदयमान सूर्य के समान तेजस्वी आकाशस्थ ऐसे सूर्य के समान था ५२ उसका शिर कटकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रक्तमण्डलवाला सूर्य अस्ताचल से गिरता है तदनन्तर इस महाकर्मी के सदैव सुख के योग्य सुन्दर शिर ने अपने शरीर के रूप को बड़े कष्ट से ऐसे त्याग किया जैसे कि बड़ा धनवान् अपने धन से पूर्ण घर को बड़े दुःखों से

त्यागता है उस बड़े तेजस्वी कर्ण का उन्नतशरीर बाणों से भिदाहुआ निर्जीव होकर बाणों के घावों से रुधिर गिराताहुआ ऐसे गिरपड़ा ५३ । ५४ जैसे कि वज्र से घायल होकर पर्वत का बड़ाशिर रक्तधातुसे युक्त जल को छोड़ता हुआ गिरता है उस गिरेहुए कर्ण के शरीर से निकलाहुआ तेज आकाश को व्याप्त करके सूर्य में प्रवेशकरगया ५५ कर्णके मरनेपर सब शूरवीर युद्धकर्ता मनुष्यों ने इस आश्चर्य को देखा इसके पीछे अर्जुन के हाथ से गिरायेहुए कर्ण को देखकर पाण्डवों ने ऊंचेस्वरों से शङ्खों को बजाया ५६ इसी प्रकार प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण और अर्जुन नकुल और सहदेव ने भी शङ्खों को बजाया फिर सोमकों ने उस मरेहुए कर्ण को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर सेनाओं समेत शङ्खों के नाद किये ५७ और अत्यन्त प्रसन्न होकर तूरी आदि अनेक बाजों को भी बजवाया और वस्त्रों को हला २ कर अपनी भुजाओं को ठोंका और अत्यन्त प्रसन्न आशीर्वादों को देतेहुए अर्जुन के पासगये ५८ और अन्य २ शूरवीरलोग भी अर्जुन के हाथ से मराहुआ रथ से पृथ्वी में पड़ा हुआ कर्ण को देखकर ५९ नृत्य करनेलगे और परस्परमें गर्जनापूर्वक ऐसी वार्तालापें करनेलगे जैसे कि कठिन वायु के वेग से घायल पर्वत होते हैं उस समय वह कर्ण का पृथ्वीपर पड़ाहुआ शिर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि यज्ञ के अन्त में शान्तहुई अग्नि अथवा जैसे कि अस्ताचलपर पहुँचाहुआ सूर्यका बिम्ब होताहै ६० वह सूर्यके समान तेजस्वी युद्ध में पाण्डवों की सेना को अपनी बाणरूपी किरणों से अच्छी रीति से तपाकर अन्त को अर्जुनरूपी काल के द्वारा अस्त होगया ६१ सब अङ्गों में बाणों से छिदा रुधिर में भराहुआ कर्ण का शरीर ऐसा प्रकाशित था जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से शोभित होता है ६२ वह कर्णरूपी सूर्य किरणों से शत्रुओं की सेनाको सन्तप्त करके महापराक्रमी अर्जुनरूपी कालके वशीभूत होगया ६३ जैसे कि सूर्य अस्त होताहुआ प्रकाश को लेकर जाताहै इसीप्रकार वह बाण कर्णके जीवन को लेकर गया ६४ हे श्रेष्ठ ! दिवस के अन्तभाग में कर्ण के मरनेके दिन कर्ण का शिर शरीरसमेत आञ्जुलिक बाण से जब युद्धभूमिमें गिरा तब उस बाण ने भी सेनाओंसे पृथक् अर्जुनके शत्रु का वह शिर शरीर समेत शीघ्रतापूर्वक अपने वेग से हरलिया ६५ फिर उस शूर वा बाणों से छिदेहुए रुधिर से लिप्त पृथ्वीपर गिरकर शयन करनेवाले कर्ण को देखकर

राजा युधिष्ठिर ध्वजावाले रथ की सवारी से चला ६६ और कर्ण के मरने पर भय से पीड़ित युद्ध में अत्यन्त घायलहुए कौरव वारंवार अर्जुन के क्रोधरूपी मुखको देखतेहुए अचेत हो होकर भागे ६७ इन्द्रके समान कर्म करनेवाले कर्ण का शिर जो कि इन्द्र केही शुभ मुख के समान था वह ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे कि दिन के अन्त में सहस्रांशु सूर्य अस्त होजाता है॥ ६८॥

सो० कर्ण अग्नि की शान्ति, युद्धयज्ञ के अन्तलखि।
आवत भयो अकान्ति, सरथशल्य अध्वजाविकल॥
दुर्योधन क्षितिपाल, कर्ण सखा को वध निरखि।
तजत नयन जलधार, महाराज अति विकल भो॥
पूरित मोद महान, करि करि धनुटङ्कार अति।
भीमसेन बलवान, गरजि गरजि निरतत भयो॥
शल्य नृपति पहँ आय, सकल व्यवस्था कहत भो।
सुनि तो सुत क्षितिराय, रुदन कियो अति दीन है॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णवधेद्विनवतितमोऽध्यायः॥ ९२॥

तिरानबे का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि अर्जुन के हाथ से कर्ण के मरनेपर राजा शल्य सेना को भयभीत और पीड्यमानरूप देखकर अपने साथी अधिरथी कर्ण के मरनेपर टूटे सामानवाले रथ की सवारीके द्वारा चलदिया १ अर्थात् राजा शल्य कर्ण और अर्जुन के युद्धमें बाणोंसे घायल और म्लानचित्त सेनाओंको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर टूटे सामानवाले रथ की सवारी से चला २ जिसके रथ घोड़े और हाथी गिराये गये वह सेनापति कर्ण भी मारागया उस सेना को देखकर अश्रुपातोंसे पूर्ण महादुःखित पीड्यमानरूप दुर्योधन ने बराबर श्वासोंको लिया ३ फिर पृथ्वीपर गिरे बाणों से छिदेहुए रुधिर में भरे दैवइच्छा से सूर्य के समान प्रतापी पृथ्वीपर नियत कर्ण के देखने के अभिलाषी मनुष्य कर्णको चारोंओर से घेरे हुए ४ अत्यन्त भयभीत व्याकुलचित्त आश्चर्ययुक्त होकर शोक से पीड्यमान हुए इनके सिवाय आपके और सब शूरवीर भी परस्पर में वैसीही दशा को प्राप्तहुए जैसे प्रकारका कि उनका स्वभाव था ५ कौरवलोग बड़े तेजस्वी कर्ण को अर्जुन के हाथ से टूटे कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रों से रहित देखकर

और मृतक सुनकर ऐसे भागे जैसे कि निर्जनवन में मृतक बैलवाली गौवें भागती हैं ६ तब भीमसेन भयानक शब्दों से गर्जना करके पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करता भुजाओंको ठोकताहुआ गर्ज २ कर उछला और कर्ण के मरनेपर धृतराष्ट्र के पुत्रों को भयभीत करता नृत्य करनेलगा ७ हे राजन् ! इसी प्रकार सब सोमक और सृञ्जयोंने शङ्खों को बजाकर एक २ से प्रीतिपूर्वक मेलन किया और अन्य क्षत्रियलोग भी कर्ण के मरनेपर परस्पर में प्रसन्नरूप हुए ८ सूतपुत्र कर्ण अर्जुन से महाघोर युद्ध करके ऐसे मारागया जैसे कि केसरी सिंह के हाथ से हाथी माराजाता है पुरुषोत्तम अर्जुन ने अपनी प्रतिज्ञाको पूर्णकरके शत्रुता के अन्त को पाया ९ हे राजन् ! फिर व्याकुलचित्त मद्रदेशके राजा शल्य ने भी शीघ्रही ध्वजारहित रथ की सवारी के द्वारा दुर्योधनके पास जाकर अश्रुपात डालकर यह वचन कहा १० कि आपकी सेना परस्पर में सम्मुख होकर गिरेहुए हाथी रथ घोड़े वा बड़े २ शूरवीरोंवाली यमराजके देशकी समान और बड़े २ मनुष्य और घोड़े पर्वत के शिखर के समान हाथियोंसे मारे गये ११ हे भरतवंशिन् ! यह सब तो लड़े और मरे परन्तु ऐसा युद्ध कोई नहीं हुआ जैसा कि कर्ण और अर्जुन का हुआ है कर्ण ने सम्मुख होकर श्रीकृष्ण अर्जुन को और अन्य बड़े २ तेरे शत्रुओं को अपने स्वाधीन किया १२ निश्चय करके पाण्डवों की रक्षा करनेवाला दैवही अर्जुनके अधीन होकर कर्मकर्त्ता है जो पाण्डवों को बचा २ कर हमलोगों को मारता है तेरे मनोरथ सिद्ध करनेवाले सब शूरवीर युद्ध करके शत्रुओं के हाथ से मारेगये १३ हे राजन् ! वह उत्तमवीर कुबेर यमराज और इन्द्र के समान प्रभाववाले और पराक्रम बल और तेज में भी इन्हीं देवताओं के समान नाना प्रकारों के गुणों से युक्त होकर अबध्यों के समान तेरे अभीष्टों के चाहनेवाले राजालोग युद्धमें पाण्डवों के हाथ से मारेगये १४ हे भरतवंशिन् ! सो तुम अब शोच मत करो यह होनहार है निश्चय समझो कि सदैव किसी की विजय नहीं होती राजा शल्य के इस वचन को सुनके और अपने अन्याय को विचार १५ महादुःखीचित्त अचेत और पीड़ितरूप दुर्योधन ने वारंवार श्वासाओं को लिया ॥ १६ ॥

इति ॥

चौ० नृप धृतराष्ट्र वचन यह सुनिकै। सञ्जय सों बूझै शिर धुनिकै ॥

सञ्जय कहौ दशा लहि ऐसी । मम सुत भूप गही गति कैसी ॥
सञ्जय कह्यो सुनो नरनायक । तेहिपल तो भट भये अचायक ॥
पार्थ धनुर्द्धर कर्णहि वधिकै । अब हम सब कहँ वधब वराधिकै ॥
भीमसेन बिनु वधे न छांड़िहि। को असमुभट ताहिजो आड़िहि ॥
यह विचार अतिशय भय पागे। साहस छोड़ि भूरि भट भागे ॥
नृप तेहि क्षण मम भट भे तैसे। बूड़े नाव वणिक जन जैसे ॥
लखि यह दशा भूप दुर्योधन ।निजचखजलकोकरिअवरोधन ॥
गुणि दुख गहे हारि यहि क्षनमें। तो सुत भूप धीर धरि मनमें ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णवधेत्रिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९३ ॥

चौरानबे का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, रुद्ररूप कर्ण और अर्जुन के युद्ध में दग्धरूप बाणों से मथित और भागेहुए कौरव और सृञ्जयों की सेना के लोगों का रूप कैसा हो गया १ सञ्जय बोले कि, हे राजन्! सावधान होकर सुनो जैसे कि युद्धभूमि में मनुष्योंके शरीरों का अत्यन्त घोर नाश वा राजाओं की हानि होजाने और कर्ण के मरनेपर पाण्डवों ने सिंहनाद किये तब आपके पुत्रों में बड़ाभारी भय उत्पन्न हुआ २ । ३ कर्ण के मरनेपर आपके किसी शूरवीर की भी सेनाओंकी चढ़ाई और शीघ्र पराक्रम करने के साहस की बुद्धि नहीं हुई ४ जैसे कि नौका-रहित अथाह जल में नौका के टूटनेपर व्यापारीलोग अपार जल के पार होने की इच्छा रखनेवाले होते हैं उसी प्रकार अर्जुन के हाथ से सेनापति कर्ण के मरनेपर आपके लोग रक्षा के चाहनेवाले हुए ५ हे राजन्! सूतपुत्र के मरनेपर भयभीत शस्त्रों से घायल आपके अनाथलोग नाथ के ऐसे चाहनेवाले हुए जैसे कि सिंहोंसे पीड्यमान मृग टूटी शाखावाली बेल और टूटी डाढ़वाला सर्प रक्षा को चाहते हैं ६ सायङ्काल के समय अर्जुन से पराजित मृतकवीरवाले तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर लोग हटआये ७ हे राजन्! कर्ण के मरनेही यन्त्र वा कवचों से रहित अचेत भयभीत ८ और परस्पर में मर्दन करनेवाले और भय से व्याकुल होकर देखनेवाले आपके पुत्र महाभयातुर होकर भागे और यह निश्चय जानकर कि अर्जुन हमारे ही सम्मुख आता है वा भीमसेन हमारेही मारने को सूलाहै ९ यह मानते हुए महाव्याकुलता से गिरकर मृतकप्राय होगये किनी

महारथी ने घोड़ों पर किसी ने हाथियोंपर किसी ने रथोंपर १० चढ़कर बड़े वेग से भयभीत होकर अपने २ पदातियों को त्याग किया हाथियों से रथ महारथियों से अश्वसवार ११ और भय से व्याकुल भागनेवाले घोड़ों से पदातियों के समूह मारेगये जैसे कि सर्प और चोरों से भरेहुए वन में अपने सङ्ग के लोगों से पृथक् होकर मनुष्यों की जो दशा होती है १२ हे राजन् ! उसी प्रकार कर्ण के मरने पर आपके शूरवीरों की भी वही दशा हुई अथवा जैसे कि मृतक सवारवाले हाथी और टूटे हाथवाले मनुष्य होते हैं १३ इसी प्रकार आपके सब मनुष्य संसार भरे कोही अर्जुनरूप देखते हुए भय से पीड्यमान हुए भीमसेन के भय से पीड़ित होकर भागता हुआ सब को देखकर १४ और उन हज़ारों शूरों को भी भागते देखकर दुर्योधन ने बड़ा हाहाकार करके फिर अपने सारथी से यह वचन कहा १५ कि अर्जुन सब सेना के मारने को मुझ धनुषधारी के होतेहुए नहीं आसक्ता है इससे तुमलोग अपने २ घोड़ों को रोको १६ मैं निस्सन्देह उस युद्ध करनेवाले अर्जुन को अवश्य मारूंगा वह मुझको ऐसे उल्लङ्घन नहीं करसक्ता है जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्याद नहीं उल्लङ्घन करसक्ता है १७ अब मैं श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को वा बड़े अहङ्कारी भीमसेन को और इसी प्रकार सब बाकी बचेहुए शत्रुओं को मारकर कर्ण के ऋण से उद्धार हूंगा १८ सारथी ने कौरवों के राजा दुर्योधन के उस वचन को जोकि शूर और श्रेष्ठलोगों के कहने के समान था सुनकर सुवर्ण के सामानों से आच्छादित घोड़ों को बड़े धीरेपने से चलायमान किया १९ हे श्रेष्ठ ! फिर रथ घोड़े और हाथियों से रहित आपके पचीस हज़ार पदाती युद्ध के निमित्त नियत हुए २० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्न ने चतुरङ्गिणी सेना समेत उन पदातियों को घेरकर मारा २१ वह सब भीमसेन और धृष्टद्युम्न के सम्मुख होकर युद्ध करने लगे और किसी २ ने पाण्डव और धृष्टद्युम्न के नामोंको लेकर पुकारा २२ तब उन सम्मुख आये हुए पदातियों से युद्ध में भीमसेन क्रोधरूप हुए और बड़ी शीघ्रता से अपने रथ से उतर हाथ में गदा लेकर युद्ध करने लगा २३ अपने भुजबल में दृढ़रूप धर्म को चाहनेवाले रथ में सवार कुन्ती के पुत्र भीमसेन ने रथपर चढ़कर उन पदातियों से युद्ध नहीं किया २४ हाथमें दण्डधारी यमराज के समान भीमसेन ने सुवर्ण से मण्डित अपनी गदा को हाथमें लेकर पदाती

होकर आपके सब पदातियोंको मारा फिर वह सब पदाती भी अपने प्यारे जी-
वन को त्याग करके २५ युद्ध में भीमसेन के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि अग्नि
में पतङ्ग जातेहैं वह सबलोग युद्धमें क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद भीमसेनको पाकर२६
अकस्मात् ऐसे नाश होगये जैसे कि जीवों के समूह मृत्यु को देखकर नाश हो
जाते हैं फिर बाज की समान गदा हाथ में लिये घूमनेवाले भीमसेन ने २७
आपके पच्चीस हज़ार पदातियों को मारा फिर वह महापराक्रमी अतुलबल
भीमसेन उस पदातियों की सेना को मारकर २८ धृष्टद्युम्न को आगे करके वहां
पर नियत हुआ २९ और महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी शकुनी के स-
म्मुख हुए और बड़े प्रसन्नचित्त होकर दुर्योधन की सेना को मारते हुए बड़ी
शीघ्रता से सम्मुख दौड़े ३० अर्थात् वह अपने तीक्ष्ण बाणों से बहुतसे सवारों
को मारकर शीघ्रता से उसके सम्मुख दौड़े और बड़ा युद्ध हुआ ३१ हे प्रभो !
फिर अर्जुन ने भी आपकी रथवाली सेना के सम्मुख जाकर तीनों लोकों में
प्रसिद्ध अपने गाण्डीव धनुष को टङ्कारा आपके युद्धकर्त्ता शूरवीर उस रथ को
जिसमें कि श्रीकृष्णजी सारथी और श्वेत घोड़ों से युक्त था देखकर और युद्ध
करनेवाले अर्जुन को भी देखकर भागे ३२ । ३३ रथों से रहित और बाणों से
पीड्यमान पच्चीस हज़ार पदातियों ने काल को पाया ३४ पाञ्चालों का महा-
रथी अत्यन्त साहसी पुरुषोत्तम श्रीमान् धृष्टद्युम्न उनको मारकर ३५ थोड़ेही
काल में भीमसेन को आगे करके दिखाई दिया ३६ तब आपके शूरवीर उस
कपोतवर्ण घोड़े और कोविदाररूपी ध्वजाधारी धृष्टद्युम्न को युद्ध में देखकर
भयभीत होकर भागे ३७ और यशस्वी नकुल और सहदेव उस शीघ्र अस्त्रों
के चलानेवाले गान्धारपति को स्मरण करके सात्यकी समेत थोड़ीही देरमें दृष्टि
पड़े ३८ हे श्रेष्ठ ! इसी प्रकार चेकितान शिखण्डी और द्रौपदीके पुत्रों ने आप
की बड़ी सेना को मारकर बड़े शङ्खों को बजाया ३९ फिर वह आपके शूर-
वीरों को मुख मोड़कर भागते हुए देखकर ऐसे सम्मुख आकर वर्तमान हुए
जैसे कि बैलों को विजय करके क्रोधयुक्त बैल वर्तमान होते हैं ४० हे राजन् !
इसके पीछे महापराक्रमी पाण्डव अर्जुन आपकी बाकी बची हुई सेना को
देखकर क्रोधयुक्त हुआ ४१ और आपकी रथ की सेना के सम्मुख वर्तमान
हुआ और अपने विख्यात गाण्डीव धनुष को सन्नद्ध किया ४२ बाणों की

वर्षा करके उस सेना को ढकदिया फिर अन्धकार होजाने पर कुछ देखाई नहीं दिया ४३ हे महाराज ! लोकके हततेज होने और पृथ्वीको धूलियुक्त होनेपर आपके सब शूरवीर भयभीत होकर भागे ४४ हे राजन् ! सेना के छिन्न भिन्न होनेपर आपका पुत्र दुर्योधन सम्मुख आनेवाले शत्रुओं की ओर को दौड़ा ४५ इसके पीछे दुर्योधनने सब पाण्डवों को युद्ध के लिये ऐसे बुलाया जैसे कि हे भरतर्षभ ! पूर्वसमय में राजा बलिने देवताओं को बुलाया था ४६ नाना प्रकार के शस्त्रोंसे युक्त क्रोधयुक्त वारंवार घुड़की देते और गर्जना करते हुए एकसाथही उसके सम्मुख गये ४७ इसके पीछे वहां भयसे व्याकुलचित्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने युद्ध में अपने तीक्ष्ण बाणों से हज़ारों सेना के लोगों को मारा ४८ और सब ओर को पाण्डवों की सेना से युद्ध करने लगा उस स्थानपर हम ने आप के पुत्र की अपूर्व वीरता को देखा ४९ कि अकेलाही उन सब इकट्ठे होनेवाले पाण्डवों से युद्ध करने लगा इसके पीछे उस महात्माने अपनी सेना को अत्यन्त दुःखी देखा ५० हे राजन् ! उस समय आपका बुद्धिमान् पुत्र उन दुःखी शूरवीरों को खड़ा करके उनको प्रसन्न करताहुआ यह वचन बोला ५१ कि मैं उस देश को नहीं देखता हूं जहांपर तुम भय से पीड़ित होकर जाओ और वहां पाण्डवों के हाथ से बचने पाओ तुमको भागने से क्या लाभ है ५२ उनकी सेना बहुत कम रहगई है और श्रीकृष्ण अर्जुन अत्यन्त घायल हैं इससे मैं उन सब को निश्चय मारूंगा अब मेरी पूरी विजय है ५३ जो तुम भागोगे या पृथक् होगे तो पाण्डवलोग अपराधी जानकर तुमलोगोंको पीछा करके मारेंगे इससे हमारा और तुम्हारा युद्ध मेंही मरना श्रेष्ठ है ५४ क्षत्रियधर्म से युद्ध में लड़नेवालोंकी मृत्यु का होना सुखरूप है क्योंकि मरने के दुःखों को नहीं भोगता है शीघ्रही मरकर अविनाशी गति को पाता है ५५ तुम जितने क्षत्रिय अब इकट्ठे हुए हो सब चित्त लगाकर सुनो कि जब नाशकरनेवाला महाबली यमराजही भयभीत लोगों को मारता है ५६ तो फिर मेरे समान क्षत्रियव्रत का रखनेवाला कौन अज्ञानी युद्ध को नहीं करेगा देखो भागने से एक तो क्रोधरूप हमारे शत्रु भीमसेन के अधीन होंगे दूसरे इस संसार में अपकीर्त्ति पाकर स्वर्गवासी न होगे इस हेतुसे तुमलोगोंको अपने पूर्वजोंके कियेहुए धर्म का त्यागना उचित नहीं है भागने से अधिक और कोई पापरूप क्षत्रिय का धर्म नहीं है ५७। ५८

हे कौरवलोगो ! युद्ध से बढ़कर क्षत्रियों का कोई उत्तम धर्म नहीं है हे शूरवीरो ! जो मर भी जाओगे तो थोड़ेही दिनों में शीघ्र लोकों को भोगोगे ५६ आपके पुत्र के इस रीति के वचनोंको सुनकर भी सेना के लोग उस वचन का विचार न करसके सब दिशाओं को भागे ॥ ६० ॥

चौ० बिचले भटन टेरि अनखायो । क्षात्र धर्म बहुभाँति सुनायो ॥
सो सुनि ते सब फिरे न कैसे । रुकै न बढ़त सरित जल जैसे ॥
सो लखि तोसुत सुभटअतोलो । सुहित सारथी सों इमि बोलो ॥
संशय त्यागि चपल करिघोरे । सादर चलो पार्थ के ओरे ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकौरवसेनपलायनेचतुर्णवतितमोऽध्यायः ॥ ९४ ॥

पंचानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे आपके पुत्र से युद्ध हुआ और सेना को देखकर अज्ञानचित्त रूपान्तर चेष्टा किये मद्रदेश के राजा शल्य ने दुर्योधन से यह वचन कहा १ कि मनुष्य हाथी घोड़े और हजारों पर्वताकार शूरवीर वारंवार बाणों से घायल होकर पराजित टूटेअङ्ग पृथ्वीपर गिरेहुओं से और मरेहुए हाथियों से व्याप्त इस घोर उग्ररूप युद्धभूमिको देखो २ इन व्याकुल निर्जीव टूटे कवच शस्त्र ढाल खड्गवाले शूरवीरों से व्याप्त पृथ्वी ऐसी दिखाई देती है जैसे कि अत्यन्त टूटे पत्थर बड़े २ वृक्ष और ओषधवाले वज्र से ताड़ित पहाड़ों से व्याप्त होकर दीखती है ३ टूटे घण्टे अंकुश तोमर ध्वजा और सुवर्ण के जालों से अलंकृत रुधिर से लिप्त बाणों से टूटे अङ्ग श्वासा लेनेवाले रुधिर को वमन करनेवाले पीड्यमान पड़ेहुए घोड़ोंसे भी भरीहुई पृथ्वी को देखो कष्टित शब्दों को करते भग्ननेत्र पृथ्वी को काटनेवाले महादुःखी गर्जते हुए हाथी घोड़े शूरवीर मनुष्य और सेनाही से घायल वीरों के समूहों से युक्त इस युद्धभूमि को देखो ४ । ५ निश्चय करके इस घोर युद्ध में यह पृथ्वी मन्द प्राणवाले युद्धकर्ताओंसे वैतरणीनदीके समान शोभायमान होरहीहै ६ कटेहुए हाथी कम्पायमान और टूटे हुए दाँत रुधिर के वमन करनेवाले फड़कते पीड़ित शब्दों से दुःख भोगते पृथ्वीपर पड़ेहुए मनुष्य वा हाथियोंके शरीरोंसे पृथ्वी पूर्ण होरही है ७ टूटे पहिये, बान, जुये, योक्त्र, वा छिदेहुए तूणीर, पताका, ध्वजा अथवा सुवर्ण के जालोंसे युक्त अत्यन्त टूटेहुए बड़े २ रथोंके समूहों से ऐसी भरीहुई है

जैसे कि बादलों से भरीहुई होतीहै ८ जिनके कवच स्वर्णभूषण और शस्त्र टूट-कर गिरपड़े उन सम्मुख होकर शत्रुओं को हाथसे मरे उत्तम नामी हाथी घोड़े और शूरवीर लड़नेवालों से पृथ्वी ऐसी व्याप्त है जैसे कि शान्तरूप अग्नियों से व्याप्त होती है ९ बाणों के प्रहारों से घायल देखनेवाले और गिरेहुए हजारों पराक्रमियों से ऐसी संयुक्त है जैसे कि रात्रि के समय स्वर्गसे गिरेहुए अत्यन्त प्रकाशित स्वच्छ और देदीप्यमान ग्रहों से संयुक्त पृथ्वी और आकाश होते हैं १० कर्ण और अर्जुन के बाणों से टूटे अङ्ग अचेतरूप वारंवार श्वासें लेने-वाले मृतक हुए कौरव और सृञ्जय वीरोंसे पृथ्वी उस प्रकार की होगई जैसे कि समीपवर्त्ती प्रज्वलित अग्नियों के समूहों से व्याप्त होती है ११ कर्ण और अर्जुन की भुजाओंसे छोड़ेहुए बाण हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरोंको चीर प्राणों को निकालकर शीघ्रता से ऐसे पृथ्वीपर गये जैसे कि झुकेहुए बड़े २ सर्प विवरों में घुसते हैं १२ हे नरेन्द्र, अर्जुन ! और कर्ण के बाणों से युद्ध में घायल और मरेहुए मनुष्य और हाथियों से पृथ्वी अगम्य होगई १३ शूरवीर वा उत्तम धनुष आदि शस्त्रों से भुजबल करके अच्छे मथेहुए सुन्दर अलंकृत रथ और पड़े हुए योकर टूटे बन्धन चूर्णित रथ चक्र अंकुश त्रिवेणु और जिनसे शस्त्र निषङ्ग बन्धन जुदे होगये वा अनुकर्ष टूटे उन मणि सुवर्ण से अलंकृत खण्डित नीड़वाले रथों से ऐसी आच्छादित होगई जैसे कि शरदऋतुके बादलों से आकाश व्याप्त होता है १४।१५ जिनके स्वामी मारे गये और शीघ्रगामी घोड़े जिनको खैंचते थे उन सुन्दर अलंकृत राजरथ हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूहों से शीघ्र चलनेवाले लोग अनेक प्रकारसे चूर्ण होगये १६ स्वर्णनि-र्मित वस्त्रधारी परिघ फरसे तीक्ष्ण शूल मुद्गर मियानसे निकलेहुए सुन्दर खड्ग और स्वर्णमयी वस्त्रों से मढ़ीहुई गदा गिरपड़ीं १७ सुवर्ण के बाजूबन्दों से अलंकृत धनुष स्वर्णपुङ्खी बाण पीतरङ्ग के निर्मल मियान से जुदे दुधारा खड्ग उत्तम दण्डवाले प्रास १८ छत्र बालव्यजन शङ्ख टूटी और बिखरीहुई माला कुथा पताका वस्त्र आभूषण किरीट माला और उत्तम मुकुट १९ हे राजन् ! बहुतसे गिरे और विना गिरे हुए मूंगे मोतीवाले हार आपीड़ केयूर उत्तम बाजू-बन्द और स्वर्ण सूत्रों से पुहेहुए गुलूबन्द और निष्कनाम आभूषण थे २० उत्तम मणि हीरा सुवर्ण मोती छोटे बड़े रत्न और मङ्गलीक वस्तु बड़े सुख भोगने

के योग्य शरीर चन्द्रमा के समान मुख रखनेवाले शिर २१ शरीर के भोगने वाले सामान और यथेप्सित सुखोंको त्याग करके अपने धर्म की बड़ी निष्ठा को पाकर लोकों को कीर्ति से व्याप्त करके वह सब युद्धकर्ता शूरवीर चलेगये २२ हे बड़ाई देनेवाले, राजन्, दुर्योधन ! लौटजाओ सेना के मनुष्य भी अपने २ डेरों में जायँ हे प्रभो ! अब सूर्य भी अस्त होता है अब चलनाही योग्य है हे नरेन्द्र,दुर्योधन ! इस स्थान में तुम्हीं कारणरूप हो २३ शोक से दुःखीमन राजा शल्य हा कर्ण ! हा कर्ण ! इस रीति से कहनेवाले पीड्यमान अत्यन्त अचेत अश्रुपातयुक्त दुर्योधन से यह वचन कहकर मौन होगया २४ फिर अश्वत्थामा आदिक वह सब राजालोग अर्जुन की यश कीर्तिवाली प्रज्वलित ध्वजा को वारंवार देखते और दुर्योधन को आश्वासन करतेहुए चले २५ हे राजन् ! इसी प्रकार मनुष्य घोड़े हाथी और मनुष्यों के शरीरों से उत्पन्नहुए रुधिर से सींची हुई लाल पोशाक माला आदि स्वर्ण भूषणधारी निर्लज्ज वेश्याओं के समान रुधिर से आच्छादित भूमि को देखकर देवलोकके निमित्त संन्यास धारण करने वाले सब कौरव उस अत्यन्त शोभायमान रुद्र मुहूर्त में नियत नहीं हुए २६।२७ हे राजन् ! वह मारने से दुःखी हा कर्ण ! हा कर्ण ! यही उच्चारण करतेहुए शीघ्रही अपने डेरों में गये २८ और युद्ध में गाण्डीवधनुष से छोड़े सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण धारवाले रुधिर भरे पैनेबाणों से युक्त शरीरवाला मृतक कर्ण भी किरण मण्डलरखनेवाले सूर्य के समान प्रकाशमान था २९ भक्तोंपर दया करनेवाले रक्तवर्ण भगवान् सूर्य कर्ण के रुधिर भरे शरीर को अपनी किरणोंसे स्पर्श करके स्नान करने के निमित्त पश्चिमीय समुद्र को जातेहैं ३० और देवता ऋषियों के समूह भी इसका शोचकरते हुए यात्रायुक्त होकर अपने २ स्थानोंको जाते हैं जीवों के समूह भी विचार करते सुखपूर्वक आकाश और पृथ्वी को गये ३१ तब कौरवीय वीरों में श्रेष्ठ अर्जुन और कर्ण के सबजीवों के महाभयकारी घोर युद्ध को देखकर बड़े आश्चर्ययुक्त होकर उनकी प्रशंसाओं को करते हुए मनुष्य भी चले ३२ बाणों से टूटे कवच रुधिर से सींचे हुए वस्त्रों से युक्त निर्जीव कर्ण को भी शोभा नहीं छोड़ती है सन्तप्त सुवर्ण अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशमान ३३ उस शूरवीर को सब जीवों ने जीवते हुए के समानही माना हे महाराज ! युद्ध में उस मरेहुए कर्ण से भी ३४ युद्धकर्तालोग सब ओर से ऐसे

भयभीत हुए जैसे कि दूसरे मृग सिंह से भयभीत होते हैं क्योंकि वह मृतक हुआ भी पुरुषोत्तम जीवते के समान दिखाई देता था ३५ इस निमित्त कि मरने पर भी उस महात्मा के रूप में अन्तर नहीं हुआ इसी से उस सुन्दर पोशाक मुकुट और ग्रीवा धारण करनेवाले वीर पुरुषको जीवते केही समान माना ३६ कर्ण का वह मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान नानाभूषण तप्त काञ्चन-मयी बाजूबन्द धारण किये महाप्रकाशित होकर शोभा से युक्त ३७। ३८ वह सूर्य का पुत्र ऐसे मृतक होकर सोता है जैसे कि अंकुर रखनेवाला वृक्ष उत्तम सूर्य के समान प्रकाशमान हो ३९ वह पुरुषोत्तम कर्ण अर्जुन के शायकरूपी जल से ऐसे शान्त होगया जैसे कि प्रकाशमान देदीप्यमान अग्नि जलको पाकर शान्त होजाता है ४० इसी प्रकार कर्णरूप अग्नि युद्ध में अर्जुनरूप बादल से शान्त कीहुई पृथ्वीपर उत्तम युद्ध में अपने प्रकाशित यश को प्राप्त करके ४१ बाणोंकी वर्षाको छोड़ दशोंदिशाओं को तपाती हुई अर्जुन के तेज से शान्त हुई ४२ वह सूर्य का पुत्र कर्ण अस्त्रों के तेज से सब पाण्डव और पाञ्चालों को तपाकर बाणों की वर्षासे शत्रुओं की सेना को व्यथित कर ४३ श्रीमान् सूर्य के समान सब संसार को तपाता हुआ पुत्र और सवारी समेत मारा गया ४४ यह कर्ण आकांक्षा करनेवाले मनुष्य और पक्षियोंका कल्पवृक्ष था जो कि आकांक्षा करनेवाले सत्पुरुषों को सदैव यथेप्सित दानदिया करता था कभी किसी प्रकार के भी याचना करनेवाले से यह वस्तु नहीं है इस वचन को नहीं कहा ४५ ऐसा सत्पुरुष कर्ण द्वैरथ युद्ध में मारागया जिस महात्मा का सब धन ब्राह्मणों केही देने के योग्य हुआ जिसका सब जीवन ब्राह्मणों को किसी वस्तु का अदेयरूप नहीं हुआ ४६ सदैव स्त्रियों के प्यारे दानी अर्जुन के अस्त्र से मरेहुए उस महारथी ने परमगति को पाया जिसके आश्रय में होकर आपके पुत्र ने शत्रुताकरी थी ४७ वह आपके पुत्रों की विजय की आशा प्रसन्नता और रक्षा को साथ लेकर स्वर्गको गया कर्णके मरनेपर नदियों ने चलना बन्द किया और सब संसारका प्रकाशक सूर्यभी अस्त होगया ४८ तिर्यग् ग्रह और अग्नि सूर्य के वर्णसमान हुए और चन्द्रमा का पुत्र बुध उदय होने के निमित्त तिरछा होगया आकाश चलायमान हुआ पृथ्वी शब्दायमान हुई सूक्ष्म महा-भयकारी वायु चली दिशा ज्वलितरूप हुईं और महासमुद्र धूम और शब्द से युक्त

होकर चलायमान हुआ ४६ काननों समेत सब पर्वतों के समूह कम्पायमान हुए और सब जीवों के समूह पीड्यमान हुए और हे राजन् ! बृहस्पतिजी रोहिणी को घेरकर चन्द्रमा और सूर्यके समान हुए ५० कर्णके मरनेपर विदिशा भी प्रज्वलित होगई आकाश अन्धकार से युक्त हुआ अग्निके समान प्रकाशमान उल्कापात हुए राक्षस भी अत्यन्त प्रसन्न हुए ५१ जब अर्जुन ने चन्द्रमुख वाले प्रकाशमान कर्ण के शिर को अपने क्षुरप्र से काटा तब आकाश में देवता लोग अकस्मात् हाय हाय ऐसा शब्द करने लगे ५२ वह अर्जुन देव गन्धर्व और मनुष्यों से पूजित अपने शत्रु कर्ण को युद्ध में मारकर बड़े तेज से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्वसमय में वृत्रासुर को मारकर इन्द्र शोभायमान हुआ था ५३ इसके पीछे महेन्द्र के समान पराक्रम करनेवाले वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन बादलों के समूह के समान शब्दायमान आकाशस्थ मध्याह्न के सूर्य के समान प्रकाशित पताका और भयानक शब्दवाली ध्वजा रखने वाले हिमचन्द्रमा और शङ्ख के समान श्वेत उज्ज्वल महेन्द्र रथ के तुल्य अनुपम सवारीमें बैठे हुए युद्धमें विष्णु और इन्द्रके समान शोभायमान हुए अर्थात् सुवर्णमणि हीरे मोती और मूंगों से अलंकृत अग्नि और सूर्यके समान तेजस्वी दोनों नरोत्तम केशवजी और पाण्डव अर्जुन थे इसके पीछे उन गरुड़ध्वज और वानरध्वज श्रीकृष्ण और अर्जुन ने हठ करके धनुष प्रत्यञ्चा और बाणों के शब्दों से शत्रुओं को प्रभारहित करके ५४। ५७ कौरवों को उत्तम बाणों से ढककर उन प्रसन्नचित्त अतुल प्रभाववाले शत्रुओं के मन को सन्देह करनेवाले नरोत्तमों ने ५८ सुवर्णजाल से युक्त बड़े शब्दवाले उत्तम शङ्खों को हाथ में लेकर मुख से चुम्बन कर ५६ अकस्मात् अपने मुखों से बजाया उन पाञ्चजन्य और देवदत्तनाम दोनों शङ्खोंके शब्दों ने ६० पृथ्वी दिशा विदिशाओं समेत आकाश को शब्दायमान किया हे राजाओं में श्रेष्ठ। अर्जुन और माधवजी के उन शङ्खों के शब्दोंसे सब कौरवलोग भयभीत हुए ६१ शङ्खों के शब्दों से वन, पर्वत, नदी और पर्वतोंकी कन्दराओं को शब्दायमान करनेवाले उन दोनों पुरुषोत्तमों ने आपके पुत्र की सेना को भयभीत करके राजा युधिष्ठिर को प्रसन्न किया ६२ हे भरतवंशिन् ! इसके अनन्तर उनके शङ्खों के शब्दों को सुनकर सब कौरवलोग भरतवंशियों के राजा दुर्योधन को और राजामद्र को छोड़कर

बड़े वेग से भागे ६३ तब जीवों के भागनेवाले बड़े समूहों ने उस बड़े युद्ध में बड़े तेजस्वी श्रीकृष्ण और अर्जुन को ऐसे प्रसन्न किया जैसे कि उदय होने-वाले दो सूर्य को सब प्रसन्न करते हैं ६४ उस युद्ध में कर्ण के बाणों से चिते हुए शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि किरणसमूहों के रखनेवाले निर्मल चन्द्रमा और सूर्य उदय होकर अन्धकार को दूर करके प्रकाशमान होते हैं वह अनुपमपराक्रमी दोनों ईश्वर उन बाणसमूहों को छोड़कर मित्रों को साथ में लियेहुए सुखपूर्वक अपने डेरों में ऐसे पहुँचे जैसे कि सदस्यों के बुलाये हुए विष्णु और इन्द्र जाते हैं ६५ । ६६ तब कर्ण के मरनेपर उस बड़े युद्ध में वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन देवता, गन्धर्व, मनुष्य, चारण, महर्षि, यक्ष, राक्षस और महासर्पों के भी अपूर्व उत्तम विजय के आशीर्वादों से पूजितहुए ६७ फिर वह योग्य आशीर्वादों से युक्त दोनों अपने गुणों से स्तूयमान होकर अपने मित्रों समेत ऐसे प्रसन्न हुए जैसे कि राजा बलि को विजय करके देवगणों समेत इन्द्र और विष्णु प्रसन्नहुए थे ॥ ६८ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णवधानन्तरसर्वैस्तूयमानश्रीकृष्णार्जुनपञ्चनवतितमोऽध्यायः ॥ ९५ ॥

छानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे राजन्! कर्णके मरनेपर भयसे पीड़ित हो सब दिशाओं को देखतेहुए कौरवलोग भागे १ अर्थात् घोरयुद्ध में अर्जुन के हाथसे कर्ण को मराहुआ देखकर आपके सब शूरवीर घायल और भयभीत होकर दिशाओं में छिन्नभिन्न हुए २ इसके पीछे चारोंओर से रोकेहुए व्याकुल और महादुःखी होकर आपके उन सब शूरों ने विश्राम किया हे राजन् ! इसके पीछे आपके पुत्र दुर्योधन ने उन सब के उस मत को जानकर शल्य के मत से विश्राम किया ३ । ४ हे भरतवंशिन् ! आपके शीघ्रगामी रथ और शेष बचीहुई नारायणी सेना से युक्त कृतवर्मा डेरे की ओर को चला ५ और हज़ारों गान्धार-देशियों से व्याप्त शकुनी भी कर्ण को मृतक देखकर डेरे की ओर चला ६ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! शारद्वत कृपाचार्यजी भी बड़े२ बादलोंके समान हाथियों की सेना को साथ लिये डेरे की ओर को चले ७ फिर बड़े शूरवीर अश्वत्थामा वारंवार श्वास लेले पाण्डवों की विजय को देखकर डेरेकी ओर को चले ८ हे राजन्! शेष बचीहुई संसप्तकों की सेना को साथ लियेहुए सुशर्मा

भी भय से पीड़ित चारोंओर को देखता हुआ चलदिया ९ फिर जिस के सब बान्धव मारे गये वह शोकमें डूबाहुआ अप्रसन्नचित्त राजा दुर्योधन भी बड़ी२ चिन्ताओं को करताहुआ चलदिया १० रथियोंमें श्रेष्ठ शल्य भी दशोंदिशाओं को देखता टूटी ध्वजावाले रथ की सवारी से डेरेकी ओरको चला ११ इसके पीछे भरतवंशियों के बहुत से अन्य महारथी भी भय से पीड़ित लज्जासे युक्त उदास चित्त होकर भागे १२ इसी प्रकार रुधिर टपकते व्याकुल कम्पित महादुःखी सब कौरव कर्ण को गिराहुआ देखकर भागे १३ हे कौरव्य ! कोई कौरव तो महारथी अर्जुन की और कोई कर्णकी प्रशंसा करतेहुए दिशाओं को भागे १४ फिर वहां बड़े युद्ध में आपके हज़ारों शूरवीरों के मध्य में कोई ऐसा मनुष्य नहीं रहा जिसने कि फिर युद्ध के निमित्त चित्त किया हो १५ हे महाराज ! कर्ण के मरने से कौरवलोग जीवन राज्य और स्त्री की आशा से भी निराश होगये १६ दुःख शोक से युक्त आपके समर्थ पुत्र ने बड़े २ उपायों से उनको इकट्ठाकरके निवास के लिये चित्तकिया फिर वह रूपान्तर दशावाले महारथी शूरवीर उसकी आज्ञा को शिर से अङ्गीकार करके ठहरे ॥ १७ । १८ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकौरवपलायनेषण्णवतितमोऽध्यायः ॥ ९६ ॥

सत्तानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसप्रकारसे कर्ण के गिराने और शत्रुओं की सेना के भागने पर श्रीकृष्णजी अर्जुन से प्रीतिपूर्वक मिलकर बड़े आनन्द से इस वचन को बोले १ हे अर्जुन ! जैसे इन्द्र के हाथसे वृत्रासुर मारागया वैसेही तेरे हाथ से कर्ण मारागया सब मनुष्य कर्ण और वृत्रासुरके घोर मरणको सदैव कहेंगे २ युद्ध में बड़ा तेजस्वी वृत्रासुर जैसे वज्र से मारागया उसीप्रकार तुम्हारे धनुपसे छूटेहुए तीक्ष्णबाणों से कर्ण मारागया ३ हे कुन्ती के पुत्र, लोक में विख्यात यश करनेवाले, अर्जुन ! तेरे इस पराक्रम को उस बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिर से वर्णन करें ४ युद्ध में कर्ण के मारने को बहुत दिनसे कहनेवाले धर्मराज राजा युधिष्ठिर से यह वचन कहकर तुम उसके ऋणसे अऋण होगे ५ तेरे और कर्ण के बड़े घोर और अपूर्व युद्ध होनेपर धर्मनन्दन राजा युधिष्ठिर पूर्वही युद्धभूमि देखने को आये ६ फिर अत्यन्त घायल होनेसे युद्ध में नियत होने को समर्थ न होकर वह पुरुषोत्तम अपने डेरे में पहुँचकर नियतहुए ७ अर्जुन से बहुत

अच्छा कहे हुए बड़े सावधान यादवेन्द्र केशवजी ने उस उत्तम रथीके श्रेष्ठ रथ को लौटाया ८ श्रीकृष्णजी अर्जुन से इस प्रकार की बात कहकर सेना के मनुष्यों से बोले कि हे उत्तम शूरवीरलोगो ! तुम सावधान होकर शत्रुओं के सम्मुख होकर लड़ो तुम्हारा कल्याण होगा ९ गोविन्दजी, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, नकुल, सहदेव, भीमसेन और युयुधान से यह वचन बोले कि हम जबतक अर्जुन के हाथ से कर्ण का बध राजा युधिष्ठिर से वर्णन करें १० । ११ तबतक आप सबलोगों को राजाओं समेत निवास करना योग्य है तब उन शूरों की आज्ञा पाकर गोविन्दजी अर्जुन को साथ लेकर डेरे को गये १२ और राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर को सुवर्णरचित अच्छे शयनस्थान में सोता हुआ देखा १३ तब उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ने राजा के दोनों चरणों को स्पर्शकिया उस समय युधिष्ठिर ने उन दोनों को प्रसन्न देखकर बड़ी प्रसन्नता के अश्रुपातों को डाला १४ और कर्ण को मृतक मानकर महाबाहु शत्रुञ्जय राजा युधिष्ठिर उठकर वारंवार १५ दोनों अर्जुन और वासुदेवजी को अत्यन्त प्रेम से मिले फिर यादवों में श्रेष्ठ वासुदेवजी ने जैसे कि अर्जुन ने युद्ध करके उस कर्ण का वध किया वह सब वृत्तान्त उससे वर्णन किया फिर मन्दमुसकान करते अविनाशी श्रीकृष्णजी हाथ जोड़कर अजातशत्रु राजायुधिष्ठिर से यह वचन बोले हे राजन् ! प्रारब्ध से गाण्डीवधनुषधारी अर्जुन, भीमसेन १६ । १७ नकुल, सहदेव और तुम कुशलपूर्वक हो अब तुम इन वीरों के नाश करनेवाले और रोमाञ्च खड़े करनेवाले महाघोर युद्ध से निवृत्तहुए १८ । १९ हे पाण्डव ! अब तू बड़ी शीघ्रता से आगे करनेवाले कर्मों को करो हे राजन् ! सूत का पुत्र महारथी कर्ण मारागया २० हे राजेन्द्र ! तुम अपने प्रारब्ध से विजय करते हो और भाग्य से ही वृद्धि पाते हो और जो नीच पापात्मा पुरुष द्यूत में हारीहुई द्रौपदी को हँसा था २१ उस सूतके पुत्र के रुधिर को अब पृथ्वी पान कररही है हे कौरवों में श्रेष्ठ ! यह तेरा शत्रु बाणों से भरेहुए शरीर से पृथ्वी पर पड़ाहुआ सोता है २२ हे पुरुषोत्तम ! उस बहुत बाणों से टूटे अङ्गवाले कर्ण को देखो हे मृतकशत्रुवाले, महाबाहो ! तुम इस पृथ्वीपर राज्य करो और हम समेत सावधान होकर उत्तम भोगों को भोगो २३ सञ्जय बोले कि, तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने इन वचनों को सुनकर उन महात्मा केशवजी से कहा २४ हे महा-

बाहो! आपने जो प्रारब्ध से हुआ यह वचन कहा सो हे महाबाहो, देवकीनन्दन! यह बात आप में कुछ अपूर्व नहीं है आपकी यह योग्यता सदैव से चली आई है २५ उपाय करनेवाले अर्जुन ने तुम सारथी के साथ होकर उसको मारा हे महाबाहो! तुम्हारी स्वच्छ बुद्धिसे उत्पन्नहुई वह बात आश्चर्य की नहीं है यह कहकर वह धर्मधारी कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर बाजूबन्द रखनेवाली दक्षिणभुजा को पकड़कर २६।२७ उन दोनों अर्जुन और केशवजी से बोले कि नारदजी ने तुमदोनों को धर्मात्मा महात्मा और प्राचीन ऋषियों में श्रेष्ठ नरनारायण रूप देवता मुझ से वर्णन किया है और बुद्धिमान् सिद्धान्तों के ज्ञाता व्यासदेवजी ने भी इस महाभाग की कथा को वारंवार मुझसे कहा है हे कृष्णजी! इस पाण्डव अर्जुन ने आपकी कृपा से २८।२९ सम्मुख होकर शत्रुओं को विजय किया और किसी स्थानपर मुख नहीं फेरा निश्चय हमारीही विजयहै हमारी पराजय नहीं होगी ३० जब आप ने अर्जुन की रथवानी अङ्गीकार करी हे गोविन्दजी! आपकी बुद्धि से कर्ण के मरनेपर भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण, महात्मा गौतम, कृपाचार्य ३१ और अन्य २ बड़े २ शूरवीर जो उनके साथमें आगे पीछे थे वह सब हर प्रकार से मारेगये ३२ तब पुरुषोत्तम महाराज धर्मराज यह कह कर श्वेतवर्ण कालेबाल चित्त के अनुसार शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त सुवर्णसूत्र से निर्मित रथपर ३३ सवार हो अपनी सेना को साथ लेकर युद्धभूमि के देखने को प्रवृत्त हुए ३४ वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन से पूछकर और दोनों से प्यारे २ मिष्टवचनों को कहते हुए चलदिये ३५ वहां जाकर उस राजा युधिष्ठिर ने युद्धभूमि में शयन करतेहुए कर्ण को ऐसा देखा जैसे कि सब ओरसे केसरों से युक्त कदम्ब का फूल होता है ३६ उस धर्मराज ने हजारों बाणों से चितेहुए कर्ण वा सुगन्धित तेलों से सिंचेहुए और हजारों सुनहरी मशालों से ३७ प्रकाशमान जिसका कवच टूट २ कर चूर्ण होगया वा बाणों से छिदाहुआ था उस कर्ण को देखा ३८ पुत्रसमेत मरेहुए कर्णको वारंवार देखकर निश्चय करनेवाले राजा युधिष्ठिर ने ३९ उन दोनों नरोत्तम पाण्डव अर्जुन और माधवजी की प्रशंसा करी कि, हे गोविन्दजी! अब तुझ नाथ शूरवीर और महाज्ञानी से पोषण कियाहुआ मैं बड़े अहङ्कारी कर्ण को मृतक देखकर भाइयोंसमेत पृथ्वीपर राजा हूं ४०।४१ राजा धृतराष्ट्र राधाके पुत्र कर्णके मरनेपर अपने जीवन और राज्य

से निराश होंगे ४२ हे पुरुषोत्तम ! हम आपकी कृपाओं से अभीष्ट मनोरथों के सिद्ध करनेवाले हैं हे गोविन्दजी ! आपने प्रारब्ध से शत्रुओं को विजयकिया और भागही से यह महाशत्रु भी मारागया ४३ और पाण्डुनन्दन अर्जुन प्रारब्ध से विजय करनेवाला है हमलोगों ने बड़े दुःखदायी तेरह वर्ष जाग २ कर वनों में व्यतीत किये ४४ हे महाबाहो ! अब आपकी कृपा से रात्रि में नींद भर के बे खटके होकर सोवेंगे इस रीति से उस धर्मराज राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी और कौरव्य अर्जुन की प्रशंसाकरी सञ्जय बोले कि अर्जुन के शायकों से पुत्र समेत कर्ण को मृतक देखकर ४५।४६ उस राजा युधिष्ठिर ने अपना पुनर्जन्म माना हे महाराज ! फिर बड़ी प्रसन्नता भरेहुए महारथियों ने कुन्ती के पुत्र राजा युधिष्ठिर को मिलकर बड़ा प्रसन्नकिया और पाण्डव नकुल, सहदेव, भीमसेन और वृष्णियों में बड़े श्रेष्ठरथी सात्यकी, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी पाञ्चाल और सृञ्जयों ने ४७।४८ कर्ण के मरनेपर युधिष्ठिर की स्तुति की फिर वह सब धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर की स्तुति करके ५० महाविजय से शोभायमान लक्ष्यभेदी युद्ध में कुशल सावधानी से युद्ध करनेवाले प्रशंसायुक्त उन श्रीकृष्ण और अर्जुन की कीर्ति गानेवाले ५१ प्रसन्नता में डूबेहुए सब महारथी अपने २ डेरों को गये हे राजन् ! आपके दुर्विचारों से यह बड़ा भारी घोर रोमहर्षण करने वाला विनाशकाल जारी हुआ ५२ अब तुम किस निमित्त शोच करते हो वैशम्पायन बोले कि, अम्बिका के पुत्र राजा धृतराष्ट्र इस शोक और दुःखदायी वृत्तान्त को सुनकर ५३ अचेत और निश्चेष्ट होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि जड़समेत टूटाहुआ वृक्ष गिरपड़ता है उसीप्रकार वह दूरदर्शिनी देवी गान्धारी भी गिरपड़ी ५४ और युद्ध में कर्ण के मरने को बहुत विलाप करकरके शोचा तब विदुरजी और सञ्जय ने उस राजा को पकड़लिया ५५ और दोनों ने राजा को विश्वासयुक्त किया और इसी प्रकार कौरवीय स्त्रियों ने गांधारीको भी उठाया फिर वह बड़ातपस्वी राजा धृतराष्ट्र ईश्वर और होतव्यता को मुख्य मानकर ५६ महापीड़ित होकर अचेत होगया चिन्ता शोक से पूर्णचित्त मोह से पीड़ित राजा ने कुछ नहीं जाना और विश्वास देनेपर भी अचेत होकर मौन होगया ५७ हे भरतवंशिन् ! जो पुरुष महात्मा कर्ण और अर्जुन के इस महाघोर युद्धरूपी यज्ञ को पढ़ेगा वह उस फल को पावेगा जो अच्छे प्रकारसे किये

हुए यज्ञ का फल होता है और सुननेवालों को भी यही फल होगा ५८ अग्नि वायु और चन्द्रमा के उत्पन्न करनेवाले सनातन भगवान् विष्णु हैं उन्हीं को यज्ञ कहते हैं इस कारण जो पुरुष दूसरे के गुणों में दोष न लगाकर पढ़ेगा वा सुनेगा वह सुखी होगा ५९ भक्तलोग सदैव धर्म की वृद्धि के हेतु से इस उत्तम संहिता को पढ़ते हैं वह मनुष्य उसके पढ़ने से धन धान्य और कीर्तिमान् होकर आनन्द करते हैं ६० इस हेतु से जो दूसरे के गुणों में दोष न लगानेवाला मनुष्य सदैवही सुनेगा वह सब सुखों को पावेगा और भगवान् ब्रह्माजी विष्णुजी और शिवजी भी उस नरोत्तम के ऊपर प्रसन्न होते हैं ६१ इस संहिता में ब्राह्मण को वेदों की प्राप्ति और युद्ध में क्षत्रियों को पराक्रम वा विजय की प्राप्ति वैश्यों को धन की प्राप्ति और शूद्रों को नीरोगता की प्राप्ति होती है ६२ जोकि इसमें भगवान् सनातन देवता विष्णुजी का वर्णन है इस हेतु से वह मनुष्य सुखी होकर मनोऽभीष्टों को पाते हैं यह उस महामुनि ने वचन कहा है कि जो इस कर्णपर्व को सुनता है वह एक वर्षतक सवत्सा कपिला गौके प्रतिदिन दान करने के समान फल को पाता है ॥

महिस्वरीछन्द ॥

सुनि प्रबल अरि भट करणको वध धरम अति आनँदभरे। बहुभांति हरिहि प्रशंसि प्रभुता कृपा की वर्णन करे ॥ फिर कृष्ण पारथ भटनसह चढ़ि सुरथ पै मोदित महाँ। गे धर्म भूपति कर्ण भटमणि परोहो जेहि थल तहाँ ॥ तहँ सहित सुत मरिपरो कर्णहिं देखि आनँद को गहे। तुव कृपा सों मम सुजय सब थल इविधि केशव सों कहे ॥ बहु जरत चारु मशाल सङ्ग उमङ्ग सों सब देखि कै। नृप धर्म डेरन गये फिरि निज सुजय ध्रुव अवरेखि कै ॥

दो० करत प्रशंसा कृष्ण अरु, पारथ की सब वीर।
गे निजनिज डेरन लहत, आनँदसिन्धुगँभीर ॥
भूपति कियो कुमन्त्र तुम, करता इतो अनर्थ।
प्रलयकाल आरोपि अब, शोचकरत हौ व्यर्थ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

दो० इविधि कर्ण को मरण सुनि, दम्पति वृद्ध नरेश।
मोहित ह्वै गिरिपरत भे, त्यागि चेत को लेश ॥

भूपति गहि सञ्जय विदुर, गन्धारिहि कुरुनारि ।
चेतित कीन्हे यतनकरि, धीरजधरो पुकारि ॥
कर्णपर्व में होत भो, यहि विधि युद्ध विनोद ।
रामकृष्ण कहँ जपत सो, लहत सदा जयमोद ॥

सो० रामभक्त कपिवीर, विलसो जासु ध्वजस्थ है ।
कृष्ण बसे जातीर, किमि न लहै जय पार्थ सो ॥

श्लो० वर्षेऽब्धिवेदाङ्कशशाङ्क १९४४ संख्ये विद्वान् सकालीचरणाभिधानः ।
श्च्योतद्रसं मञ्जुलकर्णपर्वभाषानुवादं मधुरं व्यधत्त ॥ १ ॥

इति श्रीभाषामहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांकर्णपर्वणिसप्तनवतितमोऽध्यायः ॥ ९७ ॥

इति कर्णपर्व समाप्तिं पकाणेति शम् ॥